

संघमाता शतवर्षाधिकायु  
माता साध्वीजीश्री मनोहरश्रीजी जन्मशताब्दी जैन ग्रन्थमाला - पुष्पम् २

आचार्यभगवत्-कलिकालसर्वज्ञ-श्रीहेमचन्द्रसूरिप्रणीतं

# श्रीसिद्धहेमचन्द्रशब्दानुशासनम्

(अकाराद्यनुक्रमसहितः सप्ताध्यायात्मकः सूत्रपाठः)

सम्पादकः

पूज्यपाद-गुरुदेव-मुनिराजश्री-भुवनविजयान्तेवासी  
मुनि जम्बूविजयः

द्रव्यसहायकः

पालनपुर (सम्प्रति मुंबई) निवासि-  
श्रेष्ठि कीर्तिलाल मणिलाल महेता परिवारः

प्रकाशकम्

श्री हेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमन्दिरम्  
पाटण (उ. गु.)

**अकारादिक्रमस्य शुद्धिपत्रकम्**  
**[अकारादिक्रममुद्रणावसरे यानि २६ सूत्राणि अस्माकमनवधानात्**  
**मुद्रितानि तानि अत्र स्थूलाक्षरैर्निर्दिष्टानि]**

| पृष्ठम् | पंक्तिः | अशुद्धम्                     | शुद्धम्                         |
|---------|---------|------------------------------|---------------------------------|
| १०२     | ५       | ।१।१।८ ॥                     | ।१।१।९ ॥                        |
| १०३     | २१      | अत्र च ।७।१।४९ ॥             | अत्र च ।७।१।४९ ॥                |
|         |         |                              | <b>अदश्चाद् ।४।४।९० ॥</b>       |
| १०४     | १७      | अनद्यतने ह्यस्तनी ।५।२।२ ॥   | अनद्यतने ह्यस्तनी ।५।२।७ ॥      |
| १०५     | २०      | अयमियं पुं—सौ ।२।१।३८ ॥      | अयमियं पुं—सौ ।२।१।३८ ॥         |
|         |         |                              | <b>अयानयं नेयः ।७।१।९७ ॥</b>    |
| १०६     | १३      | ।६।२।६ ॥                     | ।६।२।६४ ॥                       |
| १०७     | ६       | ।२।४।११ ॥                    | ।२।४।१११ ॥                      |
| १०७     | ११      | ।७।४।८२ ॥                    | ।७।४।७२ ॥                       |
| १०८     | ३       | ।२।२।३९ ॥                    | ।३।२।३९ ॥                       |
| १०९     | २       | आशिषीणः ।४।३।१०७ ॥           | आशिषीणः ।४।३।१०७ ॥              |
|         |         |                              | <b>आशिष्यकन् ।५।१।७० ॥</b>      |
| ११०     | १       | ।३।३।६४ ॥                    | ।३।३।६४ ॥                       |
| १११     | ७       | उपान्त्यस्यासमा—डे ।४।२।३५ ॥ | उपान्त्यस्यासमा—डे ।४।२।३५ ॥    |
|         |         |                              | <b>उपान्त्ये ।४।३।३४ ॥</b>      |
| १११     | २४      | उष्ट्रादकञ् ।७।१।१८५ ॥       | उष्ट्रादकञ् ।६।२।३६ ॥           |
|         |         |                              | <b>उष्णात् ।७।१।१८५ ॥</b>       |
| ११२     | १       | ।३।३।३७ ॥                    | ।३।२।३७ ॥                       |
| ११३     | १       | ऋ-२-लृ-लं-पु ।२।३।९९ ॥       | ऋ-२-लृ-लं-पु ।२।३।९९ ॥          |
|         |         |                              | <b>ऋवर्णदृशोऽडि ।४।३।७ ॥</b>    |
| ११३     | २०      | ।१।१।२३ ॥                    | ।१।२।२३ ॥                       |
| ११४     | ५       | ।६।३।६० ॥                    | ।६।३।५० ॥                       |
| ११४     | ७       | ।७।३।३९ ॥                    | ।७।२।३९ ॥                       |
| ११५     | ३       | ।७।६।२४ ॥                    | ।७।४।६२ ॥                       |
| ११५     | १०      | कर्णललाटात्कल् ।६।३।१४१ ॥    | कर्णललाटात्कल् ।६।३।१४१ ॥       |
|         |         |                              | <b>कर्णादेरायनिञ् ।६।२।९० ॥</b> |
| ११५     | ११      | ।३।४।४१ ॥                    | ।३।४।३१ ॥                       |
| ११५     | २४      | कर्मणि कृतः ।२।२।८३ ॥        | कर्मणि कृतः ।२।२।८३ ॥           |
|         |         |                              | <b>कर्मणोऽण् ।५।१।७२ ॥</b>      |

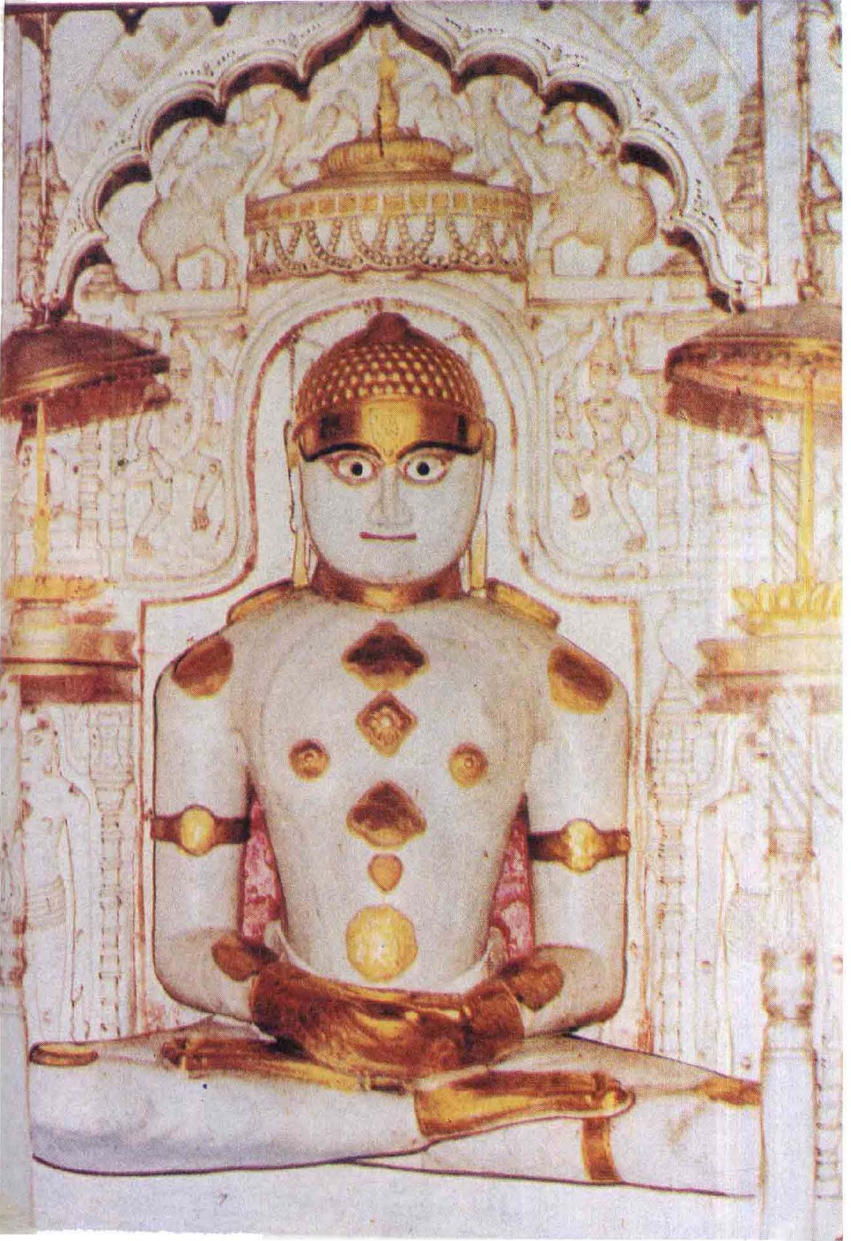
|     |    |                               |   |
|-----|----|-------------------------------|---|
| ११६ | ७  | कालात् परि—रे । ६।४।१०४ ॥     | कालात् परि—रे । ६।४।१०४ ॥<br><b>कालाद्देये ऋणे । ६।३।११३ ॥</b>          |
| ११६ | १९ | । ५।१।२८ ॥                    | । ५।१।८२ ॥  |
| ११६ | २१ | कुमुदादेरिकः । ६।२।९६ ॥       | कुमुदादेरिकः । ६।२।९६ ॥<br><b>कुम्भपद्यादिः । ७।३।१४९ ॥</b>             |
| ११७ | ६  | । ६।१।९४ ॥                    | । ६।३।१९४ ॥   |
| ११७ | ८  | । ४।१।१९५ ॥                   | । ७।१।१९५ ॥   |
| ११७ | ९  | । २।३।९७ ॥                    | । २।२।९७ ॥  |
| ११७ | १५ | । ४।४।१२३ ॥                   | । ४।४।१२२ ॥   |
| ११७ | १५ | कूलाभ्रकरी—षः । ५।१।११० ॥     | कूलाभ्रकरी—षः । ५।१।११० ॥<br><b>कृगः खनट् करणे । ५।१।१२९ ॥</b>          |
| ११८ | १  | । ६।४।९७ ॥                    | । ६।३।९७ ॥  |
| ११८ | २  | । ६।४।९७ ॥                    | । ६।१।१२७ ॥   |
| ११९ | १  | । २।४।७९ ॥                    | । २।४।८० ॥  |
| ११९ | १५ | खनो डडरेकेकव० । ५।३।१३७ ॥     | खनो डडरेकेकव० । ५।३।१३७ ॥<br><b>खर-खुरा—नसु । ७।३।१६० ॥</b>             |
| ११९ | १८ | । ४।४।१२० ॥                   | । ४।४।११९ ॥   |
| १२० | ८  | । ४।२।४० ॥                    | । ४।१।४० ॥  |
| १२१ | ८  | । ३।१।२७ ॥                    | । ६।१।२७ ॥  |
| १२१ | १० | । ७।१।११२ ॥                   | । ७।१।१२१ ॥   |
| १२३ | १  | चुरादिभ्योऽण्                 | चूडादिभ्योऽण्   |
| १२३ | ६  | । ७।१।७६ ॥                    | । ७।१।७३ ॥  |
| १२३ | २६ | चीवरात्परिधाऽर्जने । ३।४।४१ ॥ | चीवरात्परिधाऽर्जने । ३।४।४१ ॥<br><b>चुरादिभ्यो णिच् । ६।४।११९ ॥</b>     |
| १२३ | २६ | । ६।३।६० ॥                    | । ६।२।६० ॥  |
| १२४ | २३ | । ७।६।१३९ ॥                   | । ७।३।१३९ ॥   |
| १२८ | ४  | तृणे जातौ । ३।२।१३२ ॥         | तृणे जातौ । ३।२।१३२ ॥<br><b>तृतीयस्तु—र्थे । १।३।४९ ॥</b>               |
| १२९ | ३  | । ६।१।१५७ ॥                   | । ६।१।५७ ॥  |
| १३० | १० | । ७।१।२० ॥                    | । ७।१।२२ ॥  |
| १३१ | ९  | । ३।४।२३ ॥                    | । ३।४।२२ ॥  |
| १३१ | ११ | द्वित्रिचतुरः सुच । ७।२।११० ॥ | द्वित्रिचतुरः सुच । ७।२।११० ॥<br><b>द्वित्रिचतुष्—यः । ३।१।५६ ॥</b>     |
| १३१ | २० | द्वित्वे गोयुगः । ७।१।१३४ ॥   | द्वित्वे गोयुगः । ७।१।१३४ ॥<br><b>द्वित्वेऽधोऽध्युपरिभिः । २।२।३४ ॥</b> |
| १३२ | ४  | । ६।१।१५५ ॥                   | । ६।१।१०९ ॥   |

|     |    |                           |                                |
|-----|----|---------------------------|--------------------------------|
| १३२ | ६  | ।५।२।८१॥                  | ।५।२।९१॥                       |
| १३२ | ८  | ।५।१।२५॥                  | ।५।१।२४॥                       |
| १३२ | २० | ।४।४।८॥                   | ।४।४।८५॥                       |
| १३४ | ६  | ।१।१।५॥                   | ।४।१।५॥                        |
| १३४ | २१ | ।३।१।१६५॥                 | ।३।१।१५५॥                      |
| १३४ | २३ | ।६।१।१४२॥                 | ।६।४।१४२॥                      |
| १३६ | १७ | ।६।३।६९॥                  | ।६।२।६९॥                       |
| १३७ | १२ | ।२।३।१५॥                  | ।२।३।९५॥                       |
| १३८ | २१ | ।१।४।७३॥                  | ।१।४।७६॥                       |
| १३८ | २३ | ।३।३।१॥                   | ।३।२।१॥                        |
| १४० | १० | ।६।१।१२९॥                 | ।६।१।११९॥                      |
| १४० | १७ | ।१।२।८॥                   | ।२।१।२।८॥                      |
| १४१ | ६  | ।३।१।९०॥                  | ।३।१।९७॥                       |
| १४१ | २० | पूर्वोत्तर—कथनः ।७।३।११३॥ | पूर्वोत्तर—कथनः ।७।३।११३॥      |
|     |    |                           | <b>पृथगूनाना—च ।२।२।११३॥</b>   |
| १४१ | २१ | ।६।४।१५६॥                 | ।६।३।६४॥                       |
| १४१ | २३ | ।६।१।१८॥                  | ।६।४।१५६॥                      |
| १४२ | १  | ।६।१।२॥                   | ।६।२।२२॥                       |
| १४५ | २२ | ।६।१।११४॥                 | ।६।२।११४॥                      |
| १४६ | २० | भौरिक्येषु—क्तम् ।६।२।६८॥ | भौरिक्येषु—क्तम् ।६।२।६८॥      |
|     |    |                           | <b>भ्यादिभ्यो वा ।५।३।११५॥</b> |
| १४७ | ६  | भ्वादिभ्यो वा ।५।३।११५॥   | <b>X X X X X X</b>             |
| १४८ | ६  | ।६।१।१०॥                  | ।६।१।९०॥                       |
| १४८ | १६ | ।४।१।३०॥                  | ।४।२।३०॥                       |
| १४९ | ११ | ।६।४।२६॥                  | ।६।४।९६॥                       |
| १५० | २  | ।२।१।११॥                  | ।४।१।११॥                       |
| १५० | ३  | ।७।१।७०॥                  | ।७।१।७२॥                       |
| १५१ | १३ | ।३।१।११४॥                 | ।६।१।११४॥                      |
| १५१ | १४ | ।७।३।१०७॥                 | ।७।३।१०७॥                      |
| १५३ | १२ | ।४।४।५५॥                  | ।४।४।६५॥                       |
| १५३ | १६ | ।४।२।७८॥                  | ।४।२।७५॥                       |
| १५३ | २३ | ।६।२।१६॥                  | ।७।२।१६॥                       |
| १५४ | १२ | वारे कृत्वम् ।७।२।१०९॥    | वारे कृत्वम् ।७।२।१०९॥         |
|     |    |                           | <b>वाऽर्धाच्च ।७।३।१०३॥</b>    |
| १५४ | १९ | वाऽमनो विकारे ।७।४।६३॥    | वाऽमनो विकारे ।७।४।६३॥         |
|     |    |                           | <b>वा श्रन्थ —च ।४।१।२७॥</b>   |

|     |    |                            |
|-----|----|----------------------------|
| १५५ | २३ | ।१।२।११५॥                  |
| १५५ | २६ | ।५।६।५२॥                   |
| १५६ | ४  | ।१।१।२५५॥                  |
| १५६ | २३ | वैकात् ।७।३।५५॥            |
| १५७ | ५  | व्यञ्जनात्प—वा ।१।३।४७॥    |
| १५७ | २२ | ।४।६।२५॥                   |
| १५८ | ९  | ।५।४।२५॥                   |
| १५९ | २२ | ।४।६।१०४॥                  |
| १५९ | २५ | शीताच्च कारिणि ।७।१।१८६॥   |
| १६० | ५  | ।५।३।१८६॥                  |
| १६० | ९  | ।५।३।११९॥                  |
| १६० | २१ | ।७।१।१३९॥                  |
| १६१ | १३ | ।२।३।९०॥                   |
| १६१ | १७ | ।५।३।१७७॥                  |
| १६१ | १८ | ।३।२।१४॥                   |
| १६३ | १२ | सप्तमी चोर्ध्व—के ।५।३।१२॥ |
| १६४ | १  | समेवते                     |
| १६४ | २  | समैऽशे                     |
| १६४ | ३  | ।२।३।८४॥                   |
| १६५ | १३ | ।५।१।३९॥                   |
| १६५ | २१ | ।४।३।९२॥                   |
| १६५ | २५ | सिध्यतेरज्ञाने ।४।२।११॥    |
| १६६ | ६  | ।२।१।१३२॥                  |
| १६६ | २३ | सो वा लुक् च ।३।४।२७॥      |
| १६७ | १३ | ।६।१।२६॥                   |
| १६८ | २  | ।५।१।४॥                    |
| १६९ | १५ | हरत्युत्सङ्गादेः ।६।१।५५॥  |
| १७० | २  | ।२।३।२४॥                   |

|                                     |
|-------------------------------------|
| ।२।२।११५॥                           |
| ।५।३।५२॥                            |
| ।१।१।२५॥                            |
| वैकात् ।७।३।५५॥                     |
| <b>वैकात्—उतरः ।७।३।५२॥</b>         |
| व्यञ्जनात्प—वा ।१।३।४७॥             |
| <b>व्यञ्जनादेरेक—वा ।३।४।९॥</b>     |
| ।४।३।२५॥                            |
| ।५।४।३५॥                            |
| ।४।३।१०४॥                           |
| शीताच्च कारिणि ।७।१।१८६॥            |
| <b>शीतोष्णतु—हे ।७।१।९२॥</b>        |
| ।६।३।१८६॥                           |
| ।५।१।११९॥                           |
| ।७।१।१६९॥                           |
| ।२।३।९२॥                            |
| ।५।३।१०७॥                           |
| ।३।३।१४॥                            |
| सप्तमी चोर्ध्व—के ।५।३।१२॥          |
| <b>सप्तमी चोर्ध्व —के ।५।४।३०॥</b>  |
| समेवते                              |
| समैऽशे                              |
| ।३।३।८४॥                            |
| ।५।२।३९॥                            |
| ।४।२।९२॥                            |
| सिध्यतेरज्ञाने ।४।२।११॥             |
| <b>सिन्ध्वपकरात् काणौ ।६।३।१०१॥</b> |
| ।५।१।१३२॥                           |
| सो वा लुक् च ।३।४।२७॥               |
| <b>सोऽस्य ब्रह्म —तोः ।६।४।११६॥</b> |
| ।६।४।१७६॥                           |
| ।४।१।४॥                             |
| हरत्युत्सङ्गादेः ।६।४।२३॥           |
| <b>हरितादेरञः ।६।१।५५॥</b>          |
| ।२।३।३४॥                            |

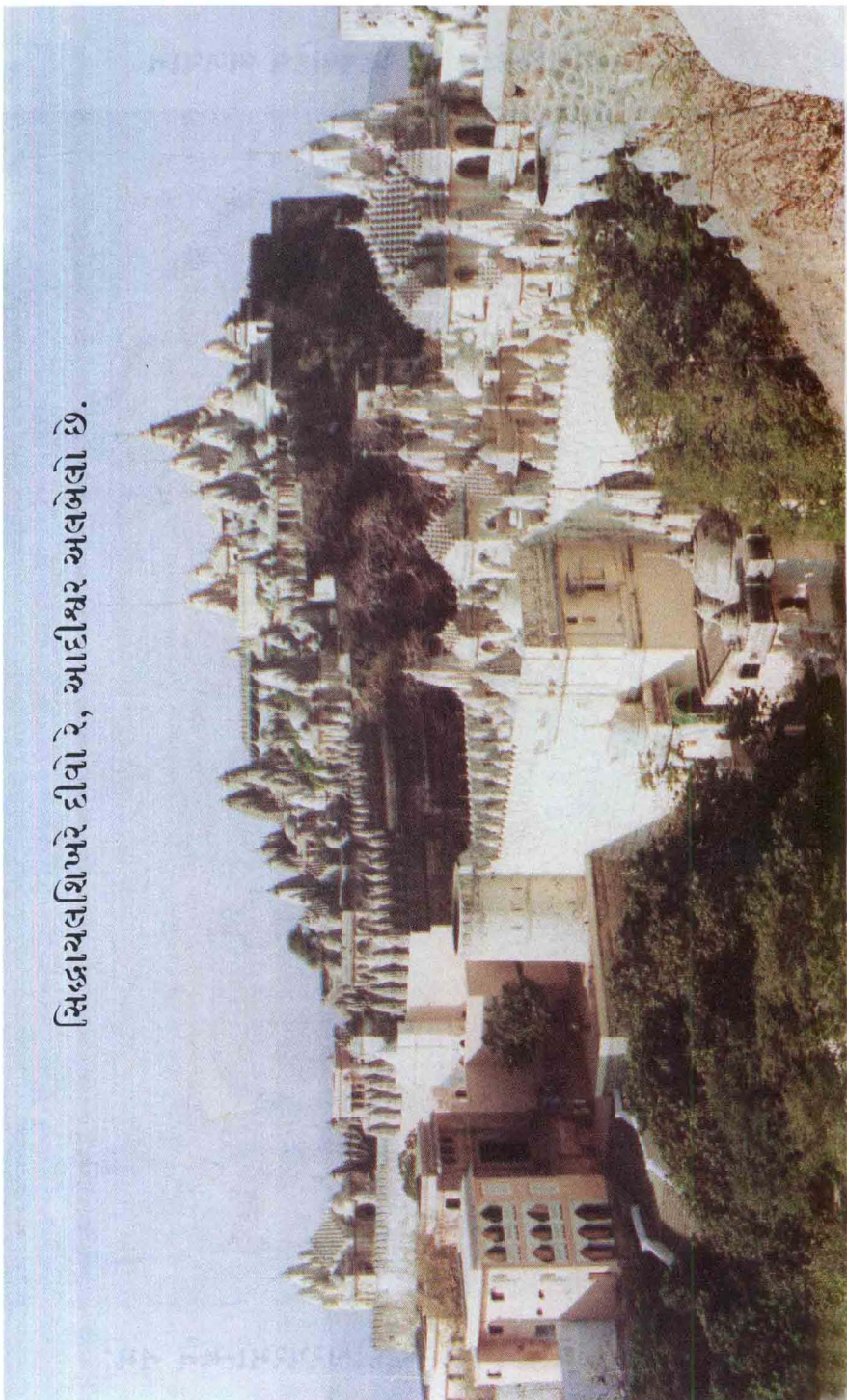
શ્રી સિદ્ધગિરિમંડન શ્રી ઋષભદેવ ભગવાન



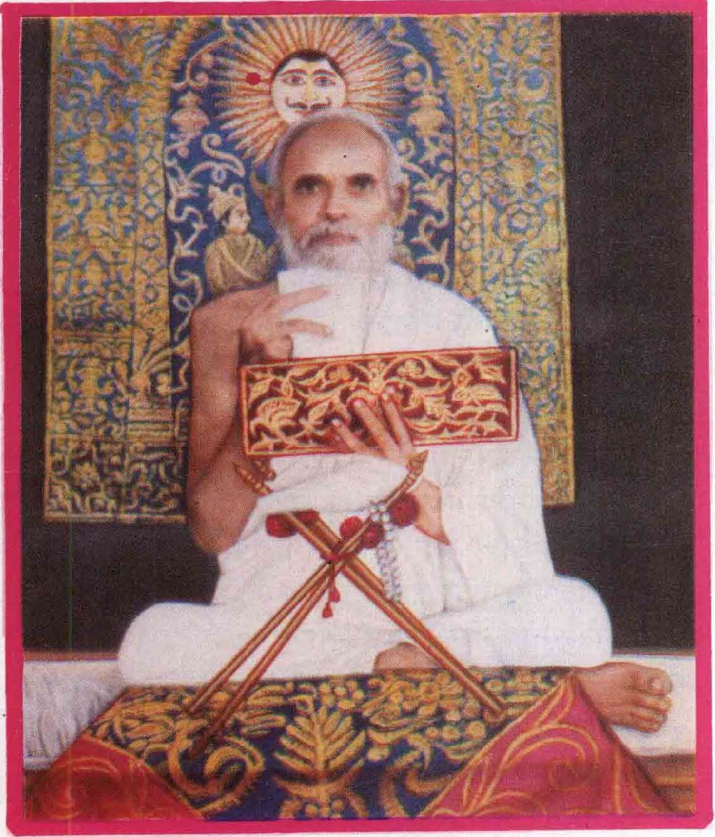
શ્રી શત્રુંજયતીર્થપતિ શ્રી આદીશ્વરપરમાત્મને નમઃ



સિદ્ધાચલશિખરે દીવો રે, આદીશ્વર અલબેલો છ.



पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय संघस्थविर श्री १००८ आचार्यदेवश्री  
विजयसिद्धिसूरीश्वरजी (बापजी) महाराजना पट्टालंकार —  
पूज्यपाद आचार्यदेवश्री विजयमेघसूरीश्वरजी महाराजना शिष्यरत्न  
पूज्यपाद गुरुदेव मुनिराजश्री भुवनविजयजी महाराज



जन्म :- विक्रमसंवत् १९५१, श्रावणवदि ५, शनिवार  
ता. १०-८-१८९५, मांडल.

दीक्षा :- विक्रमसंवत् १९८८, जेठवदि ६, शुक्रवार,  
ता. २४-६-१९३२ अमदावाद.

स्वर्गवास :- विक्रमसंवत् २०१५, महासुदि ८, सोमवार,  
ता. १६-२-१९५९ शंखेश्वरजी तीर्थ.



श्री सद्गुरुदेवाय नमः । श्री सद्गुरुः शरणम् ।  
पूज्यपाद अनन्तउपकारी गुरुदेव  
मुनिराज श्री १००८ भुवनविजयजी महाराज !

बहुपुण्याश्रितं दत्त्वा दुर्लभं नरजन्म मे ।  
लालनां पालनां पुष्टिं कृत्वा वात्सल्यतस्तथा ॥१॥  
वितीर्थ धर्मसंस्कारानुत्तमांश्च गृहस्थितौ ।  
भवद्भिः सुपितृत्वेन सुबहूपकृतोऽस्म्यहम् ॥२॥  
ततो भवद्भिर्दीक्षित्वा भगवत्पागवर्त्मनि ।  
अहमप्युद्धृतो मार्गं तमेवारोह्य पावनम् ॥३॥  
ततः शास्त्रोक्तपद्धत्या नानादेशविहारतः ।  
अचीकरन् भवन्तो मां तीर्थयात्राः शुभावहाः ॥४॥  
अनेकशास्त्राध्ययनं भवद्भिः कारितोऽस्म्यहम् ।  
ज्ञानचारित्रसंस्कारैरुत्तमैर्वासितोऽस्मि च ॥५॥  
ममात्मश्रेयसे नित्यं भवद्भिश्चिन्तनं कृतम् ।  
व्यापृताश्च ममोन्नत्यै सदा स्वाखिलशक्तयः ॥६॥  
ममाविनयदोषाश्च सदा क्षान्ता दयालुभिः ।  
इत्थं भवदनन्तोपकारैरुपकृतोऽस्म्यहम् ॥७॥  
मोक्षाध्वसत्पान्थ ! मुनीन्द्र ! हे गुरो !  
वचोऽतिगा वः खलु मय्युपक्रियाः ।  
असम्भवप्रत्युपकारसाधनाः  
स्मृत्वाहमद्यापि भवामि गद्गदः ॥८॥

— तत्रभवदन्तेवासी शिशुर्जम्बूविजयः

सरकारी उपाश्रयवाळा  
पूज्यपाद साध्वीजीश्री लाभश्रीजी महाराजना शिष्या  
संघमाता शतवर्षाधिकायु  
पूज्यपाद साध्वीजीश्री मनोहरश्रीजी महाराज



जन्म :- विक्रमसंवत् १९५१, मागशर वदि २, शुक्रवार,  
ता. १४-१२-१८९४, झींझुवाडा.  
दीक्षा :- विक्रमसंवत् १९९५, महावदि १२, बुधवार,  
ता. १५-५-१९३९, अमदावाद.  
स्वर्गवास :- विक्रमसंवत् २०५१, पोप सुदि १०, बुधवार,  
ता. ११-१-१९९५, रात्रे ८-५४  
वीशानीमाभवन जैन उपाश्रय, सिद्धक्षेत्र पालिताणा.



## સમર્પણમ્ ।

પૂજ્યપાદ પરમઉપકારી સંસારી પિતાશ્રી ગુરુદેવ  
મુનિરાજશ્રી ભુવનવિજયજી મહારાજ !

તથા

પૂજ્યપાદ સંસારી માતાશ્રી સાધ્વીજીશ્રી  
મનોહરશ્રીજી મહારાજ !

પરમ વાત્સલ્ય તથા પરમ કૃપાથી બાલ્યાવસ્થાથી  
જ આપે મને આપેલા ધર્મસંસ્કારોનું અત્યંત કૃતજ્ઞતા  
તથા બહુમાન પૂર્વક સ્મરણ કરીને આ  
શ્રીસિદ્ધહેમચંદ્રશબ્દાનુશાસન ગ્રંથને પુષ્પરૂપે  
આપના કરકમળમાં પ્રભુપૂજાર્થે અર્પણ કરીને આજે  
અત્યંત આનંદ અને ધન્યતા અનુભવું છું.

— આપનો શિશુ જંબૂવિજય

સં. ૨૦૫૧, માગશરવદિ ૨ (મારાં પૂ. માતૃશ્રીની  
જન્મતિથિ), મંગળવાર, તા. ૨૦-૧૨-૯૪  
પાલિતાણા.

શ્રી. કીર્તિલાલભાઈ મણિલાલભાઈ મહેતા



જન્મ : ૭-૨-૧૯૦૭, પાલનપુર

સ્વર્ગવાસ : ૨૦-૭-૧૯૮૩, એન્ટવર્પ - બેલ્જિયમ.



સ્વ. શ્રીમતી લીલાવતીબહેન કીર્તિલાલભાઈ.



જન્મ : ઈ.સ. ૧૯૧૪, પાલનપુર.

સ્વર્ગવાસ : ૧૬-૮-૧૯૬૪, ચંદીગઢ.

## કીર્તિલાલભાઈ મણિલાલભાઈ મહેતા

[આ ગ્રંથના પ્રકાશનમાં સંપૂર્ણ દ્રવ્યસહાયક શેઠશ્રી કીર્તિલાલભાઈ મણિલાલભાઈ મહેતાના પરિવાર તરફથી તેમના પિતાશ્રી તથા માતૃશ્રી અંગે જે લખાણ મળ્યું છે તે અક્ષરશઃ અહીં આપવામાં આવે છે.]

ઈ.સ. ૧૯૦૭ના ફેબ્રુઆરીની ૭મી તારીખે આ મહામાનવનો જન્મ ભારતના એક નાના શહેર પાલનપુરમાં થયો. માતાપિતાના વહાલ પાન સાથે તે ઉછરવા લાગ્યા, પરંતુ જીવનનો દોઢ દાયકો પાણ પૂરો વીતે તે પહેલાં કાળદેવે તેમના શિરછત્ર જેવા પિતાજીને ઉપાડી લીધા. માતા તથા કાકા-કાકીઓએ તેમનું પ્રેમપૂર્વક જતન કર્યું ને સુસંસ્કારોથી સુદૃઢ કર્યા. સંજોગો એવા આવ્યા કે નાની ઉમ્મરમાં જ પારિવારિક વ્યવસાયમાં તેમને જોડાવું પડ્યું. ધીમે ધીમે આ શક્તિશાળી બાળક નવયુવાન થયા ને ધંધામાં નિપુણતા કેળવી એક પછી એક હીરાની વિવિધ કંપનીઓ તેમણે ખોલવા માંડી. સૌ પ્રથમ :-

- (૧) મુંબઈમાં “કીર્તિલાલ મણિલાલ મહેતા” ના નામે કે જે આજે “બ્યુટિક્યુલ ડાયમંડ”ના નામે જગજહર છે, પછી
- (૨) એન્ટવર્પમાં “જેમ્બલ એન.વી.”ના નામે
- (૩) હોંગકોંગમાં “જેમ્બલ ડાયમંડ લિ.”ના નામે
- (૪) ઈઝરાયેલમાં “જેમ્બલ”ના નામે તેમજ
- (૫) ન્યુયોર્કમાં “ઓક્સિડેન્ટલ જેમ્સ” વગેરે કંપનીઓ ખોલી.

તેમની ધગશ, સાહસ અને પ્રામાણિકતાના કારણે

- (૧) ૧૯૭૩માં ઈઝરાયેલના પ્રસિદ્ધે તેમને “સર્ટિફિકેટ ઓફ પ્રમોટર ઓફ આઉટ સ્ટેન્ડિંગ ડાયમંડ એક્સપોર્ટ” નો ખિતાબ આપ્યો.
- (૨) ૧૯૭૭માં ગવર્મેન્ટ ઓફ ઈન્ડિયાએ “સૌથી વધુ એક નિકાસકાર” તરીકે ટ્રોફી અર્પી તેમનું સન્માન કર્યું.
- (૩) એમના વતન પાલનપુરના નવાબ સાહેબે તેમને “એઝાઝૂર રિયાશત” અર્થાત્ “માતૃભૂમિના કીર્તિવંતા નરકેશરી” નો ઈલકાબ આપ્યો.

(૪) બેલજિયમના મહારાજાએ પણ તેમને “ઓર્ડર ઓફ લિયોપોલ્ડ” નો ખિતાબ બક્ષ્યો હતો.

આજે આંતરરાષ્ટ્રિય ક્ષેત્રે હીરા ઉદ્યોગમાં કોઈ પણ વ્યક્તિ એવી નહીં હોય જે બાપાજીને (કીર્તિભાઈને) ઓળખતી ન હોય !

ફક્ત હીરા ક્ષેત્રે જ નહીં પણ આઝાદીની ચળવળમાં પણ તેમણે સક્રિય ભાગ લીધો હતો. પ્રભાતફેરી કાઢવી, શેરીએ શેરીએ જનતાને સમાચારો પહોંચાડવા; આઝાદીની ચળવળમાં ભાગ લેનાર સ્વતંત્ર્યસેનાનીઓને આશ્રય આપવો વિગેરે પ્રવૃત્તિઓમાં તન, મન અને ધનથી સામેલ થયા હતા.

તેઓ પરદેશમાં રહેવા છતાં દેશને ભૂલ્યા ન હતા. તેઓ ધાર્મિક વૃત્તિવાળા હતા. તેમનો પ્રેમાળ અને મિલનસાર સ્વભાવ, કુશાગ્રદષ્ટિ, નિઃસ્વાર્થ પરોપકાર, પ્રખર પુરુષાર્થ, પ્રામાણિક ધંધાકીય નિપુણતાથી અનેકોના પથદર્શક બની જતા હતા તેથી જ તેઓ અનેકોના મિત્ર હતા. તેઓ એક હાથે દાન દેતા તે બીજા હાથને પણ જાણવા દેતા ન હતા. આજે તેમની પત્નીના નામે સુંદર આધુનિક “લીલાવતી કીર્તિલાલ મહેતા હોસ્પિટલ એન્ડ મેડિકલ રીસર્ચ સેન્ટર” મુંબઈમાં આકાર લઈ રહ્યું છે જે ટૂંક સમયમાં જનતાના લાભાર્થે ખુલ્લું મૂકવામાં આવશે.

સંકલ્પ અને પુરુષાર્થથી મનુષ્ય પોતાના જીવનનો કેવો સુંદર ઘાટ ઘડી શકે છે અને સમાજકલ્યાણની કેવી પ્રશસ્ત પ્રવૃત્તિઓ કરી શકે છે તેનો જીવંત દાખલો તેમણે જગત સમક્ષ પૂરો પાડ્યો છે.

તેમના પુત્રો તેમનો પડ્યો બોલ ઝીલતા હતા અને તેથી જ કદાચ ધંધાકીય ક્ષેત્રે આગવી નામના મેળવી રહ્યા છે. આવું સૌભાગ્ય જગતમાં બહુ ઓછાને પ્રાપ્ત થતું હોય છે.

આજે એ આપણી વચ્ચે નથી. ઈ.સ.૧૯૯૩ના જુલાઈની ૨૦મી તારીખે એન્ટવર્પમાં તેમણે ચિર વિદાય લીધી, પણ નૂતન પેઢી એમના જીવનમાંથી પ્રેરણા મેળવી શકશે.

## સ્વ. શ્રીમતી લીલાવતીબહેન કીર્તિલાલભાઈ મહેતા

કરુણાની સાક્ષાત્ મૂર્તિ સ્વ. લીલાબહેનનો જન્મ પાલનપુર નગરે ઈ.સ.૧૯૧૪માં શ્રી. જ્ઞેકુભાઈ ઝુમચંદભાઈ મહેતાને ત્યાં થયો હતો. લાડકોડમાં બાળપણ વીતાવી શ્રી. કીર્તિલાલભાઈ મણિલાલભાઈ મહેતા સાથે પ્રભુતામાં પગલાં માંડ્યાં.

પૂર્વ ભવનાં શુભ સંસ્કારોના કારણે નાનપણથી જ પ્રેમાળ, દયાળુ તથા સૌને મદદરૂપ થવાના ઉમદાં ગુણો ધરાવતાં હતાં. ધર્મમાં અખૂટ શ્રદ્ધા અને જરૂરીયાતમંદોને મદદ કરવાની પ્રખર ઈચ્છાએ એમને સમાજકલ્યાણના અનેક કાર્યો કરવા પ્રેર્યાં. આ કાર્યોમાં બાપાજીએ એમને સંપૂર્ણ સહકાર આપ્યો અને પ્રોત્સાહિત કર્યાં. કુટુંબમાં “બાઈ”થી ઓળખાતા કરુણાની આ મૂર્તિએ ગરીબગુરબાં પર અપાર અમિ દષ્ટિ ફેરવી; કંઈકને ભાગાવ્યા; તથા નાની મોટી અનેક સંસ્થાઓમાં ઘૂટે હાથે ગુપ્તદાન કર્યાં.

કરુણાની આ જ્યોત મહાવિસ્તારને પામે તે પહેલાં જ ઈ.સ.૧૯૬૪ના ઓગસ્ટ માસની ૧૬મી તારીખે તેમનું નિધન થયું.

દયા, ધર્મને નીતિપરાયાણતાની ગળથુંથીમાંથી જ સમજાણ આપી કરુણાની મૂર્તિ “બાઈ”એ એમના પરિવારને પીડિતોના ઉદ્ધાર અર્થે પ્રવૃત્તિઓ કરવા પ્રેર્યાં. આ સમજાણનો વારસો સમસ્ત મહેતા પરિવારે અખંડ દીવાની જેમ જતનથી સાચવી રાખ્યો છે.

વાત્સલ્યમૂર્તિ સમા પૂજ્ય “બાઈ”ની મીઠી યાદમાં એમના સુપુત્રો : શ્રી. વિજયભાઈ, શ્રી. પ્રબોધભાઈ, શ્રી. કિશોરભાઈ તથા શ્રી રશ્મિભાઈ તથા અન્ય કુટુંબીજનો તરફથી મુંબઈમાં અત્યંત આધુનિક ‘લીલાવતી કીર્તિલાલ મહેતા હોસ્પિટલ એન્ડ મેડિકલ રીસર્ચ સેન્ટર’ ટૂંક સમયમાં શરૂ થશે જે અનેકોના આશીર્વાદ મેળવશે.

આ નારી રત્નને સૌના વંદન !!!



સ્વ. પૂજ્ય ગુરુદેવ મુનિરાજ શ્રી ૧૦૦૮ ભુવનવિજયજી મહારાજની

### સંક્ષિપ્ત જીવનરેખા

[પૂ. મુ. શ્રી જંબૂવિજયજી મહારાજે સંશોધિત-સંપાદિત કરેલા તથા ભાવનગરની જેન આત્માનંદસભાએ વિક્રમ સંવત્ ૨૦૨૨માં પ્રકાશિત કરેલા આચાર્યશ્રી મહાવાદિક્ષમાશ્રમાણ વિરચિત દ્વાદશારનયચક્રના પ્રથમ ભાગમાં જંબૂવિજયજી મહારાજના ગુરુદેવ પૂજ્યપાદ મુનિરાજશ્રી ભુવનવિજયજી મહારાજનું જે સંક્ષિપ્ત જીવનચરિત્ર શ્રી જેન આત્માનંદ સભાએ આપ્યું છે તે અહીં અક્ષરશઃ આપવામાં આવે છે.]

પરમપૂજ્ય ગુરુદેવ ભુવનવિજયજી મહારાજનું મૂળ સંસારી નામ ભોગીલાલભાઈ હતું. બહુચરાજી (ગુજરાત) પાસેનું દેથળી ગામ એ તેમનું મૂળ વતન, પણ કુટુંબ ઘણું વિશાળ હોવાના કારણે તેમના પિતાશ્રી મોહનલાલ જોઈતારામ શંખેશ્વરતીર્થ પાસે આવેલા માંડલ ગામમાં કુટુંબની બીજી દુકાન હોવાથી ત્યાં રહેતા હતા. શ્રી મોહનલાલભાઈનો લગ્નસંબંધ માંડલ ખાતે જ ડામરશીભાઈના સુપુત્રી ડાહીબેન સાથે થયેલો હતો. ભોગીલાલભાઈનો જન્મ પણ વિ. સં. ૧૯૫૧માં શ્રાવણવદિ પંચમીને દિવસે માંડલમાં જ થયેલો. ડાહીબેનમાં ધાર્મિક સંસ્કારો સુંદર હતા અને ઘર પણ ઉપાશ્રય નજીક જ હતું એટલે અવાર નવાર સાધુ-સાધ્વીજીના સમાગમનો લાભ મળતો હતો.

એક વખતે શ્રી ભોગીલાલભાઈ પારણામાં સૂતા હતા તેવામાં તે સમયમાં અત્યંત પ્રભાવશાલી પાયચંદ્રગચ્છીય શ્રી ભાયચંદજી (ભાતુચંદ્રજી) મહારાજ અચાનક ઘેર આવી ચડ્યા. શ્રી ભોગીલાલભાઈની મુખમુદ્રા જોતાં જ તેમણે ડાહીબેનને ભવિષ્યકથન કર્યું કે આ તમારો પુત્ર અતિમહાન્ થશે-ખૂબ ધર્મોદ્ધયોત કરશે એમઆપણે જાણીએ છીએ કે ૭૦ વર્ષ પૂર્વે ઉચ્ચારાયેલી આ ભવિષ્યવાણી અક્ષરશઃ સાચી નીવડી છે.

શ્રી ભોગીલાલભાઈની બુદ્ધિપ્રતિભા અને સ્મરણશક્તિ બાલ્યાવસ્થાથી જ અત્યંત તેજસ્વી હતાં. સામાન્ય વાંચનથી પણ નિશાળના પુસ્તકોના પાઠો એમને લગભગ અક્ષરશઃ કંઠસ્થ થઈ જતા. નિશાળ છોડ્યા પછી ચાલીસ-ચાલીસ વર્ષ વીતી ગયા બાદ પણ એ પાઠ અને કવિતાઓમાંથી અક્ષરશઃ તેઓ કહી સંભળાવતા હતા. બાલ્યાવસ્થાથી જ જ્ઞાનપ્રેમ એમના જીવનમાં અત્યંત વાણાઈ ગયેલો હતો. વ્યવહારમાં પણ એમની કુશળતા અતિપ્રશંસનીય હતી. પરીક્ષાશક્તિ તો એમની અજોડ હતી.

પંદર-સોળ વર્ષની ઉંમરે ઝીંઝુવાડાના વતની શા. પોપટલાલ ભાયચંદનાં સુપુત્રી મણિબેન સાથે એમનો લગ્નસંબંધ થયો હતો. મણિબેનનાં માતૃશ્રી બેનીબેન ખૂબ જ ધર્મપરાયણ આત્મા હતા. તેમનું કુટુંબ આજે પણ ઝીંઝુવાડામાં ધર્મઆરાધનામાં શ્રેષ્ઠ

ગણાય છે. તેમનાં કુટુંબનાં સંતાનોમાંથી ઘણા જ પુણ્યાત્માઓએ દીક્ષા લઈને જિનશાસનની ખૂબ પ્રભાવના કરી છે અને આજે પણ પ્રભાવના કરી રહ્યા છે. આ રીતે ધર્મસંસ્કારોથી સુવાસિત ધર્મપત્નીના સુયોગથી તેમ જ માતા તરફથી મળેલા ધર્મસંસ્કારોના સુયોગથી તેમના જીવનમાં સોનામાં સુગંધનો યોગ થયો હતો. માંડલથી શંખેશ્વરજી તીર્થ ઘણું નજીક હોવાથી શ્રીશંખેશ્વરજીતીર્થ ઉપર પ્રારંભથી જ એમના હૃદયમાં અપાર ભક્તિભાવ હતો. શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ ભગવાનના ભોગીલાલભાઈ જીવનના પ્રારંભથી જ પરમ ઉપાસક હતા.

ભોગીલાલભાઈ સત્તર વર્ષની વયે માંડલ છોડી મૂળ વતન દેથળી ગયા. ત્યાં લગભગ બે વર્ષ રહી અમદાવાદ ગયા અને ધંધામાં જોડાયા. તેમને બીજા પણ બે નાના ભાઈઓ અને એક બહેન છે કે જેઓ અમદાવાદમાં રહે છે. વિ. સં. ૧૯૭૯માં મહા સુદિ ૧ ને દિવસે અઢાવીસમાં વર્ષે તેમને મણિબાઈની કુશિથી પુત્રરત્નની પ્રાપ્તિ થઈ જે હાલ મુનિરાજશ્રી જંબૂવિજયજી ના નામથી પ્રસિદ્ધ છે. પુત્ર ચાર વર્ષની વયનો થતાં બત્રીસમે વર્ષે તેમણે સંપૂર્ણ બ્રહ્મચર્ય પાલનની પ્રતિજ્ઞા લીધી. યુવાવસ્થા, સર્વ પ્રકારની સાધનસંપત્તતા, અનુકૂળ વાતાવરણ આ બધાં સંયોગો વચ્ચે પણ આજીવન બ્રહ્મચર્યવ્રતની પ્રતિજ્ઞા સ્વીકારવી એ શ્રી ભોગીલાલભાઈમાં રહેલા દૃઢ આત્મબળની સાક્ષી પુરે છે.

આંતરિક અભિરૂચિ, ધરનું ધાર્મિક વાતાવરણ તેમજ સદ્ગુરુ આદિના સતત સંસર્ગ અને પ્રેરણાને પરિણામે ભોગીલાલભાઈનો પ્રભુભક્તિ, ધાર્મિક આચરણ તથા તપ-જપાદિ આરાધના તરફનો ઝોક વધતો ગયો. તેમણે શ્રી સિદ્ધાચળની નવાણું યાત્રા કરી. બીજાં ઘણાં તીર્થસ્થળોની યાત્રા કરી. તેમજ હૃદયમાં ઉડે ઉડે પણ દીક્ષાની ભાવના પ્રગટવાથી ધાર્મિક તેમજ સંસ્કૃત અભ્યાસ પણ શરૂ કર્યો. દીક્ષા લીધા પહેલાં જ સંસ્કૃતભાષાનું તથા કાવ્યાદિનું સારું એવું જ્ઞાન એમણે સંપાદન કરી લીધું હતું.

પૂ. આ. શ્રી વિજય સિદ્ધિસૂરીશ્વરજી દાદાના પટ્ટાલંકાર પૂ. આ. શ્રી વિજય મેઘસૂરીશ્વરજી મહારાજ ઉત્તમ ચારિત્રપાત્ર ગંભીર અને જ્ઞાની સત્પુરુષ હતા. તેમની ધર્મદેશના ઉચ્ચ કોટિની ગણાતી હતી. ભોગીલાલભાઈના હૃદય તથા જીવન ઉપર તેની ઘણી અસર થઈ હતી અને તેથી એ તેમના પરમ ભક્ત બન્યા હતા. વિ. સં ૧૯૮૮ માં શ્રી ભોગીલાલભાઈની દીક્ષાની ભાવના બળવત્તર બની, પણ પુત્ર દશ વર્ષનો હતો તેમજ તેમના પોતાના માતા-પિતા વગેરે પણ હેયાત હતા. તેઓ બધાં આ બાબતમાં સંમતિ આપે કે કેમ તે શંકાસ્પદ હકીકત હતી. એટલે તેમણે ગુમ રીતે જ અમદાવાદમાં પૂ. આ. શ્રી વિજય સિદ્ધિસૂરીશ્વરજી દાદાના વરદ હસ્તે વિ. સં ૧૯૮૮ ના જોઠ વદિ છઠને દિવસે દીક્ષા લીધી અને પૂ. આ. શ્રી વિજય મેઘસૂરીશ્વરજી મહારાજના શિષ્ય તરીકે તેમને સ્થાપવામાં આવ્યા અને મુનિરાજશ્રી ભુવનવિજયજી તરીકે પ્રસિદ્ધ થયા.

સંયમી જીવનમાં પણ નિરતિચારપણે ચારિત્રપાલન કરતાં તેમણે સારી સુવાસ ફેલાવી હતી. અપ્રમત્તભાવે સતત જ્ઞાનઉપાસના એ એમની એક મોટી વિશિષ્ટતા હતી. દ્રવ્યાનુયોગ, કર્મસાહિત્ય આદિનો અભ્યાસ કરવા ઉપરાંત આગમસાહિત્યનું અવગાહન એમણે શરૂ

કર્મ અને અલ્પસમયમાં જ તેમણે શાસ્ત્રોનું ઉડું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરી લીધું હતું. આગમસાહિત્ય પ્રભુની મંગળવાણીરૂપ હોવાને લીધે તેના ઉપર તેમને ઘણો જ અનુરાગ હતો. જીવન દરમ્યાન ૪૫ આગમોમાંથી મોટા ભાગના આગમોનું ટીકા સાથે તેમણે વાંચન-મનન કર્યું હતું. કેટલાંક આગમોનું તેમણે અનેકવાર વાંચન-મનન કર્યું હતું.

દઢ મનોબળ, અપ્રમત્તતા, નિઃસ્પૃહતા, નિરભિમાનિતા, ઉચ્ચ સંકલ્પ, અખૂટ સત્ત્વ, જીવદયા માટેની પ્રબળ લાગણી, નિર્ભયતા, શૂરવીરતા, અત્યંત નિર્મળ ચારિત્ર, સતત જ્ઞાન ઉપાસના તથા ઉત્કટ પ્રભુભક્તિ આ એમના જીવની ખાસ વિશિષ્ટતાઓ હતી.

જિનેશ્વરદેવોના પરમકલ્યાણકર સંદેશનો જગતમાં ખૂબજ પ્રચાર અને પ્રસાર થાય એ માટે એમના હૃદયમાં ઘણી જ પ્રબળ ધગશ હતી.

વિ. સ. ૧૮૮૩ માં તેમના સંસારી પુત્રે પાણ રતલામ (મધ્યપ્રદેશ)માં પંદર વર્ષની વયે પૂ. શ્રી ભુવનવિજયજી મહારાજ પાસે પરમ ભાગવતી દીક્ષા વૈશાખ શુદ્ધિ ૧૩ ના દિવસે સ્વીકારી અને મુનિરાજ શ્રી જંબૂવિજયજી તરીકે પ્રસિદ્ધિ પામ્યા. વિ. સં. ૧૮૮૫ માં સંસારી પત્ની મણિબહેને પાણ તેઓશ્રીના જ સુહસ્તે દીક્ષા સ્વીકારી અને તેમનું નામ સાધ્વીશ્રી મનોહરશ્રીજી રાખવામાં આવ્યું.

મુનિરાજશ્રી જંબૂવિજયજી તીવ્ર બુદ્ધિવાળા હોવાથી તેમને ઘડવા માટે પૂજ્ય મહારાજશ્રીએ પૂરતો પ્રયાસ કર્યો. કમાઉ પુત્રને કયો પિતા સ્નેહથી ન નવરાવે ? તેમજ તેજસ્વી શિષ્યથી કયા ગુરુ હર્ષોદ્રેક ન પામે ? તેમાંય મુનિશ્રી જંબૂવિજયજી તો સંસારીપણાના પુત્ર, લોહીનો સંબંધ. કૂવાના મધુર જળને જુદી જુદી નીક દ્વારા કુશળ ખેડૂત પોતાના ક્ષેત્રને હરિયાળું બનાવે તેમ મુનિરાજશ્રી જંબૂવિજયજીને જ્ઞાન, દર્શન અને ચારિત્રરૂપી ત્રિવેણીના મંગળધામ સમાન બનાવ્યા. કુશળ શિલ્પી મનોહર મૂર્તિ બનાવવા માટે વર્ષોનો પરિશ્રમ સેવે અને પોતાની સર્વ શક્તિનો વ્યય કરે, તેમ ભવિષ્યના મહાન ચિંતક અને દર્શનકાર તેમજ નૈયાયિક મુનિરાજશ્રી જંબૂવિજયજીના ઘડતર માટે સ્વર્ગસ્થ ગુરુદેવે અહર્નિશ પ્રેમભાવે અવિરત પ્રયત્ન કર્યો હતો. અને આજે મુનિરાજશ્રી જંબૂવિજયજીનું નામ વિદ્વાન-ગણમાં મોખરે છે. તેઓ તિબેટી, ઈંગ્લીશ વિગેરે અનેક દેશી વિદેશી ભાષા જાણે છે અને નયચક જેવા દુર્ઘટ ગ્રંથનું સંપાદન કરી રહ્યા છે.

નયચક જેવા સ્યાદ્વાદન્યાયરૂપી ઉચ્ચકોટિના ગ્રંથનું સંપાદનકાર્ય કેટલી જહેમત અને સર્વદિશાની વિદ્વત્તા માગી લે છે તે, તે વિષયના જ્ઞાતા જ સંપૂર્ણરિતે સમજી શકે. નયચક ના સાંગોપાંગ સંપાદન માટે તેઓશ્રીએ તિબેટની ભાષાનો અભ્યાસ કર્યો અને ઓગણીસ વર્ષના સતત પરિશ્રમ પછી નયચક નો પ્રથમ વિભાગ જે અત્યારે પ્રકાશિત થઈ રહ્યો છે, તેનો યશ આત્માનંદ સભાને જ સાંપડ્યો છે જે ખરેખર સભાને માટે અત્યંત ગૌરવનો વિષય છે.

મુનિરાજશ્રી ભુવનવિજયજીને સર્વ પ્રકારે સમર્થ જાણી પૂ. ગુરુદેવે તેમને અલગ વિચરવા આજ્ઞા આપી. જેને પરિણામે તેઓએ મારવાડ, માળવા, મહારાષ્ટ્ર, ખાનદેશ,

વરાડ, ગુજરાત તથા સૌરાષ્ટ્રની ભૂમિને વિહારથી પાવન કરી અને સ્થળે સ્થળે આવતાં તીર્થસ્થાનોની સ્પર્શના કરીને સ્વચ્છવનને સાર્થક બનાવ્યું.

પૂ. શ્રી ભુવનવિજયજી મહારાજમાં જ્ઞાનપ્રાપ્તિનો તેમજ જ્ઞાનદાનનો ઘણો અનુરાગ હતો. ખાસ કરીને આગમ સાહિત્યનો તેમને ઘણો જ પ્રેમ હતો. તેઓ ઈચ્છતા હતા કે, દરેક આગમો મૂળમાત્ર સંપૂર્ણ શુદ્ધ દશામાં પ્રગટ થાય. જેથી અભ્યાસીઓને આગમ-જ્ઞાન સંબંધી અધ્યયન સરળ રીતે થઈ શકે. આ દિશામાં તેઓશ્રીએ કાર્ય કરવાની ઈચ્છા સેવેલી, પણ તે ઈચ્છા પાર પડે તે પહેલાં તો તેઓ સ્વર્ગસ્થ થયા. આશા રાખીએ કે વિદ્વાન શિષ્ય પૂ. મુનિરાજશ્રી જંબૂવિજયજી આ કાર્ય હાથ ધરી સ્વર્ગસ્થની મનઃકામના પૂર્ણ કરે.

મહારાષ્ટ્રના વિહાર દરમિયાન નાશિક જીલ્લાના ચંદનપુરી તથા સમશુંગી બંને ગામોમાં દેવીના મેળા પ્રસંગે બલિવધ કરાતો અને હજારો પશુઓ અકાળે મૃત્યુના મુખમાં હોમાતા. વિક્રમ સંવત્ ૨૦૦૮ માં પૂ. ગુરુદેવે આ ભીષણ હત્યાકાંડ અટકાવવા કમર કસી ઉપદેશ કર્યો અને તેઓશ્રીના પુરુષાર્થને પરિણામે તે તે સ્થળોમાં અનેક પશુઓની હત્યા અટકી છે અને અહિંસા પરમો ધર્મ! નો નાદ આજે ગુંજતો થયો છે.

પાલીતાણા ખાતે જ્યારે બારોટના હક્ક સંબંધી પ્રશ્ન ઉદ્ભવેલો ત્યારે પણ તેઓશ્રીએ મક્કમપણે વિરોધ દર્શાવેલો અને તેમની સુંદર કાર્યવાહીથી તેનું ઘણું સાફ પરિણામ આવેલું. તેઓશ્રીનું મનોબળ ઘણું જ મજબૂત હતું અને જે પ્રશ્ન હાથમાં લેતા તેનો સુંદર નિકાલ લાવવામાં તેઓ હંમેશા તત્પર રહેતા.

વય વધતી જતી હતી અને તેની અસર ક્ષણભંગુર દેહ પર થતી જાણાતી હતી, પરંતુ આત્મબળ પાસે દેહને પરાભવ પામવો પડતો હતો. શ્રી સિદ્ધાચળજીની યાત્રા કર્યાબાદ છેલ્લા ત્રણ-ચાર વર્ષથી શ્રી શંખેશ્વરજીના સાનિધ્યમાં રહેવાનું તેમનું રટન હતું. જામનગરમાં દમનો ઉપદ્રવ થયો, શરીર કથળતું ચાલ્યું, થોડું ચાલે ત્યાં શ્વાસ ચડે, વળી થોડો વિસામો ખાય અને ચાલે, પણ ડોળીનો આશ્રય લેવાની છેછી ઘડી સુધી તેમણે ના જ પાડી. વિહાર કરતાં કરતાં ઝીંઝુવાડા પહોંચ્યા. ઝીંઝુવાડાથી વિહાર કરીને સં. ૨૦૧૫ ની પોષ વદિ ત્રીજે શ્રી શંખેશ્વરજી આવ્યા. મનનો ઉદ્ધાસ વધી ગયો અને હંમેશાં બપોરના જિનાલયમાં જઈ પરમાત્માની શાંતરસ ઝરતી પ્રતિમા સન્મુખ બેસી પેટ ભરીને ભક્તિ કરતા. જાણે ભક્તિ કરતાં ધરાતા જ ન હોય તેમ તેનો નિત્યક્રમ થઈ ગયો અને ભક્તિ-ધારા અવિરત વહેવા લાગી.

સાધ્વીશ્રી મનોહરશ્રીજી પણ શંખેશ્વરજી આવી પહોંચ્યા હતા. વંસતપંચમીના રોજ પૂ. ગુરુદેવે એક બહેનને દીક્ષા આપી સાધ્વીશ્રી મનોહરશ્રીજીની શિષ્યા બનાવી. વચ્ચે-વચ્ચે શ્વાસનો ઉપદ્રવ રહ્યા કરતો હતો, પણ મહા સુદિ ૬ થી અશક્તિ વધી. આ સમયમાં આ. શ્રી ચંદ્રસાગરસૂરિજી મ. વગેરે ૧૦૦-૧૨૫ સાધુ-સાધ્વીનાં ઠાણાં શંખેશ્વરજીમાં બિરાજતાં હતાં. તેઓ પૂ. ગુરુદેવ પાસે તબિયતના સમાચાર પૂછવા અનેકશ:



આવતા હતા. રોજ અશક્તિ વધતી ચાલી, છતાં સાધુ-જીવનની સર્વ ક્રિયા તેમણે સ્વહસ્તે જ કરી. અષ્ટમીના દિવસે પણ શરીર વિશેષ અશક્ત થઈ ગયું, છતાં હંમેશના નિયમ મુજબની ગણવાની વીશ નવકારવાળી તેમણે ગાણી લીધી. પછી તેઓ સંધારામાં સૂઈ ગયા. પાસે બેઠેલા શ્રાવકને હાથ-પગ ઠંડા પડતા લાગ્યા, એટલે પૂ. મુનિ શ્રી જંબૂવિજયજીએ સ્તવનાદિ સંભળાવવા શરૂ કર્યા. પૂજ્ય આચાર્યશ્રી ચંદ્રસાગરસૂરિજી મ. વગેરે સાધુ-સાધ્વીજીઓ પણ આવી પહોંચ્યા અને સુંદર રીતે નિજામાણ કરાવી.

તેઓશ્રીની મનોભાવના પ્રમાણે શ્રી શંખેશ્વરજી પાર્શ્વનાથની પ્રતિમા સન્મુખ મુખારવિંદ રાખીને અરિહંતના અને શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ ભગવાનના સ્મરણમાં લીનતા પૂર્વક સમાધિલાવે. સં. ૨૦૧૫ ના મહાશુદ્ધિ અષ્ટમીએ સોમવારે રાત્રિના ૧-૧૫ કલાકે સ્વર્ગસ્થ થયા. જેવી સાધુતા તેવું જ ઉત્તમ તીર્થસ્થળ. ખરેખર અનંત પુણ્યનો ઉદય હોય ત્યારે જ આવું પુનિત મૃત્યુ પ્રાપ્ત થાય. શાન્તમૂર્તિ મુનિરાજશ્રીને અનેકશઃ વંદના.

-શ્રીજેન આત્માનંદસભા,

ભાવનગર

॥ શ્રી સિદ્ધાયલમંડન શ્રી ઋષભદેવસ્વામિને નમઃ ॥

॥ શ્રી શંખેશ્વરપાર્શ્વનાથાય નમઃ । શ્રી મહાવીરસ્વામિને નમઃ ॥

॥ શ્રી પુંડરીકસ્વામિને નમઃ ॥

॥ શ્રી ગૌતમસ્વામિને નમઃ । શ્રી સદ્ગુરુદેવાય નમઃ ॥

સંઘમાતા શતવર્ષાધિકાયુ પૂ. સાધ્વીજીશ્રી મનોહરશ્રીજી મહારાજ-  
(બા મહારાજ)નો સમાધિપૂર્ણ સ્વર્ગવાસ

## શ્રધ્ધાંજલિ

### લે. મુનિ જંબૂવિજય

અત્યંત આનંદ તથા અત્યંત દુઃખ સાથે જાણાવવાનું કે મારા પરમ ઉપકારી તીર્થસ્વરૂપ પરમપૂજ્ય સંસારી આદર્શ માતા શતવર્ષાધિકાયુ સાધ્વીજીશ્રી મનોહરશ્રીજી મહારાજ પોષ સુદિ ૧૦ બુધવારે (તા. ૧૧-૧-૮૫) રાત્રે ૮-૫૪ કલાકે સકલશ્રી સંઘના મુખેથી નવકાર મહામંત્રનુ શ્રવાણ કરતાં કરતાં આ નશ્વરદેહનો ત્યાગ કરીને પરમ પવિત્ર તીર્થાધિરાજ શ્રી શત્રુંજય તીર્થાધિપતિ આદીશ્વરદાદાની સન્મુખ મુખ રાખીને આદીશ્વરદાદાના ચરણમાં સમાધિ પામ્યા છે. અંત સમયે આવા તીર્થની પ્રાપ્તિ થવી એ અત્યંત પુણ્ય હોય તો જ બની શકે તેથી એ વાતનો અમને અત્યંત આનંદ થાય છે.

વળી મારા પરમ પરમ ઉપકારી અને તેથીજ મારા માટે પરમાત્મસ્વરૂપ મારા સંસારી પિતાશ્રી તથા સદ્ગુરુદેવ પૂજ્યપાદ મુનિરાજશ્રી ભુવનવિજયજી મહારાજ આજથી લગભગ ૩૬ વર્ષ પૂર્વે સં. ૨૦૧૫ના મહા સુદિ આઠમે શ્રી શંખેશ્વરજી તીર્થમાં સ્વર્ગમાં સીધાવ્યા, લગભગ ૩૬ વર્ષ પછી મારાં માતૃશ્રી શ્રી સિદ્ધક્ષેત્ર શત્રુંજયતીર્થમાં સ્વર્ગમાં સીધાવ્યાં એમ બંને મહાતીર્થમાં મારા માતા-પિતા સ્વર્ગે પધાર્યા એ મારા માટે મોટો આનંદનો વિષય છે.

બીજી બાજુ, મારા અનંત અનંત ઉપકારી અને માટે જ મારા માટે પરમાત્મસ્વરૂપ મારાં માતૃશ્રી ચાલ્યા જવાથી મારી માનસિક વેદનાનો પાર નથી.

ગયા વર્ષે મારા માતૃશ્રીની જન્મભૂમિ ઝીંજુવાડામાં અમે હતા ત્યારે માગશરવદિ બીજે મારાં માતૃશ્રીએ ૧૦૦માં વર્ષમાં પ્રવેશ કર્યો હતો, તે સમયે તેમની શત્રુંજય તીર્થપતિ શ્રી આદીશ્વરદાદાજીની યાત્રા કરવાની ભાવના હતી અને અમારી પણ તેમને છેલ્લી છેલ્લી યાત્રા કરાવવાની તીવ્ર ઝંખના હતી. એટલે હું, મુનિશ્રી ધર્મચંદ્રવિજયજી, મુનિશ્રી પુંડરીકરત્નવિજયજી તથા મુનિશ્રી ધર્મઘોષવિજયજી એમ અમે ચાર સાધુઓ તથા મારાં પૂ. માતૃશ્રી તથા તેમના શિષ્યા-પ્રશિષ્યા સાધ્વીજીશ્રી સૂર્યપ્રભાશ્રીજી તથા જિનેન્દ્રપ્રભાશ્રીજી આદિ આઠ સાધ્વીજીઓ શ્રી શંખેશ્વરજી તીર્થથી સં. ૨૦૫૦ના મહા સુદિ દશમે વિહાર કરી ફાગણ સુદિ સાતમે અહીં આવ્યા હતા. અહીં આવ્યા પછી તેમને થોડા થોડા સમયના અંતરે ત્રણ યાત્રાઓ કરાવી હતી, યાત્રા કરી તેઓનો આત્મા અત્યંત ધન્ય બન્યો હતો અને અમે પણ ધન્ય બન્યા હતા. શ્રી શંખેશ્વરજી તીર્થથી અમે નીકળ્યા ત્યારથી આજ સુધીમાં (મૂલ પાલનપુરના વતની, હાલ મુંબઈ નિવાસી) ઝવેરી કીર્તિલાલ માગીલાલ મહેતા (જંબલવાળા) ના પરિવારે ઘણો જ ઘણો

સેવા આદિનો લાભ લીધો છે.

ઉંમરના કારણે અવારનવાર તબિયતમાં ફેરફાર થઈ આવતો હતો, છતાં ભગવાનની કૃપાથી પાછો સુધારો થઈ જતો હતો. એટલે આ વર્ષે તેમનો ૧૦૧માં વર્ષમાં પ્રવેશ દાદાજીની પવિત્ર છાયામાંજ થાય તો સાફ એ ભાવનાથી અહીં માગશર વદિ બીજ મંગળવાર તા. ૨૦-૧૨-૮૪ સુધી રોકાયા. માગશર વદિ બીજને દિવસે તેમણે ઉપર યાત્રા કરી દાદાજીનાં દર્શન કર્યા, તેમના ચરણમાં શિર મુક્યું તેમજ આ પ્રસંગે દાદાના દરબારમાંજ ખાસ રાખેલા શ્રી ભક્તામરપૂજનમાં પણ તેઓ લગભગ ૧ કલાક સુધી બેઠા. દાદાજીનાં ખૂબ ખૂબ દર્શન કરી નીચે આવ્યા, તે પછી બપોરે આચાર્ય મહારાજ આદિ અનેક સાધુ ભગવંતોએ તેમને ખૂબ ખૂબ આશીર્વાદ આપ્યા. આ રીતે ૧૦૧માં વર્ષમાં પ્રવેશનો દિવસ ખૂબ આનંદથી પસાર થયો.

ત્યાર પછી તેમની તબિયત ધીમે ધીમે ઘસાતી ચાલી, છેલ્લા ચાર દિવસ શ્વાસ લેવામાં તકલીફ પડતી હતી, અમારી મતિ પ્રમાણે ઉપચારો કરવામાં કશી કમી રાખી નહોતી, પરંતુ નશ્વર સંસારના નિયમ અનુસારે છેવટે ૧૦૦ વર્ષ ઉપર ૨૨ દિવસનું આયુષ્ય પૂર્ણ કરીને, ૫૬ વર્ષનું સુંદર ચારિત્ર પાળીને વિશાળ ચતુર્વિધ સંઘની હાજરીમાં નમસ્કાર મહામંત્રની ધૂન વચ્ચે અમને બધાને શોકમાં નિમગ્ન કરીને મારા માતૃશ્રી સ્વર્ગમાં સીધાવ્યા છે. ભગવાન મહાવીર પરમાત્માના શાસનમાં સો વર્ષનું આયુષ્ય પૂર્ણ કરનારાં સાધ્વીજી ભાગ્યેજ થયાં છે, એટલે પ્રભુ મહાવીરના શાસનમાં ઐતિહાસિક સ્થાન પ્રાપ્ત કરીને સંઘમાતા બનીને તેમણે અનેક આત્માઓનું પરમ કલ્યાણ કર્યું છે.

અપાર વાત્સલ્યના મહાસાગર એવા તેમના હૃદયમાંથી નીકળતા આશીર્વાદોના શબ્દોનો પ્રવાહ મેળવવો એ જીવનનો આણમોલ લહાવો હતો.

## સંઘમાતા પૂજ્યપાદ શતવર્ષાધિકાયુ સાધ્વીજી શ્રી મનોહરશ્રીજી મહારાજની સંક્ષિપ્ત જીવનરેખા

વિક્રમ સંવત્ ૧૮૫૧ માગશર વદિ ૨ શુક્રવાર તા. ૧૪-૧૨-૧૮૮૪ ના દીવસે પિતાશ્રી <sup>૧</sup>શાહ પોપટલાલ ભાયચંદનાં ધર્માત્મા ધર્મપત્ની બેની બહેનની કુક્ષિથી ઝીઝીવાડામાં જન્મ ૧. શાહ પોપટલાલ ભાયચંદ તથા તેમનાં ધર્માત્મા ધર્મપત્ની બેની બહેનના પરિવારનું જૈનસંઘમાં મહત્વનું યોગદાન છે. પોપટભાઈને ઈશ્વરલાલ તથા ખેતસીભાઈ એમ બે પુત્રો તથા લક્ષ્મીબહેન, શિવકોર બહેન, મીંગુ બહેન તથા કેવળી બહેન એમ ચાર પુત્રીઓ હતા. તેમાંથી એક પુત્ર ઈશ્વરલાલ ભાઈ તથા લક્ષ્મી બહેન, મીંગુ બહેન તથા કેવળી બહેન એમ ત્રણ પુત્રીઓએ તેમના પરિવાર સાથે દીક્ષા લીધી. તેમનાં નામો દીક્ષાક્રમ અનુસારે નીચે પ્રમાણે છે. મારા મામા તપસ્વિપ્રવર મુનિરાજશ્રી વિલાસવિજયજી મ., તેમના સુપુત્ર આ.મ.શ્રી વિજય ઔકારસૂરીશ્વરજી મ., મુનિ જંબૂવિજયજી મ., આ.મ.શ્રી યશોવિજયસૂરીજી મ., જિનચંદ્રવિજયજી મ., મુનિચંદ્રવિજયજી મ., તથા રાજેશવિજયજી મ. છે.

સાધ્વીજીમાં મારાં સૌથી મોટાં માસી પૂ.સાધ્વીજીશ્રી લાલશ્રીજી મ., મારાં નાનાં માસી સાધ્વીજીશ્રી કંચનશ્રીજી મ., તેમનાં સુપુત્રીઓ લાવણ્યશ્રીજી મ. તથા વસંતશ્રીજી મ., મારાં પૂ. માતૃશ્રી સાધ્વીજીશ્રી મનોહરશ્રીજી મ., જ્યોતિપ્રભાશ્રીજી મ., કલ્પલતાશ્રીજી મ., મોક્ષરસાશ્રીજી મ. તથા તત્ત્વરસાશ્રીજી મ. છે.

થયો અને તેમનું મણિબહેન નામ રાખવામાં આવ્યું. તેમના પિતાશ્રીએ તેમનું છબલ એવું હુલામણું નામ પાડ્યું હતું. લગભગ ૧૬ વર્ષની ઉંમરે તેમનું બહુચરાજી તથા રાંતેજ તીર્થ પાસે દેશળી ગામના મૂળ વતની પરંતુ માંડલમાં રહેતા પિતાશ્રી મોહનલાલ જોઈતારામ તથા માતા શ્રી ડાહીબહેન ડામરસીભાઈના સુપુત્ર ભોગીલાલભાઈ સાથે લગ્ન થયું.

તે પછી વિક્રમ સંવત્ ૧૯૭૮ મહા વદિ ૧ બુધવાર તા. ૧૮-૧-૧૯૨૩ ના દિવસે એક પુત્રની પ્રાપ્તિ થઈ કે જેનો જન્મ તેના મોસાળ ઝીંઝુવાડામાં થયો હતો. તે પછી લગભગ બે વર્ષમાંજ બ્રહ્મચર્ય વ્રતનો બંને પતિ-પત્નીએ સ્વીકાર કર્યો.

ત્યાર પછી વિક્રમ સંવત્ ૧૯૮૮ જેઠ વદિ ૬ શુક્રવાર, તા. ૨૪-૬-૧૯૩૨ ના દિવસે ભોગીલાલભાઈએ પૂજ્યપાદ આચાર્યદેવ શ્રી વિજયસિદ્ધિસૂરીશ્વરજી (બાપજી) મહારાજ પાસે ભાગવતી દીક્ષા અંગીકાર કરી અને તેઓશ્રીના પટ્ટાલંકાર પૂજ્યપાદ આચાર્યદેવ શ્રી વિજયમેઘસૂરીશ્વરજી મહારાજના શિષ્ય થયા. તેમનું નામ મુનિરાજ શ્રી ભુવનવિજયજી મહારાજ રાખવામાં આવ્યું. તે પછી વિક્રમ સંવત્ ૧૯૮૩ વૈશાખ વદિ ૧૩, શનિવાર તા. ૨૫-૫-૧૯૩૭ ના દિવસે રતલામમાં પુત્રે પાણ ભાગવતી દીક્ષા લીધી અને તેમનું નામ મુનિશ્રી જંબૂવિજયજી રાખવામાં આવ્યું. તે પછી વિક્રમ સંવત્ ૧૯૮૫ મહાવદિ બારસે તા. ૧૫-૨-૧૯૩૯ બુધવારે મણિબહેનની પૂજ્યપાદ આચાર્યદેવ શ્રી વિજયનીતિસૂરીશ્વરજી મહારાજના હાથે અમદાવાદમાં દીક્ષા થઈ અને તેમનાં જ સંસારી મોટાં બહેન પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી લાભશ્રીજી મહારાજ (સરકારી ઉપાશ્રયવાળા) નાં શિષ્યા થયાં અને તેમનું નામ શ્રી મનોહરશ્રીજી રાખવામાં આવ્યું. દીક્ષા લીધા પછી જ્ઞાનાભ્યાસ તથા તપ-જપની આરાધના કરતાં તેઓ અનેક દેશોમાં વિચર્યા છે. સમેતશિખરજી આદિ અનેક તીર્થોની યાત્રા તથા શ્રી સિદ્ધગિરિરાજની તેમણે નવ વાર નવાણું યાત્રા કરી છે.

માસકપાણ, સોળભતું, સિદ્ધિતપ, અનેક અઢાઈઓ, ચત્તારિ-અઠ-દસ-દોય, સમવસરાણ તપ, સિંહાસન તપ, વીશસ્થાનક તપ પાંચવાર વર્ષો તપ, વર્ધમાન તપની ૬૦ ઓળી આદિ વિવિધ તપશ્રયઓ તેમણે કરી છે. તેમનો શિષ્યા પરિવાર સાધ્વીજી શ્રી સૂર્યપ્રભાશ્રીજી મહારાજ, આત્મપ્રભાશ્રીજી મ. તથા સુલસાશ્રીજી મ. વગેરે લગભગ ૪૫ જેટલો છે.

તેમની પાછલી ઉંમરમાં તેમના વિનીત શિષ્યા પરિવારે તથા તે તે ગામોના સંઘોએ તેમની અપ્રતિમ અદ્ભુત સેવા કરી છે. તે પાણ ઘાણાજ ઘાણા ધન્યવાદના અધિકારી છે.

તેમની તબિયત અસ્વસ્થ છે, એમ સાંભળતાંની સાથેજ અનેક ગામોના સંઘો હાજર થઈ ગયા હતા. સ્વર્ગવાસ થયા પછી એમની અંતિમયાત્રાની ભવ્ય ઉજવણી માટે સાગરગચ્છાધિપતિ પૂ.આ.મ. શ્રી સૂર્યોદયસાગરસૂરીશ્વજી મહારાજ આદિ અનેક આચાર્ય ભગવંતો તથા પૂ.પ. શ્રી અશોકસાગરજી મહારાજ, પં. શ્રી સોમચંદ્ર વિજયજી મહારાજ તથા મુનિરાજશ્રી ભાગ્યેશવિજયજી મહારાજ આદિ અનેક મુનિ ભગવંતોના પૂર્ણ સહકાર તથા સલાહ-સૂચન આદિ પ્રમાણે ભવ્ય તૈયારી કરવામાં આવી. પોષ સુદિ ૧૧ ગુરૂવારે તે અંગેની અનેક ઉછામણીઓ વીસા-નીમા ભવનના ઉપાશ્રયમાં બોલવામાં આવી, પાલિતાણા જૈન સંઘ તરફથી પાલિતાણા શહેરમાં ખાસ પાખી રાખવામાં આવી. ગુજરાત તથા કર્ણાટક ઘાણા ભાઈ-બહેનો આવી પહોંચ્યા. ત્રણ વાગે 'જય જય નંદા, જય જય ભદ્રા'ના દિવ્ય

ધ્વનિ સાથે તેમની અંતિમ યાત્રા નીકળી હતી.

હાથી ઉપર તેમનો ભવ્ય ફોટો તથા પાલખીમાં તેમનો દેહ પધરાવીને અંતિમ યાત્રા ફરતી ફરતી પાલિતાણા શહેરમાં ફરીને છેવટે **આદિનાથ મનોહરશ્રી જૈન સોસાયટીમાં** આવી અને ત્યાં વિમલગચ્છાધિપતિ પં. **પ્રદ્યુમ્નવિમલજી** મહારાજના સંપૂર્ણ સહકારથી ત્રિસ્તુતિક તપસ્વિપ્રવરશ્રી **રવીન્દ્રવિજયજી** મહારાજ (અવધૂત) તરફથી આ કાર્ય નિમિત્તે ભેટ મળેલા વિશાળ ખોટમાં મૂળ ઝીંઝુવાડાના વતની ગોકુળ આઈસ્ક્રીમવાળા **નવીનભાઈ બાબુલાલ કુબેરદાસ ગાંધી**એ મોટી બોલી બોલીને અગ્નિ સંસ્કારની પવિત્ર વિધિ કરી હતી. આ પ્રસંગે જીવદયાની ટીપ આદિ અનેક અનેક ધર્માનુષ્ઠાનો થયાં છે. દેવવંદનમાં ૧૦૦ જેટલાં સાધ્વીજી ભગવંત પધારેલાં હતાં. રાજકોટથી આવેલા શ્રી **શશિકાંતભાઈ કીરચંદભાઈ મહેતા**એ મારાં માતૃશ્રીને **સંઘમાતા** વિશેષાગૃથી વિભૂષિત કર્યાં હતાં.

આ નિમિત્તે સંઘમાતા સાધ્વીજી શ્રી **મનોહરશ્રીજી** મહારાજના ગુણાનુવાદની સભા પાલિતાણામાં બિરાજમાન સાધુ ભગવંતોએ **જંબૂદ્વીપ આરાધના ભવનમાં** પોષ સુદિ ૧૪ રવિવારે (તા. ૧૫-૧-૮૫) બપોરે ત્રણ વાગે રાખેલી હતી તથા પોષ વદિ ૧ મંગળવારથી પોષ વદિ ૫ શનિવાર સુધી પંચાંગિક શ્રી **જિનેન્દ્રભક્તિમહોત્સવ** તેમના શિષ્યાપરિવાર તથા ભક્તપરિવાર તરફથી રાખવામાં આવ્યો હતો.

પોષ વદિ ૫ શનિવારે શ્રી **સિદ્ધચક્ર મહાપૂજન** દાદાના દરબારમાં રાખવામાં આવ્યું હતું તથા દાદાની સુવાર્ણથી ભવ્ય અંગ રચના કરવામાં આવી હતી. શ્રી સિદ્ધચક્રપૂજન ભણાવવા રાજકોટવાળા **શશિકાંતભાઈ મહેતા** આદિ પધાર્યા હતા.

હું તો આ માતા-પિતારૂપી પરમાત્મામાં સમાઈ ગયો છું અને એ દ્વારા જ તીર્થંકર અરિહંત પરમાત્મામાં સમાઈ જવું એ મારા જીવનનું સંપૂર્ણ ધ્યેય છે. આ ધ્યેયને પૂર્ણ કરવામાં પરમાત્મા મને સંપૂર્ણ સહાય કરે એવી અંતઃક્રણપૂર્વક શ્રી **આદીશ્વરદાદા** તથા શ્રી **શંભેશ્વર પાર્શ્વનાથ** ભગવાનને પ્રાર્થના કરું છું.

આ શ્રીસિદ્ધહેમચંદ્રશબ્દાનુશાસનરહસ્યવૃત્તિનું મુદ્રાગૃથઈ ગયા પછી મારાં પરમાત્મસ્વરૂપ પૂ. માતૃશ્રીનો સ્વર્ગવાસ થયો હોવાથી આ શ્રદ્ધાંજલિ અહિં આપી છે.

સં. ૨૦૫૧, મહા સુદિ ૧ મંગળવાર.

તા. ૩૧-૧-૮૫

વીસાનીમા ભવન જૈન ઉપાશ્રય, તળેટી રોડ,  
પાલિતાણા - ૩૬૪ ૨૭૦ (ગુજરાત રાજ્ય).

श्रीसिद्धाचलमण्डन श्री ऋषभदेवस्वामिने नमः ।  
 श्री शान्तिनाथाय नमः । श्री नेमिनाथाय नमः ।  
 श्री शङ्खेश्वरपार्श्वनाथाय नमः । श्री महावीरस्वामिने नमः ।  
 श्री पुण्डरीकस्वामिने नमः । श्रीगौतमस्वामिने नमः ।  
 श्री सद्गुरुभ्यो नमः ।  
 ॐ श्री'ह्री'अर्ह'नमः ।  
 आचार्यभगवत्-कलिकालसर्वज्ञ-श्री हेमचन्द्रसूरिप्रणीतं

# श्री सिद्धहेमचन्द्रशब्दानुशासनम् ।

[सप्ताध्यायात्मकः सूत्रपाठः]  
 [अथ प्रथमाध्याये प्रथमः पादः]

- |   |  |
|---|--|
| (१) अर्ह'॥                                      | (१३) आद्य-द्वितीय-श-ष-सा               |
| (२) सिद्धिः स्याद्वादात्                        | अघोषाः                                 |
| (३) लोकात्                                      | (१४) अन्यो घोषवान्                     |
| (४) औदन्ताः स्वराः                              | (१५) य-र-ल-वा अन्तस्थाः                |
| (५) एक-द्वि-त्रिमात्रा ह्रस्व-<br>दीर्घ-प्लुताः | (१६) अं-अः-क-७प-श-ष-<br>साः शिट्       |
| (६) अनवर्णा नामी                                | (१७) तुल्यस्थाना-ऽऽस्यप्रयत्नः<br>स्वः |
| (७) लृदन्ताः समानाः                             |  |
| (८) ए-ऐ-ओ-औ सन्ध्यक्षरम्                        | (१८) स्यौ-जसमौ-शस्-टा-                 |
| (९) अं-अः अनुस्वार-विसर्गौ                      | भ्याम्-भिस्-डे-भ्याम्-                 |
| (१०) कादिव्यञ्जनम्                              | भ्यस्-ङसि-भ्याम्-भ्य                   |
| (११) अपञ्चमान्तस्थो धुट्                        | स्-ङसोसाम्-ङ्योस्-                     |
| (१२) पञ्चको वर्गः                               | सुपां त्रयी त्रयी प्रथमादिः            |



|                              |                                |
|------------------------------|--------------------------------|
| (१९) स्त्यादिर्विभक्तिः      | (३१) चादयोऽसत्त्वे             |
| (२०) तदन्तं पदम्             | (३२) अधणूतस्वाद्या शसः         |
| (२१) नाम सिदयव्यञ्जने        | (३३) विभक्ति-थमन्तत-           |
| (२२) नं क्ये                 | साद्याभाः                      |
| (२३) न स्तं मत्वर्थे         | (३४) वत्-तस्याम्               |
| (२४) मनुर्नभोऽङ्गिरो वति     | (३५) क्त्वा-तुमम्              |
| (२५) वृत्त्यन्तोऽसषे         | (३६) गतिः                      |
| (२६) सविशेषणमाख्यातं         | (३७) अप्रयोगीत्                |
| वाक्यम्                      | (३८) अनन्तः पञ्चम्याः प्रत्ययः |
| (२७) अधातु-विभक्ति-वाक्य-    | (३९) इत्यतु संख्यावत्          |
| मर्थवन्नाम                   | (४०) बहु-गणं भेदे              |
| (२८) शिर्षुट्                | (४१) क-समासेऽध्यर्द्धः         |
| (२९) पुं-स्त्रियोः स्यमौ-जस् | (४२) अर्द्धपूर्वपदः पूरणः      |
| (३०) स्वरादयोऽव्ययम्         |                                |

### [प्रथमाध्याये द्वितीयः पादः]

|                              |                         |
|------------------------------|-------------------------|
| (१) समानानां तेन दीर्घः      | कम्बल-वत्सर-वत्सतर-     |
| (२) ऋलृति ह्रस्वो वा         | स्याऽऽर्                |
| (३) लृत् रूलृ ऋलृभ्यां वा    | (८) ऋते तृतीयासमासे     |
| (४) ऋतो वा , तौ च            | (९) ऋत्यारूपसर्गस्य     |
| (५) ऋस्तयोः                  | (१०) नाम्नि वा          |
| (६) अवर्णस्येवर्णादिनैदोदरल् | (११) लृत्प्याल् वा      |
| (७) ऋणे प्र-दशार्ण-वसन-      | (१२) ऐदौत् सन्ध्यक्षरैः |

|                                      |   |
|--------------------------------------|---|
| (१३) ऊटा                             | (२८) गोर्नाम्यवोऽक्षे                         |
| (१४) प्रस्यैषैष्योढोढ्यूहे स्वरेण    | (२९) स्वरे वाऽनक्षे                           |
| (१५) स्वैर-स्वैर्यक्षौहिण्याम्       | (३०) इन्द्रे                                  |
| (१६) अनियोगे लुगेवे                  | (३१) वाऽत्यसन्धिः                             |
| (१७) वौष्ठौतौ समासे                  | (३२) प्लुतोऽनितौ                              |
| (१८) ओमाडि                           | (३३) इ ३ वा                                   |
| (१९) उपसर्गस्यानिणेधेदोति            | (३४) ईदूदेद् द्विवचनम्                        |
| (२०) वा नाम्नि                       | (३५) अदोमु-मी                                 |
| (२१) इवणादिरस्वे स्वरे य-व-र-<br>लम् | (३६) चादिः स्वरोऽनाङ्                         |
| (२२) ह्रस्वोऽपदे वा                  | (३७) ओदन्तः                                   |
| (२३) एदैतोऽयाय्                      | (३८) सौ नवेतौ                                 |
| (२४) ओदैतोऽवाव्                      | (३९) ऊँ चोज्                                  |
| (२५) व्यक्ये                         | (४०) अञ्ज्वर्गात् स्वरे वोऽसन्                |
| (२६) ऋतो रस्तद्धिते                  | (४१) अ-इ-उ-वर्णस्यान्तेऽनु-<br>नासिकोऽनीदादेः |
| (२७) एदोतः पदान्तेऽस्य लुक्          |   |

### [प्रथमाध्याये तृतीयः पादः]

|                       |  |
|-----------------------|--|
| (१) तृतीयस्य पञ्चमे   | (६) श-ष-से श-ष-सं वा                                       |
| (२) प्रत्यये च        | (७) च-ट-ते सद्वितीये                                       |
| (३) ततो हश्चतुर्थः    | (८) नोऽप्रशानोऽनुस्वारा-ऽनु-<br>नासिकौ च पूर्वस्याऽधुट्परे |
| (४) प्रथमादधुटि शश्छः | (९) पुमोऽशिट्यघोषेऽख्यागि रः                               |
| (५) रः कख-पफयोःऋक-७पौ |  |

- (१०) नूनः पेषु वा (३१) हार्दह-स्वरस्याऽनु नवा  
 (११) द्विः कानः कानि सः (३२) अदीर्घाद् विरामैकव्यञ्जने  
 (१२) स्सटि समः (३३) अञ्वर्गस्यान्तस्थातः  
 (१३) लुक् (३४) ततोऽस्याः  
 (१४) तौ मु-मो व्यञ्जने स्वौ (३५) शिटः प्रथम-द्वितीयस्य  
 (१५) म-न-य-व-लपरे हे (३६) ततः शिटः  
 (१६) सम्राट् (३७) नरात् स्वरे  
 (१७) इ-णोः क-टावन्तौ शिटि (३८) पुत्रस्याऽऽदिन्-पुत्रादि-  
 नवा न्याक्रोशे  
 (१८) इनः सः त्सोऽश्चः (३९) प्रां धुङ्वर्गेऽन्त्योऽपदान्ते  
 (१९) नः शिश्च (४०) शिङ्-हेऽनुस्वारः  
 (२०) अतोऽति रोरुः (४१) रो रे लुग् दीर्घश्चाऽदिदुतः  
 (२१) घोषवति (४२) ढस्तङ्ढे  
 (२२) अवर्ण-भो-भगो- (४३) सहि-वहेरोच्चाऽवर्णस्य  
 ऽघोर्लुग-सन्धिः (४४) उदः स्था-स्तम्भः सः  
 (२३) व्योः (४५) तदः सेः स्वरे पादार्था  
 (२४) स्वरे वा (४६) एतदश्च व्यञ्जनेऽनग्-  
 (२५) अस्पष्टाववर्णात्त्वनुजि वा नञ्समासे  
 (२६) रोर्यः (४७) व्यञ्जनात् पञ्चमा-ऽन्त-  
 (२७) ह्रस्वान्ङ-ण-नो द्वे स्थायाः सरूपे वा  
 (२८) अनाङ्-माङो दीर्घाद् वा (४८) धुटो धुटि स्वे वा  
 छः (४९) तृतीयस्तृतीय-चतुर्थे  
 (२९) पुताद् वा (५०) अघोषे प्रथमोऽशिटः  
 (३०) स्वरेभ्यः (५१) विरामे वा

|                               |                                     |
|-------------------------------|-------------------------------------|
| (५२) न सन्धिः                 | (६०) तवर्गस्य श्रवर्ग-ष्टवर्गाभ्यां |
| (५३) रः पदान्ते विसर्गस्तयोः  | योगे च-टवर्गौ                       |
| (५४) ख्यागि                   | (६१) सस्य श-षौ                      |
| (५५) शिट्यघोषात्              | (६२) न शात्                         |
| (५६) व्यत्यये लुग् वा         | (६३) पदान्ताष्टवर्गादिनाम्-         |
| (५७) अरोः सुपि रः             | -नगरी-नवतेः                         |
| (५८) वाऽहर्पत्यादयः           | (६४) षि तवर्गस्य                    |
| (५९) शिट्याद्यस्य द्वितीयो वा | (६५) लि लौ                          |

### [प्रथमाध्याये चतुर्थः पादः]

|                             |                                |
|-----------------------------|--------------------------------|
| (१) अत आः स्यादौ जस्-       | (११) द्वन्द्वे वा              |
| भ्याम्-ये                   | (१२) न सर्वादः                 |
| (२) भिस ऐस्                 | (१३) तृतीयान्तात् पूर्वा-ऽवरं  |
| (३) इदमदसोऽक्येव            | योगे                           |
| (४) एद् बहुस्मोसि           | (१४) तीयं डित्कार्ये वा        |
| (५) टा-डसोरिन-स्यौ          | (१५) अवर्णस्याऽऽमः साम्        |
| (६) डे-डस्योर्या-ऽऽतौ       | (१६) नवभ्यः पूर्वभ्य इ-स्मात्- |
| (७) सर्वादिः स्मै-स्मातौ    | स्मिन् वा                      |
| (८) डेः स्मिन्              | (१७) आपो डित्तां यै-यास्-      |
| (९) जस इः                   | यास्-याम्                      |
| (१०) नेमा-ऽर्द्ध-प्रथम-चरम- | (१८) सर्वादिर्दसपूर्वाः        |
| तया-ऽया-ऽल्प-कतिपय-         | (१९) दौस्येत्                  |
| स्य वा                      | (२०) औता                       |

- |                                   |                                    |
|-----------------------------------|------------------------------------|
| (२१) इदुतोऽस्त्रेरीदूत्           | (४१) ह्रस्वस्य गुणः                |
| (२२) जस्येदोत्                    | (४२) एदापः                         |
| (२३) डित्यदिति                    | (४३) नित्यदिद्-द्विस्वराम्बार्थस्य |
| (२४) टः पुंसि ना                  | ह्रस्वः                            |
| (२५) डिर्डी                       | (४४) अदेतः स्यमोर्लुक्             |
| (२६) केवलसखिपतेरौ                 | (४५) दीर्घङ्याब्-व्यञ्जनात् सेः    |
| (२७) न ना डिदेत्                  | (४६) समानादमोऽतः                   |
| (२८) स्त्रिया डितां वा दै-        | (४७) दीर्घो नाम्यतिसृ-             |
| दास्-दास्-दाम्                    | चतसृ-प्रः                          |
| (२९) स्त्रीदूतः                   | (४८) नुर्वा                        |
| (३०) वेयुवोऽस्त्रियाः             | (४९) शसोऽता सश्च नः पुंसि          |
| (३१) आमो नाम् वा                  | (५०) संख्या-साय-वेरहस्या-          |
| (३२) ह्रस्वा-ऽऽपश्च               | ऽहन् डौ वा                         |
| (३३) संख्यानां णाम्               | (५१) निय आम्                       |
| (३४) त्रेख्यः                     | (५२) वाष्टन आः स्यादौ              |
| (३५) एदोद्ध्यां डसि-डसो रः        | (५३) अष्ट औ जस्-शसोः               |
| (३६) खि-ति-खी-तीय उर्             | (५४) डति-ष्णः संख्याया लुप्        |
| (३७) क्रतो डुर्                   | (५५) नपुंसकस्य शिः                 |
| (३८) तृ-स्वसृ-नसृ-नेष्टृ-त्वष्टृ- | (५६) औरी                           |
| क्षत्तृ-होतृ-पोतृ-प्रशास्त्रो     | (५७) अतः स्यमोऽम्                  |
| घुट्यार्                          | (५८) पञ्चतोऽन्यादेरनेकतरस्य        |
| (३९) अर्डौ च                      | दः                                 |
| (४०) मातुर्मातः पुत्रेऽर्हे       | (५९) अनतो लुप्                     |
| सिनाऽऽमन्व्ये                     | (६०) जरसो वा                       |

- |   |   |
|---|---|
| (६१) नामिनो लुग् वा                       | (७८) थो न्थ                                 |
| (६२) वाऽन्य तः पुमांष्टादौ स्वरे          | (७९) इन् डी-स्वरे लुक्                      |
| (६३) दध्यस्थिसक्थ्यक्ष्णोऽन्त-<br>स्याऽन् | (८०) वोशनसो नश्चामन्त्ये सौ                 |
| (६४) अनामस्वरे नोऽन्तः                    | (८१) उतोऽनडुच्चतुरो वः                      |
| (६५) स्वराच्छौ                            | (८२) वाः शेषे                               |
| (६६) धुटां प्राक्                         | (८३) सख्युरितोऽशावैत्                       |
| (६७) लो वा                                | (८४) ऋदुशनस्-पुरुदंशो-ऽने-<br>हसश्च सेर्डाः |
| (६८) घुटि                                 | (८५) नि दीर्घः                              |
| (६९) अचः                                  | (८६) न्स्महतोः                              |
| (७०) ऋदुदितः                              | (८७) इन्-हन्-पूषा-ऽर्यम्णः<br>शि-स्योः      |
| (७१) युज्रोऽसमासे                         | (८८) अपः                                    |
| (७२) अनडुहः सौ                            | (८९) नि वा                                  |
| (७३) पुंसोः पुमन्स्                       | (९०) अभ्वादेरत्वसः सौ                       |
| (७४) ओत औ                                 | (९१) कुशस्तुनस्तृच् पुंसि                   |
| (७५) आ अम्-शसोऽता                         | (९२) टादौ स्वरे वा                          |
| (७६) पथिन्-मथिनृभुक्षः सौ                 | (९३) स्त्रियाम्                             |
| (७७) एः                                   |   |

## [द्वितीयाध्याये प्रथमः पादः]

- |  |  |
|--|--|
| (१) त्रि-चतुरस्तिसृ-चतसृ<br>स्यादौ       | (२१) पदाद् युग्विभक्त्यैकवाक्ये<br>वस्-नसौ बहुत्वे |
| (२) ऋतो रः स्वरेऽनि                      | (२२) द्वित्वे वाम्-नौ                              |
| (३) जराया जरस् वा                        | (२३) डे-डसा ते मे                                  |
| (४) अपोऽद् भे                            | (२४) अमा त्वा मा                                   |
| (५) आ रायो व्यञ्जने                      | (२५) असदिवाऽऽमन्त्र्यं पूर्वम्                     |
| (६) युष्मदस्मदोः                         | (२६) जस्विशेष्यं वाऽऽमन्त्र्ये                     |
| (७) टाडचोसि यः                           | (२७) नान्यत्                                       |
| (८) शेषे लुक्                            | (२८) पादाद्योः                                     |
| (९) मोर्वा                               | (२९) चा-ऽह-ह-वैवयोगे                               |
| (१०) मन्तस्य युवा-ऽऽवौ द्वयोः            | (३०) दृश्यथैश्चिन्तायाम्                           |
| (११) त्व-मौ प्रत्ययोत्तरपदे<br>चैकस्मिन् | (३१) नित्यमन्वादेशे                                |
| (१२) त्वमहं सिना प्राक् चाऽकः            | (३२) सपूर्वात् प्रथमान्ताद् वा                     |
| (१३) यूयं वयं जसा                        | (३३) त्यदामेनदेतदो द्वितीया-<br>तौस्यवृत्त्यन्ते   |
| (१४) तुभ्यं मह्यं डया                    | (३४) इदमः  |
| (१५) तव मम डसा                           | (३५) अद् व्यञ्जे                                   |
| (१६) अमौ मः                              | (३६) अनक्  |
| (१७) शसो नः                              | (३७) तौस्यनः                                       |
| (१८) अभ्यम् भ्यसः                        | (३८) अयमियं पुंस्त्रियोः सौ                        |
| (१९) डस्तेश्चाऽद्                        | (३९) दो मः स्यादौ                                  |
| (२०) आम आकम्                             | (४०) किमः कस्तसादौ च                               |



- |                                      |                                     |
|--------------------------------------|-------------------------------------|
| (४१) आ द्वेरः                        | (६३) भ्वादेर्नामिनो दीर्घो          |
| (४२) तः सौ सः                        | वोर्व्यञ्जने                        |
| (४३) अदसो दः सेस्तु डौ               | (६४) पदान्ते                        |
| (४४) असुको वाऽकि                     | (६५) न यि तद्धिते                   |
| (४५) मोऽवर्णस्य                      | (६६) कुरुचुरः                       |
| (४६) वाऽद्वौ                         | (६७) मो नो म्वोश्च                  |
| (४७) मादुवर्णोऽनु                    | (६८) संस्-ध्वंस्-कस्सनडुहो दः       |
| (४८) प्रागिनात्                      | (६९) ऋत्विज्-दिश्-दृश्-             |
| (४९) बहुष्वेरी                       | स्पृश्-स्रज्-दधूषुष्णिहो गः         |
| (५०) धातोरिवर्णोर्वर्णस्येयुव् स्वरे | (७०) नशो वा                         |
| प्रत्यये                             | (७१) युजश्च-कृञ्चो नो ङः            |
| (५१) इणः                             | (७२) सो रुः                         |
| (५२) संयोगात्                        | (७३) सजुषः                          |
| (५३) भ्रू-श्नोः                      | (७४) अह्नः                          |
| (५४) स्त्रियाः                       | (७५) रो लुप्यरि                     |
| (५५) वाऽम्-शसि                       | (७६) धुटस्तृतीयः                    |
| (५६) योऽनेकस्वरस्य                   | (७७) ग-ङ-द-बादेश्चतुर्थान्त-        |
| (५७) स्यादौ वः                       | स्यैकस्वरस्याऽऽदेश्चतुर्थः          |
| (५८) क्बिच्चेरसुधियस्तौ              | स्थ्वोश्च प्रत्यये                  |
| (५९) टन्-पुन-वर्षा-कारैर्भुवः        | (७८) धागस्त-थोश्च                   |
| (६०) ण-षमसत् परे स्यादिविधौ          | (७९) अधश्चतुर्थात् तथोर्धः          |
| च                                    | (८०) नार्म्यन्तात् परोक्षाद्यतन्या- |
| (६१) क्तादेशोऽपि                     | शिषो धो ङः                          |
| (६२) ष-ढोः कस्सि                     | (८१) हान्तस्थाञ्जीङ्भ्यां वा        |

- (८२) हो धुट्-पदान्ते (१०१) दन्त-पाद-नासिका-  
 (८३) भ्वादेर्दीर्घः हृदया-ऽसृग्-यूषोदक-  
 (८४) मुह-द्रुह-ष्णुह-ष्णिहो वा दोर्यकृच्छकृतो दत्-  
 (८५) नहाहोर्ध-तौ पन्नस्-हृदसन्-यूषनुदन्-  
 (८६) च-जः क-गम् दोषन्-यकन्-शकन् वा  
 (८७) यज-सृज-मृज-राज- (१०२) य-स्वरे पादः पदणि-  
 भ्राज-भ्रस्ज-ब्रश्च-परि- क्य-घुटि  
 ब्राजः शः षः (१०३) उदच उदीच्  
 (८८) संयोगस्यादौ स्कोर्लुक् (१०४) अच् प्राग् दीर्घश्च  
 (८९) पदस्य (१०५) क्वसुष् मतौ च  
 (९०) रात् सः (१०६) श्वन्-युवन्-मघोनो  
 (९१) नाम्नो नोऽनहः डी-स्याद्यघुट्स्वरे व उः  
 (९२) नाऽऽमन्त्रये (१०७) लुगातोऽनापः  
 (९३) क्लीबे वा (१०८) अनोऽस्य  
 (९४) मावर्णान्तोपान्तापञ्चम- (१०९) ई-डौ वा  
 वर्गान् मतोर्मो वः (११०) षादि-हन्-धृतराज्ञोऽणि  
 (९५) नाम्नि (१११) न व-मन्तसंयोगात्  
 (९६) चर्मण्वत्यष्टीवच्चक्रीवत्- (११२) हनो ह्यो घ्न्  
 कक्षीवद्-रुमण्वत् (११३) लुगस्यादेत्यपदे  
 (९७) उदन्वानब्धौ च (११४) डित्यन्त्यस्वरादेः  
 (९८) राजन्वान् सुराज्ञि (११५) अवर्णादश्नोऽन्तो  
 (९९) नोर्म्यादिभ्यः वाऽतुरीडचोः  
 (१००) मास-निशा-ऽऽसनस्य (११६) श्य-शवः  
 शसादौ लुग्वा (११७) दिव औः सौ

(११८) उः पदान्तेऽनूत्

## [द्वितीयाध्याये द्वितीयः पादः]

- |                              |                                      |
|------------------------------|--------------------------------------|
| (१) क्रियाहेतुः कारकम्       | (१६) विनिमेय-द्युतपणं                |
| (२) स्वतन्त्रः कर्त्ता       | पणि-व्यवहोः                          |
| (३) कर्तुर्व्याप्यं कर्म     | (१७) उपसर्गाद् दिवः                  |
| (४) वाऽकर्मणामणिक्कर्त्ता णौ | (१८) न                               |
| (५) गति-बोधा-ऽऽहारार्थ-      | (१९) करणं च                          |
| शब्दकर्म-नित्याकर्मणामनी-    | (२०) अधेः शीङ्-स्था-ऽऽस              |
| खाद्यदि-ह्वा- शब्दाय-        | आधारः                                |
| क्रन्दां                     | (२१) उपान्वध्याङ्वसः                 |
| (६) भक्षेर्हिंसायाम्         | (२२) वाऽभिनिविशः                     |
| (७) बहेः प्रवेयः             | (२३) कालाध्व-भाव-देशं                |
| (८) ह-क्रोर्नवा              | वाऽकर्म चाऽकर्मणाम्                  |
| (९) दृश्यभिवदोरात्मने        | (२४) साधकतमं करणम्                   |
| (१०) नाथः                    | (२५) कर्माभिप्रेयः संप्रदानम्        |
| (११) स्मृत्यर्थ-दयेशः        | (२६) स्पृहेर्व्याप्यं वा             |
| (१२) कृगः प्रतियत्ने         | (२७) कुध्-द्रुहेर्व्या-ऽसूयार्थैर्यं |
| (१३) रुजार्थस्याऽज्वरि-      | प्रति कोपः                           |
| सन्तापेभवि कर्त्तरि          | (२८) नोपसर्गात् कुद्-द्रुहा          |
| (१४) जास-नाट-क्राथ-पिषो      | (२९) अपायेऽवधिरपादानम्               |
| हिंसायाम्                    | (३०) क्रियाश्रयस्याऽऽधारोऽधि-        |
| (१५) नि-प्रेभ्यो घ्रः        | करणम्                                |

- (३१) नाम्नः प्रथमैक-द्वि-बहौ (५०) व्याप्ये द्विद्रोणादिभ्यो  
 (३२) आमन्त्र्ये वीप्सायाम्  
 (३३) गौणात् समया-निकषा- (५१) समो ज्ञोऽस्मृतौ वा  
 हा-धिगन्तरा-ऽन्तरेणा- (५२) दामः संप्रदानेऽधर्म्य  
 ऽति-येन-तेनैर्द्वितीया आत्मने च  
 (३४) द्वित्वेऽधोऽध्युपरिभिः (५३) चतुर्थी  
 (३५) सर्वोभया-ऽभि- (५४) तादर्थ्ये  
 परिणा तसा (५५) रुचि-कृष्यर्थ-धारिभिः  
 (३६) लक्षण-वीप्स्येत्यम्भू- प्रेय-विकारोत्तमर्णेषु  
 तेष्वभिना (५६) प्रत्याङः श्रुवार्थिनि  
 (३७) भागिनि च प्रति-पर्यनुभिः (५७) प्रत्यनोर्गृणाऽऽख्यातरि  
 (३८) हेतु-सहार्थेऽनुना (५८) यद्वीक्ष्ये राधीक्षी  
 (३९) उत्कृष्टेऽनूपेन (५९) उत्पातेन ज्ञाप्ये  
 (४०) कर्मणि (६०) श्लाघ-हु-स्था-शपा  
 (४१) क्रियाविशेषणात् प्रयोज्ये  
 (४२) काला-ऽध्वनोर्व्याप्तौ (६१) तुमोऽर्थे भाववचनात्  
 (४३) सिद्धौ तृतीया (६२) गम्यस्याऽऽप्ये  
 (४४) हेतु-कर्तृ-करणेत्यम्भू- (६३) गतेर्नवाऽनाप्ते  
 तलक्षणे (६४) मन्यस्याऽनावादि-  
 (४५) सहार्थे भ्योऽतिकृत्सने  
 (४६) यद्भेदैस्तद्वदाख्या (६५) हित-सुखाभ्याम्  
 (४७) कृताद्यैः (६६) तद्-भद्रा-ऽऽयुष्य-  
 (४८) काले भान्नवाऽऽधारे क्षेमा-ऽर्थार्थिनाऽऽशिषि  
 (४९) प्रसितोत्सुका-ऽवबद्धैः (६७) परिक्रयणे

- (६८) शक्तार्थ-वषट्-नमः-  
स्वस्ति-स्वाहा-स्वधाभिः
- (६९) पञ्चम्यपादाने
- (७०) आडाऽवधौ
- (७१) पर्यपाभ्यां वर्ज्ये
- (७२) यतः प्रतिनिधि-प्रतिदाने  
प्रतिना
- (७३) आख्यातर्पणयोगे
- (७४) गम्ययपः कर्मा-ऽऽधारे
- (७५) प्रभृत्यन्यार्थ-दिक्शब्द-  
बहिरारादितैः
- (७६) ऋणाद्धेतोः
- (७७) गुणादस्त्रियां नवा
- (७८) आरादर्थैः
- (७९) स्तोका-ऽल्प-कृच्छ्र-  
कतिपयादसत्त्वे करणे
- (८०) अज्ञाने ज्ञः षष्ठी
- (८१) शेषे
- (८२) रि-रिष्ठात्-स्तादस्ता-  
दसतसाता
- (८३) कर्मणि कृतः
- (८४) द्विषो वाऽतृशः
- (८५) वैकत्र द्वयोः
- (८६) कर्तरि
- (८७) द्विहेतोरस्र्यणकस्य वा
- (८८) कृत्यस्य वा
- (८९) नोभयोर्हेतोः
- (९०) तृन्नुदन्ता-ऽव्यय-  
कस्वाना-ऽतृश्-शतृ-  
डि-णकच्-खलर्थस्य
- (९१) क्तयोरसदाधारे
- (९२) वा क्लीबे
- (९३) अकमेरुकस्य
- (९४) एष्यदणेनः
- (९५) सप्तम्यधिकरणे
- (९६) नवा सुजर्थैः काले
- (९७) कुशला-ऽऽयुक्तेना-  
ऽऽसेवायाम्
- (९८) स्वामीश्वराधिपति-  
दायाद-साक्षि-प्रतिभू-प्रसूतैः
- (९९) व्याप्ये क्तेनः
- (१००) तद्युक्ते हेतौ
- (१०१) अप्रत्यादावसाधुना
- (१०२) साधुना
- (१०३) निपुणेन चाऽर्चयाम्
- (१०४) स्वेशेऽधिना
- (१०५) उपेनाऽधिकिनि
- (१०६) यद्भावो भावलक्षणम्

- |  |  |
|--|--|
| (१०७) गते गम्येऽध्वनोऽन्तेनै-<br>कार्थ्यं वा | (११६) तुल्यार्थैस्तृतीया-षष्ठ्यौ             |
| (१०८) षष्ठी वाऽनादरे                         | (११७) द्वितीया-षष्ठ्यावे-<br>नेनाऽनञ्चेः     |
| (१०९) सप्तमी चाऽविभागे<br>निर्धारणे          | (११८) हेत्वर्थैस्तृतीयाद्याः                 |
| (११०) क्रियामध्येऽध्व-काले<br>पञ्चमी च       | (११९) सर्वादः सर्वाः                         |
| (१११) अधिकेन भूयसस्ते                        | (१२०) असत्त्वारादर्थात् टा-<br>डसि-ङ्गम्     |
| (११२) तृतीयाऽल्पीयसः                         | (१२१) जात्याख्यायां नवैकोऽ-<br>संख्यो बहुवत् |
| (११३) पृथग्-नाना पञ्चमी च                    | (१२२) अविशेषणे द्वौ चाऽस्मदः                 |
| (११४) ऋते द्वितीया च                         | (१२३) फल्गुनी-प्रोष्ठपदस्य भे                |
| (११५) विना ते तृतीया च                       | (१२४) गुरावेकश्च                             |

### [द्वितीयाध्याये तृतीयः पादः]

- |   |   |
|---|---|
| (१) नमस्-पुरसो गतेः<br>क-ख-प-फि रः सः                   | (८) नामिनस्तयोः षः                                    |
| (२) तिरसो वा  | (९) निर्दुर्बहिराविष्प्रादुश्चतुराम्                  |
| (३) पुंसः   | (१०) सुचो वा  |
| (४) शिरो-ऽध्वसः पदे समासैक्ये                           | (११) वेसुसोऽपेक्षायाम्                                |
| (५) अतः कृ-कमि-कंस-कुम्भ-<br>कुशा-कर्णा-पात्रेऽनव्ययस्य | (१२) नैकार्थेऽक्रिये                                  |
| (६) प्रत्यये  | (१३) समासेऽसमस्तस्य                                   |
| (७) रोः काम्ये  | (१४) भ्रातुष्पुत्र-कस्कादयः                           |
|   | (१५) नाम्यन्तस्था-कवर्गात्<br>पदान्तः कृतस्य सः शिङ्- |

|   |  |
|---|--|
| नान्तरेऽपि  | (३४) ह्रस्वान्नाम्रस्ति                                  |
| (१६) समासेऽग्नेः स्तुतः   | (३५) निसस्तपेऽनासेवायाम्                                 |
| (१७) ज्योतिरायुर्भ्यां च स्तोमस्य   | (३६) घस्-वसः   |
| (१८) मातृ-पितुः स्वसुः  | (३७) णिस्तोरेवाऽस्वद-स्विद-<br>सहः षणि                   |
| (१९) अलुपि वा   | (३८) सञ्जेर्वा   |
| (२०) नि-नद्याः स्नातेः कौशले  | (३९) उपसर्गात् सुग्-सुव-सो-<br>स्तु-स्तुभोऽटचप्यद्वित्वे |
| (२१) प्रतेः स्नातस्य सूत्रे   | (४०) स्था-सेनि-सेध-सिच-<br>सञ्जां द्वित्वेऽपि            |
| (२२) स्नानस्य नाग्नि  | (४१) अडप्रतिस्तब्ध-निस्तब्धे<br>स्तम्भः                  |
| (२३) वेः स्त्रः   | (४२) अवाच्चाऽऽश्रयोर्जा-ऽविदूरे                          |
| (२४) अभिनिष्ठानः  | (४३) व्यवात् स्वनोऽशने                                   |
| (२५) गवि-युधेः स्थिरस्य   | (४४) सदोऽप्रतेः परोक्षायां<br>त्वादेः                    |
| (२६) एत्यकः   | (४५) स्वञ्जश्च   |
| (२७) भादितो वा  | (४६) परि-नि-वेः सेवः                                     |
| (२८) वि-कु-शमि-परेः स्थलस्य   | (४७) सय-सितस्य   |
| (२९) कपेर्गोत्रि  | (४८) असो-डसिवू-सह-<br>स्सटाम्                            |
| (३०) गो-ऽम्बा-ऽऽम्ब-सव्या-<br>ऽप-द्वि-त्रि-भूम्यग्नि-<br>शेकु-शङ्कु-क्वङ्गु-<br>मञ्जि-पुञ्जि-बर्हिः-परमे-<br>दिवेः स्थस्य | (४९) स्तु-स्वञ्जश्चाऽटि नवा                              |
| (३१) निर्दुस्सोः सेध-सन्धि-<br>साम्नाम्   | (५०) निरभ्यनोश्च स्यन्दस्या-<br>ऽप्राणिनि                |
| (३२) प्रष्टोऽग्ने   |  |
| (३३) भीरुष्ठानादयः  |  |



|                                   |                                  |
|-----------------------------------|----------------------------------|
| (५१) वेः स्कन्दोऽक्तयोः           | (६९) पानस्य भावकरणे              |
| (५२) परेः                         | (७०) देशे                        |
| (५३) निर्नेः स्फुर-स्फुलोः        | (७१) ग्रामा-ऽग्रान्नियः          |
| (५४) वेः                          | (७२) बाह्याद् बाहनस्य            |
| (५५) स्कभ्रः                      | (७३) अतोऽहस्य                    |
| (५६) निर्-दुः-सु-वेः सम-सूतेः     | (७४) चतुस्त्रेर्हायनस्य वयसि     |
| (५७) अवः स्वपः                    | (७५) वोत्तरपदान्तन-              |
| (५८) प्रादुरूपसर्गाद्यस्वरेऽस्तेः | स्यादेरयुव-पका-ऽहः               |
| (५९) न स्सः                       | (७६) कवर्गैकस्वरवति              |
| (६०) सिचो यडि                     | (७७) अदुरूपसर्गान्तरो            |
| (६१) गतौ सेधः                     | ण-हिनु-मीनाऽऽनेः                 |
| (६२) सुगः स्य-सनि                 | (७८) नशः शः                      |
| (६३) र-ष्वर्णान्नो ण एकपदे-       | (७९) नेर्झमा-दा-पत-पद-           |
| ऽनन्त्यस्याऽल-च-ट-                | नद-गद-वपी-वही-                   |
| तवर्ग-श-सान्तरे                   | शमू-चिग्-याति-वाति-              |
| (६४) पूर्वपदस्थान्नाम्यगः         | द्राति-प्साति-स्यति-             |
| (६५) नसस्य                        | हन्ति-देग्धौ                     |
| (६६) निष्प्रा-ऽग्रे-ऽन्तः-        | (८०) अक-खाद्यषान्ते पाठे वा      |
| खदिर-काश्या-ऽऽभ्र-                | (८१) द्वित्वेऽप्यन्तेऽप्यनितेः , |
| शरेक्षु-प्लक्ष-पीयुक्षाभ्यो       | परेस्तु वा                       |
| वनस्य                             | (८२) हनः                         |
| (६७) द्वि-त्रिस्वरौषधि-वृक्षेभ्यो | (८३) व-मि वा                     |
| नवाऽनिरिकादिभ्यः                  | (८४) निंस-निक्ष-निन्दः कृति      |
| (६८) गिरिनद्यादीनाम्              | वा                               |

|   |                                 |
|---|---------------------------------|
| (८५) स्वरात्                                      | (९६) क्षुभ्नादीनाम्             |
| (८६) नाम्यादेरेव ने                               | (९७) पाठे धात्वादेर्णो नः       |
| (८७) व्यञ्जनादेर्नाम्युपान्त्याद् वा              | (९८) षः सोऽष्ट्यै-ष्ठिव-ष्वष्कः |
| (८८) णेर्वा                                       | (९९) ऋ-र लृ-लं                  |
| (८९) निर्विण्णः                                   | कृपोऽकृपीटादिषु                 |
| (९०) न ख्या-पूग्-भू-भा-<br>कम-गम-प्याय-वेपो णेश्च | (१००) उपसर्गस्याऽयौ             |
| (९१) देशेऽन्तरोऽयन-हनः                            | (१०१) ग्री यङि                  |
| (९२) षात् पदे                                     | (१०२) नवा स्वरे                 |
| (९३) पदेऽन्तरेऽनाड्यतद्धिते                       | (१०३) परेर्घा-ऽङ्क-योगे         |
| (९४) हनो धि                                       | (१०४) ऋफिडादीनां डश्च लः        |
| (९५) नृतेर्यङि                                    | (१०५) जपादीनां पो वः            |

### [द्वितीयाध्याये चतुर्थः पादः]

|                                  |                          |
|----------------------------------|--------------------------|
| (१) स्त्रियां नृतोऽस्वस्रादेर्ङी | (१०) दाघ्नः              |
| (२) अधातूदितः                    | (११) अनो वा              |
| (३) अञ्चः                        | (१२) नाघ्नि              |
| (४) ण-स्वरा-ऽघोषाद् वनो रश्च     | (१३) नोपान्त्यवतः        |
| (५) वा बहुव्रीहेः                | (१४) मनः                 |
| (६) वा पादः                      | (१५) ताभ्यां वाऽऽप् डित् |
| (७) ऊघ्नः                        | (१६) अजादेः              |
| (८) अशिशोः                       | (१७) ऋचि पादः पात्पदे    |
| (९) संख्यादेर्हायनाद् वयसि       | (१८) आत्                 |

- (१९) गौरादिभ्यो मुख्यान्डी (३२) इतोऽक्त्यर्थात्  
 (२०) अणजेयेकण्-नञ्- (३३) पद्धतेः  
 स्रज्-टिताम् (३४) शक्तेः शस्त्रे  
 (२१) वयस्यनन्त्ये (३५) स्वरादुतो गुणादखरोः  
 (२२) द्विगोः समाहारात् (३६) श्येतैत-हरित-भरत-  
 (२३) परिमाणात् तद्धित- रोहिताद् वर्णात् तो नश्च  
 लुक्क्यबिस्ता-ऽऽचित- (३७) क्रः पलिता-ऽसितात्  
 कम्बल्यात् (३८) असह-नञ्-विद्यमान-  
 (२४) काण्डात् प्रमाणादक्षेत्रे पूर्वपदात् स्वाङ्गादक्रोडा-  
 (२५) पुरुषाद् वा दिभ्यः  
 (२६) रेवत-रोहिणाद् भे (३९) नासिकोदरौष्ठ-जङ्घा-  
 (२७) नीलात् प्राण्यौषध्योः दन्त-कर्ण-शृङ्गा-ऽङ्ग-  
 (२८) क्ताच्च नाम्नि वा गात्र-कण्ठात्  
 (२९) केवल-मामक-भागधेय- (४०) नख-मुखादनाम्नि  
 पापा-ऽपर-समाना-ऽऽ (४१) पुच्छात्  
 र्यकृत-सुमङ्गल- भेषजात् (४२) कबर-मणि-विष-शरादेः  
 (३०) भाज-गोण-नाग-स्थल- (४३) पक्षाच्चोपमादेः  
 कुण्ड-काल-कुश-कामु- (४४) क्रीतात् करणादेः  
 क-कट-कबरात् पक्वा- (४५) क्तादल्ये  
 ऽऽवपन-स्थूला-ऽकृत्रि- (४६) स्वाङ्गादेरकृत-मित-  
 मा-ऽमत्र-कृष्णा-ऽऽय- जात-प्रतिपन्नाद् बहुव्रीहेः  
 सी-रिरंसु-श्रोणि- (४७) अनाच्छादजात्यादेर्नवा  
 केशपाशे (४८) पत्युर्नः  
 (३१) नवा शोणादेः (४९) सादेः

|   |   |
|---|---|
| (५०) सपत्न्यादौ                                   | दोष-लिप्युरु-महत्त्वे   |
| (५१) ऊढायाम्                                      | (६६) आर्य-क्षत्रियाद् वा  |
| (५२) पाणिगृहीतीति                                 | (६७) यजो डायन् च वा   |
| (५३) पतिवन्त्यन्तर्वन्त्यौ भार्या-<br>गर्भिण्योः  | (६८) लोहितादिशकलान्तात्   |
| (५४) जातेरयान्त-<br>नित्यस्त्री-शूद्रात्          | (६९) षा-ऽवटाद् वा   |
| (५५) पाक-कर्ण-पर्ण-<br>वालान्तात्                 | (७०) कौरव्य-माण्डूका-ऽऽसुरेः  |
| (५६) असत्-काण्ड-प्रान्त-<br>शतैकाञ्चः पुष्पात्    | (७१) इञ इतः   |
| (५७) असम्-भस्त्रा-ऽजिनैक-<br>शण-पिण्डात् फलात्    | (७२) नुर्जातिः  |
| (५८) अनञो मूलात्                                  | (७३) उतोऽप्राणिनश्चाऽयु-<br>रज्ज्वादिभ्य ऊङ्                        |
| (५९) धवाद् योगादपालकान्तात्                       | (७४) बाह्वन्त-कद्रु-<br>कमण्डलोर्नाम्नि                             |
| (६०) पूतक्रतु-वृषाकप्यग्नि-<br>कुसित-कुसिदादै च   | (७५) उपमान-सहित-संहित-<br>सह-शफ-वाम-<br>लक्ष्मणाद्यूरोः             |
| (६१) मनोरौ च वा                                   | (७६) नारी-सरवी-पङ्गू-श्वश्रू  |
| (६२) वरुणेन्द्र-रुद्र-भव-शर्व-<br>मृडादान् चान्तः | (७७) यूनस्तिः   |
| (६३) मातुला-ऽऽचार्यो-<br>पाध्यायाद् वा            | (७८) अनार्षे वृद्धेऽणिञो<br>बहुस्वर-गुरुपान्त्यस्याऽ<br>न्तस्य ष्यः |
| (६४) सूर्याद् देवतायां वा                         | (७९) कुलाख्यानाम्   |
| (६५) यव-यवना-ऽरण्य-हिमाद्                         | (८०) क्रौड्यादीनाम्   |
|   | (८१) भोज-सूतयोः क्षत्रिया-<br>युवत्योः                              |

- (८२) दैवयज्ञि-शौचिवृक्षि-  
सात्यमुग्रि-काण्ठेविद्धेर्वा
- (८३) ष्या पुत्र-पत्योः केवलयो-  
रिच् तत्पुरुषे
- (८४) बन्धौ बहुव्रीहौ
- (८५) मात-मातृ-मातृके वा
- (८६) अस्य ड्यां लुक्
- (८७) मत्स्यस्य यः
- (८८) व्यञ्जनात् तद्धितस्य
- (८९) सूर्या-ऽऽगस्त्ययोरीये च
- (९०) तिष्य-पुष्ययोर्भाणि
- (९१) आपत्यस्य क्य-च्च्योः
- (९२) तद्धितयस्वरेऽनाति
- (९३) बिल्वकीयादेरीयस्य
- (९४) न राजन्य-मनुष्ययोरके
- (९५) ड्यादेर्गौणस्याकिपस्त-  
द्धितलुक्प्रगोणी-सूच्योः
- (९६) गोश्वान्ते ह्रस्वोऽनंशिसमा-  
सेयोबहुव्रीहौ
- (९७) क्लीबे
- (९८) वेदूतोऽनव्यय-य्वृदीच्-  
डीयुवः पदे
- (९९) ड्यापो बहुलं नाम्नि
- (१००) त्वे
- (१०१) भ्रुवोऽच्च कुंस-कुटयोः
- (१०२) मालेष्ठीकेष्टकस्याऽन्ते-  
ऽपि भारि-तूल-चित्ते
- (१०३) गोण्या मेये
- (१०४) ड्यादीदूतः के
- (१०५) न कचि
- (१०६) नवाऽऽपः
- (१०७) इच्चाऽपुंसोऽनित्क्याप्परे
- (१०८) स्व-ज्ञा-ऽज-भस्त्रा-  
ऽधातुत्ययकात्
- (१०९) द्व्येष-सूत-पुत्र-  
वृन्दारस्य
- (११०) बौ वर्त्तिका
- (१११) अस्याऽयत्-तत्-  
क्षिपकादीनाम्
- (११२) नरिका-मामिका
- (११३) तारका-वर्णका-  
ऽष्टका ज्योतिस्-तान्तव-  
पितृदेवत्ये

## [तृतीयाध्याये प्रथमः पादः]

- |   |   |
|---|---|
| (१) धातोः पूजार्थस्वति-<br>गतार्थाधिपर्यतिक्रमार्था-<br>तिवर्जः प्रादिरूपसर्गः प्राक् च | (१८) नाम नाम्नैकार्थ्ये समासो<br>बहुलम्                                       |
| (२) ऊर्याद्यनुकरण-च्चि-डाचश्च<br>गतिः   | (१९) सुज्-वार्थे संख्या संख्येये<br>संख्यया बहुव्रीहिः                        |
| (३) कारिका स्थित्यादौ   | (२०) आसन्ना-ऽदूरा-ऽधिका-<br>ऽध्यर्द्धा-ऽर्द्धादिपूर्णं<br>द्वितीयाद्यन्यार्थे |
| (४) भूषा-ऽऽदर-क्षेपेऽलं-<br>सद-ऽसत्   | (२१) अव्ययम्  |
| (५) अग्रहा-ऽनुपदेशेऽन्तरदः  | (२२) एकार्थं चाऽनेकं च  |
| (६) कणे-मनस् तृप्तौ   | (२३) उष्ट्रमुखादयः  |
| (७) पुरोऽस्तमव्ययम्   | (२४) सहस्तेन  |
| (८) गत्यर्थ-वदोऽच्छः  | (२५) दिशो रूढ्याऽन्तराले  |
| (९) तिरोऽन्तर्द्धौ  | (२६) तत्राऽऽदाय मिथस्तेन<br>प्रहृत्येति सरूपेण युद्धेऽ-<br>व्ययीभावः          |
| (१०) कृगो नवा   | (२७) नदीभिर्नाम्नि  |
| (११) मध्ये-पदे-निवचने-<br>मनस्युरस्यनत्याधाने   | (२८) सङ्ख्या समाहारे  |
| (१२) उपाजेऽन्वाजे   | (२९) वंशेन पूर्वार्थे   |
| (१३) स्वाम्येऽधिः   | (३०) पारे-मध्ये-ऽग्रे-ऽन्तः<br>षष्ठ्या वा                                     |
| (१४) साक्षादादिश्च्यर्थे  | (३१) यावदियत्त्वे   |
| (१५) नित्यं हस्ते-पाणावुद्धाहे  | (३२) पर्यपा-ऽऽङ्-बहिरच्   |
| (१६) प्राध्वं बन्धे   |   |
| (१७) जीविकोपनिषदौपम्ये  |   |



|                            |                                 |
|----------------------------|---------------------------------|
| पञ्चम्या                   | गत-क्रान्त-कुष्ट-ग्लान-         |
| (३३) लक्षणेनाऽभि-          | क्रान्ताद्यर्थाः प्रथमाद्यन्तैः |
| प्रत्याभिमुख्ये            | (४८) अव्ययं प्रवृद्धादिभिः      |
| (३४) दैर्घ्येऽनुः          | (४९) डस्युक्तं कृता             |
| (३५) समीपे                 | (५०) तृतीयोक्तं वा              |
| (३६) तिष्ठदग्नित्यादयः     | (५१) नञ्                        |
| (३७) नित्यं प्रतिनाऽल्पे   | (५२) पूर्वा-ऽपरा-ऽधरोत्त-       |
| (३८) सङ्ख्या-ऽक्ष-शलाकं    | रमभिन्नेनांशिना                 |
| परिणा द्यूतेऽन्यथावृत्तौ   | (५३) सायाहादयः                  |
| (३९) विभक्ति-समीप-समृद्धि- | (५४) समेऽशेऽर्द्धं नवा          |
| व्यूद्धयर्थाभावा-ऽत्यया-   | (५५) जरत्यादिभिः                |
| ऽसंप्रति-पश्चात्-क्रम-     | (५६) द्वि-त्रि-चतुष्पूरणा-      |
| ख्याति-युगपत्-सदृक्-       | ऽग्रादयः                        |
| सम्पत्-साकल्या-            | (५७) कालो द्विगौ च मेयैः        |
| ऽन्तेऽव्ययम्               | (५८) स्वयं-सामी केन             |
| (४०) योग्यता-वीप्सा-       | (५९) द्वितीया खट्वा क्षेपे      |
| ऽर्थानतिवृत्ति-सादृश्ये    | (६०) कालः                       |
| (४१) यथाऽथा                | (६१) व्याप्तौ                   |
| (४२) गति-कन्यस्तत्पुरुषः   | (६२) श्रितादिभिः                |
| (४३) दुर्निन्दा-कृच्छ्रे   | (६३) प्राप्ता-ऽऽपन्नौ तयाऽच्च   |
| (४४) सुः पूजायाम्          | (६४) ईषद् गुणवचनैः              |
| (४५) अतिरतिक्रमे च         | (६५) तृतीया तत्कृतैः            |
| (४६) आङल्पे                | (६६) चतस्रार्द्धम्              |
| (४७) प्रात्यव-परि-निरादयो  | (६७) ऊनार्थपूर्वाद्यैः          |

- |                               |                                    |
|-------------------------------|------------------------------------|
| (६८) कारकं कृता               | (९०) काकाद्यैः क्षेपे              |
| (६९) नविंशत्यादिनैकोऽच्चान्तः | (९१) पात्रेसमितेत्यादयः            |
| (७०) चतुर्थी प्रकृत्या        | (९२) केन                           |
| (७१) हितादिभिः                | (९३) तत्राहोरात्रांशम्             |
| (७२) तदर्थार्थेन              | (९४) नाम्नि                        |
| (७३) पञ्चमी भयाद्यैः          | (९५) कृद्येनाऽऽवश्यके              |
| (७४) केनाऽसत्त्वे             | (९६) विशेषणं विशेष्येणैकार्थं      |
| (७५) परःशतादिः                | कर्मधारयश्च                        |
| (७६) षष्ठ्ययत्नाच्छेषे        | (९७) पूर्वकालैक-सर्व-जरत्-         |
| (७७) कृति                     | पुराण-नव-केवलम्                    |
| (७८) याजकादिभिः               | (९८) दिगधिकं संज्ञा-               |
| (७९) पत्ति-रथौ गणकेन          | तद्धितोत्तरपदे                     |
| (८०) सर्वपश्चादादयः           | (९९) संख्या समाहारे च              |
| (८१) अकेन क्रीडा-ऽऽजीवे       | द्विगुश्चाऽनाम्ययम्                |
| (८२) न कर्त्तरि               | (१००) निन्द्यं कुत्सनैरपापाद्यैः   |
| (८३) कर्मजा तृचा च            | (१०१) उपमानं सामान्यैः             |
| (८४) तृतीयायाम्               | (१०२) उपमेयं व्याघ्राद्यैः         |
| (८५) तृप्तार्थ-पूरणा-ऽव्यया-  | साम्यानुक्तौ                       |
| ऽतृश्-शत्रानशा                | (१०३) पूर्वा-ऽपर-प्रथम-चरम-        |
| (८६) ज्ञानेच्छा-ऽर्चार्था-    | जघन्य-समान-मध्य-                   |
| ऽऽधारक्तेन                    | मध्यम-वीरम्                        |
| (८७) अस्वस्थगुणैः             | (१०४) श्रेण्यादि कृताद्यैश्च्यर्थे |
| (८८) सप्तमी शौण्डाद्यैः       | (१०५) क्तं नजादिभिन्नैः            |
| (८९) सिंहाद्यैः पूजायाम्      | (१०६) सेङ् नाऽनिटा                 |

- (१०७) सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टं  
पूजायाम्
- (१०८) वृन्दारक-नाग-कुञ्जरैः
- (१०९) कतर-कतमौ जातिप्रश्ने
- (११०) किं क्षेपे
- (१११) पोटा-युवति-स्तोक-  
कतिपय-गृष्टि-धेनु-  
वशा-वेहद्-बष्कयणी-  
प्रवक्तु-श्रोत्रिया-  
ऽध्यायक-धूर्त्त-  
प्रशंसारूढैर्जातिः
- (११२) चतुष्पाद् गर्भिण्या
- (११३) युवा खलति-पलित-  
जरद्-वलिनैः
- (११४) कृत्य-तुल्याख्यमजात्या
- (११५) कुमारः श्रमणादिना
- (११६) मयूरव्यंसकेत्यादयः
- (११७) चार्थे द्वन्द्वः सहोक्तौ
- (११८) समानामर्थेनैकः शेषः
- (११९) स्यादावसंख्येयः
- (१२०) त्यदादिः
- (१२१) भ्रातृ-पुत्राः स्वसृ-  
दुहितृभिः
- (१२२) पिता मात्रा वा
- (१२३) श्वशुरः श्वश्रूभ्यां वा
- (१२४) वृद्धो यूना तन्मात्रभेदे
- (१२५) स्त्रीपुंवच्च
- (१२६) पुरुषः स्त्रिया
- (१२७) ग्राम्याशिशुद्विशफसंधे  
स्त्री प्रायः
- (१२८) क्लीबमन्येनैकं च वा
- (१२९) पुष्यार्थाद् भे पुनर्वसुः
- (१३०) विरोधिनामद्रव्याणां नवा  
द्वन्द्वः स्वैः
- (१३१) अश्ववडव-पूर्वापरा-  
ऽधरोत्तराः
- (१३२) पशु-व्यञ्जनानाम्
- (१३३) तरु-तृण-धान्य-मृग-  
पक्षिणां बहुत्वे
- (१३४) सेनाङ्ग-क्षुद्रजन्तूनाम्
- (१३५) फलस्य जातौ
- (१३६) अप्राणि-पश्वादेः
- (१३७) प्राणि-तूर्याङ्गाणाम्
- (१३८) चरणस्य स्थेणो-  
ऽद्यतन्यामनुवादे
- (१३९) अक्लीबेऽध्वर्युक्रतोः
- (१४०) निकटपाठस्य

|  |   |
|--|---|
| (१४१) नित्यवैरस्य                        | (१५३) आहिताग्न्यादिषु                           |
| (१४२) नदी-देश-पुरां विलिङ्गा-<br>नाम्    | (१५४) प्रहरणात्                                 |
| (१४३) पात्र्यशूद्रस्य                    | (१५५) न सप्तमीन्द्रादिभ्यश्च                    |
| (१४४) गवाश्वादिः                         | (१५६) गङ्वादिभ्यः                               |
| (१४५) न दधिपयआदिः                        | (१५७) प्रियः                                    |
| (१४६) संख्याने                           | (१५८) कडारादयः कर्मधारये                        |
| (१४७) वाऽन्तिके                          | (१५९) धर्मार्थादिषु द्वन्द्वे                   |
| (१४८) प्रथमोक्तं प्राक्                  | (१६०) लघ्वक्षरा-ऽसखीदुत्-<br>स्वराद्यदल्पस्वरा- |
| (१४९) राजदन्तादिषु                       | ऽर्च्यमेकम्                                     |
| (१५०) विशेषण-सर्वादि-संख्यं<br>बहुव्रीहौ | (१६१) मास-वर्ण-भ्रात्रऽनुपूर्वम्                |
| (१५१) क्ताः                              | (१६२) भर्तुतुल्यस्वरम्                          |
| (१५२) जाति-काल-सुखादेर्नवा               | (१६३) संख्या समासे                              |

### [तृतीयाध्याये द्वितीयः पादः]

|  |  |
|--|--|
| (१) परस्परा-ऽन्योन्येतरेतरस्याम्<br>स्यादेर्वाऽपुंसि | (६) अनतो लुप्                            |
| (२) अमव्ययीभावस्याऽतोऽ-<br>पञ्चम्याः                 | (७) अव्ययस्य                             |
| (३) वा तृतीयायाः                                     | (८) ऐकार्थ्ये                            |
| (४) सप्तम्या वा                                      | (९) न नाम्येकस्वरात्<br>खित्युत्तरपदेऽमः |
| (५) ऋद्ध-नदी-वंश्यस्य                                | (१०) असत्त्वे डसेः                       |
|  | (११) ब्राह्मणाच्छंसी                     |

- (१२) ओजो-ऽञ्जः-सहो-  
ऽम्भस्-तमस्-तपसष्टः  
(१३) पुंजनुषोऽनुजा-ऽन्धे  
(१४) आत्मनः पूरणे  
(१५) मनसश्चाऽऽज्ञायिनि  
(१६) नाम्नि  
(१७) परा-ऽऽत्मभ्यां डेः  
(१८) अद्-व्यञ्जनात् सप्तम्या  
बहुलम्  
(१९) प्राक्कारस्य व्यञ्जने  
(२०) तत्पुरुषे कृति  
(२१) मध्या-ऽन्ताद् गुरौ  
(२२) अमूर्द्ध-मस्तकात् स्वाङ्गाद  
कामे  
(२३) बन्धे घञि नवा  
(२४) कालात् तन-तर-तम-  
काले  
(२५) शय-वासि-वासेष्वकालात्  
(२६) वर्ष-क्षर-वरा-ऽप्-सरः-  
शरोरो-मनसो जे  
(२७) द्यु-प्रावृड्-वर्षा-शरत्-  
कालात्  
(२८) अपो य-योनि-मति-चरे  
(२९) नेन्-सिद्ध-स्थे  
(३०) षष्ठ्याः क्षेपे  
(३१) पुत्रे वा  
(३२) पश्यद्-वाग्-दिशो हर-  
युक्ति-दण्डे  
(३३) अदसोऽकजायनणोः  
(३४) देवानांप्रियः  
(३५) शेष-पुच्छ-लाङ्गूलेषु  
नाम्नि शुनः  
(३६) वाचस्पति-वास्तोष्पति-  
दिवस्पति-दिवोदासम्  
(३७) ऋतां विद्या-योनि-सम्बन्धे  
(३८) स्वसृ-पत्योर्वा  
(३९) आ द्वन्द्वे  
(४०) पुत्रे  
(४१) वेदसहश्रुताऽवायु-  
देवतानाम्  
(४२) ई षोम-वरुणेऽग्नेः  
(४३) ईर्द्धिमत्यविष्णौ  
(४४) दिवो द्यावा  
(४५) दिवस्-दिवः पृथिव्यां वा  
(४६) उषासोषसः  
(४७) मातरपितरं वा  
(४८) वर्चस्कादिष्ववस्करादयः  
(४९) परतः स्त्री पुंवत्

|                                   |                              |
|-----------------------------------|------------------------------|
| स्त्र्येकार्थेऽनूङ्               | (६८) महतः कर-घास-            |
| (५०) क्यङ्-मानि-पित्तद्धिते       | विशिष्टे डाः                 |
| (५१) जातिश्च णि-तद्धितय-स्वरे     | (६९) स्त्रियाम्              |
| (५२) एयेऽग्नयायी                  | (७०) जातीयैकार्थेऽच्चेः      |
| (५३) नाऽप्-प्रियाऽऽदौ             | (७१) न पुंवन्निषेधे          |
| (५४) तद्धिताऽककोपान्त्य-          | (७२) इच्यस्वरे दीर्घ आच्च    |
| पूरण्यारव्याः                     | (७३) हविष्यष्टनः कपाले       |
| (५५) तद्धितः स्वरवृद्धिहेतुररक्त- | (७४) गवि युक्ते              |
| विकारे                            | (७५) नाग्नि                  |
| (५६) स्वाङ्गान्डीर्जातिश्चा-      | (७६) कोटर-मिश्रक-सिध्रक-     |
| ऽमानिनि                           | पुरग-सारिकस्य वणे            |
| (५७) पुंवत् कर्मधारये             | (७७) अञ्जनादीनां गिरौ        |
| (५८) रिति                         | (७८) अनजिरादिबहुस्वर-        |
| (५९) त्व-ते गुणः                  | शरादीनां मतौ                 |
| (६०) च्वौ कचित्                   | (७९) ऋषौ विश्वस्य मित्रे     |
| (६१) सर्वादयोऽस्यादौ              | (८०) नरे                     |
| (६२) मृगक्षीरादिषु वा             | (८१) वसु-राटोः               |
| (६३) ऋदुदित् तर-तम-रूप-           | (८२) वलच्यपित्रादेः          |
| कल्प-ब्रुव-चेलङ्-गोत्र-           | (८३) चितेः कचि               |
| मत-हते वा ह्रस्वश्च               | (८४) स्वामिचिह्नस्याऽविष्टा- |
| (६४) डच्यः                        | ऽष्ट-पञ्च-भिन्न-च्छिन्न-     |
| (६५) भोगवद्-गौरिमतोर्नाम्नि       | च्छिद्र-स्रुव-स्वस्तिकस्य    |
| (६६) नवैकस्वराणाम्                | कर्णे                        |
| (६७) ऊङः                          | (८५) गति-कारकस्य नहि-        |



|   |                               |
|---|-------------------------------|
| वृत्ति-वृषि-व्यधि-रुचि-                 | (१०२) केशे वा                 |
| सहि-तनौ कौ                              | (१०३) शीर्षः स्वरे तद्धिते    |
| (८६) घञ्युपसर्गस्य बहुलम्               | (१०४) उदकस्योदः पेष-          |
| (८७) नामिनः काशे                        | धि-वास-वाहने                  |
| (८८) दस्ति                              | (१०५) वैकव्यञ्जने पूर्ये      |
| (८९) अपील्लादेर्वहे                     | (१०६) मन्थौदन-सक्तु-बिन्दु-   |
| (९०) शुनः                               | वज्र-भार-हार-वीवध-            |
| (९१) एकादश-षोडश-षोडत्-                  | गाहे वा                       |
| षोढा-षड्ढा                              | (१०७) नाभ्युत्तरपदस्य च       |
| (९२) द्वित्र्यष्टानां द्वा-त्रयो-ऽष्टाः | (१०८) ते लुग्वा               |
| प्राक् शतादनशीति-                       | (१०९) द्व्यन्तरनवर्णोपसर्गादप |
| बहुव्रीहौ                               | ईप्                           |
| (९३) चत्वारिंशदादौ वा                   | (११०) अनोर्देशे उप्           |
| (९४) हृदयस्य हल्लास-लेखा-               | (१११) खित्यनव्यया-ऽरुषो       |
| ऽण्-ये                                  | मोऽन्तो ह्रस्वश्च             |
| (९५) पदः पादस्याऽऽज्याति-               | (११२) सत्या-ऽगदा-ऽस्तोः       |
| गोपहते                                  | कारे                          |
| (९६) हिम-हति-काषि-ये पद्                | (११३) लोकम्पृण-मध्यन्दिना-    |
| (९७) ऋचः शशसि                           | ऽनभ्याशमित्यम्                |
| (९८) शब्द-निष्क-घोष-                    | (११४) भ्राष्ट्रा-ऽग्रेरिन्धे  |
| मिश्रे वा                               | (११५) अगिलाद् गिल-            |
| (९९) नस् नासिकायास्तः क्षुद्रे          | गिलगिलयोः                     |
| (१००) येऽवर्णे                          | (११६) भद्रोष्णात् करणे        |
| (१०१) शिरसः शीर्षन्                     | (११७) नवाऽखितकृदन्ते रात्रेः  |

|   |  |
|---|--|
| (११८) धेनोर्भव्यायाम्                           | (१३९) समस्तत-हिते वा                         |
| (११९) अषष्ठीतृतीयादन्याद्<br>दोऽर्थे            | (१४०) तुमश्च मनः कामे                        |
| (१२०) आशीराशा-ऽऽस्थिता-<br>ऽऽस्थोत्सुकोति-रागे  | (१४१) मांसस्याऽनङ्-घञि पचि<br>नवा            |
| (१२१) ईय-कारके                                  | (१४२) दिक्शब्दात् तीरस्य तारः                |
| (१२२) सर्वादि-विश्वग्-<br>देवाड्डद्रिः क्वचञ्चौ | (१४३) सहस्य सोऽन्यार्थे                      |
| (१२३) सह-समः सघ्नि-समि                          | (१४४) नाम्नि                                 |
| (१२४) तिरसस्तिर्यति                             | (१४५) अदृश्या-ऽधिके                          |
| (१२५) नञत्                                      | (१४६) अकालेऽव्ययीभावे                        |
| (१२६) त्यादौ क्षेपे                             | (१४७) ग्रन्थान्ते                            |
| (१२७) नगोऽप्राणिनि वा                           | (१४८) नाऽऽशिष्यगो-वत्स-<br>हले               |
| (१२८) नखादयः                                    | (१४९) समानस्य धर्मादिषु                      |
| (१२९) अन् स्वरे                                 | (१५०) सब्रह्मचारी                            |
| (१३०) कोः कत् तत्पुरुषे                         | (१५१) दृक्-दृश-दृक्षे                        |
| (१३१) रथ-वदे                                    | (१५२) अन्य-त्यदादेराः                        |
| (१३२) तृणे जातौ                                 | (१५३) इदं-किमीत्-की                          |
| (१३३) कत्विः                                    | (१५४) अनञः क्त्वो यप्                        |
| (१३४) काऽक्ष-पथोः                               | (१५५) पृषोदरादयः                             |
| (१३५) पुरुषे वा                                 | (१५६) वाऽवाऽप्योस्तनि-क्री<br>धाग्-नहोर्व-पी |
| (१३६) अल्पे                                     |  |
| (१३७) का-कवौ वोष्णे                             |  |
| (१३८) कृत्येऽवश्यमो लुक्                        |  |

[तृतीयाध्याये तृतीयः पादः]

(१) वृद्धिराऽऽरैदौत्  
 (२) गुणोऽरेदोत्  
 (३) क्रियार्थो धातुः  
 (४) न प्रादिरप्रत्ययः  
 (५) अवौ दा-धौ दा  
 (६) वर्तमाना-तिव् तस् अन्ति,  
 सिव् थस् थ , मिव् वस् मस्  
 ; ते आते अन्ते , से आथे  
 ध्वे , ए वहे महे  
 (७) सप्तमी-यात् याताम् युस् ,  
 यास् यातम् यात , याम् याव  
 याम् ; ईत् ईयाताम् ईरन् ,  
 ईथास् ईयाथाम् ईध्वम् , ईय  
 ईवहि ईमहि  
 (८) पञ्चमी-तुव् ताम् अन्तु ,  
 हि तम् त , आनिव् आवव्  
 आमव् ; ताम् आताम् अन्ताम्  
 , स्व आथाम् ध्वम् , ऐव्  
 आवहैव् आमहैव्  
 (९) ह्यस्तनी-दिव् ताम् अन् ,  
 सिव् तम् त , अम् व म ;  
 त आताम् अन्त , थास्  
 आथाम् ध्वम् , इ वहि महि  
 (१०) एताः शितः  
 (११) अद्यतनी-दि ताम् अन् ,  
 सि तम् त , अम् व म ;  
 त आताम् अन्त , थास्  
 आथाम् ध्वम् , इ वहि महि  
 (१२) परोक्षा-णव् अतुस् उस् ,  
 थव् अथुस् अ , णव् व  
 म ; ए आते इरे , से  
 आथे ध्वे , ए वहे महे  
 (१३) आशीः-क्यात् क्यास्ताम्  
 क्यासुस् , क्यास् क्यास्तम्  
 क्यास्त , क्यासम् क्यास्व  
 क्यास्म ; सीष्ट सीयास्ताम्  
 सीरन् , सीष्ठास् सीया  
 स्थाम् सीध्वम् , सीष  
 सीवहि सीमहि  
 (१४) श्वस्तनी- ता तारौ तारस्  
 , तासि तास्थस् तास्थ ,  
 तास्मि तास्वस् तास्मस् ;  
 ता तारौ तारस् , तासे  
 तासाथे ताध्वे , ताहे

- तास्वहे तास्महे (२३) क्रियाव्यतिहारेऽगति-  
 (१५) भविष्यन्ती- स्यति स्यतस् हिंसा-शब्दार्थ-हसो ह-  
 स्यन्ति , स्यसि स्यथस् वहश्चाऽनन्योन्यार्थे  
 स्यथ , स्यामि स्यावस् (२४) निविशः  
 स्यामस् ; स्यते स्येते (२५) उपसर्गादस्योहो वा  
 स्यन्ते , स्यसे स्येथे स्यध्वे (२६) उत्-स्वराद्  
 , स्ये स्यावहे स्यामहे युजेरयज्ञतत्पात्रे  
 (१६) क्रियातिपत्तिः- स्यत् (२७) परि-व्यवात् क्रियः  
 स्यताम् स्यन् , स्यस् (२८) परा-वेर्जेः  
 स्यतम् स्यत , स्यम् स्याव (२९) समः क्ष्णोः  
 स्याम ; स्यत स्येताम् (३०) अपस्किरः  
 स्यन्त , स्यथास् स्येथाम् (३१) उदश्चरः साप्यात्  
 स्यध्वम् , स्ये स्यावहि (३२) समस्तृतीयया  
 स्यामहि (३३) क्रीडोऽकूजने  
 (१७) त्रीणि त्रीण्यन्ययुष्मदस्मदि (३४) अन्वाङ्-परेः  
 (१८) एक-द्वि-बहुषु (३५) शप उपलम्भने  
 (१९) नवाऽऽद्यानि शतृ-कसू च (३६) आशिषि नाथः  
 परस्मैपदम् (३७) भुनजोऽत्राणे  
 (२०) पराणि काना-ऽऽनशौ (३८) हगो गतताच्छील्ये  
 चाऽऽत्मनेपदम् (३९) पूजा-ऽऽचार्यक-  
 (२१) तत् साप्या-ऽनाप्यात् भृत्युत्क्षेप-ज्ञान-विग-  
 कर्म-भावे , कृत्य-क्त- णन-व्यये नियः  
 खलर्थाश्च (४०) कर्तृस्थामूर्त्ताऽऽप्यात्  
 (२२) इडितः कर्त्तरि (४१) शदेः शिति

- (४२) म्रियतेरद्यतन्याशिषि च (६३) सं-वि-प्रा-ऽवात्  
 (४३) क्यङ्क्षो नवा (६४) झीप्सा-स्थेये  
 (४४) द्युद्भ्योऽद्यतन्याम् (६५) प्रतिज्ञायाम्  
 (४५) वृद्भ्यः स्य-सनोः (६६) समो गिरः  
 (४६) कृपः श्वस्तन्याम् (६७) अवात्  
 (४७) क्रमोऽनुपसर्गात् (६८) निह्वे ज्ञः  
 (४८) वृत्ति-सर्ग-तायने (६९) सं-प्रतेरस्मृतौ  
 (४९) परोपात् (७०) अननोः सनः  
 (५०) वेः स्वार्थे (७१) श्रुवोऽनाङ्-प्रतेः  
 (५१) प्रोपादारम्भे (७२) स्मृ-दृशः  
 (५२) आङो ज्योतिरुद्गमे (७३) शको जिज्ञासायाम्  
 (५३) दागोऽस्वास्यप्रसार- (७४) प्राग्वत्  
 विकासे (७५) आमः कृगः  
 (५४) नु-प्रच्छः (७६) गन्धना-ऽवक्षेप-सेवा-  
 (५५) गमेः क्षान्तौ साहस-प्रतियत्न-प्रकथनो  
 (५६) ह्वः स्पर्द्धे पयोगे  
 (५७) सं-नि-वेः (७७) अधेः प्रसहने  
 (५८) उपात् (७८) दीप्ति-ज्ञान-यत्न-विम-  
 (५९) यमः स्वीकारे त्युपसंभाषोपमन्त्रणे वदः  
 (६०) देवार्चा-मैत्री-सङ्गम- (७९) व्यक्तवाचां सहोक्तौ  
 पथिकर्तृक-मन्त्रकरणे (८०) विवादे वा  
 स्थः (८१) अनोः कर्मण्यसति  
 (६१) वा लिप्सायाम् (८२) ज्ञः  
 (६२) उदोऽनूध्वेहै (८३) उपात् स्थः

|  |   |
|--|---|
| (८४) समो गमृच्छि-प्रच्छि-श्रु-<br>वित्-स्वरत्यर्त्ति-दशः | ऽद-रुच-नृतः फलवति<br>(९५) ई-गितः                                |
| (८५) वेः कृगः शब्दे चाऽनाशे                              | (९६) ज्ञोऽनुपसर्गात्  |
| (८६) आडो यम-हनः ,<br>स्वेऽङ्गे च                         | (९७) वदोऽपात्<br>(९८) समुदाडो यमेरग्रन्थे                       |
| (८७) व्युदस्तपः  | (९९) पदान्तरगम्ये वा  |
| (८८) अणिकर्मणिक्कर्तृ-<br>काणिगोऽस्मृतौ                  | (१००) शेषात् परस्मै<br>(१०१) परानोः कृगः                        |
| (८९) प्रलम्भे गृधि-वञ्चेः                                | (१०२) प्रत्यभ्यतेः क्षिपः                                       |
| (९०) लीड्-लिनोऽर्चा-ऽभिभवे<br>चाऽऽच्चाकर्त्तर्यपि        | (१०३) प्राद् वहः<br>(१०४) परेर्मृषश्च                           |
| (९१) स्मिङ्ः प्रयोक्तुः स्वार्थे                         | (१०५) व्याङ्-परे रमः  |
| (९२) बिभेतेभीष् च  | (१०६) वोपात्  |
| (९३) मिथ्याकृगोऽभ्यासे                                   | (१०७) अणिगि प्राणिकर्तृका-                                      |
| (९४) परिमुहा-ऽऽयमा-ऽऽयस-<br>पा-ट्थे-वद-वस-दमा-           | नाप्याणिगः<br>(१०८) चल्याहारार्थेङ्-बुध-<br>युध-पु-दु-सु-नश-जनः |

### [तृतीयाध्याये चतुर्थः पादः]

|                                     |                                  |
|-------------------------------------|----------------------------------|
| (१) गुपौ-धूप-विच्छि-पणि-<br>पनेरायः | (३) ऋतेर्डीयः<br>(४) अशवि ते वा  |
| (२) कमेर्णिङ्                       | (५) गुप्-तिजो गर्हा-क्षान्तौ सन् |

- (६) कितः संशय-प्रतीकारे  
 (७) शान्-दान्-मान्-  
 बधान्निशाना-ऽऽर्जव-  
 विचार-वैरूप्ये दीर्घश्चेतः  
 (८) धातोः कण्ड्वादेर्यक्  
 (९) व्यञ्जनादेरेकस्वराद् भृशा-  
 ऽऽभीक्ष्ण्ये यङ् वा  
 (१०) अट्यर्त्ति-सूत्रि-मूत्रि-  
 सूच्यशूर्णोः  
 (११) गत्यर्थात् कुटिले  
 (१२) गृ-लुप-सद-चर-जप-  
 जभ-दश-दहो गर्ह्ये  
 (१३) न गृणा-शुभ-रुचः  
 (१४) बहुलं लुप्  
 (१५) अचि  
 (१६) नोतः  
 (१७) चुरादिभ्यो णिच्  
 (१८) युजादेर्नवा  
 (१९) भूङ्ः प्राप्तौ णिङ्  
 (२०) प्रयोक्तृव्यापारे णिगृ  
 (२१) तुमर्हादिच्छायां  
 सन्नतत्सनः  
 (२२) द्वितीयायाः काम्यः  
 (२३) अमाव्ययात् क्यन् च  
 (२४) आधाराच्चोपमानादाचारे  
 (२५) कर्तुः किप् , गल्भ-क्लीब-  
 होडात्तु डित्  
 (२६) क्यङ्  
 (२७) सो वा लुक् च  
 (२८) ओजोऽप्सरसः  
 (२९) च्यर्थे भृशादेः स्तोः  
 (३०) डाच्-लोहितादिभ्यः षित्  
 (३१) कष्ट-कक्ष-कृच्छ्र-सत्र-  
 गहनाय पापे क्रमणे  
 (३२) रोमन्थाद् व्याप्यादुच्चर्वणे  
 (३३) फेनोष्म-बाष्प-  
 धूमादुद्धमने  
 (३४) सुखादेरनुभवे  
 (३५) शब्दादेः कृतौ वा  
 (३६) तपसः क्यन्  
 (३७) नमो-वरिवश्चित्रडोऽर्चा-  
 सेवा-ऽऽश्चर्ये  
 (३८) अङ्गान्निरसने णिङ्  
 (३९) पुच्छादुत्-परि-व्यसने  
 (४०) भाण्डात् समाचितौ  
 (४१) चीवरात् परिधा-ऽर्जने  
 (४२) णिज्बहुलं नाम्नः कृगादिषु  
 (४३) व्रताद् भुजि-तन्निवृत्त्योः

- |                                |                                     |
|--------------------------------|-------------------------------------|
| (४४) सत्या-ऽर्थ-वेदस्याः       | (६१) सत्त्यर्तेर्वा                 |
| (४५) श्वेताश्वा-ऽश्वतर-        | (६२) ह्या-लिप्-सिचः                 |
| गालोडिता-ऽऽह्वरकस्या-          | (६३) वाऽऽत्मने                      |
| ऽश्व-तरेत-कलुक्                | (६४) लृदिद्-द्युतादि-पुष्यादेः      |
| (४६) धातोरनेकस्वरादाम् परो     | परस्मै                              |
| क्षायाः कृभ्वस्ति चानु         | (६५) ऋदिच्छ्वि-स्तम्भू-मुचू-        |
| तदन्तम्                        | म्लुचू-गुचू-ग्लुचू-                 |
| (४७) दया-ऽया-ऽऽस्-कासः         | ग्लुञ्चू-ज्रो वा                    |
| (४८) गुरुनाम्यादेरनृच्छूर्णोः  | (६६) जिच् ते पदस्तलुक् च            |
| (४९) जागुष-समिन्धेर्नवा        | (६७) दीप-जन-बुधि-पूरि-              |
| (५०) भी-ह्री-भृ-होस्तिव्वत्    | ताय-प्यायो वा                       |
| (५१) वेत्तेः कित्              | (६८) भाव-कर्मणोः                    |
| (५२) पञ्चम्याः कृग्            | (६९) स्वर-ग्रह-दृश-हन्भ्यः          |
| (५३) सिजघतन्याम्               | स्य-सिजाशीः-श्वस्तन्यां             |
| (५४) स्पृश-मृश-कृष-तृप-दृपो    | जिट् वा                             |
| वा                             | (७०) क्यः शिति                      |
| (५५) ह-शितो नाम्युपान्त्याद-   | (७१) कर्त्तर्यनद्भ्यः शब्           |
| दृशोऽनितः सकृ                  | (७२) दिवादेः श्यः                   |
| (५६) श्लिषः                    | (७३) भ्रास-भ्लास-भ्रम-क्रम-         |
| (५७) नाऽसत्त्वाश्लेषे          | क्लम-त्रसि-त्रुटि-लषि-              |
| (५८) णि-त्रि-द्रु-सु-कमः       | यसि-संयसेर्वा                       |
| कर्त्तरि डः                    | (७४) कुषि-रञ्जेर्व्याप्ये वा परस्मै |
| (५९) ट्थे-श्वेर्वा             | च                                   |
| (६०) शास्त्यसू-वक्ति-ख्यातेरङ् | (७५) स्वादेः श्नुः                  |



- |                                |                               |
|--------------------------------|-------------------------------|
| (७६) वाऽक्षः                   | (८६) एकधातौ कर्मक्रिययैका-    |
| (७७) तक्षः स्वार्थे वा         | कर्मक्रिये                    |
| (७८) स्तम्भू-स्तुम्भू-स्कम्भू- | (८७) पचि-दुहेः                |
| स्कम्भू-स्कोः श्वा च           | (८८) न कर्मणा जिच्            |
| (७९) क्रचादेः                  | (८९) रुधः                     |
| (८०) व्यञ्जनाच्छनाहेरानः       | (९०) स्वर-दुहो वा             |
| (८१) तुदादेः शः                | (९१) तपः कर्त्रनुतापे च       |
| (८२) रुधां स्वराच्चनो नलुक् च  | (९२) णि-स्नु-श्रयात्मनेपदा-   |
| (८३) कृग्-तनादेरुः             | कर्मकात्                      |
| (८४) सृजः श्राद्धे जि-क्या-    | (९३) भूषार्थ-सन्-किरादिभ्यश्च |
| ऽऽत्मने तथा                    | जि-क्यौ                       |
| (८५) तपेस्तपःकर्मकात्          | (९४) करणक्रियया कचित्         |

[चतुर्थाध्याये प्रथमः पादः]

- |   |                                 |
|---|---------------------------------|
| (१) द्विधातुः परोक्षा-डे , प्राक् तु<br>स्वरे स्वरविधेः | (१९) अव्याप्यस्य मुचेर्मोर्वा   |
| (२) आद्योऽंश एकस्वरः                                    | (२०) मि-मी-मा-दामित्<br>स्वरस्य |
| (३) सन्-यङश्च   | (२१) रभ-लभ-शक-पत-               |
| (४) स्वरादेर्द्वितीयः                                   | पदामिः                          |
| (५) न ब-द-नं संयोगादिः                                  | (२२) राधेर्वधे                  |
| (६) अयि रः  | (२३) अवित्परोक्षा-सेट्थवोरेः    |
| (७) नाम्नो द्वितीयाद् यथेष्टम्                          | (२४) अनादेशादेरकव्यञ्जन-        |
| (८) अन्यस्य   | मध्येऽतः                        |
| (९) कण्ड्वादेस्तृतीयः                                   | (२५) तृ-त्रप-फल-भजाम्           |
| (१०) पुनरेकेषाम्  | (२६) जृ-भ्रम-वम-त्रस-           |
| (११) यिः सन् वेष्ट्यः                                   | फण-स्यम-स्वन-राज-               |
| (१२) हवः शिति   | भ्राज-भ्रास-भ्लासो वा           |
| (१३) चराचर-चलाचल-                                       | (२७) वा श्रन्थ-ग्रन्थो नूलुक् च |
| पतापत-वदावद-  | (२८) दम्भः                      |
| घनाघन-पादूपटं वा  | (२९) थे वा                      |
| (१४) चिक्लिद-चक्नसम्                                    | (३०) न शस-दद-वादि-गुणिनः        |
| (१५) दाश्वत्-साह्वत्-मीढ्वत्                            | (३१) हौ दः                      |
| (१६) ज्ञप्यापो झीपीप् , न च<br>द्विः , सि सनि           | (३२) देर्दिगिः परोक्षायाम्      |
| (१७) ऋध ईर्त्   | (३३) डे पिबः पीप्स्             |
| (१८) दम्भो धिप्-धीप्                                    | (३४) अडे हि-हनो हो घः पूर्वात्  |
|   | (३५) जेर्गिः सन्-परोक्षयोः      |

- (३६) चेः किर्वा (५७) निजां शित्येत्  
 (३७) पूर्वस्याऽस्वे स्वरे योरियुव् (५८) पु-भृ-मा-हाडामिः  
 (३८) ऋतोऽत् (५९) सन्यस्य  
 (३९) ह्रस्वः (६०) ओर्जा-ऽन्तस्था-  
 (४०) ग-होर्जः पवर्गेऽवर्णे  
 (४१) द्युतेरिः (६१) श्रु-स्रु-द्रु-पु-लु-च्योर्वा  
 (४२) द्वितीय-तुर्ययोः पूर्वौ (६२) स्वपो णावुः  
 (४३) तिर्वा षिवः (६३) असमानलोपे सन्वल्लघुनि  
 (४४) व्यञ्जनस्याऽनादेर्लुक् डे  
 (४५) अघोषे शितः (६४) लघोर्दीर्घोऽस्वरादेः  
 (४६) क-डश्च-ञ् (६५) स्मृ-ट्-त्वर-प्रथ-प्रद-  
 (४७) न कवतेर्यङः स्तृ-स्पर्शरः  
 (४८) आ-गुणावन्यादेः (६६) वा वेष्ट-चेष्टः  
 (४९) न हाको लुपि (६७) ई च गणः  
 (५०) वञ्च-संस-ध्वंस-भ्रंश-  
 कस-पत-पद-स्कन्दोऽ  
 न्तो नी (६८) अस्याऽऽदेराः परोक्षायाम्  
 (५१) मुरतोऽनुनासिकस्य (६९) अनातो नश्चान्त  
 (५२) जप-जभ-दह-दश-  
 भञ्ज-पशः ऋदाद्यशौ-संयोगस्य  
 (५३) चर-फलाम् (७०) भू-स्वपोरदुतौ  
 (५४) ति चोपान्त्याऽतो नोदुः (७१) ज्या-व्ये-व्यधि-  
 (५५) क्रमतां री व्यचि-व्यथेरिः  
 (५६) रि-रौ च लुपि (७२) यजादि-वश्-वचः  
 सस्वरान्तस्था य्वृत्  
 (७३) न वयो य्  
 (७४) वेरयः

|                                   |                              |
|-----------------------------------|------------------------------|
| (७५) अविति वा                     | (९८) प्रतेः                  |
| (७६) ज्यश्च यपि                   | (९९) वाऽभ्यवाभ्याम्          |
| (७७) व्यः                         | (१००) श्रः शृतं हविः-क्षीरे  |
| (७८) संपरेर्वा                    | (१०१) श्रपेः प्रयोक्त्रैक्ये |
| (७९) यजादि-वचेः किति              | (१०२) खृत् सकृत्             |
| (८०) स्वपेर्यङ्-ङे च              | (१०३) दीर्घमवोऽन्त्यम्       |
| (८१) ज्या-व्यधः क्ङिति            | (१०४) स्वर-हन-गमोः सनि       |
| (८२) व्यचोऽनसि                    | धुटि                         |
| (८३) वशेरयङि                      | (१०५) तनो वा                 |
| (८४) ग्रह-व्रस्च-भ्रस्ज-प्रच्छः   | (१०६) क्रमः क्त्वि वा        |
| (८५) व्ये-स्यमोर्यङि              | (१०७) अहन्-पञ्चमस्य          |
| (८६) चायः की                      | कि-क्ङिति                    |
| (८७) द्वित्वे ह्वः                | (१०८) अनुनासिके च            |
| (८८) णौ ङ-सनि                     | च्छ-वः शूट्                  |
| (८९) श्वेर्वा                     | (१०९) मव्यवि-श्रिवि-         |
| (९०) वा परोक्षा-यङि               | ज्वरि-त्वरेरूपान्त्येन       |
| (९१) प्यायः पी                    | (११०) राल्लुक्               |
| (९२) क्तयोरनुपसर्गस्य             | (१११) क्तेऽनितश्च-जोः        |
| (९३) आङोऽन्धूधसोः                 | क-गौ घिति                    |
| (९४) स्फायः स्फी वा               | (११२) न्यङ्कूट्-मेघादयः      |
| (९५) प्रसमः स्त्यः स्ती           | (११३) न वञ्चेर्गतौ           |
| (९६) प्रात् तश्च मो वा            | (११४) यजेर्यज्ञाङ्गे         |
| (९७) श्यः शी द्रवमूर्त्ति-स्पर्शे | (११५) घ्यण्यावश्यके          |
| नश्चाऽस्पर्शे                     | (११६) नि-प्राद् युजः शक्ये   |

- |                      |                              |
|----------------------|------------------------------|
| (११७) भुजो भक्ष्ये   | (१२०) भुज-न्युञ्जं पाणि-रोगे |
| (११८) त्यज-यज-प्रवचः | (१२१) वीरुन्-न्यग्रोधौ       |
| (११९) वचोऽशब्दनाम्नि |                              |

### [चतुर्थाध्याये द्वितीयः पादः]

- |                              |  |
|------------------------------|--|
| (१) आत् सन्ध्यक्षरस्य        | (१९) वो विधूनने जः                                   |
| (२) न शिति                   | (२०) पा-शा-छा-सा-वे-व्या-<br>हो यः                   |
| (३) व्यस्थव्-णवि             | (२१) अर्त्ति-री-व्ली-ही-<br>क्नूयि-क्ष्माय्यातां पुः |
| (४) स्फुर-स्फुलोर्ध्वजि      | (२२) स्फाय् स्फाव्                                   |
| (५) वाऽपगुरो णमि             | (२३) शदिरगतौ शात्                                    |
| (६) दीङः सनि वा              | (२४) घटादेर्ह्रस्वो दीर्घस्तु वा<br>त्रि-णम्परे      |
| (७) यबक्डिति                 | (२५) कगे-वनू-जनै-जृषू-<br>क्रस्-रञ्जः                |
| (८) मिग्-मीगोऽखलचलि          | (२६) अमोऽकम्यमि-चमः                                  |
| (९) लीङ्-लिनोर्वा            | (२७) पर्यपात् स्वदः                                  |
| (१०) णौ क्री-जीङः            | (२८) शमोऽदर्शनै                                      |
| (११) सिध्यतेरज्ञाने          | (२९) यमोऽपरिवेषणे णिचि च                             |
| (१२) चि-स्फुरोर्नवा          | (३०) मारण-तोषण-निशाने<br>ज्ञश्च                      |
| (१३) वियः प्रजने             | (३१) चहणः शाठ्ये                                     |
| (१४) रुहः पः                 |  |
| (१५) लियो नोऽन्तः स्नेहद्रवे |  |
| (१६) लो लः                   |  |
| (१७) पातेः                   |  |
| (१८) धूग्-प्रीगोर्नः         |  |

- |                                 |                               |
|---------------------------------|-------------------------------|
| (३२) ज्वल-हल-हल-ग्ला-           | (४८) भञ्जेजौ वा               |
| स्ना-वनू-वम-नमोऽनुप-            | (४९) दंश-सञ्जः शवि            |
| सर्गस्य वा                      | (५०) अकट्-घिनोश्च रञ्जैः      |
| (३३) छदेरिस्-मन्-त्रट्-कौ       | (५१) गौ मृगरमणे               |
| (३४) एकोपसर्गस्य च घे           | (५२) घञि भाव-करणे             |
| (३५) उपान्त्यस्याऽसमान          | (५३) स्यदो जवे                |
| लोपि-शास्वृदितो डे              | (५४) दशना-ऽवोदैधौघ-           |
| (३६) भ्राज-भास-भाष-दीप-         | प्रश्रथ-हिमश्रथम्             |
| पीड-जीव-मील-कण-                 | (५५) यमि-रमि-नमि-गमि-         |
| रण-वण-भण-श्रण-ह्वे-             | हनि-मनि-वनति-तना-             |
| हेठ-लुट-लुप-लपां नवा            | देर्धुटि किडिति               |
| (३७) ऋट्वर्णस्य                 | (५६) यपि                      |
| (३८) जिघ्रतेरिः                 | (५७) वा मः                    |
| (३९) तिष्ठतेः                   | (५८) गमां कौ                  |
| (४०) ऊद् दुषो गौ                | (५९) न तिकि दीर्घश्च          |
| (४१) चित्ते वा                  | (६०) आः खनि-सनि-जनः           |
| (४२) गोहः स्वरे                 | (६१) सनि                      |
| (४३) भुवो वः परोक्षा-ऽद्यतन्योः | (६२) ये नवा                   |
| (४४) गम-हन-जन-खन-घसः            | (६३) तनः क्ये                 |
| स्वरेऽनडि किडिति लुकू           | (६४) तौ सनस्तिकि              |
| (४५) नो व्यञ्जनस्याऽनुदितः      | (६५) वन्याङ् पञ्चमस्य         |
| (४६) अञ्चोऽनर्चायाम्            | (६६) अपाचायश्चिः तौ           |
| (४७) लङ्गि-कम्प्योरुपतापा-      | (६७) ह्लादो ह्लद् कयोश्च      |
| ऽङ्गविकृत्योः                   | (६८) ऋ-ल्वादैरेषां तो नोऽप्रः |

- (६९) रदादमूर्च्छ-मदः कयोर्दस्य  
च (८६) असंयोगादोः  
(७०) सूयत्याद्योदितः (८७) वम्यविति वा  
(७१) व्यञ्जनान्तस्थाऽऽ तो- (८८) कृगो यि च  
ऽख्या-ध्यः (८९) अतः शित्युत्  
(७२) पू-दिव्यञ्चेनाशा- (९०) श्ना-ऽस्त्योर्लुक्  
ऽद्युता-ऽनपादाने (९१) वा द्विषातोऽनः पुस्  
(७३) सेर्गासे कर्मकर्त्तरि (९२) सिज्-विदोऽभुवः  
(७४) क्षेः क्षी चाऽघ्यार्थे (९३) द्र्युक्त-जक्षपञ्चतः  
(७५) वाऽऽक्रोश-दैन्ये (९४) अन्तो नो लुक्  
(७६) ऋ-ही-घ्रा-घ्रा- त्रोन्द- (९५) शौ वा  
नुद-विन्तेर्वा (९६) श्नाश्चाऽऽतः  
(७७) दु-गोरू च (९७) एषामी व्यञ्जनेऽदः  
(७८) क्षै-शुषि-पचो म-क-वम् (९८) इर्दरिद्रः  
(७९) निर्वाणमवाते (९९) भियो नवा  
(८०) अनुपसर्गाः क्षीबोल्लाघ- (१००) हाकः  
कृश-परिकृश- (१०१) आ च हौ  
फुल्लोत्फुल्ल- संफुल्लाः (१०२) यि लुक्  
(८१) भित्तं शकलम् (१०३) ओतः श्ये  
(८२) वित्तं धन-प्रतीतम् (१०४) जा ज्ञा-जनोऽत्यादौ  
(८३) हु-धुटो हेर्धिः (१०५) प्वादेर्ह्रस्वः  
(८४) शासस्-हनः शाध्येधि- (१०६) गमिषद्यमश्छः  
जहि (१०७) वेगे सत्तेर्धाव्  
(८५) अतः प्रत्ययाल्लुक् (१०८) श्रौति-कृबु-धिवु-पा-  
घ्रा-ध्मा-स्था-म्ना-

|                           |                                   |
|---------------------------|-----------------------------------|
| दाम्-दृश्यर्त्ति-शद-      | (११४) अनतोऽन्तोऽदात्मने           |
| सदः शृ-कृ-धि-पिब-         | (११५) शीडो रत्                    |
| जिघ्र-धम-तिष्ठ-मन-        | (११६) वेत्तेर्नवा                 |
| यच्छ-पश्यच्छ-शीय-         | (११७) तिवं णवः परस्मै             |
| सीदम्                     | (११८) ब्रूगः पञ्चानां पञ्चाऽऽहश्च |
| (१०९) क्रमो दीर्घः परस्मै | (११९) आशिषि तु-ह्योस्तातङ्        |
| (११०) षिवू-क्लृम्वाऽऽचमः  | (१२०) आतो णव औः                   |
| (१११) शम्सप्तकस्य श्ये    | (१२१) आतामाते-आथामाथे             |
| (११२) षिवू-सिवोऽनटि वा    | आदिः                              |
| (११३) म-व्यस्याः          | (१२२) यः सप्तम्याः                |
|                           | (१२३) याम्-युसोरियमियुसौ          |

### [चतुर्थाध्याये तृतीयः पादः]

|                               |                                   |
|-------------------------------|-----------------------------------|
| (१) नामिनो गुणोऽक्विति        | (११) न वृद्धिश्चाऽविति क्विड्लोपे |
| (२) उ-श्नोः                   | (१२) भवतेः सिज्जुलिपि             |
| (३) पुस्-पौ                   | (१३) सूतेः पञ्चम्याम्             |
| (४) लघोरुपान्त्यस्य           | (१४) द्व्युक्तोपान्त्यस्य शिति    |
| (५) मिदः श्ये                 | स्वरे                             |
| (६) जागुः किति                | (१५) ह्विणोरप्विति वू-यौ          |
| (७) ऋवर्ण-दृशोऽडि             | (१६) इको वा                       |
| (८) स्कृच्छृतोऽकि परोक्षायाम् | (१७) कुटादेर्दिद्वद्विणित्        |
| (९) संयोगाददत्तेः             | (१८) विजेरिट्                     |
| (१०) क्य-यडाऽऽशीर्ये          | (१९) वोण्णोः                      |



- |   |   |
|---|---|
| (२०) शिदवित्  | (३६) ऋवर्णात्                             |
| (२१) इन्ध्यसंयोगात् परोक्षा<br>किद्वत्              | (३७) गमो वा                               |
| (२२) स्वञ्जेर्नवा                                   | (३८) हनः सिच्                             |
| (२३) ज-नशो न्युपान्त्ये तादिः<br>क्त्वा             | (३९) यमः सूचने                            |
| (२४) ऋत्-तृष-मृष-कृश-<br>वञ्च-लुञ्च-थ-फः सेट्       | (४०) वा स्वीकृतौ                          |
| (२५) वौ व्यञ्जनाऽऽदेः सन्<br>चाऽय्-वः               | (४१) इश्च स्था-दः                         |
| (२६) उति शवर्हाऽद्भ्यः क्तौ<br>भावाऽऽरम्भे          | (४२) मृजोऽस्य वृद्धिः                     |
| (२७) न-डीङ्-शीङ्-पूङ्-<br>धृषि-क्ष्विदि-स्विदि-मिदः | (४३) ऋतः स्वरे वा                         |
| (२८) मृषः क्षान्तौ                                  | (४४) सिचि परस्मै<br>समानस्याऽङिति         |
| (२९) क्त्वा   | (४५) व्यञ्जनानामनिटि                      |
| (३०) स्कन्द-स्यन्दः                                 | (४६) वोर्णुगः सेटि                        |
| (३१) क्षुध-क्लिश-कुष-गुध- <b>मृड-</b><br>मृद-वद-वसः | (४७) व्यञ्जनादेर्वोपान्त्यस्याऽतः         |
| (३२) रुद-विद-मुष-ग्रह-<br>स्वप-प्रच्छः सन् च        | (४८) वद-व्रज-छः                           |
| (३३) नामिनोऽनिट्                                    | (४९) न श्वि-जागृ-शस-<br>क्षण-ह्म्येदितः   |
| (३४) उपान्त्ये                                      | (५०) ङिति                                 |
| (३५) सिजाशिषावात्मने                                | (५१) नामिनोऽकलि-हलेः                      |
|   | (५२) जागुर्जि-णवि                         |
|   | (५३) आत ऐः कृञ्जौ                         |
|   | (५४) न जन-बधः                             |
|   | (५५) मोऽकमि-यमि-रमि-<br>नमि-गमि-वमा-ऽऽचमः |
|   | (५६) विश्रमेर्वा                          |

|                                |                              |
|--------------------------------|------------------------------|
| (५७) उद्यमोपरमौ                | णका-ऽनटि                     |
| (५८) णिद्वाऽन्त्यो णव्         | (७८) व्यञ्जनाद् देः सश्च दः  |
| (५९) उत और्विति व्यञ्जनेऽद्वेः | (७९) सेः स्-द्-धां च रुर्वा  |
| (६०) वोष्णोः                   | (८०) योऽशिति                 |
| (६१) न दि-स्योः                | (८१) क्यो वा                 |
| (६२) तृहः श्नादीत्             | (८२) अतः                     |
| (६३) ब्रूतः परादिः             | (८३) णेरनिटि                 |
| (६४) यङ्-तु-रु-स्तोर्बहुलम्    | (८४) सेट्क्तयोः              |
| (६५) सः सिजस्तेर्दि-स्योः      | (८५) आमन्ताऽऽल्वाऽऽय्ये-     |
| (६६) पिबैति-दा-भू-स्थः         | त्तावय्                      |
| सिचो लुप् परस्मै न चेद्        | (८६) लघोर्यपि                |
| (६७) ट्थे-घ्रा-शा-छा-सो वा     | (८७) वाऽऽप्नोः               |
| (६८) तन्भ्यो वा त-थासि न्-     | (८८) मेडो वा मित्            |
| णोश्च                          | (८९) क्षेः क्षी              |
| (६९) सनस्तत्रा वा              | (९०) क्षय्य-जय्यौ शक्तौ      |
| (७०) धुङ्-हस्वाल्लुगनिटस्त-थोः | (९१) क्रय्यः क्रयार्थे       |
| (७१) इट ईति                    | (९२) सस्तः सि                |
| (७२) सो धि वा                  | (९३) दीय् दीडः क्ङिति स्वरे  |
| (७३) अस्तेः सि हस्त्वेति       | (९४) इडेत्-पुसि चाऽऽतो लुक्  |
| (७४) दुह-दिह-लिह-गुहो          | (९५) संयोगाऽऽदेर्वाऽऽशिष्येः |
| दन्त्यात्मने वा सकः            | (९६) गा-पा-स्था-सा-दा-       |
| (७५) स्वरेऽतः                  | मा-हाकः                      |
| (७६) दरिद्रोऽद्यतन्यां वा      | (९७) ई व्यञ्जनेऽयपि          |
| (७७) अशित्यस्सन्-णकज्-         | (९८) घ्रा-ध्मोर्यङि          |

|                           |                            |
|---------------------------|----------------------------|
| (९९) हनो ग्री वधे         | क्येषु च                   |
| (१००) ङिति घात्           | (१०९) ऋतो री               |
| (१०१) जि-णवि घन्          | (११०) रिः श-क्या-ऽऽशीर्ये  |
| (१०२) नशेर्नेश् वाऽडि     | (१११) ईश्च्चाववर्णस्या-    |
| (१०३) श्वयत्यसू-वच-पतः    | ऽनव्ययस्य                  |
| श्वा-ऽऽस्थ-वोच-पप्तम्     | (११२) क्यनि                |
| (१०४) शीड एः शिति         | (११३) क्षुत्-तृड्-गर्धेऽश- |
| (१०५) क्खिति यि शय्       | नायोदन्य-धनायम्            |
| (१०६) उपसर्गादूहो ह्रस्वः | (११४) वृषाऽश्वान् मैथुने   |
| (१०७) आशिषीणः             | स्सोऽन्तः                  |
| (१०८) दीर्घश्चि-यङ्-यक्-  | (११५) असु च लौल्ये         |

### [चतुर्थाध्याये चतुर्थः पादः]

|                               |                      |
|-------------------------------|----------------------|
| (१) अस्ति-ब्रुवोर्भू-वचावशिति | (१०) दत्             |
| (२) अघञ्क्यबलच्यजेर्वी        | (११) दो-सो-मा-स्थ इः |
| (३) व्रने वा                  | (१२) छा-शोर्वा       |
| (४) चक्षो वाचि क्शाङ्-ख्याङ्  | (१३) शो व्रते        |
| (५) नवा परोक्षायाम्           | (१४) हाको हिः क्त्वि |
| (६) भृज्जो भर्ज्              | (१५) धागः            |
| (७) प्राद् दागस्त आरम्भे क्ते | (१६) यपि चाऽदो जग्ध् |
| (८) .नि-वि-स्वन्ववात्         | (१७) घसूल संनद्यतनी- |
| (९) स्वरादुपसर्गाद् दस्ति     | घञचलि                |
| कित्यधः                       | (१८) परोक्षयां नवा   |

- |                               |                              |
|-------------------------------|------------------------------|
| (१९) वेर्व्यू                 | (४०) क्तयोः                  |
| (२०) ऋः शृ-ट्ट-प्रः           | (४१) जृ-व्रश्चः क्त्वः       |
| (२१) हनो वध आशिष्यञौ          | (४२) ऊदितो वा                |
| (२२) अद्यतन्यां वा त्वात्मने  | (४३) क्षुध-वसस्तेषाम्        |
| (२३) इणिकोर्गा                | (४४) लुभ्यञ्चेर्विमोहार्चे   |
| (२४) णावज्ञाने गमुः           | (४५) पूङ्-क्लिशिभ्यो नवा     |
| (२५) सनीडश्च                  | (४६) सह-लुभेच्छ-रुष-         |
| (२६) गा परोक्षायाम्           | रिषस्तादेः                   |
| (२७) णौ सन्-डे वा             | (४७) इवृध-भ्रस्ज-दम्भ-श्रि-  |
| (२८) वाऽद्यतनी-क्रियाति-      | यूष्णु-भर-ज्ञपि-सनि-         |
| पत्त्योर्गीङ्                 | तनि-पति-वृद्-दरिद्रः         |
| (२९) अङ् धातोरादिर्हस्तन्यां  | सनः                          |
| चाऽमाडा                       | (४८) ऋ-स्मि-पूङ्अशौ-कृ-गृ-   |
| (३०) एत्यस्तेर्वृद्धिः        | दृ-धृ-प्रच्छः                |
| (३१) स्वरादेस्तासु            | (४९) हनृतः स्यस्य            |
| (३२) स्ताद्यशितोऽत्रोणादेरिट् | (५०) कृत-चृत-नृत-च्छृद-      |
| (३३) तेर्ग्रहादिभ्यः          | तृदोऽसिचः सादेर्वा           |
| (३४) गृह्णोऽपरोक्षायां दीर्घः | (५१) गमोऽनात्मने             |
| (३५) वृतो नवाऽनाशीः-          | (५२) स्नोः                   |
| सिचपरस्मै च                   | (५३) क्रमः                   |
| (३६) इट् सिजाशिषोरात्मने      | (५४) तुः                     |
| (३७) संयोगाद् ऋतः             | (५५) न वृद्भ्यः              |
| (३८) ध्रूगौदितः               | (५६) एकस्वरादनुस्वारेतः      |
| (३९) निष्कुषः                 | (५७) ऋवर्ण-श्रूयूष्णुगः कितः |

- (५८) उवर्णात् संघुषा-ऽऽस्वना-ऽमः  
 (५९) ग्रह-गुहश्च सनः (७६) हृषेः केश-लोम-विस्मय-  
 (६०) स्वार्थे प्रतिघाते  
 (६१) डीय-श्चैदितः क्तयोः (७७) अपचितः  
 (६२) वेटोऽपतः (७८) सृजि-दृशि-स्कृ-स्वरा-  
 (६३) सं-नि-वेरर्दः ऽत्वतस्तृज्जनित्यानिटस्थवः  
 (६४) अविदूरेऽभेः (७९) ऋतः  
 (६५) वर्तेर्वृत्तं ग्रन्थे (८०) ऋ-वृ-व्ये-ऽद इट्  
 (६६) धृष-शसः प्रगल्भे (८१) स्क्रसृ-वृ-भृ-स्तु-द्रु-श्रु-  
 (६७) कषः कृच्छ्र-गहने स्रोर्व्यञ्जनादेः परोक्षायाः  
 (६८) घुषेरविशब्दे (८२) घसेकस्वराऽऽतः कसोः  
 (६९) बलि-स्थूले दृढः (८३) गम-हन-विद्ल-विश-  
 (७०) क्षुब्ध-विरिब्ध-स्वान्त- दृशो वा  
 ध्वान्त-लग्न-म्लिष्ट- (८४) सिचोऽञ्जेः  
 फाण्ट-बाढ-परिवृढं (८५) धूर्-सु-स्तोः परस्मै  
 मन्थ-स्वर-मनस्- (८६) यमि-रमि-नम्यातः  
 तमस्-सक्ता-ऽस्पष्टा- सोऽन्तश्च  
 ऽनायास-भृश-प्रभौ (८७) ईशीडः से-ध्वे-स्व-ध्वमोः  
 (७१) आदितः (८८) रुत्यञ्चकाच्छिदयः  
 (७२) नवा भावा-ऽऽरम्भे (८९) दि-स्योरीट्  
 (७३) शकः कर्मणि (९०) अदश्चाड्  
 (७४) णौ दान्त-शान्त-पूर्ण- (९१) संपरेः कृगः स्सट्  
 दस्त-स्पष्ट-च्छन्न-ज्ञप्तम् (९२) उपाद् भूषा-समवाय-  
 (७५) श्वस-जप-वम-रुष-त्वर- प्रतियत्न-विकार-

|                                |                                |
|--------------------------------|--------------------------------|
| वाक्याध्याहारे                 | (१०७) उपसर्गात् खल्यञोश्च      |
| (९३) किरौ लवने                 | (१०८) सु-दुर्म्यः              |
| (९४) प्रतेश्च वधे              | (१०९) नशो धुटि                 |
| (९५) अपाच्चतुष्पात्-पक्षि-शुनि | (११०) मस्जेः सः                |
| हृष्टा-ऽन्ना-ऽऽश्रयार्थे       | (१११) अः सृजि-दृशोऽकिति        |
| (९६) वौ विष्किरो वा            | (११२) स्पृशादि-सृपो वा         |
| (९७) प्रात् तुम्पतेर्गवि       | (११३) ह्रस्वस्य तः पितृकृति    |
| (९८) उदितः स्वराब्जोऽन्तः      | (११४) अतो म आने                |
| (९९) मुचादि-तृफ-दृफ-           | (११५) आसीनः                    |
| गुफ-शुभोभः शे                  | (११६) कृतां क्ङितीर्           |
| (१००) जभः स्वरे                | (११७) ओष्ठ्यादुर्              |
| (१०१) रध इटि तु परोक्षायामेव   | (११८) इसासः शासोऽङ्-           |
| (१०२) रभोऽपरोक्षा-शवि          | व्यञ्जने                       |
| (१०३) लभः                      | (११९) क्वौ                     |
| (१०४) आडो यि                   | (१२०) आडः                      |
| (१०५) उपात् स्तुतौ             | (१२१) य्वोः प्व्यव्यञ्जने लुक् |
| (१०६) जि-ख्णमोर्वा             | (१२२) कृतः कीर्त्तिः           |

## [पञ्चमाध्याये प्रथमः पादः]

- |  |  |
|--|--|
| (१) आ तुमोऽत्यादिः कृत्                                | (१७) ऋवर्ण-व्यञ्जनाद् घ्यण्                                    |
| (२) बहुलम्   | (१८) पाणि-समवाभ्यां सृजः                                       |
| (३) कर्त्तरि   | (१९) उवर्णादावश्यके  |
| (४) व्याप्ये घुर-केलिम-<br>कृष्टपच्यम्                 | (२०) आसु-यु-वपि-रपि-लपि-<br>त्रपि-डिपि-दभि-<br>चम्यानमः        |
| (५) संगतेऽजयम्   | (२१) वाऽऽधारेऽमावस्या  |
| (६) रुच्या-ऽव्यध्य-वास्तव्यम्                          | (२२) संचाय्य-कुण्डपाय्य-<br>राजसूयं क्रतौ                      |
| (७) भव्य-गेय-जन्य-रम्या-<br>ऽऽपात्या-ऽऽप्लाव्यं नवा    | (२३) प्रणाय्यो निष्कामा-ऽसंमते                                 |
| (८) प्रवचनीयादयः                                       | (२४) धाय्या-पाय्य-सान्नाय्य-<br>निकाय्यमृड्-मान-हवि-<br>निवासे |
| (९) श्लिष-शीङ्-स्था-ऽऽस-<br>वस-जन-रुह-जृ-<br>भजेः क्तः | (२५) परिचाय्योपचाय्या-ऽऽ-<br>नाय्य-समूह्य-चित्यमग्नौ           |
| (१०) आरम्भे  | (२६) याज्या दानर्चि  |
| (११) गत्यर्था-ऽकर्मक-<br>पिब-भुजेः                     | (२७) तव्या-ऽनीयौ   |
| (१२) अद्यर्थाच्चाऽऽधारे                                | (२८) य एच्चाऽऽतः   |
| (१३) क्त्वा-तुमम् भावे                                 | (२९) शकि-तकि-चति-यति-<br>शसि-सहि-यजि-भजि-<br>पवर्गात्          |
| (१४) भीमादयोऽपादाने                                    | (३०) यम-मद-गदोऽनुपसर्गात्                                      |
| (१५) संप्रदानाच्चान्यत्रोणादयः                         |  |
| (१६) असरूपोऽपवादे वोत्सर्गः<br>प्राक् क्तेः            |  |

- |                                 |                                  |
|---------------------------------|----------------------------------|
| (३१) चरेराडस्त्वगुरौ            | (४८) णक-तृचौ                     |
| (३२) वयोर्योपसर्गा-ऽवद्य-       | (४९) अच्                         |
| पण्यमुपेयर्तुमती-गर्ह्य-        | (५०) लिहादिभ्यः                  |
| विक्रेये                        | (५१) ब्रुवः                      |
| (३३) स्वामि-वैश्येऽर्यः         | (५२) नन्धादिभ्योऽनः              |
| (३४) वह्नं करणे                 | (५३) ग्रहादिभ्यो णिन्            |
| (३५) नाम्नो वदः क्यप् च         | (५४) नाम्युपान्त्य-प्री-कृ-      |
| (३६) हत्या-भूयं भावे            | गृ-ज्ञः कः                       |
| (३७) अग्निचित्या                | (५५) गेहे ग्रहः                  |
| (३८) खेय-मृषोद्ये               | (५६) उपसर्गादातो ङोऽश्यः         |
| (३९) कुप्य-भिद्योध्य-सिध्य-     | (५७) व्याघ्रा-ऽऽघ्रे प्राणि-नसोः |
| तिष्य-पुष्य-युग्या-             | (५८) घ्रा-ध्मा-पा-ट्धे-ट्शः      |
| ऽऽज्य-सूर्यं नाम्नि             | शः                               |
| (४०) दृ-वृग्-स्तु-जुषेति-शासः   | (५९) साहि-साति-वेद्युदेजि-       |
| (४१) ऋदुपान्त्यादकृपि-चृदृचः    | धारि-पारि-                       |
| (४२) कृ-वृषि-मृजि-शंसि-         | चेतेरनुपसर्गात्                  |
| गुहि-दुहि-जपो वा                | (६०) लिम्प-विन्दः                |
| (४३) जि-विपू-न्यो हलि-मुञ्ज-    | (६१) नि-गवादेर्नाम्नि            |
| कल्के                           | (६२) वा ज्वलादि-दु-नी-           |
| (४४) पदा-ऽस्वैरि-बाह्या-पक्ष्ये | भू-ग्रहा-ऽऽस्रोर्णः              |
| ग्रहः                           | (६३) अवह-सा-संस्रोः              |
| (४५) भृगोऽसंज्ञायाम्            | (६४) तन्-व्यधीण्-श्वसातः         |
| (४६) समो वा                     | (६५) नृत्-खन्-रञ्जः              |
| (४७) ते कृत्याः                 | शिल्पिन्यकट्                     |



|  |   |
|--|---|
| (६६) गस्थकः                                | (८९) पाणिघ-ताडघौ शिल्पिनि   |
| (६७) टनण्                                  | (९०) कुक्ष्यात्मोदराद् भृगः खिः   |
| (६८) हः काल-व्रीह्योः                      | (९१) अर्होऽच्   |
| (६९) पु-सृ-ल्वोऽकः साधौ                    | (९२) धनु-दर्ण्ड-त्सरु-लाङ्गला-<br>ऽङ्कुशर्ष्टि-यष्टि-शक्ति-   |
| (७०) आशिष्यकन्                             | तोमर-घटाद् ग्रहः  |
| (७१) तिक्कृतौ नाम्नि                       | (९३) सूत्राद् धारणे   |
| (७२) कर्मणोऽण्                             | (९४) आयुधादिभ्यो<br>धृगोऽदण्डादेः   |
| (७३) शीलि-कामि-<br>भक्ष्याचरीक्षि-क्षमो णः | (९५) हगो वयोऽनुद्यमे  |
| (७४) गायोऽनुपसर्गाट्ठक्                    | (९६) आडः शीले   |
| (७५) सुरा-सीधोः पिबः                       | (९७) दृति-नाथात् पशाविः   |
| (७६) आतो डोऽह्वा-वा-मः                     | (९८) रजः-फले-मलाद् ग्रहः  |
| (७७) समः ख्यः                              | (९९) देव-वातादापः   |
| (७८) दश्वाऽऽडः                             | (१००) शकृत्-स्तम्बाद् वत्स-<br>व्रीहौ कृगः  |
| (७९) प्राज्झश्च                            | (१०१) किम्-यत्-तद्-बहोरः  |
| (८०) आशिषि हनः                             | (१०२) सङ्ख्या-ऽह-र्दिवा-<br>विभा-निशा-प्रभा-<br>भाश्चित्र-कर्त्राद्यन्ता-<br>ऽनन्त-कार-बाह्वरु-<br>र्धनु-नान्दी-लिपि-<br>लिवि-बलि-भक्ति-क्षेत्र-<br>जङ्घा-क्षपा-क्षणदा- |
| (८१) क्लेशादिभ्योऽपात्                     |   |
| (८२) कुमार-शीर्षाणिन्                      |   |
| (८३) अचित्ते टक्                           |   |
| (८४) जाया-पतेश्चिह्नवति                    |   |
| (८५) ब्रह्मादिभ्यः                         |   |
| (८६) हस्ति-बाहु-कपाटाच्छक्तौ               |   |
| (८७) न्गरादगजे                             |   |
| (८८) राजघः                                 |   |

|                                |                                |
|--------------------------------|--------------------------------|
| रजनि-दोषा-दिन-                 | (११७) कर्तुः खश्               |
| दिवसाद्वयः ,                   | (११८) एजेः                     |
| (१०३) हेतु-तच्छीला-ऽनुकूले-    | (११९) शुनी-स्तन-मुञ्ज-कूला-    |
| ऽशब्द-श्लोक-कलह-               | ऽऽस्य-पुष्पाद्ध्येः            |
| गाथा-वैर-चाटुसूत्र-            | (१२०) नाडी-घटी-खरी-            |
| मन्त्र-पदात्                   | मुष्टि-नासिका-वाताद्           |
| (१०४) भृतौ कर्मणः              | ध्मश्च                         |
| (१०५) क्षेम-प्रिय-मद्र-भद्रात् | (१२१) पाणि-करात्               |
| खा-ऽण्                         | (१२२) कूलादुद्रुजोद्वहः        |
| (१०६) मेघर्त्ति-भया-ऽभयात्     | (१२३) वहा-ऽभ्राल्लिहः          |
| खः                             | (१२४) बहु-विध्वरुस्तिलात् तुदः |
| (१०७) प्रिय-वशाद् वदः          | (१२५) ललाट-वात-शर्द्धात्       |
| (१०८) द्विषन्तप-परन्तपौ        | तपा-ऽज-हाकः                    |
| (१०९) परिमाणार्थ-मित-          | (१२६) असूर्योग्राद् दृशः       |
| नखात् पचः                      | (१२७) इरम्मदः                  |
| (११०) कूला-ऽभ्र-करीषात्        | (१२८) नग्न-पलित-प्रिया-ऽन्ध    |
| कषः                            | स्थूल-सुभगा-ऽऽढ्य-             |
| (१११) सर्वात् सहश्च            | तदन्ताच्चव्यर्थेऽच्चेर्भुवः    |
| (११२) भृ-वृ-जि-तृ-तप-दमेश्च    | खिष्णु-खुकञ्                   |
| नाम्नि                         | (१२९) कृगः खनद् करणे           |
| (११३) धारेर्धर्च               | (१३०) भावे चाऽऽशिताद् भुवः     |
| (११४) पुरन्दर-भगन्दरौ          | खः                             |
| (११५) वाचंयमो व्रते            | (१३१) नाम्नो गमः खड्-डौ        |
| (११६) मन्याण्णिन्              | च , विहायसस्तु विहः            |

- (१३२) सुग-दुर्गमाधारे (१५२) त्यदाद्यन्य-समानाद्दु-  
 (१३३) निर्गो देशे पमानाद् व्याप्ये दृशः  
 (१३४) शमो नाम्न्यः टक्-सकौ च  
 (१३५) पार्श्वादिभ्यः शीङः (१५३) कर्तुर्णिन्  
 (१३६) ऊर्ध्वादिभ्यः कर्तुः (१५४) अजातेः शीले  
 (१३७) आधारात् (१५५) साधौ  
 (१३८) चरेष्टः (१५६) ब्रह्मणो वदः  
 (१३९) भिक्षा-सेना-ऽऽदायात् (१५७) व्रता-ऽऽभीक्ष्ण्ये  
 (१४०) पुरो-ऽग्रतो-ऽग्रेः सत्तेः (१५८) करणाद् यजो भूते  
 (१४१) पूर्वात् कर्तुः (१५९) निन्द्ये व्याप्यादिन्  
 (१४२) स्था-पा-स्ना-त्रः कः विक्रियः  
 (१४३) शोकापनुद-तुन्दपरि- (१६०) हनो णिन्  
 मृज-स्तम्बरम-कर्णेजपं (१६१) ब्रह्म-भूण-वृत्रात् क्विप्  
 प्रिया-ऽलस-हस्ति-सूचके (१६२) कृगः सु-पुण्य-पाप-  
 (१४४) मूलविभुजादयः कर्म-मन्त्र-पदात्  
 (१४५) दुहेर्दुघः (१६३) सोमात् सुगः  
 (१४६) भजो विण् (१६४) अग्रेश्चेः  
 (१४७) मन्-वन्-कनिप्-विच् (१६५) कर्मण्यग्न्यर्थे  
 कचित् (१६६) दृशः कनिप्  
 (१४८) किप् (१६७) सह-राजभ्यां कृग्-युधेः  
 (१४९) स्पृशोऽनुदकात् (१६८) अनोर्जनेर्दः  
 (१५०) अदोऽनन्नात् (१६९) सप्तम्याः  
 (१५१) क्रव्यात्-क्रव्यादावाम- (१७०) अजातेः पञ्चम्याः  
 पक्वादौ (१७१) क्वचित्

(१७२) सु-यजोईवनिप्

(१७४) क्त-क्तवत्

(१७३) जृषोऽतृः

### [पञ्चमाध्याये द्वितीयः पादः]

(१) श्रु-सद-वसभ्यः परोक्षा वा

(१७) ननौ पृष्टोक्तौ सद्भत्

(२) तत्र क्वसु-कानौ तद्वत्

(१८) न-न्वोर्वा

(३) वेयिवदनाश्वदनूचानम्

(१९) सति

(४) अद्यतनी

(२०) शत्रानशावेष्यति तु

(५) विशेषाविवक्षा-व्यामिश्रे

सस्यौ

(६) रात्रौ वसोऽन्त्ययामा-

(२१) तौ माड्याक्रोशेषु

ऽस्वस्यद्य

(२२) वा वेत्तेः कसुः

(७) अनद्यतने ह्यस्तनी

(२३) पूङ्-यजः शानः

(८) ख्याते दृश्ये

(२४) वयः-शक्ति-शीले

(९) अयदि स्मृत्यर्थे भविष्यन्ती

(२५) धारीडोऽकृच्छ्रेऽतृश

(१०) वाऽऽकाङ्क्षायाम्

(२६) सुग्-द्विषार्हः सत्रि-शत्रु-

(११) कृतास्मरणा-ऽतिनिह्वे

स्तुत्ये

परोक्षा

(२७) तृन् शील-धर्म-साधुषु

(१२) परोक्षे

(२८) भ्राज्यलङ्कृग्-निराकृग्-

(१३) ह-शश्वद्-युगान्तःप्रच्छ्ये

भू-सहि-रुचि-वृति-

ह्यस्तनी च

वृधि-चरि-प्रजना-ऽपत्रप

(१४) अविवक्षिते

इष्णुः

(१५) वाऽद्यतनी पुरादौ

(२९) उदः पचि-पति-पदि-मदेः

(१६) स्मे च वर्त्तमाना

(३०) भू-जेः ष्णुक्

- (३१) स्था-ग्ला-म्ला-पचि-  
परिमृजि-क्षेः स्त्रुः
- (३२) त्रसि-गृधि-धृषि-क्षिपः  
क्रुः
- (३३) सन्-भिक्षा-ऽऽशंसेरुः
- (३४) विन्दिच्छू
- (३५) शृ-वन्देरारुः
- (३६) दा-ट्धे-सि-शद-सदो रुः
- (३७) शीङ्-श्रद्धा-निद्रा-तन्द्रा-  
दयि-पति-गृहि-स्पृहेरालुः
- (३८) डौ सासहि-वावहि-  
चाचलि-पापति
- (३९) सस्त्रि-चक्रि-दधि-जङ्गि-  
नेमिः
- (४०) शृ-कम-गम-हन-वृष-  
भू-स्थ उकण्
- (४१) लष-पत-पदः
- (४२) भूषा-क्रोधार्थ-जु-सृ-  
गृधि-ज्वल-शुचश्चाऽनः
- (४३) चाल-शब्दार्थादकर्मकात्
- (४४) इ-डितो व्यञ्जनाऽ-  
ऽद्यन्तात्
- (४५) न णिङ्-य-सूद-दीप-  
दीक्षः
- (४६) द्रम-क्रमो यङः
- (४७) यजि-जपि-दंशि-  
वदादूकः
- (४८) जागुः
- (४९) शमष्टकाद् घिनण्
- (५०) युज-भुज-भज-त्यज-  
रञ्ज-द्विष-दुष-द्रुह-दुहा-  
ऽभ्याहनः
- (५१) आङः क्रीड-मुषः
- (५२) प्राच्च यम-यसः
- (५३) मथ-लपः
- (५४) वेश्व द्रोः
- (५५) वि-परि-प्रात् सत्तेः
- (५६) समः पृचैप्-ज्वरेः
- (५७) सं-वेः सृजः
- (५८) सं-परि-व्यनु-प्राद् वदः
- (५९) वेर्विच-कत्थ-स्रम्भ-  
कष-कस-लस-हनः
- (६०) व्यपा-ऽभेर्लषः
- (६१) सम्-प्राद् वसात्
- (६२) समत्यपा-ऽभि-व्यभेश्वरः
- (६३) समनु-व्यवाद् रुधः
- (६४) वेर्दहः
- (६५) परेर्देवि-मुहश्च

- (६६) क्षिप-रटः (८१) स्थेश-भास-पिस-  
 (६७) वादेश्च णकः कसो वरः  
 (६८) निन्द-हिंस-क्लिश-खाद- (८२) यायावरः  
 विनाशि-व्याभाषा-  
 ऽसूया-ऽनेकस्वरात् (८३) दिद्युद्-ददद्-जगज्जुहू-  
 (६९) उपसर्गाद् देवृ-देवि- वाक्-प्राट्-धी-श्री-द्रू-  
 क्रुशः सू-ज्वायतस्तू-कटप्-  
 (७०) वृङ्-भिक्षि-लुण्टि- परिब्राड्-भ्राजादयः किपः  
 जल्पि-कुट्टाट्टाकः (८४) शं-सं-स्वयं-वि-प्राद् भुवो  
 (७१) प्रात् सू-जोरिन् डुः  
 (७२) जीण-ट्-क्षि-विश्रि- (८५) पुव इत्रो दैवते  
 परिभू-वमा-ऽभ्यमा-ऽव्यथः (८६) ऋषि-नाम्नोः करणे  
 (७३) सृ-घस्यदो मरक् (८७) लू-धू-सू-खन-चर-  
 (७४) भञ्जि-भासि-मिदो घुरः सहा-ऽर्तेः  
 (७५) वेत्ति-च्छिद-भिदः कित् (८८) नी-दाव्-शसू-यु-युज-  
 (७६) भियो रु-रुक-लुकम् स्तु-तुद-सि-सिच-मिह-  
 (७७) सृ-जीण्-नशष्ट्वरप् पत-पा-नहस्वट्  
 (७८) गत्वरः (८९) हल-क्रोडास्ये पुवः  
 (७९) स्म्यजस-हिंस-दीप- (९०) दंशेस्त्रः  
 कम्प-कम-नमो रः (९१) धात्री  
 (८०) तृषि-धृषि-स्वपो नजिङ् (९२) ज्ञानेच्छा-ऽर्चार्थि-  
 जीच्छीलयादिभ्यः क्तः  
 (९३) उणादयः

## [पञ्चमाध्याये तृतीयः पादः]

- |                                 |                              |
|---------------------------------|------------------------------|
| (१) वत्स्यति गम्यादिः           | वा                           |
| (२) वा हेतुसिद्धौ क्तः          | (२०) श्रो वायु-वर्ण-निवृत्ते |
| (३) कषोऽनिटः                    | (२१) निरभेः पू-ल्वः          |
| (४) भविष्यन्ती                  | (२२) रोरुपसर्गात्            |
| (५) अनद्यतने श्वस्तनी           | (२३) भू-श्रयदोऽल्            |
| (६) परिदेवने                    | (२४) न्यादो नवा              |
| (७) पुरा-यावतोर्वर्त्तमाना      | (२५) सं-नि-व्युपाद् यमः      |
| (८) कदा-कह्योर्नवा              | (२६) नेर्नद-गद-पठ-स्वन-      |
| (९) किंवृत्ते लिप्सायाम्        | कणः                          |
| (१०) लिप्स्यसिद्धौ              | (२७) वैणे कणः                |
| (११) पञ्चम्यर्थहेतौ             | (२८) युवर्ण-वृ-ट्-वश-रण-     |
| (१२) सप्तमी चोर्ध्वमौहूर्त्तिके | गमृद्-ग्रहः                  |
| (१३) क्रियायां क्रियार्थायां    | (२९) वर्षादयः क्लीबे         |
| तुम् णकच् भविष्यन्ती            | (३०) समुदोऽजः पशौ            |
| (१४) कर्मणोऽण्                  | (३१) सृ-ग्लहः प्रजना-ऽक्षे   |
| (१५) भाववचनाः                   | (३२) पणेमनि                  |
| (१६) पद-रुज-विश-स्पृशो          | (३३) संमद-प्रमदौ हर्षे       |
| घञ्                             | (३४) हनोऽन्तर्घना-ऽन्तर्घनौ  |
| (१७) सत्तेः स्थिर-व्याधि-बल-    | देशे                         |
| मत्स्ये                         | (३५) प्रघण-प्रघाणौ गृहांशे   |
| (१८) भावा-ऽकर्त्रोः             | (३६) निघोद्ध-सङ्घोद्धना-     |
| (१९) इडोऽपादाने तु टिद्         | ऽपघनोपघ्नं निमित्त-          |

|                                |                             |
|--------------------------------|-----------------------------|
| प्रशस्त-गणा-ऽत्या-             | (५७) प्राल्लिप्सायाम्       |
| धाना-ऽङ्गा-ऽऽसन्नम्            | (५८) समो मुष्टौ             |
| (३७) मूर्त्ति-निचिता-ऽग्ने घनः | (५९) यु-दु-द्रोः            |
| (३८) व्ययो-द्रोः करणे          | (६०) नियश्चाऽनुपसर्गाद् वा  |
| (३९) स्तम्बाद् ग्रश्च          | (६१) वोदः                   |
| (४०) परेर्यः                   | (६२) अवात्                  |
| (४१) ह्वः समाह्वया-ऽऽह्वयौ     | (६३) परेर्द्युति            |
| द्युत-नाम्नोः                  | (६४) भुवोऽवज्ञाने वा        |
| (४२) न्यभ्युप-वेर्वाश्चोत्     | (६५) यज्ञे ग्रहः            |
| (४३) आडो युद्धे                | (६६) संस्तोः                |
| (४४) आहावो निपानम्             | (६७) प्रात् सु-द्रु-स्तोः   |
| (४५) भावेऽनुपसर्गात्           | (६८) अयज्ञे स्त्रः          |
| (४६) हनो वा वधू च              | (६९) वेरशब्दे प्रथने        |
| (४७) व्यध-जप-मद्भ्यः           | (७०) छन्दोनाम्नि            |
| (४८) नवा कण-यम-हस-             | (७१) क्षु-श्रोः             |
| स्वनः                          | (७२) न्युदो ग्रः            |
| (४९) आडो रु-प्लोः              | (७३) किरौ धान्ये            |
| (५०) वर्षविघ्नेऽवाद् ग्रहः     | (७४) नेर्वुः                |
| (५१) प्राद् रश्मि-तुलासूत्रे   | (७५) इणोऽग्नेषे             |
| (५२) वृगो वस्त्रे              | (७६) परेः क्रमे             |
| (५३) उदः श्रेः                 | (७७) व्युपात् शीडः          |
| (५४) यु-पू-द्रोर्घञ्           | (७८) हस्तप्राप्ये चेरस्तेये |
| (५५) ग्रहः                     | (७९) चिति-देहा-ऽऽवा-        |
| (५६) न्यवाच्छापे               | सोपसमाधाने कश्चाऽऽदेः       |



|                             |                               |
|-----------------------------|-------------------------------|
| (८०) सङ्घेऽनूर्ध्वे         | शीङ्-सुग्-विदि-चरि-           |
| (८१) माने                   | मनीणः                         |
| (८२) स्थादिभ्यः कः          | (१००) कृगः श च वा             |
| (८३) द्वितोऽधुः             | (१०१) मृगयेच्छा-याच्चा-       |
| (८४) इवितस्त्रिमक् तत्कृतम् | तृष्णा-कृपा-भा-श्रद्धा-       |
| (८५) यजि-स्वपि-रक्षि-       | ऽन्तर्द्धा                    |
| यति-प्रच्छो नः              | (१०२) परेः सृ-चरेर्यः         |
| (८६) विच्छो नङ्             | (१०३) वाऽटाट्यात्             |
| (८७) उपसर्गाद् दः किः       | (१०४) जागुरश्च                |
| (८८) व्याप्यादाधारे         | (१०५) शंसि-प्रत्ययात्         |
| (८९) अन्तर्द्धिः            | (१०६) क्तेटो गुरोर्व्यञ्जनात् |
| (९०) अभिव्याप्तौ भावेऽन-    | (१०७) षितोऽङ्                 |
| जिन्                        | (१०८) भिदादयः                 |
| (९१) स्त्रियां क्तिः        | (१०९) भीषि-भूषि-चिन्ति-       |
| (९२) श्र्वादिभ्यः           | पूजि-कथि-कुम्बि-              |
| (९३) समिणासुगः              | चर्चि-स्पृहि-तोलि-            |
| (९४) साति-हेति-यूति-        | दोलिभ्यः                      |
| जूति-ज्ञप्ति-कीर्त्तिः      | (११०) उपसर्गादातः             |
| (९५) गा-पा-पचो भावे         | (१११) णि-वेत्त्यास-श्रन्थ-    |
| (९६) स्थो वा                | घट्ट-वन्देरनः                 |
| (९७) आस्यटि-ब्रज्-यजः       | (११२) इषोऽनिच्छायाम्          |
| क्यप्                       | (११३) पर्यधेर्वा              |
| (९८) भृगो नाम्नि            | (११४) कृत्संपदादिभ्यः क्तिप्  |
| (९९) समज-निपन्निषद-         | (११५) भ्यादिभ्यो वा           |

|   |   |
|---|---|
| (११६) व्यतिहारेऽनीहादिभ्यो<br>जः              | व्यज-खला-ऽऽपण-<br>निगम-बक-भग-कषा-                                       |
| (११७) नजोऽनिः शापे                            | ऽऽकष-निकषम्   |
| (११८) ग्ला-हा-ज्यः                            | (१३२) व्यञ्जनाद् घञ्  |
| (११९) प्रश्ना-ऽऽख्याने वेञ्                   | (१३३) अवात् तृ-स्तृभ्याम्   |
| (१२०) पर्यायाऽर्हणोत्पत्तौ<br>च णकः           | (१३४) न्याया-ऽऽवाया-ऽध्या-<br>योद्याव-संहारा-ऽवहारा-<br>ऽऽधार-दार-जारम् |
| (१२१) नाम्नि पुंसि च                          | (१३५) उदङ्कोऽतोये   |
| (१२२) भावे                                    | (१३६) आनायो जालम्   |
| (१२३) क्लीबे क्तः                             | (१३७) खनो ड-डरेके-कवक-<br>घं च  |
| (१२४) अनट्                                    | (१३८) इ-कि-स्तित्व्<br>स्वरूपा-ऽर्थे                                    |
| (१२५) यत्कर्मस्पर्शात् कर्त्रङ्ग-<br>सुखं ततः | (१३९) दुः-स्वीषतः<br>कृच्छ्रा-ऽकृच्छ्रार्थे खल्                         |
| (१२६) रम्यादिभ्यः कर्त्तरि                    | (१४०) च्यर्थे कर्त्राप्याद्   |
| (१२७) कारणम्                                  | भू-कृगः   |
| (१२८) भुजि-पत्यादिभ्यः<br>कर्मा-ऽपादाने       | (१४१) शासू-युधि-दृशि-<br>धृषि-मृषा-ऽऽतोऽनः                              |
| (१२९) करणा-ऽऽधारे                             |   |
| (१३०) पुत्राग्नि घः                           |   |
| (१३१) गोचर-संचर-वह-व्रज-                      |   |

## [पञ्चमाध्याये चतुर्थः पादः]

- |                                   |                                 |
|-----------------------------------|---------------------------------|
| (१) सत्सामीप्ये सद्बद् वा         | (१७) जातु-यद्-यदा-यदौ           |
| (२) भूतवच्चाऽऽशंस्ये वा           | सप्तमी                          |
| (३) क्षिप्रा-ऽऽशंसार्थयो-         | (१८) क्षेपे च यच्च यत्रे        |
| भविष्यन्ती-सप्तम्यौ               | (१९) चित्रे                     |
| (४) सम्भावने सिद्धवत्             | (२०) शेषे भविष्यन्त्ययदौ        |
| (५) नाऽनद्यतनः प्रबन्धा-          | (२१) सप्तम्युता-ऽप्योर्बद्धि    |
| ऽऽसत्त्योः                        | (२२) सम्भावनेऽलमर्थे            |
| (६) एष्यत्यवधौ देशस्या-           | तदर्थानुक्तौ                    |
| ऽवर्गभागे                         | (२३) अयदि श्रद्धाधातौ नवा       |
| (७) कालस्याऽनहोरात्राणाम्         | (२४) सतीच्छाऽर्थात्             |
| (८) परे वा                        | (२५) वत्स्यति हेतु-फले          |
| (९) सप्तम्यर्थे क्रियातिपत्तौ     | (२६) कामोक्तावकचिति             |
| क्रियातिपत्तिः                    | (२७) इच्छार्थे सप्तमी-पञ्चम्यौ  |
| (१०) भूते                         | (२८) विधि-निमन्त्रणा-ऽऽ-        |
| (११) वोतात् प्राक्                | मन्त्रणा-ऽधीष्ट-सम्प्रश्न-      |
| (१२) क्षेपेऽपि-जात्वोर्वर्त्तमाना | प्रार्थने                       |
| (१३) कथमि सप्तमी च वा             | (२९) प्रैषा-ऽनुज्ञा-ऽवसरे       |
| (१४) किंवृत्ते सप्तमी-            | कृत्य-पञ्चम्यौ                  |
| भविष्यन्त्यौ                      | (३०) सप्तमी चोर्ध्वमौहूर्त्तिके |
| (१५) अश्रद्धा-ऽमर्षेऽन्यत्रापि    | (३१) स्मे पञ्चमी                |
| (१६) किङ्किला-ऽस्त्यर्थयो-        | (३२) अधीष्टौ                    |
| भविष्यन्ती                        | (३३) काल-वेला-समये              |

|   |  |
|---|--|
| तुम्वाऽवसरे   | (५१) यथा-तथादीर्घ्योत्तरे                |
| (३४) सप्तमी यदि   | (५२) शापे व्याप्यात्                     |
| (३५) शक्ताहर्हे कृत्याश्च   | (५३) स्वाद्वर्थाद् अदीर्घात्             |
| (३६) णिन् चाऽऽवश्यक-<br>ऽऽधमण्ये                                  | (५४) विद्-दृग्भ्यः कात्स्न्ये<br>णम्     |
| (३७) अर्हे तृच्   | (५५) यावतो विन्द-जीवः                    |
| (३८) आशिष्याशीः-पञ्चम्यौ  | (५६) चर्मोदिरात् पूरेः                   |
| (३९) माङ्यद्यतनी  | (५७) वृष्टिमान ऊलुक् चास्य<br>वा         |
| (४०) सस्मे ह्यस्तनी च   | (५८) चेलार्थात् क्नोपेः                  |
| (४१) धातोः सम्बन्धे प्रत्ययाः                                     | (५९) गात्र-पुरुषात् स्त्रः               |
| (४२) भृशा-ऽऽभीक्ष्ण्ये हि-स्वौ<br>यथाविधि त-ध्वमौ च<br>तद्युष्मदि | (६०) शुष्क-चूर्ण-रूक्षात्<br>पिषस्तस्यैव |
| (४३) प्रचये नवा<br>सामान्यार्थस्य                                 | (६१) कृग्-ग्रहोऽकृत-जीवात्               |
| (४४) निषेधेऽलं-खल्वोः क्त्वा                                      | (६२) निमूलात् कषः                        |
| (४५) पराऽवरे  | (६३) हनश्च समूलात्                       |
| (४६) निमील्यादि-<br>मेडस्तुल्यकर्तृके                             | (६४) करणेभ्यः                            |
| (४७) प्राक्काले   | (६५) स्व-स्नेहनार्थात् पुष-<br>पिषः      |
| (४८) ख्णम् चाभीक्ष्ण्ये   | (६६) हस्तार्थाद् ग्रह-वर्ति-<br>वृतः     |
| (४९) पूर्वा-ऽग्रे-प्रथमे  | (६७) बन्धेर्नाग्नि                       |
| (५०) अन्यथैवं-कथमित्थमः<br>कृगोऽनर्थकात्                          | (६८) आधारात्                             |
|   | (६९) कर्तुर्जीव-पुरुषान्नश्-वहः          |

- |                         |                              |
|-------------------------|------------------------------|
| (७०) ऊर्ध्वात् पूः-शुषः | (८२) कालेन तृष्यस्वः         |
| (७१) व्याप्याच्चेवात्   | क्रियाऽन्तरे                 |
| (७२) उपात् किरो लवने    | (८३) नाम्ना ग्रहा-ऽऽदिशः     |
| (७३) दंशेस्तृतीयया      | (८४) कृगोऽव्ययेनाऽनिष्टोक्तौ |
| (७४) हिंसाथदिकाऽऽप्यात् | क्त्वा-णमौ                   |
| (७५) उपपीड-रुध-         | (८५) तिर्यचाऽपवर्गे          |
| कर्षस्तत्सप्तम्या       | (८६) स्वाङ्गतश्च्यर्थे नाना- |
| (७६) प्रमाण-समासत्त्योः | विना-धार्थेन भुवश्च          |
| (७७) पञ्चम्या त्वरायाम् | (८७) तूष्णीमा                |
| (७८) द्वितीयया          | (८८) आनुलोम्येऽन्वचा         |
| (७९) स्वाङ्गेनाऽध्रुवेण | (८९) इच्छार्थे कर्मणः सप्तमी |
| (८०) परिक्लेश्येन       | (९०) शक-धृष-ज्ञा-रभ-लभ-      |
| (८१) विश-पत-पद-स्कन्दो  | सहा-ऽर्ह-ग्ला-घटा-           |
| वीप्सा-ऽऽभीक्ष्ये       | ऽस्ति-समर्थार्थे च तुम्      |

## [षष्ठाध्याये प्रथमः पादः]

- |  |  |
|--|--|
| (१) तद्धितोऽणादिः  | (१८) पृथिव्या जा-ऽञ्                           |
| (२) पौत्रादि वृद्धम्   | (१९) उत्सादेरञ्                                |
| (३) वंश्य-ज्यायोभ्रात्रो-<br>जीवति प्रपौत्राद्यस्त्री युवा           | (२०) बष्कयादसमासे                              |
| (४) सपिण्डे वयः-स्थानाधिके<br>जीवद् वा                               | (२१) देवाद् यञ् च                              |
| (५) युव-वृद्धं कुत्सा-ऽर्चे वा                                       | (२२) अः स्थाप्रः                               |
| (६) संज्ञा दुर्वा  | (२३) लोम्नोऽपत्येषु                            |
| (७) त्यदादिः   | (२४) द्विगोरनपत्ये य-<br>स्वरादेर्लुबद्धिः     |
| (८) वृद्धिर्यस्य स्वरेष्वादिः  | (२५) प्राग् वतः स्त्री-<br>पुंसात् नञ्-स्नञ्   |
| (९) एदोद् देश एवेयादौ  | (२६) त्वे वा                                   |
| (१०) प्राग्देशे  | (२७) गोः स्वरे यः                              |
| (११) वा-ऽऽद्यात्   | (२८) डसोऽपत्ये                                 |
| (१२) गोत्रोत्तरपदाद् गोत्रादिवा-<br>ऽजिह्वाकात्य-हरितकात्यात्        | (२९) आद्यात्                                   |
| (१३) प्राग् जितादण्  | (३०) वृद्धाद् यूनि                             |
| (१४) धनादेः पत्युः   | (३१) अत इञ्                                    |
| (१५) अनिदम्यणपवादे च<br>दित्यदित्यादित्य-यम-<br>पत्युत्तर- पदाञ्ज्यः | (३२) बाह्वादिभ्यो गोत्रे                       |
| (१६) बहिषष्टीकण् च   | (३३) वर्मणोऽचक्रात्                            |
| (१७) कल्यग्रेरेयण्   | (३४) अजादिभ्यो धेनोः                           |
|  | (३५) ब्राह्मणाद्वा                             |
|  | (३६) भूयस्-सम्भूयो-ऽम्भो-<br>ऽमितौजसः स्तुक् च |

- (३७) शालङ्क्यौदि-  
षाडि-वाङ्गलि
- (३८) व्यास-वरुट-सुधातृ-  
निषाद-बिम्ब-चण्डाला-  
दन्त्यस्य चाऽक्
- (३९) पुनर्भू-पुत्र-दुहितृ-  
ननान्दुरनन्तरेऽञ्
- (४०) परस्त्रियाः परशुश्चा-  
ऽसावर्ण्ये
- (४१) विदादेवृद्धे
- (४२) गगदिर्यञ्
- (४३) मधु-ब्रभ्रोर्ब्राह्मण-  
कौशिके
- (४४) कपि-बोधादाङ्गिरसे
- (४५) वतण्डात्
- (४६) स्त्रियां लुप्
- (४७) कुआदेर्जायिन्यः
- (४८) स्त्रीबहुष्वायनञ्
- (४९) अश्वादेः
- (५०) शप-भरद्वाजादात्रेये
- (५१) भर्गात् त्रैगर्त्ते
- (५२) आत्रेयाद् भारद्वाजे
- (५३) नडादिभ्य आयनण्
- (५४) यजिजः
- (५५) हरितादेरजः
- (५६) क्रोष्टृ-शलङ्कोर्लुक् च
- (५७) दर्भ-कृष्णा-ऽग्निशर्म-  
रण-शरद्वच्छुनकादाग्रा-  
यण-ब्राह्मण-वार्षगण्य-  
वाशिष्ठ-भार्गव-वात्स्ये
- (५८) जीवन्त-पर्वताद् वा
- (५९) द्रोणाद् वा
- (६०) शिवादेरण्
- (६१) ऋषि-वृष्ण्यन्धक-  
कुरुभ्यः
- (६२) कन्या-त्रिवेण्याः कनीन-  
त्रिवणं च
- (६३) शुङ्गाभ्यां भारद्वाजे
- (६४) विकर्ण-च्छगलाद्  
वात्स्या-ऽऽत्रेये
- (६५) णश्च विश्रवसो विश्लुक्  
च वा
- (६६) सङ्ख्या-सं-  
भद्रान्मातुर्मातुर्च
- (६७) अदोर्नदी-मानुषीनाम्नः
- (६८) पीला-साल्वा-मण्डूकाद्  
वा
- (६९) दितेश्चैयण् वा

|  |  |
|--|--|
| (७०) इयाप्-त्यूङः                      | (९१) श्वशुराद् यः  |
| (७१) द्विस्वरादनद्याः                  | (९२) जातौ राज्ञः   |
| (७२) इतोऽनिजः                          | (९३) क्षत्रादियः   |
| (७३) शुभ्रादिभ्यः                      | (९४) मनोर्या-ऽणौ षश्चान्तः   |
| (७४) श्याम-लक्षणाद् वाशिष्ठे           | (९५) माणवः कुत्सायाम्  |
| (७५) विकर्ण-कुषीतकात्<br>काश्यपे       | (९६) कुलादीनः  |
| (७६) भ्रुवो भ्रुव् च                   | (९७) यैयकञावसमासे वा   |
| (७७) कल्याण्यादेरिन्<br>चाऽन्तस्य      | (९८) दुष्कुलादेयण् वा  |
| (७८) कुलटाया वा                        | (९९) महाकुलाद् वाऽजीनञौ  |
| (७९) चटकाण्णैरः , स्त्रियां<br>तु लुप् | (१००) कुर्वदिर्ज्यः  |
| (८०) क्षुद्राभ्य एरण् वा               | (१०१) सम्राजः क्षत्रिये  |
| (८१) गोधाया दुष्टे णारश्च              | (१०२) सेनान्त-कारु-<br>लक्ष्मणादिञ् च                              |
| (८२) जण्ट-पण्टात्                      | (१०३) सुयाम्नः सौवीरेष्वाय-<br>निञ्                                |
| (८३) चतुष्पाद्भ्य एयञ्                 | (१०४) पाण्टाहृति-मिमताण्णश्च                                       |
| (८४) गृष्ट्यादेः                       | (१०५) भागवित्ति-तार्णविन्द-<br>वा-ऽऽकशापेयान्निन्दाया-<br>मिकण् वा |
| (८५) वाडवेयो वृषे                      | (१०६) सौयामायनि-यामुन्दा-<br>यनि-वार्षायणेरीयश्च वा                |
| (८६) रेवत्यादेरिकण्                    | (१०७) तिकादेरायनिञ्  |
| (८७) वृद्धस्त्रियाः क्षेपे णश्च        | (१०८) दगु-कोशल-कर्मार-<br>च्छाग-वृषाद् यादिः                       |
| (८८) भ्रातुर्व्यः                      |  |
| (८९) ईयः स्वसुश्च                      |  |
| (९०) मातृ-पित्रादेर्देयणीयणौ           |  |



- (१०९) द्विस्वरादणः  
 (११०) अवृद्धाद् दोर्नवा  
 (१११) पुत्रान्तात्  
 (११२) चर्मि-वर्मि-गारेट-  
     कार्कट्य-काक-लङ्का-  
     वाकिनाच्च कश्चान्तो-  
     ऽन्त्यस्वरात्  
 (११३) अदोरायनिः प्रायः  
 (११४) राष्ट्र-क्षत्रियात् सूरूपाद्  
     राजा-ऽपत्ये द्विरञ्  
 (११५) गान्धारि-साल्वेया-  
     भ्याम्  
 (११६) पुरु-मगध-कलिङ्ग-  
     सूरमस-द्विस्वरादण्  
 (११७) साल्वांश-प्रत्यग्रथ-  
     कलकूटाऽश्मकादिञ्  
 (११८) दु-नादि-कुर्वित्-  
     कोशला-ऽजादाञ्ज्यः  
 (११९) पाण्डोर्इयण्  
 (१२०) शकादिभ्यो द्रेर्लुप्  
 (१२१) कुन्त्यवन्तेः स्त्रियाम्  
 (१२२) कुरोर्वा  
 (१२३) द्रेरजणोऽप्राच्य-  
     भर्गदिः  
 (१२४) बहुष्वस्त्रियाम्  
 (१२५) यस्कादेर्गोत्रि  
 (१२६) यजजोऽश्यापर्णान्ति-  
     गोपवनादेः  
 (१२७) कौण्डिन्या-ऽऽगस्त्ययोः  
     कुण्डिना-ऽगस्ती च  
 (१२८) भृग्वज्जिरस्-कुत्स-  
     वशिष्ठ-गोतमा-ऽत्रेः  
 (१२९) प्राग्भरते बहुस्वरादिजः  
 (१३०) वोपकादेः  
 (१३१) तिककितवादौ द्वन्द्वे  
 (१३२) द्रचादेस्तथा  
 (१३३) वाऽन्येन  
 (१३४) द्व्येकेषु षष्ठ्यास्तत्पुरुषे  
     यजादेर्वा  
 (१३५) न प्राग्जितीये स्वरे  
 (१३६) गर्ग-भार्गविका  
 (१३७) यूनि लुप्  
 (१३८) वायनणायनिजोः  
 (१३९) द्रीजो वा  
 (१४०) जिदार्षादणिजोः  
 (१४१) अब्राह्मणात्  
 (१४२) पैलाऽदेः  
 (१४३) प्राच्येजोऽतौल्वत्यादेः

## [षष्ठाध्याये द्वितीयः पादः]

- |  |   |
|--|---|
| (१) रागाटो रक्ते   | (१९) वाऽश्वादीयः                          |
| (२) लाक्षा-रोचनादिकण्  | (२०) पश्चां द्वण्                         |
| (३) शकल-कर्ममाद् वा  | (२१) ईनोऽहः क्रतौ                         |
| (४) नील-पीतादकम्   | (२२) पृष्ठाद् यः                          |
| (५) उदितगुरोर्भाद् युक्तेऽब्दे   | (२३) चरणाद् धर्मवत्                       |
| (६) चन्द्रयुक्तात् काले ,<br>लुप् त्वप्रयुक्ते                                   | (२४) गो-रथ-वातात् त्रल्-<br>कटचलूलम्      |
| (७) द्वन्द्वादीयः  | (२५) पाशादेश्च ल्यः                       |
| (८) श्रवणा-ऽश्वत्थान्नाम्यः  | (२६) श्वादिभ्योऽञ्                        |
| (९) षष्ठ्याः समूहे   | (२७) खलादिभ्यो लिन्                       |
| (१०) भिक्षाऽऽदेः   | (२८) ग्राम-जन-बन्धु-गज-<br>सहायात् तल्    |
| (११) क्षुद्रकमालवात् सेनानाम्नि  | (२९) पुरुषात् कृत-हित-वध-<br>विकारे चैयञ् |
| (१२) गोत्रोक्ष-वत्सोष्ट्र-वृद्धा-<br>ऽजोरभ्र-मनुष्य-राज-<br>राजन्य-राजपुत्रादकञ् | (३०) विकारे                               |
| (१३) केदाराण्यश्च  | (३१) प्राण्यौषधि-वृक्षेभ्योऽवयवे<br>च     |
| (१४) कवचि-हस्त्यचित्ताच्चेकण्  | (३२) तालाद् धनुषि                         |
| (१५) धेनोरनञः  | (३३) त्रपु-जतोः षोन्तश्च                  |
| (१६) ब्राह्मण-माणव-<br>वाडवाद् यः  | (३४) शम्या लः                             |
| (१७) गणिकाया ण्यः  | (३५) पयो-द्रोयः                           |
| (१८) केशाद् वा   | (३६) उष्ट्रादकञ्                          |

|                            |                                  |
|----------------------------|----------------------------------|
| (३७) उमोर्णाद् वा          | (५८) फले                         |
| (३८) एण्या एयञ्            | (५९) प्लक्षादेरण्                |
| (३९) कौशेयम्               | (६०) जम्ब्वा वा                  |
| (४०) परशव्याद् यलुक् च     | (६१) न द्विरद्रुवय-गोमय-फलात्    |
| (४१) कंसीयाञ्ज्यः          | (६२) पितृ-मातुर्व्य-डुलं भ्रातरि |
| (४२) हेमार्थान्माने        | (६३) पित्रोर्दामहट्              |
| (४३) द्रोर्वयः             | (६४) अवेर्दुग्धे सोढ-दूस-        |
| (४४) मानात् क्रीतवत्       | मरीसम्                           |
| (४५) हेमादिभ्योऽञ्         | (६५) राष्ट्रेऽनङ्गादिभ्यः        |
| (४६) अभक्ष्या-ऽऽच्छादने    | (६६) राजन्यादिभ्योऽकञ्           |
| वा मयट्                    | (६७) वसातेर्वा                   |
| (४७) शर-दर्भ-कूदी-तृण-     | (६८) भौरिक्वैषुकायदिर्विध-       |
| सोम-वल्बजात्               | भक्तम्                           |
| (४८) एकस्वरात्             | (६९) निवासा-ऽदूरभव इति           |
| (४९) दोरप्राणिनः           | देशे नाम्नि                      |
| (५०) गोः पुरीषे            | (७०) तदत्राऽस्ति                 |
| (५१) व्रीहेः पुरोडाशे      | (७१) तेन निर्वृत्ते च            |
| (५२) तिल-यवादनाम्नि        | (७२) नद्यां मतुः                 |
| (५३) पिष्टात्              | (७३) मध्वादेः                    |
| (५४) नाम्नि कः             | (७४) नड-कुमुद-वेतस-              |
| (५५) ह्योगोदोहादीनञ्       | महिषाङ्घ्रि                      |
| हियङ्गुश्चास्य             | (७५) नड-शादाद् वलः               |
| (५६) अपो यञ् वा            | (७६) शिखायाः                     |
| (५७) लुब् बहुलं पुष्प-मूले | (७७) शिरीषादिक-कणौ               |

|                             |                                |
|-----------------------------|--------------------------------|
| (७८) शर्कराया इक्णीया-ऽण् च | (१०१) देवता                    |
| (७९) रोऽश्मादेः             | (१०२) पैङ्गाक्षीपुत्रादेरीयः   |
| (८०) प्रेक्षादेरिन्         | (१०३) शुक्रादियः               |
| (८१) तृणादेः सल्            | (१०४) शतरुद्रात् तौ            |
| (८२) काशादेरिलः             | (१०५) अपोनपादपान्नपा-          |
| (८३) अरीहणादेरकण्           | तस्तृ चाऽऽतः                   |
| (८४) सुपन्थ्यादेर्ज्यः      | (१०६) महेन्द्राद् वा           |
| (८५) सुतङ्गमादेरिञ्         | (१०७) क-सोमाद्वयण्             |
| (८६) बलादेर्यः              | (१०८) द्यावापृथिवी-शुनासीरा-   |
| (८७) अहरादिभ्योऽञ्          | ऽग्नीषोम-मरुत्वद्-             |
| (८८) सख्यादेरेयण्           | वास्तोष्पति-गृहमेधा-           |
| (८९) पन्थ्यादेरायनण्        | दीय-यौ                         |
| (९०) कर्णादेरायनिञ्         | (१०९) वाय्वृतु-पित्रुषसो यः    |
| (९१) उत्करादेरीयः           | (११०) महाराज-प्रोष्ठपदादिकण्   |
| (९२) नडादेः कीयः            | (१११) कालाद् भववत्             |
| (९३) कृशाश्वादेरीयण्        | (११२) आदेः छन्दसः प्रगाथे      |
| (९४) ऋश्यादेः कः            | (११३) योद्धृ-प्रयोजनाद् युद्धे |
| (९५) वराहादेः कण्           | (११४) भावघञोऽस्यां णः          |
| (९६) कुमुदादेरिकः           | (११५) श्यैनम्पाता-तैलम्पाता    |
| (९७) अश्वत्थादेरिकण्        | (११६) प्रहरणात् क्रीडायां णः   |
| (९८) साऽस्य पौर्णमासी       | (११७) तद् वेत्त्यधीते          |
| (९९) आग्रहायण्यश्वत्थादिकण् | (११८) न्यायादेरिकण्            |
| (१००) चैत्री-कार्तिकी-      | (११९) पद-कल्प-लक्षणान्त-       |
| फाल्गुनी-श्रवणाद् वा        | क्रत्वाख्याना-ऽऽख्यायि-        |

|                                  |                              |
|----------------------------------|------------------------------|
| कात्                             | (१३१) तेन च्छन्ने रथे        |
| (१२०) अकल्पात् सूत्रात्          | (१३२) पाण्डुकम्बलादिन्       |
| (१२१) अधर्म-क्षत्र-त्रि-संसर्गा- | (१३३) दृष्टे साम्नि नाम्नि   |
| ऽङ्गाद् विद्यायाः                | (१३४) गोत्रादङ्गवत्          |
| (१२२) याज्ञिकौक्थिक-             | (१३५) वामदेवाद् यः           |
| लौकायितिकम्                      | (१३६) डिद् वाऽण्             |
| (१२३) अनुब्राह्मणादिन्           | (१३७) वा जाते द्विः          |
| (१२४) शत-षष्टेः पथ इकट्          | (१३८) तत्रोद्धृते पात्रेभ्यः |
| (१२५) पदोत्तरपदेभ्य इकः          | (१३९) स्थण्डिलाच्छेते व्रती  |
| (१२६) पद-क्रम-शिक्षा-            | (१४०) संस्कृते भक्ष्ये       |
| मीमांसा-साम्नोऽकः                | (१४१) शूलोखाद् यः            |
| (१२७) स-सर्वपूर्वात् लुप्        | (१४२) क्षीरादेयण्            |
| (१२८) सङ्ख्याकात् सूत्रे         | (१४३) दध्न इकण्              |
| (१२९) प्रोक्तात्                 | (१४४) वोदश्वितः              |
| (१३०) वेदेन्ब्राह्मणमत्रैव       | (१४५) कचित्                  |

### [षष्ठाध्याये तृतीयः पादः]

|                  |                                  |
|------------------|----------------------------------|
| (१) शेषे         | (६) पारावारादीनः                 |
| (२) नद्यादेरेयण् | (७) व्यस्त-व्यत्यस्तात्          |
| (३) राष्ट्रादियः | (८) द्यु-प्रागपागुदक्-प्रतीचो यः |
| (४) दूरादेत्यः   | (९) ग्रामादीनञ् च                |
| (५) उत्तरादाहञ्  | (१०) कत्र्यादेश्वैयकञ्           |

- |   |  |
|---|--|
| (११) कुण्ड्यादिभ्यो यलुक् च                                       | (३०) भवतोरिकणीयसौ                                |
| (१२) कुल-कुक्षि-<br>ग्रीवाच्छ्वाऽस्यलङ्कारे                       | (३१) पर-जन-राज्ञोऽकीयः                           |
| (१३) दक्षिणा-पश्चात्-<br>पुरसस्त्यण्                              | (३२) दोरीयः                                      |
| (१४) वहल्यूर्दि-पर्दि-<br>कापिश्याष्टायनण्                        | (३३) उष्णादिभ्यः कालात्                          |
| (१५) रङ्गोः प्राणिनि वा   | (३४) व्यादिभ्यो णिकेकणौ                          |
| (१६) केहाऽमा-त्र-तसस्त्यच्  | (३५) काश्यादेः                                   |
| (१७) नेधूर्वि   | (३६) वाहीकेषु ग्रामात्                           |
| (१८) निसो गते   | (३७) वोशीनरेषु                                   |
| (१९) ऐषमो-ह्यस्-श्वसो वा  | (३८) वृजि-मद्राद् देशात् कः                      |
| (२०) कन्थाया इकण्   | (३९) उवर्णादिकण्                                 |
| (२१) वर्णावकञ्  | (४०) दोरेव प्राचः                                |
| (२२) रूप्योत्तरपदा-ऽरण्याणः                                       | (४१) ईतोऽकञ्                                     |
| (२३) दिक्पूर्वादनाम्नः  | (४२) रोपान्त्यात्                                |
| (२४) मद्रादञ्   | (४३) प्रस्थ-पुर-वहान्त-<br>योपान्त्य-धन्वार्थात् |
| (२५) उदग्ग्रामाद् यकृल्लोमः                                       | (४४) राष्ट्रेभ्यः                                |
| (२६) गौष्ठी-तैकी-नैकेती-<br>गोमती-शूरसेन-वाहीक-<br>रोमक-पटच्चरात् | (४५) बहुविषयेभ्यः                                |
| (२७) शकलादेर्यञः  | (४६) धूमादेः                                     |
| (२८) वृद्धेजः   | (४७) सौवीरेषु कूलात्                             |
| (२९) न द्विस्वरात् प्राग्-भरतात्                                  | (४८) समुद्रान्तृ-नावोः                           |
|   | (४९) नगरात् कुत्सा-दाक्ष्ये                      |
|   | (५०) कच्छा-ऽग्नि-वक्त्र-<br>वर्त्तोत्तरपदात्     |
|   | (५१) अरण्यात् पथि-न्याया-                        |

|                                |                                 |
|--------------------------------|---------------------------------|
| ऽध्यायेभ-नर-विहारे             | (७१) दिक्पूर्वात् तौ            |
| (५२) गोमये वा                  | (७२) ग्राम-राष्ट्रांशादणिकणौ    |
| (५३) कुरु-युगन्धराद् वा        | (७३) परा-ऽवरा-                  |
| (५४) साल्वाद् गो-यवाग्वपत्तौ   | ऽधमोत्तमादेर्यः                 |
| (५५) कच्छादेर्नृ-नृस्थे        | (७४) अमोऽन्ता-ऽवो-ऽधसः          |
| (५६) कोपान्त्याच्चाऽण्         | (७५) पश्चादाद्यन्ता-ऽग्रादिमः   |
| (५७) गत्तोत्तरपदादीयः          | (७६) मध्यान्मः                  |
| (५८) कटपूर्वात् प्राचः         | (७७) मध्य उत्कर्षा-ऽपकर्षयोरः   |
| (५९) क-खोपान्त्य-कन्था-        | (७८) अध्यात्मादिभ्य इकण्        |
| पलद-नगर-ग्राम-                 | (७९) समानपूर्व-लोकोत्तरपदात्    |
| हृदोत्तरपदाद् दोः              | (८०) वर्षा-कालेभ्यः             |
| (६०) पर्वतात्                  | (८१) शरदः श्राद्धे कर्मणि       |
| (६१) अनरे वा                   | (८२) नवा रोगा-ऽऽतपे             |
| (६२) पर्ण-कृकणाद् भारद्वाजात्  | (८३) निशा-प्रदोषात्             |
| (६३) गहादिभ्यः                 | (८४) श्वसस्तादिः                |
| (६४) पृथीवीमध्यान्मध्यमश्वास्य | (८५) चिर-परुत्-परारेस्तनः       |
| (६५) निवासाच्चरणेऽण्           | (८६) पुरो नः                    |
| (६६) वेणुकादिभ्य ईयण्          | (८७) पूर्वाह्ना-ऽपराह्णात् तनद् |
| (६७) वा युष्मदस्मदोऽजीनजौ      | (८८) सायं-चिरं-प्राह्णे-        |
| युष्माका-ऽस्माकं चास्यै-       | प्रगे-ऽव्ययात्                  |
| कत्वे तु तवक-ममकम्             | (८९) भर्तु-सन्ध्यादेरण्         |
| (६८) द्वीपादनुसमुद्रं ण्यः     | (९०) संवत्सरात् फल-पर्वणोः      |
| (६९) अर्धाद् यः                | (९१) हेमन्ताद् वा , तलुकृ च     |
| (७०) सपूर्वादिकण्              | (९२) प्रावृष एण्यः              |

|   |   |
|---|---|
| (९३) स्थामा-ऽजिनान्तल्लुप्  | खरशालात्  |
| (९४) तत्र कृत-लब्ध-क्रीत-<br>सम्भूते                                    | (१११) वत्सशालाद्वा<br>(११२) सोदर्य-समानोदर्यौ                     |
| (९५) कुशले  | (११३) कालाद् देये ऋणे   |
| (९६) पथोऽकः   | (११४) कलाप्यश्चत्थ-यवबुसो-  |
| (९७) कोऽश्मादेः   | माव्यासैषमसोऽकः   |
| (९८) जाते   | (११५) ग्रीष्मा-ऽवरसमादकञ्   |
| (९९) प्रावृष इकः  | (११६) संवत्सरा-ऽऽग्रहायण्या                                       |
| (१००) नाम्नि शरदोऽकञ्   | इकण् च  |
| (१०१) सिन्ध्वपकरात् का-ऽणौ  | (११७) साधु-पुष्यत्-पच्यमाने                                       |
| (१०२) पूर्वाह्णा-ऽपराह्णा-<br>ऽऽर्द्रा-मूल-प्रदोषा-<br>ऽवस्करादकः       | (११८) उप्ते<br>(११९) आश्वयुज्या अकञ्<br>(१२०) ग्रीष्म-वसन्ताद् वा |
| (१०३) पथः पन्थ च  | (१२१) व्याहरति मृगे   |
| (१०४) अश्च वाऽमावास्यायाः   | (१२२) जयिनि च   |
| (१०५) श्रविष्ठा-ऽषाढादीयण् च  | (१२३) भवे   |
| (१०६) फल्गुन्याष्टः   | (१२४) दिगादिदेहांशाद् यः  |
| (१०७) बहुला-ऽनुराधा-<br>पुष्यार्थ-पुनर्वसु-हस्त-<br>विशाखा-स्वातेर्लुप् | (१२५) नाम्न्युदकात्<br>(१२६) मध्याद् दिनण्-<br>गेया मोऽन्तश्च     |
| (१०८) चित्रा-रेवती-<br>रोहिण्याः स्त्रियाम्                             | (१२७) जिह्वामूला-ऽङ्गुलेश्चैयः<br>(१२८) वर्गान्तात्               |
| (१०९) बहुलमन्येभ्यः   | (१२९) ईन-यौ चाशब्दे   |
| (११०) स्थानान्त-गोशाल-  | (१३०) दृति-कुक्षि-कलशि-   |



|                               |                            |
|-------------------------------|----------------------------|
| वस्त्यहेरेयण्                 | (१५०) विद्या-योनिस्म्व-    |
| (१३१) आस्तेयम्                | न्धादकञ्                   |
| (१३२) ग्रीवातोऽण् च           | (१५१) पितुर्यो वा          |
| (१३३) चतुर्मासान्नाम्नि       | (१५२) ऋत इकण्              |
| (१३४) यज्ञो ज्यः              | (१५३) आयस्थानात्           |
| (१३५) गम्भीर-पञ्चजन-          | (१५४) शुण्डिकादेरण्        |
| बहिर्देवात्                   | (१५५) गोत्रादङ्कवत्        |
| (१३६) परिमुखादेरव्ययीभावात्   | (१५६) नृ-हेतुभ्यो रूप्प-   |
| (१३७) अन्तःपूर्वादिकण्        | मयटौ वा                    |
| (१३८) पर्यनोग्रामात्          | (१५७) प्रभवति              |
| (१३९) उपाज्जानु-नीवि-         | (१५८) वैडूर्यः             |
| कर्णात् प्रायेण               | (१५९) त्यदादेर्मयट्        |
| (१४०) रूढावन्तःपुरादिकः       | (१६०) तस्येदम्             |
| (१४१) कर्ण-ललाटात् कल्        | (१६१) हल-सीरादिकण्         |
| (१४२) तस्य व्याख्याने         | (१६२) समिध आधाने टेन्यण्   |
| च ग्रन्थात्                   | (१६३) विवाहे द्वन्द्वदकल्  |
| (१४३) प्रायो बहुस्वरादिकण्    | (१६४) अदेवासुरादिभ्यो वैरे |
| (१४४) ऋगृद्-द्विस्वर-यागेभ्यः | (१६५) नटान्नृत्ते ज्यः     |
| (१४५) ऋषेरध्याये              | (१६६) छन्दोगौक्त्थिक-      |
| (१४६) पुरोडाश-पौरोडाशा-       | याज्ञिक-बहुचाच्च धर्मा-    |
| दिकेकटौ                       | ऽऽम्नाय-संधे               |
| (१४७) छन्दसो यः               | (१६७) आथर्वणिकादणि-        |
| (१४८) शिक्षादेश्वाण्          | कलुक् च                    |
| (१४९) तत आगते                 | (१६८) चरणादकञ्             |

|                                |                                     |
|--------------------------------|-------------------------------------|
| (१६९) गोत्राददण्डमाणव-शिष्ये   | (१८९) शिलालि-पाराश-                 |
| (१७०) रैवतिकादेरीयः            | र्यान्नट-भिक्षुसूत्रे               |
| (१७१) कौपिञ्जल-                | (१९०) कृशाश्व-कर्मन्दादिन्          |
| हास्तिपदादण्                   | (१९१) उपज्ञाते                      |
| (१७२) सङ्घ-घोषा-ऽङ्क-          | (१९२) कृते                          |
| लक्षणेऽञ्-यजिजः                | (१९३) नाम्नि मक्षिकादिभ्यः          |
| (१७३) शाकलादकञ् च              | (१९४) कुलालादेरकञ्                  |
| (१७४) गृहेऽग्नीधो रण् धश्च     | (१९५) सर्वचर्मण ईनेनञौ              |
| (१७५) रथात् साऽऽदेश्च वोढूङ्गे | (१९६) उरसो या-ऽणौ                   |
| (१७६) यः                       | (१९७) छन्दस्यः                      |
| (१७७) पत्रपूर्वादऽञ्           | (१९८) अमोऽधिकृत्य ग्रन्थे           |
| (१७८) वाहनात्                  | (१९९) ज्योतिषम्                     |
| (१७९) बाह्य-पथ्युपकरणे         | (२००) शिशुक्रन्दादिभ्य ईयः          |
| (१८०) वहेस्तुरिश्वादिः         | (२०१) द्वन्द्वात् प्रायः            |
| (१८१) तेन प्रोक्ते             | (२०२) अभिनिष्क्रामति द्वारे         |
| (१८२) मौदादिभ्यः               | (२०३) गच्छति पथि दूते               |
| (१८३) कठादिभ्यो वेदे लुप्      | (२०४) भजति                          |
| (१८४) तित्तिरि-वरतन्तु-        | (२०५) महाराजादिकण्                  |
| खण्डिकोखादीयण्                 | (२०६) अचित्ताददेशकालात्             |
| (१८५) छगलिनो णेयिन्            | (२०७) वासुदेवा-ऽर्जुनादकः           |
| (१८६) शौनकादिभ्यो णिन्         | (२०८) गोत्र-क्षत्रियेभ्योऽकञ्       |
| (१८७) पुराणे कल्पे             | प्रायः                              |
| (१८८) काश्यप-कौशिकाद्          | (२०९) सरूपाद् द्वेः सर्व राष्ट्रवत् |
| वेदवच्च                        | (२१०) टस्तुल्यदिशि                  |

|                      |                           |
|----------------------|---------------------------|
| (२११) तसिः           | (२१५) शण्डिकादेर्यः       |
| (२१२) यश्चोरसः       | (२१६) सिन्ध्वादेरञ्       |
| (२१३) सेर्निवासादस्य | (२१७) सलातुरादीयण्        |
| (२१४) आभिजनात्       | (२१८) तूदी-वर्मत्या एयण्  |
|                      | (२१९) गिरेरीयोऽस्त्राजीवे |

### [षष्ठाध्याये चतुर्थः पादः]

|                           |                              |
|---------------------------|------------------------------|
| (१) इकण्                  | (१६) व्यस्ताच्च क्रय-        |
| (२) तेन जित-जयद्-         | विक्रयादिकः                  |
| दीव्यत्-खनत्सु            | (१७) वस्नात्                 |
| (३) संस्कृते              | (१८) आयुधादीयश्च             |
| (४) कुलत्थ-कोपान्त्यादण्  | (१९) व्रातादीनञ्             |
| (५) संसृष्टे              | (२०) निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादेः |
| (६) लवणादः                | (२१) भावादिमः                |
| (७) चूर्ण-मुद्राभ्यामिनणौ | (२२) याचिता-ऽपमित्यात् कण्   |
| (८) व्यञ्जनेभ्य उपसित्ते  | (२३) हर्त्युत्सङ्गादेः       |
| (९) तरति                  | (२४) भस्त्रादेरिकट्          |
| (१०) नौ-द्विस्वरादिकः     | (२५) विवध-वीवधाद् वा         |
| (११) चरति                 | (२६) कुटिलिकाया अण्          |
| (१२) पपदिरिकट्            | (२७) ओजस्-सहो-ऽम्भसो         |
| (१३) पदिकः                | वर्तते                       |
| (१४) श्रवणाद् वा          | (२८) तं प्रत्यनोलोमिप-कूलात् |
| (१५) वेतनादेर्जीवति       | (२९) परेर्मुख-पार्श्वात्     |

- |   |  |
|---|--|
| (३०) रक्षदुञ्छतोः                                     | (५०) षष्ठ्या धर्म्ये                   |
| (३१) पक्षि-मत्स्य-मृगार्थाद्<br>घ्नति                 | (५१) ऋन्नादेरण्                        |
| (३२) परिपन्थात् तिष्ठति च                             | (५२) विभाजयितृ-<br>विशसितुर्णीङ्लुक् च |
| (३३) परिपथात्   | (५३) अवक्रमे                           |
| (३४) अवृद्धेर्गृह्णति गर्ह्ये                         | (५४) तदस्य पण्यम्                      |
| (३५) कुसीदादिकट्                                      | (५५) किशरादेरिकट्                      |
| (३६) दशैकादशादिकश्च                                   | (५६) शलालुनो वा                        |
| (३७) अर्थ-पद-पदोत्तर- <b>पद-</b><br>ललाम-प्रतिकण्ठात् | (५७) शिल्पम्                           |
| (३८) परदारदिभ्यो गच्छति                               | (५८) मड्डुक-झर्झराद् वाऽण्             |
| (३९) प्रतिपथादिकश्च                                   | (५९) शीलम्                             |
| (४०) माथोत्तरपद-<br>पदव्याक्रन्दाद् धावति             | (६०) अङ्स्थाच्छत्राऽऽदेरञ्             |
| (४१) पश्चात्यनुपदात्                                  | (६१) तूष्णीकः                          |
| (४२) सुस्नातादिभ्यः पृच्छति                           | (६२) प्रहरणम्                          |
| (४३) प्रभूतादिभ्यो ब्रुवति                            | (६३) परश्वधाद् वाऽण्                   |
| (४४) माशब्द इत्यादिभ्यः                               | (६४) शक्ति-यष्टेष्टीकण्                |
| (४५) शाब्दिक-दार्दरिक-<br>लालाटिक-कौक्कुटिकम्         | (६५) वेष्ट्यादिभ्यः                    |
| (४६) समूहार्थात् समवेते                               | (६६) नास्तिका-ऽऽस्तिक-<br>दैष्टिकम्    |
| (४७) पर्षदो ण्यः                                      | (६७) वृत्तोऽपपाठोऽनुयोगे               |
| (४८) सेनाया वा  | (६८) बहुस्वरपूर्वादिकः                 |
| (४९) धर्मा-ऽधर्माच्चरति                               | (६९) भक्ष्यं हितमस्मै                  |
|   | (७०) नियुक्तं दीयते                    |
|   | (७१) श्राणा-मांसौदनादिको               |

|                              |                             |
|------------------------------|-----------------------------|
| वा                           | (९०) शङ्कूत्तर-कान्तारा-ऽज- |
| (७२) भक्तौदनाद्वाऽणिकट्      | वारि-स्थल-जङ्गलादेस्ते-     |
| (७३) नवयज्ञादयोऽस्मिन्       | नाऽऽहते च                   |
| वर्तन्ते                     | (९१) स्थलादेर्मधुक-मरिचेऽण् |
| (७४) तत्र नियुक्ते           | (९२) तुरायण-पारायणं         |
| (७५) अगारान्तादिकः           | यजमाना-ऽधीयाने              |
| (७६) अदेश-कालादध्यायिनि      | (९३) संशयं प्राप्ते ज्ञेये  |
| (७७) निकटादिषु वसति          | (९४) तस्मै योगादेः शक्ते    |
| (७८) सतीर्थः                 | (९५) योग-कर्मभ्यां योकजौ    |
| (७९) प्रस्तार-संस्थान-तदन्त- | (९६) यज्ञानां दक्षिणायाम्   |
| कठिनान्तेभ्यो व्यवहरति       | (९७) तेषु देये              |
| (८०) संख्यादेश्वाऽऽर्हदलुचः  | (९८) काले कार्ये च भववत्    |
| (८१) गोदानादीनां ब्रह्मचर्ये | (९९) व्युष्टादिष्वण्        |
| (८२) चन्द्रायणं च चरति       | (१००) यथाकथाचाण्णः          |
| (८३) देवव्रतादीन् डिन्       | (१०१) तेन हस्ताद् यः        |
| (८४) डकश्चाष्टाचत्वारिंशतं   | (१०२) शोभमाने               |
| वर्षाणाम्                    | (१०३) कर्म-वेषाद् यः        |
| (८५) चातुर्मास्यं तौ यलुकृ   | (१०४) कालात् परिजय्य-       |
| च                            | लभ्य-कार्य-सुकरे            |
| (८६) क्रोश-योजनपूर्वाच्छताद् | (१०५) निर्वृते              |
| योजनाच्चाऽभिगमार्हे          | (१०६) तं भावि-भूते          |
| (८७) तद् यात्येभ्यः          | (१०७) तस्मै भृता-ऽधीष्टे च  |
| (८८) पथ इकट्                 | (१०८) षण्मासादवयसि ष्येकौ   |
| (८९) नित्यं णः पन्थश्च       | (१०९) समाया ईनः             |

- |   |  |
|---|--|
| (१२७) दीर्घः  | (१४५) शताद् यः   |
| (१२८) आकालिकमिकश्चाद्यन्ते                          | (१४६) शाणात्   |
| (१२९) त्रिंशद्-विंशतेर्द-<br>कोऽसंज्ञायामाऽर्हदर्थे | (१४७) द्वि-त्र्यादेर्या-ऽण् वा                                   |
| (१३०) सङ्ख्या-उत्तेश्चाऽशत्-<br>ति-ष्टेः कः         | (१४८) पण-पाद-माषाद् यः   |
| (१३१) शतात् केवलादत-<br>स्मिन् येकौ                 | (१४९) खारी-काकणीभ्यः<br>कच्                                      |
| (१३२) वाऽतोरिकः                                     | (१५०) मूल्यैः क्रीते   |
| (१३३) कार्षापणादिकट्<br>प्रतिश्चास्य वा             | (१५१) तस्य वापे  |
| (१३४) अर्धात् पल-कंस-<br>कर्षात्                    | (१५२) वात-पित्त-श्लेष्म-<br>सन्निपाताच्छमन-कोपने                 |
| (१३५) कंसा-ऽर्धात्                                  | (१५३) हेतौ संयोगोत्पाते  |
| (१३६) सहस्र-शतमानादण्                               | (१५४) पुत्राद् येयौ  |
| (१३७) शूर्पाद् वाऽञ्                                | (१५५) द्विस्वर-ब्रह्मवर्चसाद्<br>योऽसङ्ख्या-परिमाणा-<br>ऽश्वादेः |
| (१३८) वसनात्  | (१५६) पृथिवी-सर्वभूमेरीश-<br>ज्ञातयोश्चाञ्                       |
| (१३९) विंशतिकात्                                    | (१५७) लोक-सर्वलोकाज्ज्ञाते                                       |
| (१४०) द्विगोरीनः                                    | (१५८) तदत्राऽस्मै वा वृद्ध्याय-<br>लाभोपदा-शुल्कं देयम्          |
| (१४१) अनामन्यद्विः प्लुप्                           | (१५९) पूरणा-ऽर्धादिकः  |
| (१४२) नवाऽणः  | (१६०) भागाद् येकौ  |
| (१४३) सुवर्ण-कार्षापणात्                            | (१६१) तं पचति द्रोणाद्<br>वाऽञ्                                  |
| (१४४) द्वि-त्रि-बहोर्निष्क-<br>विस्तात्             |  |

- |                               |                            |
|-------------------------------|----------------------------|
| (१६२) सम्भवदवहरतोश्च          | (१७४) त्रैश-चात्वारिंशम्   |
| (१६३) पात्रा-ऽऽचिता-          | (१७५) पञ्चद्-दशद् वर्गे वा |
| ऽऽढकादीनो वा                  | (१७६) स्तोमे डट्           |
| (१६४) द्विगोरीनेकटौ वा        | (१७७) तमर्हति              |
| (१६५) कुलिजाद् वा लुप् च      | (१७८) दण्डादेर्यः          |
| (१६६) वंशादेर्भाराद्धरद्-     | (१७९) यज्ञादियः            |
| वहदावहत्सु                    | (१८०) पात्रात् तौ          |
| (१६७) द्रव्य-वस्त्रात् केकम्  | (१८१) दक्षिणा-कडङ्गर-      |
| (१६८) सोऽस्य भृति-वस्त्रांशम् | स्थालीबिलादीय-यौ           |
| (१६९) मानम्                   | (१८२) छेदादेर्नित्यम्      |
| (१७०) जीवितस्य सन्            | (१८३) विरागाद् विरङ्गश्च   |
| (१७१) सङ्ख्यायाः संघ-सूत्र-   | (१८४) शीर्षच्छेदाद् यो वा  |
| पाठे                          | (१८५) शालीन-कौपीना-        |
| (१७२) नाम्नि                  | ऽऽर्त्विजीनम्              |
| (१७३) विंशत्यादयः             |                            |

[सप्तमाध्याये प्रथमः पादः]

- |  |  |
|--|--|
| (१) यः   | (१९) सर्वजनाण्येनजौ                                |
| (२) वहति रथ-युग-प्रासङ्गात्  | (२०) प्रतिजनादेरीनञ्                               |
| (३) धुरो यैयण्   | (२१) कथादेरिकण्                                    |
| (४) वामाद्यादेरीनः   | (२२) देवतान्तात् तदर्थे                            |
| (५) अश्वैकादेः   | (२३) पाद्या-ऽर्घ्ये                                |
| (६) हल-सीरादिकण्   | (२४) ण्योऽतिथेः                                    |
| (७) शकटादण्  | (२५) सादेश्वा तदः                                  |
| (८) विध्यत्यनन्येन   | (२६) हलस्य कर्षे                                   |
| (९) धनगणाल्लब्धरि  | (२७) सीतया संगते                                   |
| (१०) णोऽन्नात्   | (२८) ईयः   |
| (११) हृद्य-पद्य-तुल्य-मूल्य-<br>वश्य-पथ्य-वयस्य-<br>धेनुष्या-गार्हपत्य-जन्य-<br>धर्म्यम् | (२९) हविरन्नभेदा-ऽपूपादेर्यो<br>वा                 |
| (१२) नौ-विषेण तार्य-वध्ये  | (३०) उवर्ण-युगादेर्यः                              |
| (१३) न्याया-ऽर्थादनपेते  | (३१) नाभेर्नभ् चादेहांशात्                         |
| (१४) मत-मदस्य करणे   | (३२) न् चोधसः                                      |
| (१५) तत्र साधौ   | (३३) शुनो वश्रोदूत्                                |
| (१६) पथ्यतिथि-वसति-<br>स्वपतेरैयण्   | (३४) कम्बलान्नाग्नि                                |
| (१७) भक्ताण्णः   | (३५) तस्मै हिते                                    |
| (१८) पर्षदो ण्य-णौ   | (३६) न राजा-ऽऽचार्य-<br>ब्राह्मण-वृष्णः            |
|  | (३७) प्राण्यङ्ग-रथ-तिल-यव-<br>वृष-ब्रह्म-माषाद् यः |



|                               |                                 |
|-------------------------------|---------------------------------|
| (३८) अव्यजात् थ्यप्           | वा                              |
| (३९) चरक-माणवादीनञ्           | (६०) पति-राजान्त-गुणाङ्ग-       |
| (४०) भोगोत्तरपदा-             | राजादिभ्यः कर्मणि च             |
| ऽऽत्मभ्यामीनः                 | (६१) अर्हतस्तो न्तु च           |
| (४१) पञ्च-सर्व-विश्वाज्जनात्  | (६२) सहायाद् वा                 |
| कर्मधारये                     | (६३) सखि-वणिग्-दूताद् यः        |
| (४२) महत्-सर्वादिकण्          | (६४) स्तेनान्नलुक् च            |
| (४३) सर्वान्णो वा             | (६५) कपि-ज्ञातेरेयण्            |
| (४४) परिणामिनि तदर्थे         | (६६) प्राणिजाति-वयोऽर्थादञ्     |
| (४५) चर्मण्यञ्                | (६७) युवादेरण्                  |
| (४६) ऋषभोपानहाञ्च्यः          | (६८) हायनान्तात्                |
| (४७) छदिर्बल्लेरेयण्          | (६९) खृवर्णाल्लघ्वादेः          |
| (४८) परिखाऽस्य स्यात्         | (७०) पुरुष-हृदयादसमासे          |
| (४९) अत्र च                   | (७१) श्रोत्रियाद् यलुक् च       |
| (५०) तद्                      | (७२) योपान्त्याद् गुरुपोत्तमाद- |
| (५१) तस्याऽर्हे क्रियायां वत् | सुप्रख्यादकञ्                   |
| (५२) स्यादेरिवे               | (७३) चोरादेः                    |
| (५३) तत्र                     | (७४) द्वन्द्वाल्लित्            |
| (५४) तस्य                     | (७५) गोत्र-चरणाच्छलाघा-         |
| (५५) भावे त्व-तल्             | ऽत्याकार-प्राप्त्यवगमे          |
| (५६) प्राक् त्वादगडुलादेः     | (७६) होत्राभ्य ईयः              |
| (५७) नञ्तत्पुरुषादबुधादेः     | (७७) ब्रह्मणस्त्वः              |
| (५८) पृथ्वादेरिमन् वा         | (७८) शाकट-शाकिनौ क्षेत्रे       |
| (५९) वर्ण-ट्टादिभ्यष्ट्यण् च  | (७९) धान्येभ्य ईनञ्             |

|                               |                                  |
|-------------------------------|----------------------------------|
| (८०) ब्रीहि-शालेरेयण्         | ऽत्यन्तं गामिनि                  |
| (८१) यव-यवक-षष्टिकाद् यः      | (१०१) पारावारं व्यस्त-व्यत्यस्तं |
| (८२) वाऽणु-माषात्             | च                                |
| (८३) वोमा-भङ्गा-तिलात्        | (१०२) अनुग्वलम्                  |
| (८४) अलाब्वाश्च कटो रजसि      | (१०३) अध्वानं येनौ               |
| (८५) अह्ना गम्येऽश्वादीनञ्    | (१०४) अभ्यमित्रमीयश्च            |
| (८६) कुलाज्जल्ये              | (१०५) समांसमीना-ऽद्यश्चीना-      |
| (८७) पील्वादेः कुणः पाके      | ऽद्यप्रातीना-ऽऽगवीन-             |
| (८८) कणादिर्मूले जाहः         | साप्तपदीनम्                      |
| (८९) पक्षात् तिः              | (१०६) अषडक्षा-ऽऽशितं-            |
| (९०) हिमादेलुः सहे            | ग्वलङ्कर्मा-ऽलंपुरुषादीनः        |
| (९१) बल-वातादूलः              | (१०७) अदिक्स्त्रियां वाऽञ्चः     |
| (९२) शीतोष्ण-तृप्रादालुरसहे   | (१०८) तस्य तुल्ये कः संज्ञा-     |
| (९३) यथामुख-संमुखादीनस्तद्    | प्रतिकृत्योः                     |
| दृश्यतेऽस्मिन्                | (१०९) न नृ-पूजार्थ-ध्वज-         |
| (९४) सवदिः पथ्यङ्ग-कर्म-पत्र- | चित्रे                           |
| पात्र-शरावं व्याप्नोति        | (११०) अपण्ये जीवने               |
| (९५) आप्रपदम्                 | (१११) देव-पथादिभ्यः              |
| (९६) अनुपदं बद्धा             | (११२) बस्तेरेयञ्                 |
| (९७) अयानयं नेयः              | (११३) शिलाया एयञ्च               |
| (९८) सर्वाऽन्नमत्ति           | (११४) शाखादेर्यः                 |
| (९९) परोवरीण-परम्परीण-        | (११५) द्रोर्भव्ये                |
| पुत्रपौत्रीणम्                | (११६) कुशाग्रादीयः               |
| (१००) यथाकामा-ऽनुकामा-        | (११७) काकतालीयादयः               |

|                                 |                               |
|---------------------------------|-------------------------------|
| (११८) शर्करादेरण्               | (१३६) तिलादिभ्यः स्नेहे       |
| (११९) अः सपत्न्याः              | तैलः                          |
| (१२०) एकशालाया इकः              | (१३७) तत्र घटते कर्मणष्ठः     |
| (१२१) गोण्यादेश्चेकण्           | (१३८) तदस्य सञ्जातं           |
| (१२२) कर्कलोहिताष्टीकण् च       | तारकादिभ्य इतः                |
| (१२३) वेर्विस्तृते शाल-शङ्कटौ   | (१३९) गर्भादप्राणिनि          |
| (१२४) कटः                       | (१४०) प्रमाणान्मात्रट्        |
| (१२५) सं-प्रोन्नेः संकीर्ण-     | (१४१) हस्ति-पुरुषाद् वाऽण्    |
| प्रकाशा-ऽधिक-समीपे              | (१४२) वोर्ध्वं दघ्नट् द्वयसट् |
| (१२६) अवात् कुटारश्चावनते       | (१४३) मानादसंशये लुप्         |
| (१२७) नासानति-तद्वतोष्टीट-      | (१४४) द्विगोः संशये च         |
| नाट-भ्रटम्                      | (१४५) मात्रट्                 |
| (१२८) नेरिन-पिट-काश्चिक्-       | (१४६) शन्-शद्-विंशतेः         |
| चि-चिकश्चाऽस्य                  | (१४७) डिन्                    |
| (१२९) बिड-बिरीसौ नीरन्ध्रे      | (१४८) इदं-किमोऽतुरिय्-        |
| च                               | किय् चास्य                    |
| (१३०) क्लिन्नल्लश्चक्षुषि चिल्- | (१४९) यत्-तदेतदो डावादिः      |
| पिल्-चुल् चास्य                 | (१५०) यत्-तत्-किमः            |
| (१३१) उपत्यका-ऽधित्यके          | सङ्ख्याया इतिर्वा             |
| (१३२) अवेः संघात-विस्तारे       | (१५१) अवयवात् तयट्            |
| कट-पटम्                         | (१५२) द्वि-त्रिभ्यामयट् वा    |
| (१३३) पशुभ्यः स्थाने गोष्ठः     | (१५३) द्व्यादेर्गुणान्मूल्य-  |
| (१३४) द्वित्वे गोयुगः           | क्रेये मयट्                   |
| (१३५) षट्त्वे षड्वः             | (१५४) अधिकं तत्सङ्ख्यमस्मिन्  |

|                               |                                |
|-------------------------------|--------------------------------|
| शत-सहस्रे शति-शद्-            | इयः                            |
| दशान्ताया डः                  | (१७३) छन्दोऽधीते श्रोत्रश्च    |
| (१५५) सङ्ख्यापूरणे डट्        | वा                             |
| (१५६) विंशत्यादेर्वा तमट्     | (१७४) इन्द्रियम्               |
| (१५७) शतादि-मासा-             | (१७५) तेन वित्ते चञ्चु-चणौ     |
| ऽर्द्धमास-संवत्सरात्          | (१७६) पूरणाद् ग्रन्थस्यग्राहके |
| (१५८) षष्ठ्यादेरसङ्ख्यादेः    | को लुक् चाऽस्य                 |
| (१५९) नो मट्                  | (१७७) ग्रहणाद् वा              |
| (१६०) पित् तिथट् बहु-गण-      | (१७८) सस्याद् गुणात् परिजाते   |
| पूग-संघात्                    | (१७९) धन-हिरण्ये कामे          |
| (१६१) अतोरिथट्                | (१८०) स्वाङ्गेषु सक्ते         |
| (१६२) षट्-कति-कतिपयात्        | (१८१) उदरे त्विकणाद्यूने       |
| थट्                           | (१८२) अंशं हारिणि              |
| (१६३) चतुरः                   | (१८३) तत्रादचिरोद्धृते         |
| (१६४) येयौ च लुक् च           | (१८४) ब्राह्मणान्नाम्नि        |
| (१६५) द्वेस्तीयः              | (१८५) उष्णात्                  |
| (१६६) त्रेस्तृ च              | (१८६) शीताच्च कारिणि           |
| (१६७) पूर्वमनेन सादेश्वेन     | (१८७) अधेरारूढे                |
| (१६८) इष्टादेः                | (१८८) अनोः कमितरि              |
| (१६९) श्राद्धमद्यभुक्तमिकेनौ  | (१८९) अभेरीश्च वा              |
| (१७०) अनुपद्यन्वेष्टा         | (१९०) सोऽस्य मुख्यः            |
| (१७१) दाण्डाजिनिका-           | (१९१) शृङ्खलकः करभे            |
| ऽऽयःशूलिक-पार्श्वकम्          | (१९२) उदुत्सोरुन्मनसि          |
| (१७२) क्षेत्रेऽन्यस्मिन् नाशय |                                |

- (१९३) काल-हेतु-फलाद् रोगे (१९६) वटकादिन्  
 (१९४) प्रायोऽन्नमस्मिन् नाम्नि (१९७) साक्षाद् द्रष्टा  
 (१९५) कुल्माषादण्

### [सप्तमाध्याये द्वितीयः पादः]

- |                                    |  |
|------------------------------------|--|
| (१) तदस्याऽस्त्यस्मिन्निति<br>मतुः | (१८) कं-शंभ्यां युस्-ति-यस्-<br>तु-त-व-भम् |
| (२) आ यात्                         | (१९) बल-वात-दन्त-                          |
| (३) नावादेरिकः                     | ललाटादूलः                                  |
| (४) शिखादिभ्य इन्                  | (२०) प्राण्यङ्गादातो लः                    |
| (५) व्रीह्यादिभ्यस्तौ              | (२१) सिध्मादि-क्षुद्रजन्तु-                |
| (६) अतोऽनेकस्वरात्                 | रुग्भ्यः                                   |
| (७) अशिरसोऽशीर्षश्च                | (२२) प्रज्ञा-पर्णोदक-फेनाल्लेलौ            |
| (८) अर्था-ऽर्थान्ताद् भावात्       | (२३) काला-जटा-घाटात् क्षेपे                |
| (९) व्रीह्यर्थ-तुन्दादेरिलश्च      | (२४) वाच आला-ऽऽटौ                          |
| (१०) स्वाङ्गाद् विवृद्धात् ते      | (२५) गिन्                                  |
| (११) वृन्दादारकः                   | (२६) मध्वादिभ्यो रः                        |
| (१२) शृङ्गात्                      | (२७) कृष्यादिभ्यो वलच्                     |
| (१३) फल-बर्हाच्चेनः                | (२८) लोम-पिच्छादेः शेलम्                   |
| (१४) मलादीमसश्च                    | (२९) नोऽङ्गादेः                            |
| (१५) मरुत्-पर्वणस्तः               | (३०) शाकी-पलाली-दर्द्रवा                   |
| (१६) वलि-वटि-तुण्डेर्भः            | ह्रस्वश्च                                  |
| (१७) ऊर्णा-ऽहं-शुभमो युस्          | (३१) विष्वचो विषुश्च                       |

- |                                       |                              |
|---------------------------------------|------------------------------|
| (३२) लक्ष्म्या अनः                    | (५३) गुणादिभ्यो यः           |
| (३३) प्रज्ञा-श्रद्धा-ऽर्चा-वृत्तेर्णः | (५४) रूपात् प्रशस्ता-ऽऽहतात् |
| (३४) ज्योत्स्नादिभ्योऽण्              | (५५) पूर्णमासोऽण्            |
| (३५) सिकता-शर्करात्                   | (५६) गोपूर्वादत इकण्         |
| (३६) इलश्च देशे                       | (५७) निष्कादेः शत-सहस्रात्   |
| (३७) द्यु-द्रोर्मः                    | (५८) एकादेः कर्मधारयात्      |
| (३८) काण्डा-ऽऽण्ड-                    | (५९) सर्वादिरिन्             |
| भाण्डादीरः                            | (६०) प्राणिस्थादस्वाङ्गाद्   |
| (३९) कच्छ्वा डुरः                     | द्वन्द्व-रगु-निन्द्यात्      |
| (४०) दन्तादुन्नतात्                   | (६१) वाता-ऽतीसार-पिशाचात्    |
| (४१) मेधा-रथान्नवेरः                  | कश्चान्तः                    |
| (४२) कृपा-हृदयादालुः                  | (६२) पूरणाद् वयसि            |
| (४३) केशाद् वः                        | (६३) सुखादेः                 |
| (४४) मण्यादिभ्यः                      | (६४) मालायाः क्षेपे          |
| (४५) हीनात् स्वाङ्गादः                | (६५) धर्म-शील-वर्णान्तात्    |
| (४६) अभ्रादिभ्यः                      | (६६) बाहूवादिर्बलात्         |
| (४७) अस्-तपो-माया-                    | (६७) मन्-मा-ऽब्जादेर्नाम्नि  |
| मेधा-स्रजो विन्                       | (६८) हस्त-दन्त-कराज्जातौ     |
| (४८) आमयाद् दीर्घश्च                  | (६९) वर्णाद् ब्रह्मचारिणि    |
| (४९) स्वान्मिन्नीशे                   | (७०) पुष्करादेर्देशे         |
| (५०) गोः                              | (७१) सूक्त-साम्नीरीयः        |
| (५१) ऊर्जो विन्-वलावस्                | (७२) लुब् वाऽध्याया-ऽनुवाके  |
| चान्तः                                | (७३) विमुक्तादेरण्           |
| (५२) तमिस्राऽर्णव-ज्योत्स्नाः         | (७४) घोषदादेरकः              |

- (७५) प्रकारे जातीयर् (९३) क्व-कुत्रा-ऽत्रेह  
 (७६) कोऽण्वादेः (९४) सप्तम्याः  
 (७७) जीर्ण-गोमूत्रा-ऽवदात- (९५) किम्-यत्-तत्-सर्वैका-  
 सुरा-यव-कृष्णाच्छा- ऽन्यात् काले दा  
 ल्याच्छादन-सुरा-ऽहि- (९६) सदा-ऽधुनेदानीं-  
 ब्रीहि-तिले तदानीमेतर्हि  
 (७८) भूतपूर्वे ञ्चरट् (९७) सद्यो-ऽद्य-परेद्यव्यहि  
 (७९) गोष्ठादीनञ् (९८) पूर्वा-ऽपरा-ऽधरोत्तरा-  
 (८०) षष्ठ्या रूप्य-ञ्चरट् ऽन्या-ऽन्यतरेतरादेद्युस्  
 (८१) व्याश्रये तसुः (९९) उभयाद् द्युस् च  
 (८२) रांगात् प्रतीकारे (१००) ऐषमः-परुत्-परारि  
 (८३) पर्यभेः सर्वोभये वर्षे  
 (८४) आद्यादिभ्यः (१०१) अनद्यतने हिः  
 (८५) क्षेपा-ऽतिग्रहा- (१०२) प्रकारे था  
 ऽव्यथेष्वकर्तुस्तृतीयायाः (१०३) कथमित्थम्  
 (८६) पाप-हीयमानेन (१०४) सङ्ख्याया धा  
 (८७) प्रतिना पञ्चम्याः (१०५) विचाले च  
 (८८) अहीय-रुहोऽपादाने (१०६) वैकाद् ध्यमञ्  
 (८९) किमद्व्यादिसर्वाद्यवैपुल्य- (१०७) द्वि-त्रैर्मजेधौ वा  
 बहोः पित् तस् (१०८) तद्वति धण्  
 (९०) इतोऽतः कुतः (१०९) वारे कृत्वस्  
 (९१) भवत्वायुष्मद्- (११०) द्वि-त्रि-चतुरः सुच्  
 दीर्घायुर्देवानांप्रियैकार्थात् (१११) एकात् सकृच्चास्य  
 (९२) त्रप् च (११२) बहोर्धाऽऽसने

- (११३) दिक्शब्दाद् दिग्-देश-  
कालेषु प्रथमा-पञ्चमी-  
सप्तम्याः
- (११४) ऊर्ध्वाद् रि-रिष्टातौ  
उपश्चास्य
- (११५) पूर्वा-ऽवरा-ऽधरेभ्यो-  
ऽसस्तातौ पुरवधश्चैषाम्
- (११६) परा-ऽवरात् स्तात्
- (११७) दक्षिणोत्तराच्चाऽतस्
- (११८) अधरा-ऽपराच्चाऽऽत्
- (११९) वा दक्षिणात् प्रथमा-  
सप्तम्या आः
- (१२०) आ-ऽऽही दूरे
- (१२१) वोत्तरात्
- (१२२) अदूरे एनः
- (१२३) लुबञ्चेः
- (१२४) पश्चोऽपरस्य दिक्पूर्वस्य  
चाऽऽति
- (१२५) वोत्तरपदेऽर्धे
- (१२६) कृ-भ्वस्तिभ्यां कर्म-  
कर्तृभ्यां प्रागतत्तत्त्वे च्विः
- (१२७) अरुर्मनश्चक्षुश्चेतो-रहो-  
रजसां लुक् च्वौ
- (१२८) इसुसोर्बहुलम्
- (१२९) व्यञ्जनस्यान्त ई
- (१३०) व्याप्तौ स्सात्
- (१३१) जातेः सम्पदा च
- (१३२) तत्राऽधीने
- (१३३) देये त्रा च
- (१३४) सप्तमी-द्वितीयाद्  
देवादिभ्यः
- (१३५) तीय-शम्ब-बीजात् कृगा  
कृषौ डाच्
- (१३६) सङ्ख्यादेर्गुणात्
- (१३७) समयाद् यापनायाम्
- (१३८) सपत्र-निष्पत्रादति-  
व्यथने
- (१३९) निष्कुलान्निष्कोषणे
- (१४०) प्रिय-सुखादानुकूल्ये
- (१४१) दुःखात् प्रातिकूल्ये
- (१४२) शूलात् पाके
- (१४३) सत्यादशपथे
- (१४४) मद्र-भद्राद् वपने
- (१४५) अव्यक्तानुकरणादने-  
कस्वरात् कृ-भ्वस्तिना-  
ऽनितौ द्विश्च
- (१४६) इतावतो लुक्
- (१४७) न द्वित्वे



|  |                              |
|--|------------------------------|
| (१४८) तो वा  | (१५९) मर्तादिभ्यो यः         |
| (१४९) डाच्यादौ                                       | (१६०) नवादीन-तन-त्नं च       |
| (१५०) बह्वल्पाार्थात् कारका-<br>दिष्टा-ऽनिष्टे षास्  | नू चास्य                     |
| (१५१) संख्यैकार्थाद् वीप्सायां<br>शस्                | (१६१) प्रात् पुराणे नश्च     |
| (१५२) संख्यादेः पादादिभ्यो<br>दान-दण्डे चाऽकल्लुक् च | (१६२) देवात् तल्             |
| (१५३) तीयाट्टीकण् न विद्या<br>चेत्                   | (१६३) होत्राया ईयः           |
| (१५४) निष्फले तिलात्<br>पिञ्ज-पेजौ                   | (१६४) भेषजादिभ्यष्टचण्       |
| (१५५) प्रायोऽतोर्द्वयसट्-मात्रट्                     | (१६५) प्रज्ञादिभ्योऽण्       |
| (१५६) वर्णा-ऽव्ययात् स्वरूपे<br>कारः                 | (१६६) श्रोत्रौषधि-कृष्णाच्छ- |
| (१५७) रादेफः   | रीर-भेषज-मृगे                |
| (१५८) नाम-रूप-भागाद्<br>धेयः                         | (१६७) कर्मणः सन्दिष्टे       |
|  | (१६८) वाच इकण्               |
|  | (१६९) विनयादिभ्यः            |
|  | (१७०) उपायाद्ध्रस्वश्च       |
|  | (१७१) मृदस्तिकः              |
|  | (१७२) स-स्त्रौ प्रशस्ते      |

### [सप्तमाध्याये तृतीयः पादः]

|                         |                           |
|-------------------------|---------------------------|
| (१) प्रकृते मयट्        | (४) निन्द्ये पाशप्        |
| (२) अस्मिन्             | (५) प्रकृष्टे तमप्        |
| (३) तयोः समूहवच्च बहुषु | (६) द्वयोर्विभज्ये च तरप् |

- (७) क्वचित् स्वार्थे  
(८) किं-त्याद्ये-ऽव्ययादसत्त्वे  
तयोरन्तस्याऽऽम्  
(९) गुणाङ्गाद् वेष्टेयसू  
(१०) त्यादेश्च प्रशस्ते रूपप्  
(११) अतमबादेरीषदसमाप्ते  
कल्पब्-देश्यब्-देशीयर्  
(१२) नाम्नः प्राग् बहुर्वा  
(१३) न तमबादिः कपो-  
ऽच्छिन्ना-दिभ्यः  
(१४) अनत्यन्ते  
(१५) यावादिभ्यः कः  
(१६) कुमारीक्रीडनेयसोः  
(१७) लोहितान्मणौ  
(१८) रक्ता-ऽनित्यवर्णयोः  
(१९) कालात्  
(२०) शीतोष्णादृतौ  
(२१) लून-वियातात् पशौ  
(२२) स्नाताद् वेदसमाप्तौ  
(२३) तनु-पुत्रा-ऽणु-बृहती-  
शून्यात् सूत्र-कृत्रिम-  
निपुणा-ऽऽच्छादन-रिक्ते  
(२४) भागेऽष्टमाञ्जः  
(२५) षष्ठात्  
(२६) माने कश्च  
(२७) एकादाकिन् चासहाये  
(२८) प्राग् नित्यात् कप्  
(२९) त्यादि-सर्वादिः स्वरेष्व-  
न्त्यात् पूर्वोऽक्  
(३०) युष्मदस्मदोऽसोभादि-  
स्यादेः  
(३१) अव्ययस्य को द् च  
(३२) तूष्णीकाम्  
(३३) कुत्सिता-ऽल्पा-ऽज्ञाते  
(३४) अनुकम्पा-तद्युक्तनीत्योः  
(३५) अजातेर्नान्मनो  
बहुस्वरादियेकेलं वा  
(३६) वोपादेरडा-ऽकौ च  
(३७) ऋवर्णोर्वर्णात् स्वरादे-  
रादेर्लुक् प्रकृत्या च  
(३८) लुक्पुत्तरपदस्य कप्  
(३९) लुक् चाजिनान्तात्  
(४०) षड्वर्जैकस्वरपूर्वपदस्य  
स्वरे  
(४१) द्वितीयात् स्वरादूर्ध्वम्  
(४२) सन्ध्यक्षरात् तेन  
(४३) शेवलाद्यादेस्तृतीयात्  
(४४) क्वचित् तुर्यात्

- (४५) पूर्वपदस्य वा (६६) पञ्चदेरण्  
 (४६) ह्रस्वे (६७) दामन्यादेरीयः  
 (४७) कुटी-शुण्डाद् रः (६८) श्रुमच्छमीवच्छिखावच्छा-  
 (४८) शम्या रु-रौ लावदूर्णावद्-विदभृदभि-  
 (४९) कुत्वा डुपः जितो गोत्रेऽणो यञ्  
 (५०) कासू-गोणीभ्यां तरट् (६९) समासान्तः  
 (५१) वत्सोक्षा-ऽश्वर्षभाद्घ्रासे (७०) न किमः क्षेपे  
 पित् (७१) नञ्त्तत्पुरुषात्  
 (५२) वैकाद् द्वयोर्निर्धार्ये (७२) पूजास्वतेः प्राक् टात्  
 डतरः (७३) बहोर्दे  
 (५३) यत्-तत्-किमन्यात् (७४) इज् युद्धे  
 (५४) बहूनां प्रश्ने डतमश्च वा (७५) द्विदण्ड्यादिः  
 (५५) वैकात् (७६) ऋक्-पूः-पथ्यपोऽत्  
 (५६) क्तात् तमबादेश्वानत्यन्ते (७७) धुरोऽनक्षस्य  
 (५७) न सामिवचने (७८) सङ्ख्या-पाण्डूदक्-  
 (५८) नित्यं ज-जिनोऽण् कृष्णाद् भूमेः  
 (५९) विसारिणो मत्स्ये (७९) उपसर्गादध्वनः  
 (६०) पूगादमुख्यकाञ्च्यो द्विः (८०) समवा-ऽन्धात् तमसः  
 (६१) व्रातादस्त्रियाम् (८१) तप्ता-ऽन्ववाद् रहसः  
 (६२) शस्त्रजीविसङ्घाञ्च्यङ् वा (८२) प्रत्यन्ववात् साम-लोम्नः  
 (६३) वाहीकेष्वब्राह्मण- (८३) ब्रह्म-हस्ति-राज-पल्याद्  
 राजन्येभ्यः वर्चसः  
 (६४) वृकाट्टेप्यण् (८४) प्रतेरुरसः सप्तम्याः  
 (६५) यौधेयादेरञ् (८५) अक्ष्णोऽप्राण्यङ्गे

|                                   |                               |
|-----------------------------------|-------------------------------|
| (८६) सं-कटाभ्याम्                 | (१००) द्वि-त्रेरायुषः         |
| (८७) प्रति-परो-                   | (१०१) वाऽञ्जलेरलुकः           |
| ऽनोरव्ययीभावात्                   | (१०२) खार्या वा               |
| (८८) अनः                          | (१०३) वाऽर्धाच्च              |
| (८९) नपुंसकाद् वा                 | (१०४) नावः                    |
| (९०) गिरि-नदी-पौर्णमास्या-        | (१०५) गोस्तत्पुरुषात्         |
| ग्रहायण्यपञ्चमवर्ग्याद् वा        | (१०६) राजन्-सखेः              |
| (९१) संख्याया नदी-                | (१०७) राष्ट्राख्याद् ब्रह्मणः |
| गोदावरीभ्याम्                     | (१०८) कु-महद्भ्यां वा         |
| (९२) शरदादेः                      | (१०९) ग्राम-कौटात् तक्ष्णः    |
| (९३) जराया जरस् च                 | (११०) गोष्ठा-ऽतेः शुनः        |
| (९४) सरजसोपशुना-ऽनुगवम्           | (१११) प्राणिन उपमानात्        |
| (९५) जात-महद्-वृद्धादुक्ष्णः      | (११२) अप्राणिनि               |
| कर्मधारयात्                       | (११३) पूर्वोत्तर-मृगाच्च      |
| (९६) स्त्रियाः पुंसो द्वन्द्वाच्च | सक्थः                         |
| (९७) ऋक्सामर्ग्यजुष-धेन्वन-       | (११४) उरसोऽग्रे               |
| डुह-वाङ्मनसा-ऽहो-                 | (११५) सरो-ऽनो-ऽश्मा-          |
| रात्र-रात्रिदिव-नक्तं-            | ऽयसो जाति-नाम्नोः             |
| दिवा-ऽहर्दिवोर्वष्टीव-            | (११६) अह्नः                   |
| पदष्टिवा-ऽक्षिभ्रुव-              | (११७) संख्यातादहश्च वा        |
| दारगवम्                           | (११८) सर्वा-ऽश-संख्या-        |
| (९८) चवर्ग-द-ष-हः                 | ऽव्ययात्                      |
| समाहारे                           | (११९) संख्यातैक-पुण्य-        |
| (९९) द्विगोरन्नहोऽट्              | वर्षा-दीर्घाच्च रात्रेरत्     |

|  |   |
|--|---|
| (१२०) पुरुषायुष-द्विस्ताव-<br>त्रिस्तावम्  | सक्थि-हलेर्वा<br>(१३७) प्रजाया अस्          |
| (१२१) श्वसो वसीयसः   | (१३८) मन्दा-ऽल्पाच्च                        |
| (१२२) निसश्च श्रेयसः   | मेधायाः                                     |
| (१२३) नञव्ययात् संख्याया<br>डः   | (१३९) जातेरीयः सामान्य-<br>वति              |
| (१२४) संख्या-ऽव्ययादङ्गुलेः  | (१४०) भृतिप्रत्ययान्मासादिकः                |
| (१२५) बहुव्रीहेः काष्ठे टः   | (१४१) द्विपदाद् धर्मादन्                    |
| (१२६) सक्थ्यक्ष्णः स्वाङ्गे  | (१४२) सु-हरित-तृण-                          |
| (१२७) द्वित्रेर्मूर्ध्नो वा  | सोमाज्जम्भात्                               |
| (१२८) प्रमाणी-संख्याङ्गुः  | (१४३) दक्षिणेर्मा व्याधयोगे                 |
| (१२९) सुप्रात-सुश्व-सुदिब-<br>शारिकुक्ष-चतुरस्रैणी-<br>पदा-ऽजपद-प्रोष्ठपद-<br>भद्रपदम् | (१४४) सु-पूत्युत्-<br>सुरभेर्गन्धादिद् गुणे |
| (१३०) पूरणीभ्यस्तत्प्राधान्ये-<br>ऽप्  | (१४५) वाऽऽगन्तौ                             |
| (१३१) नञ्-सु-व्युप-त्रेश्चतुरः   | (१४६) वाऽल्पे                               |
| (१३२) अन्तर्बहिर्भ्यां लोम्नः  | (१४७) वोपमानात्                             |
| (१३३) भान्नेतुः  | (१४८) पात् पादस्याऽह-                       |
| (१३४) नाभेर्नाम्नि   | स्त्यादेः                                   |
| (१३५) नञ्-बहोर्क्रचो<br>माणव-चरणे  | (१४९) कुम्भपद्यादिः                         |
| (१३६) नञ्-सु-दुर्भ्यः सक्ति-   | (१५०) सु-संख्यात्                           |
|  | (१५१) वयसि दन्तस्य दतृः                     |
|  | (१५२) स्त्रियां नाम्नि                      |
|  | (१५३) श्यावा-ऽरोकाद् वा                     |
|  | (१५४) वाऽग्रान्त-शुद्ध-शुभ्र-               |

|                              |                                  |
|------------------------------|----------------------------------|
| वृष-वराहा-ऽहि-मूषिक-         | (१६८) त्रिककुद् गिरौ             |
| शिखरात्                      | (१६९) स्त्रियामूधसो न्           |
| (१५५) सं-प्राज्जानोर्जु-ज्ञौ | (१७०) इनः कच्                    |
| (१५६) वोर्ध्वात्             | (१७१) ऋन्नित्यदितः               |
| (१५७) सुहृद्-दुर्हन्मित्रा-  | (१७२) दध्युरः-                   |
| ऽमित्रे                      | सर्पिर्मधूपानच्छालेः             |
| (१५८) धनुषो धन्वन्           | (१७३) पुमनडुन्नौ-पयो-लक्ष्म्या   |
| (१५९) वा नाग्नि              |                                  |
| (१६०) खर-खुरान्नासिकाया      | एकत्वे                           |
| नस्                          | (१७४) नजोऽर्थात्                 |
| (१६१) अस्थूलाच्च नसः         | (१७५) शेषाद् वा                  |
| (१६२) उपसर्गात्              | (१७६) न नाग्नि                   |
| (१६३) वेः खु-ख्र-ग्रम्       | (१७७) ईयसोः                      |
| (१६४) जायाया जानिः           | (१७८) सहात् तुल्ययोगे            |
| (१६५) व्युदः काकुदस्य लुक्   | (१७९) भ्रातुः स्तुतौ             |
| (१६६) पूर्णाद् वा            | (१८०) नाडी-तन्त्रीभ्यां स्वाङ्गे |
| (१६७) ककुदस्याऽवस्थायाम्     | (१८१) निष्प्रवाणिः               |
|                              | (१८२) सुभ्रवादिभ्यः              |

### [सप्तमाध्याये चतुर्थः पादः]

|                               |                             |
|-------------------------------|-----------------------------|
| (१) वृद्धिः स्वरेष्वादेर्जिति | यादेरिय् च                  |
| तद्धिते                       | (३) देविका-शिशपा-दीर्घसत्र- |
| (२) केकय-मित्रयु-प्रलयस्य     | श्रेयसस्तत्प्राप्तावाः      |

- (४) वहीनरस्यैत् (२४) जङ्गल-धेनु-वलज-  
 (५) य्वः पदान्तात् प्रागैदौत् स्योत्तरपदस्य तु वा  
 (६) द्वारादेः (२५) हृद्-भग-सिन्धोः  
 (७) न्यग्रोधस्य केवलस्य (२६) प्राचां नगरस्य  
 (८) न्यङ्कोर्वा (२७) अनुशतिकादीनाम्  
 (९) न ज-स्वङ्गादेः (२८) देवतानामात्वादौ  
 (१०) श्वादेरिति (२९) आतो नेन्द्र-वरुणस्य  
 (११) इजः (३०) सारवैक्ष्वाक-मैत्रैय-भ्रौण-  
 (१२) पदस्यानिति वा हत्य-धैवत्य-हिरण्मयम्  
 (१३) प्रोष्ठ-भद्राज्जाते (३१) वाऽन्तमा-ऽन्तितमा-  
 (१४) अंशादृतोः ऽन्तितो-ऽन्तिया-  
 (१५) सु-सर्वा-ऽर्द्धाद् राष्ट्रस्य ऽन्तिषत्  
 (१६) अमद्रस्य दिशः (३२) विन्-मतोणीष्ठियसौ लुप्  
 (१७) प्राग्रामाणाम् (३३) अल्प-यूनोः कन् वा  
 (१८) संख्या-ऽधिकाभ्यां (३४) प्रशस्यस्य श्रः  
 वर्षस्याऽभाविति (३५) वृद्धस्य च ज्यः  
 (१९) मान-संवत्सरस्या- (३६) ज्यायान्  
 शाण-कुलिजस्याऽनाम्नि (३७) बाढा-ऽन्तिकयोः  
 (२०) अर्धात् परिमाणस्या- साध-नेदौ  
 ऽन्तो वा त्वादेः (३८) प्रिय-स्थिर-स्फिरोरु-  
 (२१) प्राद् बाहणस्यैये गुरु-बहुल-तृप्-दीर्घ-  
 (२२) एयस्य वृद्ध-वृन्दारकस्येमनि च  
 (२३) नजः क्षेत्रज्ञेश्वर-कुशल- प्रा-स्था-स्फा-वर-गर-  
 चपल-निपुण-शुचेः बंह-त्रप-द्राघ-वर्ष-वृन्दम्

- (३९) पृथु-मृदु-भृश-कृश-  
दृढ-परिवृढस्य क्रतो रः
- (४०) बहोर्णीष्टि भूय्
- (४१) भूर्लुक् चवर्णस्य
- (४२) स्थूल-दूर-युव-ह्रस्व-  
क्षिप्र-क्षुद्रस्यान्तस्थादे-  
गुणश्च नामिनः
- (४३) व्रन्त्यस्वरादेः
- (४४) नैकस्वरस्य
- (४५) दण्डि-हस्तिनोरायने
- (४६) वाशिन आयनौ
- (४७) एये जिह्वाशिनः
- (४८) ईनेऽध्वा-ऽऽत्मनोः
- (४९) इकण्यथर्वणः
- (५०) यूनोऽके
- (५१) अनोऽट्ये ये
- (५२) अणि
- (५३) संयोगादिनः
- (५४) गाथि-विदथि-केशि-  
पणि-गणिनः
- (५५) अनपत्ये
- (५६) उक्ष्णो लुक्
- (५७) ब्रह्मणः
- (५८) जातौ
- (५९) अवर्मणो मनोऽपत्ये
- (६०) हितनाम्नो वा
- (६१) नोऽपदस्य तद्धिते
- (६२) कलापि-कुथुमि-तैतलि-  
जाजलि-लाङ्गलि-शिख-  
ण्डि-शिलालि-सब्रह्मचा-  
रि-पीठसर्पि-सूकरसद्म-  
सुपर्वणः
- (६३) वाऽश्मनो विकारे
- (६४) चर्म-शुनः कोश-सङ्कोचे
- (६५) प्रायोऽव्ययस्य
- (६६) अनीना-ऽट्यहोऽतः
- (६७) विंशतेस्तेर्दिति
- (६८) अवर्णेवर्णस्य
- (६९) अकद्रू-पाण्ड्वोरुवर्णस्यैये
- (७०) अस्वयम्भुवोऽव्
- (७१) ऋवर्णोवर्ण-दोसिसु-  
सशश्वदकस्मात्त इकस्येतो  
लुक्
- (७२) असकृत् संप्रमे
- (७३) भृशा-ऽऽभीक्ष्ण्या-  
ऽविच्छेदे द्विः प्राक्  
तमबादेः
- (७४) नानावधारणे



- (७५) आधिक्या-ऽऽनुपूर्व्ये (९४) प्रतिश्रवण-निगृह्यानुयोगे  
 (७६) इतर-इतमौ समानां (९५) विचारे पूर्वस्य  
 स्त्रीभावप्रश्ने (९६) ओमः प्रारम्भे  
 (७७) पूर्व-प्रथमावन्यतोऽतिशये (९७) हेः प्रश्नाख्याने  
 (७८) प्रोपोत्-सम् पादपूरणे (९८) प्रश्ने च प्रतिपदम्  
 (७९) सामीप्येऽधोऽध्युपरि (९९) दूरादामन्त्रचस्य गुरुर्वै-  
 (८०) वीप्सायाम् कोऽनन्त्योऽपि लनृत्  
 (८१) प्लुप् चादावेकस्य (१००) हे-हैष्वेषामेव  
 स्यादेः (१०१) अस्त्री-शूद्रे प्रत्यभिवादे  
 (८२) द्वन्द्वं वा भो-गोत्र-नाम्नो वा  
 (८३) रहस्य-मर्यादोक्ति- (१०२) प्रश्ना-ऽर्चा-विचारे च  
 व्युत्क्रान्ति-यज्ञपात्रप्रयोगे सन्धेयसन्ध्यक्षरस्या-  
 (८४) लोकज्ञातेऽत्यन्तसाहचर्ये ऽऽदिदुत्परः  
 (८५) आबाधे (१०३) तयोर्ध्वौ स्वे  
 (८६) नवा गुणः सदृशे रित् संहितायाम्  
 (८७) प्रिय-सुखं चाकृच्छ्रे (१०४) पञ्चम्या निर्दिष्टे परस्य  
 (८८) वाक्यस्य परिवर्जने (१०५) सप्तम्या पूर्वस्य  
 (८९) सम्मत्यसूया-कोप- (१०६) षष्ठ्याऽन्त्यस्य  
 कुत्सनेष्वाद्यामन्त्र्यमादौ (१०७) अनेकवर्णः सर्वस्य  
 स्वरेष्वन्त्यश्च प्लुतः (१०८) प्रत्ययस्य  
 (९०) भर्त्सने पर्यायेण (१०९) स्थानीवाऽवर्णविधौ  
 (९१) त्यादेः साकाङ्क्षस्याङ्गेन (११०) स्वरस्य परे प्राग्विधौ  
 (९२) क्षिया-ऽऽशीः-प्रैषे (१११) न सन्धि-डी-य-क्वि-  
 (९३) चितीवार्थे द्वि-दीर्घा-ऽसद्विधा-

|                                |                           |
|--------------------------------|---------------------------|
| वस्कूलुकि                      | (११८) परः                 |
| (११२) लुप्यवृल्लेनत्           | (११९) स्पद्धे             |
| (११३) विशेषणमन्तः              | (१२०) आसन्नः              |
| (११४) सप्तम्या आदिः            | (१२१) सम्बन्धनां सम्बन्धे |
| (११५) प्रत्ययः प्रकृत्यादेः    | (१२२) समर्थः पदविधिः      |
| (११६) गौणो ड्यादिः             |                           |
| (११७) कृत् सगतिकारक-<br>स्यापि |                           |

[ समाप्तम् ]

## प्रथमं परिशिष्टम् ।

श्री सिद्धहेमचन्द्रशब्दानुशासनसप्ताध्यायीसूत्राणामकाराद्यनुक्रमः ।

| सूत्रम्                          | सूत्राङ्कः | सूत्रम्                       | सूत्राङ्कः |
|----------------------------------|------------|-------------------------------|------------|
| अइउवर्ण-देः । १।२।४१॥            |            | अघोषे प्र-टः । १।३।५०॥        |            |
| अं अः-सर्गौ । १।१।८॥             |            | अघोषे शिटः । ४।१।४५॥          |            |
| अं अः ×क-ट् । १।१।१६॥            |            | अडप्रतिस्त-म्भः । २।३।४१॥     |            |
| अंशं हारिणि । ७।१।१८२॥           |            | अडे हि-हनो-र्वात् ४।१।३४॥     |            |
| अंशादृतोः । ७।४।१४॥              |            | अङ्गान्निरसने णिङ् । ३।४।३८॥  |            |
| अः सपत्न्याः । ७।१।११९॥          |            | अङ्स्थाच्छत्रादेरञ् । ६।४।६०॥ |            |
| अः सृजिदृशो० । ४।४।१११॥          |            | अच् । ५।१।४९॥                 |            |
| अः स्थात्मः । ६।१।२२॥            |            | अचः । १।४।६९॥                 |            |
| अकखाद्य-वा । २।३।८०॥             |            | अचि । ३।४।१५॥                 |            |
| अकट्घिनोश्च रञ्जेः । ४।२।५०॥     |            | अचित्ताददेशकालात् । ६।३।२०६॥  |            |
| अकद्रू-ये । ७।४।६९॥              |            | अचित्ते टक् । ५।१।८३॥         |            |
| अकमेरुकस्य । २।२।९३॥             |            | अच् प्रा-श्च । २।१।१०४॥       |            |
| अकल्पात् सूत्रात् । ६।२।१२०॥     |            | अजातेः पञ्चम्याः । ५।१।१७०॥   |            |
| अकालेऽव्ययीभावे । ३।२।१४६॥       |            | अजातेः शीले । ५।१।१५४॥        |            |
| अकेन क्रीडाजीवे । ३।१।८१॥        |            | अजातेर्नृ-वा । ७।३।३५॥        |            |
| अक्लीबेऽध्वर्युक्रतोः । ३।१।१३९॥ |            | अजादिभ्यो धेनोः । ६।१।३४॥     |            |
| अक्ष्णोऽप्राण्यङ्गे । ७।३।८५॥    |            | अजादेः । २।४।१६॥              |            |
| अगारान्तादिकः । ६।४।७५॥          |            | अज्ञाने ज्ञः षष्ठी । २।२।८०॥  |            |
| अगिलाद्रिलगिल० । ३।२।११५॥        |            | अञ्चः । २।४।३॥                |            |
| अग्निचित्या । ५।१।३७॥            |            | अञ्चोऽनर्चायाम् । ४।२।४६॥     |            |
| अग्नेश्चेः । ५।१।१६४॥            |            | अञ्जनादीनां गिरौ । ३।२।७७॥    |            |
| अग्रहानुपदेशो० । ३।१।५॥          |            | अञ्ज्वर्ग-तः । १।३।३३॥        |            |
| अघञ्क्यबल-वीं । ४।४।२॥           |            | अञ्ज्वर्गात्-न् । १।२।४०॥     |            |

अट्यर्तिस्मू-र्णोः ।३।४।१०॥  
 अङ् धातोरा-डा ।४।४।२९॥  
 अणजेयेक-ताम् ।२।४।२०॥  
 अणि ।७।४।५२॥  
 अणिकर्मणिक-तौ ।३।३।८८॥  
 अणिगि प्राणिक० ।३।३।१०७॥  
 अतः ।४।३।८२॥  
 अतः कृ-कमि-स्य ।२।३।५॥  
 अतः प्रत्ययाल्लुक् ।४।२।८५॥  
 अतः शित्युत् ।४।२।८९॥  
 अतः स्यमोऽम् ।१।४।५७॥  
 अत आः-ये ।१।४।१॥  
 अत इञ् ।६।१।३१॥  
 अतमबादे-यर् ।७।३।११॥  
 अतिरतिक्लृप् च ।३।१।४५॥  
 अतोऽति रोरुः ।१।३।२०॥  
 अतोऽनेकस्वरात् ।७।२।६॥  
 अतो म आने ।४।४।११४॥  
 अतोरिथद् ।७।१।१६१॥  
 अतोऽहस्य ।२।३।७३॥  
 अत्र च ।७।१।४९॥  
 अदसोऽकञायनणोः ।३।२।३३॥  
 अदसो दः सेस्तु डौ ।२।१।४३॥  
 अदिक्स्त्रियां० ।७।१।१०७॥  
 अदीर्घात्-ने ।१।३।३२॥  
 अदुरुपसर्गा-नेः ।२।३।७७॥

अदूरे एनः ।७।२।१२२॥  
 अदृश्याधिके ।३।२।१४५॥  
 अदेतः-क् ।१।४।४४॥  
 अदेवासुरादिभ्यो० ।६।३।१६४॥  
 अदेशकालादध्या० ।६।४।७६॥  
 अदोऽनन्तात् ।५।१।१५०॥  
 अदो मुमी ।१।२।३५॥  
 अदोरायनिः ।६।१।११३॥  
 अदोर्नदीमा-म्नः ।६।१।६७॥  
 अद्यतनी ।५।२।४॥  
 अद्यतनी-महि ।३।३।११॥  
 अद्यतन्यां वा-ने ।४।४।२२॥  
 अद्यर्थाच्चाधारे ।५।१।१२॥  
 अद्-व्यञ्जनात् स-लम् ।३।२।१८॥  
 अद् व्यञ्जने ।२।१।३५॥  
 अधण्-सः ।१।१।३२॥  
 अधरापराच्चात् ।७।२।११८॥  
 अधर्म-क्षत्र-त्रि—याः ।६।२।१२१॥  
 अधश्चतुर्थात् तथोर्यः ।२।१।७९॥  
 अधातुदि-म ।१।१।२७॥  
 अधातूद्दितः ।२।१।२॥  
 अधिकं तत्सं-डः ।७।१।१५२॥  
 अधिकेन भूयस्ते ।२।२।१११॥  
 अधीष्टौ ।५।४।३२॥  
 अधेः प्रसहने ।३।३।७७॥  
 अधेः शीङ्स्थास० ।२।२।२०॥

अधेरारूढे ।७।१।१८७॥  
 अध्यात्मादिभ्य इकण् ।६।३।७८॥  
 अध्वानं येनौ ।७।१।१०३॥  
 अनः ।७।३।८८॥  
 अनक् ।२।१।३६॥  
 अनजिरादि-तौ ।३।२।७८॥  
 अनञः क्त्वो यप् ।३।२।१५४॥  
 अनञो मूलात् ।२।४।५८॥  
 अनट् ।५।३।१२४॥  
 अनडुहः सौ ।१।४।७२॥  
 अनतोऽन्तोदात्मने ।४।२।११४॥  
 अनतो लुप् ।१।४।५९॥  
 अनतो लुप् ।३।२।६॥  
 अनत्यन्ते ।७।३।१४॥  
 अनद्यतने हिंः ।७।२।१०१॥  
 अनद्यतने श्वस्तनी ।५।३।५॥  
 अनद्यतने ह्यस्तनी ।५।२।२॥  
 अननोः सनः ।३।३।७०॥  
 अनन्तः प-यः ॥१।१।३८॥  
 अनपत्ये ।७।४।५५॥  
 अनरे वा ।६।३।६१॥  
 अनवर्णा नामी ।१।१।६॥  
 अनाङ्माङो-छः ।१।३।२८॥  
 अनाच्छादजा-वा ।२।४।४७॥  
 अनातो नश्चान्त-स्य ।४।१।६९॥  
 अनादेशादे-तः ।४।१।२४॥

अनाम्यद्विः प्लुप् ।६।४।१४१॥  
 अनामस्वरे नोन्तः ।१।४।६४॥  
 अनार्षे वृद्ध-ष्यः ।२।४।७८॥  
 अनिदम्यणपवादे० ।६।१।१५॥  
 अनियो-वे ।१।२।१६॥  
 अनीनाट्य-तः ।७।४।६६॥  
 अनुकम्पा-त्योः ।७।३।३४॥  
 अनुग्वलम् ।७।१।१०२॥  
 अनुनासिके च-ट् ।४।१।१०८॥  
 अनुपदं बद्धा ।७।१।९६॥  
 अनुपद्यन्वेष्टा ।७।१।१७०॥  
 अनुपसर्गाः क्षीबो० ।४।२।८०॥  
 अनुब्राह्मणादिन् ।६।२।१२३॥  
 अनुशक्तिकादीनाम् ।७।४।२७॥  
 अनेकवर्णः सर्वस्य ।७।४।१०७॥  
 अनोः कमितरि ।७।१।१८८॥  
 अनोः कर्मण्यसति ।३।३।८१॥  
 अनोऽट्ये ये ।७।४।५१॥  
 अनोर्जनेर्दः ।५।१।१६८॥  
 अनोर्देशे उप् ।३।२।११०॥  
 अनो वा ।२।४।११॥  
 अनोऽस्य ।२।१।१०८॥  
 अन्तःपूर्वादिकण् ।६।३।१३७॥  
 अन्तर्द्धिः ।५।३।८९॥  
 अन्तर्बहि-मनः ।७।३।१३२॥  
 अन्तो नो लुक् ।४।२।९४॥

अन्यत्यदादेराः । ३।२।१५२॥  
 अन्यथैवंकथ-कात् । ५।४।५०॥  
 अन्यस्य । ४।१।८॥  
 अन्यो घोषवान् । १।१।१४॥  
 अन्वाङ्परः । ३।३।३४॥  
 अन् स्वरे । ३।२।१२९॥  
 अपः । १।४।८८॥  
 अपचितः । ४।४।७७॥  
 अपञ्चमा-ट् । १।१।११॥  
 अपण्ये जीवने । ७।१।११०॥  
 अपस्किरः । ३।३।३०॥  
 अपाच्चतुष्पा-र्थे । ४।४।९५॥  
 अपाचायश्चिः क्तौ । ४।२।६६॥  
 अपायेऽवधिरपादा० । २।२।२९॥  
 अपील्लादेर्वहे । ३।२।८९॥  
 अपोऽद् भे । २।१।४॥  
 अपोनपादपा-तः । ६।२।१०५॥  
 अपो यञ् वा । ६।२।५६॥  
 अपो ययोनिमतिचरे । ३।२।२८॥  
 अप्रत्यादावसाधुना । २।२।१०१॥  
 अप्रयोगीत् । १।१।३७॥  
 अप्राणिनि । ७।३।११२॥  
 अप्राणिपश्वादेः । ३।१।१३६॥  
 अब्राह्मणात् । ६।१।१४१॥  
 अभक्ष्याच्छादने वा० । ६।२।४६॥  
 अभिनिष्क्रामति० । ६।३।२०२॥

अभिनिष्ठानः । २।३।२४॥  
 अभिव्याप्तौ-जिन् । ५।३।९०॥  
 अभेरीश्च वा । ७।१।१८९॥  
 अभ्यमित्रमीयश्च । ७।१।१०४॥  
 अभ्यम् भ्यसः । २।१।१८॥  
 अभ्रादिभ्यः । ७।२।४६॥  
 अभ्वादे-सौ । १।४।९०॥  
 अमद्रस्य दिशः । ७।४।१६॥  
 अमव्ययीभाव-म्याः । ३।२।२॥  
 अमा त्वामा । २।१।२४॥  
 अमाव्ययात् क्यन् च । ३।४।२३॥  
 अमूर्धमस्तका-मे । ३।२।२२॥  
 अमोऽकम्यमिचमः । ४।२।२६॥  
 अमोऽधिकृत्य ग्रन्थे । ६।३।१९८॥  
 अमोऽन्तावोधसः । ६।३।७४॥  
 अमौ मः । २।१।१६॥  
 अयज्ञे स्त्रः । ५।३।६८॥  
 अयदि श्रद्धा-नवा । ५।४।२३॥  
 अयदि स्मृ-न्ती । ५।२।९॥  
 अयमियं पुं-सौ । २।१।३८॥  
 अयि रः । ४।१।६॥  
 अरण्यात् पथि-रे । ६।३।५१॥  
 अरीहणादेरकण् । ६।२।८३॥  
 अरुर्मनश्च-च्चौ । ७।२।१२७॥  
 अरोः सुपि रः । १।३।५७॥  
 अर्हौ च । १।४।३९॥

अर्तिरीब्लीही-पुः ।४।२।२१॥  
 अर्थपदपदोत्तर-ण्ठात् ।६।४।३७॥  
 अर्थार्थान्ता-त् ।७।२।८॥  
 अर्थपूर्वपदः पूरणः ।१।१।४२॥  
 अर्थात् परि-देः ।७।४।२०॥  
 अर्थात् पलकं-त् ।६।४।१३४॥  
 अर्थाद् यः ।६।३।६९॥  
 अर्हतस्तो न्त् च ।७।१।६१॥  
 अर्हम् ।१।१।१॥  
 अर्हे तृच् ।५।४।३७॥  
 अर्होऽच् ।५।१।९१॥  
 अलाब्वाश्च-सि ।७।१।८४॥  
 अलुपि वा ।२।३।१९॥  
 अल्पयूनोः कन् वा ।७।४।३३॥  
 अल्पे ।३।२।१३६॥  
 अवः स्वपः ।२।३।५७॥  
 अवक्रये ।६।४।५३॥  
 अवयवात् तयट् ।७।१।१५१॥  
 अवर्णभो-धिः ।१।३।२२॥  
 अवर्णस्यामः साम् ।१।४।१५॥  
 अवर्णस्ये-रल् ।१।२।६॥  
 अवर्णादिश्चो-ड्योः ।२।१।११५॥  
 अवर्णैर्वर्णस्य ।७।४।६८॥  
 अवर्मणो-त्ये ।७।४।५९॥  
 अवहसासंज्ञोः ।५।१।६३॥  
 अवाच्चाश्रयो-रे ।२।३।४२॥

अवात् ।३।३।६७॥  
 अवात् ।५।३।६२॥  
 अवात् कुटा-ते ।७।१।१२६॥  
 अवात् तृस्तृभ्याम् ।५।३।१३३॥  
 अविति वा ।४।१।७५॥  
 अवित्परोक्षा-रेः ।४।१।२३॥  
 अविदूरेऽभेः ।४।४।६४॥  
 अविवक्षिते ।५।२।१४॥  
 अविशेषणे-दः ।२।२।१२२॥  
 अवृद्धाद्दोर्नवा ।६।१।११०॥  
 अवृद्धेर्गृह्णति गर्ह्ये ।६।४।३४॥  
 अवेः संघा-टम् ।७।१।१३२॥  
 अवेर्दुग्धे-सम् ।६।२।६॥  
 अवौ दाधौ दा ।३।३।५॥  
 अव्यक्तानु-श्च ।७।२।१४५॥  
 अव्यजात् थ्यप् ।७।१।३८॥  
 अव्ययं प्रवृ-भिः ।३।१।४८॥  
 अव्ययम् ।३।१।२१॥  
 अव्ययस्य ।३।२।७॥  
 अव्ययस्य कोऽद् च ।७।३।३१॥  
 अव्याप्यस्य मुचे० ।४।१।१९॥  
 अशवि ते वा ।३।४।४॥  
 अशित्यस्सन्-टि ।४।३।७७॥  
 अशिरसोऽशीर्षश्च ।७।२।७॥  
 अशिशोः ।२।४।८॥  
 अश्च वाऽमावा० ।६।३।१०४॥

अश्वैकादेः । ७।१।५॥  
 अश्रद्धामर्षे-पि । ५।४।१५॥  
 अश्वत्थादेरिकण् । ६।२।९७॥  
 अश्ववडवपू-राः । ३।१।१३१॥  
 अश्वदेः । ६।१।४९॥  
 अषडक्षा-नः । ७।१।१०६॥  
 अषष्ठीतृती-र्थे । ३।२।११९॥  
 अष्ट औ जस्-शसोः । १।४।५३॥  
 असंभस्त्राजिनैकं । २।४।५७॥  
 असंयोगादोः । ४।२।८६॥  
 असकृत् संप्रमे । ७।४।८२॥  
 असत्काण्ड-त् । २।४।५६॥  
 असत्त्वाराद० । २।२।१२०॥  
 असत्त्वे डसेः । ३।२।१०॥  
 असदिवा-म् । २।१।२५॥  
 असमानलोपे-डे । ४।१।६३॥  
 असरूपोप-क्तेः । ५।१।१६॥  
 असहनञ्वि-भ्यः । २।४।३८॥  
 असुको वाकि । २।१।४४॥  
 असूर्योग्राद् दृशः । ५।१।१२६॥  
 असो-डसिवू-टाम् । २।३।४८॥  
 अस् च लौल्ये । ४।३।११५॥  
 अस्तपोमाया-विन् । ७।२।४७॥  
 अस्तिब्रुवोर्भूवचाव० । ४।४।१॥  
 अस्तेः सि-ति । ४।३।७३॥  
 अस्त्रीशूद्रे-वा । ७।४।१०१॥

अस्थूलाच्च नसः । ७।३।१६१॥  
 अस्पष्टाव-वा । १।३।२५॥  
 अस्मिन् । ७।३।२॥  
 अस्य ड्यां लुक् । २।४।८६॥  
 अस्यादेराः परोक्षायाम् । ४।१।६८॥  
 अस्याऽयत्त-नाम् । २।४।११॥  
 अस्वयंभुवोऽव् । ७।४।७०॥  
 अस्वस्थगुणैः । ३।१।८७॥  
 अहन्पञ्चमस्य-ति । ४।१।१०७॥  
 अहरादिभ्योऽञ् । ६।२।८७॥  
 अहीयरुहो-ने । ७।२।८८॥  
 अहः । २।१।७४॥  
 अहः । ७।३।११६॥  
 अह्ना ग-नञ् । ७।१।८५॥  
 आ अमृशसोऽता । १।४।७५॥  
 आः खनिसनिजनः । ४।२।६०॥  
 आकालिक-न्ते । ६।४।१२८॥  
 आख्यातर्युपयोगे । २।२।७३॥  
 आगुणावन्यादेः । ४।१।४८॥  
 आग्रहायण्यश्व-कण् । ६।२।९९॥  
 आडः । ४।४।१२०॥  
 आडः क्रीडमुषः । ५।२।५१॥  
 आडः शीले । ५।१।९६॥  
 आडल्ये । ३।१।४६॥  
 आडावधौ । २।२।७०॥  
 आडो ज्योतिरुद्रमे । ३।३।५२॥



आडोऽन्धूधसोः ।४।१।९३॥  
 आडो यमहनः-च ।३।३।८६॥  
 आडो यि ।४।४।१०४॥  
 आडो युद्धे ।५।३।४३॥  
 आडो रुद्रोः ।५।३।४९॥  
 आ च हौ ।४।२।१०१॥  
 आत् ।२।४।१८॥  
 आत एः कृञ्जौ ।४।३।५३॥  
 आतामातेआ-दिः ।४।२।१२१॥  
 आ तुमोऽत्या-त् ।५।१।१॥  
 आतो डोऽह्वावामः ।५।१।७६॥  
 आतो नेन्द्र-स्य ।७।४।२९॥  
 आतो णव औः ।४।२।१२०॥  
 आत्मनः पूरणे ।३।२।१४॥  
 आत्रेयाद् भारद्वाजे ।६।१।५२॥  
 आत्संध्यक्षरस्य ।४।२।१॥  
 आथर्वणिका-च ।६।३।१६७॥  
 आदितः ।४।४।७१॥  
 आदेश्छन्दसः प्रगाथे ।६।२।११२॥  
 आद्यद्वितीय-षाः ।१।१।१३॥  
 आद्यात् ।६।१।२९॥  
 आद्यादिभ्यः ।७।२।८४॥  
 आद्योऽंश एकस्वरः ।४।१।२॥  
 आ द्वन्द्वे ।२।२।३९॥  
 आ द्वेरः ।२।१।४१॥  
 आधाराच्चोप-रे ।३।४।२४॥

आधारात् ।५।१।१३७॥  
 आधारात् ।५।४।६८॥  
 आधिक्यानुपूर्व्ये ।७।४।७५॥  
 आनायो जालम् ।५।३।१३६॥  
 आनुलोम्येऽन्वचा ।५।४।८८॥  
 आपत्यस्य क्यच्च्योः ।२।४।९१॥  
 आपो ङितां-याम् ।१।४।१७॥  
 आप्रपदम् ।७।१।९५॥  
 आबाधे ।७।४।८५॥  
 आभिजनात् ।६।३।२१४॥  
 आम आकम् ।२।१।२०॥  
 आमः कृगः ।३।३।७५॥  
 आमन्तात्वाय्येत्नावय् ।४।३।८५॥  
 आमन्त्रये ।२।२।३२॥  
 आमयादीर्घश्च ।७।२।४८॥  
 आमो नाम् वा ।१।४।३१॥  
 आयस्थानात् ।६।३।१५३॥  
 आ यात् ।७।२।२॥  
 आयुधादिभ्यो-देः ।५।१।९४॥  
 आयुधादीयश्च ।६।४।१८॥  
 आरम्भे ।५।१।१०॥  
 आरादर्थैः ।२।२।७८॥  
 आ रायो व्यञ्जने ।२।१।५॥  
 आर्यक्षत्रियाद्वा ।२।४।६६॥  
 आशिषि तु-तङ् ।४।२।११९॥  
 आशिषि नाथः ।३।३।३६॥

आशिषि हनः ।५।१।८०॥  
 आशिषीणः ।४।३।१०७॥  
 आशिष्याशीः पञ्चम्यौ ।५।४।३८॥  
 आशीः क्यात्-सीमहि ।३।३।१३।  
 आशीराशा-गे ।३।२।१२०॥  
 आश्वयुज्या अकञ् ।६।३।११९॥  
 आसन्नः ।७।४।१२०॥  
 आसन्नादूरा-र्थे ।३।१।२०॥  
 आसीनः ।४।४।११५॥  
 आसुयु-मः ।५।१।२०॥  
 आस्तेयम् ।६।३।१३१॥  
 आस्यटिब्रज्यजः क्यप् ।५।३।९७॥  
 आहावो निपानम् ।५।३।४४॥  
 आहिताग्न्यादिषु ।३।१।१५३॥  
 आही दूरे ।७।२।१२०॥  
 इकण् ।६।४।१॥  
 इकण्यथर्वणः ।७।४।४९॥  
 इकिश्तिव् स्वरूपार्थे ।५।३।१३८॥  
 इको वा ।४।३।१६॥  
 इडितः कर्त्तरि ।३।३।२२॥  
 इडितो व्यञ्जना-त् ।५।२।४४॥  
 इडोऽपादाने-द्वा ।५।३।१९॥  
 इच्चापुंसो-रे ।२।४।१०७॥  
 इच्छार्थे कर्मणः सप्तमी ।५।४।८९॥  
 इच्छार्थे सप्तमीपञ्चम्यौ ।५।४।२७॥  
 इच्यस्वरे दी-च्च ।३।२।७२॥

इच् युद्धे ।७।३।७४॥  
 इञ् इतः ।२।४।७१॥  
 इञः ।७।४।११॥  
 इट् ईति ।४।३।७१॥  
 इट् सिजाशिषो-ने ।४।४।३६॥  
 इडेत्पुसि-लुक् ।४।३।९४॥  
 इणः ।२।१।५१॥  
 इणिकोर्गाः ।४।४।२३॥  
 इणोऽध्रेषे ।५।३।७५॥  
 इतावतो लुक् ।७।२।१४६॥  
 इतोऽक्त्यर्थात् ।२।४।३२॥  
 इतोऽतः कुतः ।७।२।९०॥  
 इतोऽनिञः ।६।१।७२॥  
 इदंकिमीत्की ।३।२।१५३॥  
 इदंकिमो-स्य ।७।१।१४८॥  
 इदमः ।२।१।३४॥  
 इदमदसोऽक्येव ।१।४।३॥  
 इदुतोऽस्त्रे-त् ।१।४।२१॥  
 इनः कच् ।७।३।१७०॥  
 इन् डीस्वरे लुक् ।१।४।७९॥  
 इन्द्रियम् ।७।१।१७४॥  
 इन्द्रे ।१।२।३०॥  
 इन्ध्यसंयोगा-द्धत् ।४।३।२१॥  
 इन्हन्-स्योः ।१।४।८७॥  
 इरंमदः ।५।१।१२७॥  
 इर्दरिद्रः ।४।२।९८॥

इर्वृद्धिमत्यविष्णौ ।३।२।४३॥  
 इलश्च देशे ।७।२।३६॥  
 इवणादि-लम् ।१।२।२१॥  
 इवृध-सनः ।४।४।४७॥  
 इश्च स्थादः ।४।३।४१॥  
 इषोऽनिच्छायाम् ।५।३।११२॥  
 इष्टादेः ।७।१।१६८॥  
 इसासः शासोऽव्यञ्जने ।४।४।११८॥  
 इसुसोर्बहुलम् ।७।२।१२८॥  
 ई षोमवरुणेऽग्रेः ।३।२।४२॥  
 ईगितः ।३।३।९५॥  
 ईडौ वा ।२।१।१०९॥  
 ई च गणः ।४।१।६७॥  
 ईतोऽकञ् ।६।३।४१॥  
 ईदूदे-नम् ।१।२।३४॥  
 ईनञ् च ।६।४।११४॥  
 ईनयौ चाशब्दे ।६।३।१२९॥  
 ईनेऽध्वात्मनोः ।७।४।४८॥  
 ईनोऽहः क्रतौ ।६।२।२१॥  
 ईयः ।७।१।२८॥  
 ईयः स्वसुश्च ।६।१।८९॥  
 ईयकारके ।३।२।१२१॥  
 ईयसोः ।७।३।१७७॥  
 ई व्यञ्जनेऽयपि ।४।३।९७॥  
 ईशीडः-मोः ।४।४।८७॥  
 ईश्वाववर्ण-स्य ।४।३।१११॥

ईषद्गुणवचनैः ।३।३।६४॥  
 ईश्वा ।१।२।३३॥  
 उःपदान्तेऽनूत् ।२।१।११८॥  
 उक्ष्णो लुक् ।७।४।५६॥  
 उणादयः ।५।२।९३॥  
 उत और्विति व्य-ऽद्वेः ।४।३।५९॥  
 उति शवर्हा-भे ।४।३।२६॥  
 उतोऽनुडुच्चतुरो वः ।१।४।८१॥  
 उतोऽप्राणिन-ऊङ् ।२।४।७३॥  
 उत्करादेरीयः ।६।२।९१॥  
 उत्कृष्टेऽनूपेन ।२।२।३९॥  
 उत्तरादाहञ् ।६।३।५॥  
 उत्थापनादेरीयः ।६।४।१२१॥  
 उत्पातेन ज्ञाप्ये ।२।२।५९॥  
 उत्सादेरञ् ।६।१।१९॥  
 उत्स्वराद्-पात्रे ।३।३।२६॥  
 उदः पचि-देः ।५।२।२९॥  
 उदः श्रेः ।५।३।५३॥  
 उदः स्थास्तम्भः सः ।१।३।४४॥  
 उदकस्योदः पेषंधि-ने ।३।२।१०४॥  
 उदग्रामाद्य-म्रः ।६।३।२५॥  
 उदङ्कोऽतोये ।५।३।१३५॥  
 उदच उदीच् ।२।१।१०३॥  
 उदन्वानब्धौ च ।२।१।९७॥  
 उदरे त्विकणाद्यूने ।७।१।१८१॥  
 उदश्चरः साप्यात् ।३।३।३१॥

उदितः स्वरात्रोऽन्तः । ४।४।९८॥

उदितगुरोर्भा-ब्दे । ६।२।५॥

उदुत्सोरुन्मनसि । ७।१।१९२॥

उदोऽनूर्ध्वे हे । ३।३।६२॥

उद्यमोपरमौ । ४।३।५७॥

उपज्ञाते । ६।३।१९१॥

उपत्यका-ऽधित्यके । ७।१।१३१॥

उपपीडरुध-म्या । ५।४।७५॥

उपमानं सामान्यैः । ३।१।१०१॥

उपमानसहित-रोः । २।४।७५॥

उपमेयं व्याघ्रा-क्तौ । ३।१।१०२॥

उपसर्गस्यानि-ति । १।२।१९॥

उपसर्गस्यायौ । २।३।१००॥

उपसर्गात् । ७।३।१६२॥

उपसर्गात् खलघञोश्च । ४।४।१०७॥

उपसर्गात् सुग्-त्वे । २।३।३९॥

उपसर्गादध्वनः । ७।३।७९॥

उपसर्गादस्योहो वा । ३।३।२५॥

उपसर्गादातः । ५।३।११०॥

उपसर्गादातो-श्यः । ५।१।५६॥

उपसर्गादूहो ह्रस्वः । ४।३।१०६॥

उपसर्गाद्दिः किः । ५।३।८७॥

उपसर्गादिव । २।२।१७॥

उपसर्गाद्विवृ-शः । ५।२।६९॥

उपाजेऽन्वाजे । ३।१।१२॥

उपाज्जानुनीवि-ण । ६।३।१३९॥

उपात् । ३।३।५८॥

उपात् किरो लवने । ५।४।७२॥

उपात् स्तुतौ । ४।४।१०५॥

उपात् स्थः । ३।३।८३॥

उपाद्भूषासमवाय-रे । ४।४।९२॥

उपान्त्यस्यासमा-डे । ४।२।३५॥

उपान्वध्याङ्वसः । २।२।२१॥

उपायादध्रस्वश्च । ७।२।१७०॥

उपेनाधिकिनि । २।२।१०५॥

उप्ते । ६।३।११८॥

उभयाद् द्युस् च । ७।२।९९॥

उमोर्णाद्वा । ६।२।३७॥

उरसोऽग्रे । ७।३।११४॥

उरसो याणौ । ६।३।१९६॥

उवर्णयुगादेर्यः । ७।१।३०॥

उवर्णात् । ४।४।५८॥

उवर्णादावश्यके । ५।१।१९॥

उवर्णादिकण् । ६।३।३९॥

उभ्रोः । ४।३।२॥

उषासोषसः । ३।२।४६॥

उष्ट्रमुखादयः । ३।१।२३॥

उष्ट्रादकञ् । ७।१।१८५॥

उष्णादिभ्यः कालात् । ६।३।३३॥

ऊङः । ३।२।६७॥

ऊँ चोञ् । १।२।३९॥

ऊटा । १।२।१३॥

ऊढायाम् । २।४।५१॥

ऊदितो वा । ४।४।४२॥

ऊद् दुषो णौ । ४।२।४०॥

ऊघ्नः । २।४।७॥

ऊनार्थपूर्वाद्यैः । ३।१।६७॥

ऊर्जो विन्-न्तः । ७।२।५१॥

ऊर्णाहंशुभमो युस् । ७।२।१७॥

ऊर्ध्वात् पूः-शुषः । ५।४।७०॥

ऊर्ध्वादिभ्यः कर्तुः । ५।१।१३६॥

ऊर्ध्वाद्विरिष्टा-स्य । ७।२।११४॥

ऊर्याद्यनु-तिः । ३।१।२॥

ऊलृति-वा । १।२।२॥

ऊः शृदृघ्नः । ४।४।२०॥

ऊक्पूःपथ्यपोऽत् । ७।३।७६॥

ऊक्सामर्ग्य-वम् । ७।३।९७॥

ऊगृद्द्विस्वरया० । ६।३।१४४॥

ऊचः शशसि । ३।२।९७॥

ऊचि पादः-दे । २।४।१७॥

ऊणाद्धेतोः । २।२।७६॥

ऊणे प्र-र् । १।२।७॥

ऊत इकण् । ६।३।१५२॥

ऊतः । ४।४।७९॥

ऊतः स्वरे वा । ४।३।४३॥

ऊतां विद्यायो-न्धे । ३।३।३७॥

ऊते तृ-से । १।२।८॥

ऊते द्वितीया च । २।२।११४॥

ऊतेर्डीयः । ३।४।३॥

ऊतो डुर् । १।४।३७॥

ऊतोऽत् । ४।१।३८॥

ऊतो रः-नि । २।१।२॥

ऊतो रस्तद्धिते । १।२।२६॥

ऊतो री । ४।३।१०९॥

ऊतो वा तौ च । १।२।४॥

ऊतृषमृषकृश-सेट् । ४।३।२४॥

ऊत्यारु-स्य । १।२।९॥

ऊत्वादिभ्योऽण् । ६।४।१२५॥

ऊत्विज्दिश्-गः । २।१।६९॥

ऊदुदितः । १।४।७०॥

ऊदुदित्तरतम-श्च । ३।२।६३॥

ऊदुपान्त्याद-चः । ५।१।४१॥

ऊदुशनस्पु-र्डाः । १।४।८४॥

ऊद्ववर्णस्य । ४।२।३७॥

ऊद्वनदीवंश्यस्य । ३।२।५॥

ऊध ईर्त् । ४।१।१७॥

ऊन्नरादेरण् । ६।४।५१॥

ऊन्नित्यदितः । ७।३।१७१॥

ऊफिडादीनां-लः । २।३।१०४॥

ऊमतां री । ४।१।५५॥

|                                |                             |
|--------------------------------|-----------------------------|
| ऋ-र लृ-लं-षु ।२।३।९९॥          | एकद्विबहुषु ।३।३।१८॥        |
| ऋवर्णव्यञ्ज-घ्यण् ।५।१।१७॥     | एकधातौ कर्म-ये ।३।४।८६॥     |
| ऋवर्णभ्यूर्गुणः कितः ।४।४।५७॥  | एकशालाया-इकः ।७।१।१२०॥      |
| ऋवर्णात् ।४।३।३६॥              | एकस्वरात् ।६।२।४८॥          |
| ऋवर्णोवर्ण-लुक् ।७।४।७१॥       | एकस्वरादनु-तः ।४।४।५६॥      |
| ऋवर्णोवर्णा-च ।७।३।३७॥         | एकागाराच्चौरै ।६।४।११८॥     |
| ऋवृव्येद इट् ।४।४।८०॥          | एकात्-स्य ।७।२।१११॥         |
| ऋश्यादेः कः ।६।२।९४॥           | एकादश-षोडशं ।३।२।९१॥        |
| ऋषभोपा-ज्यः ।७।१।४६॥           | एकादाकि-ये ।७।३।२७॥         |
| ऋषिनाम्नोः करणे ।५।२।८६॥       | एकादेः कर्मधारयात् ।७।२।५८॥ |
| ऋषिवृण्यन्धककुरु० ।६।१।६१॥     | एकार्थं चानेकं च ।३।१।२२॥   |
| ऋषेरध्याये ।६।३।१४५॥           | एकोपसर्गस्य च घे ।४।२।३४॥   |
| ऋषौ विश्वस्य मित्रे ।३।२।७९॥   | एजेः ।५।१।११८॥              |
| ऋस्मिपूडञ्जशौ-प्रच्छः ।४।४।४८॥ | एण्या एयञ् ।६।२।३८॥         |
| ऋहीग्राग्रा-र्वा ।४।२।७६॥      | एतदश्च-से ।१।३।४६॥          |
| ऋतां विडितीरू ।४।१।१६॥         | एताः शितः ।३।३।१०॥          |
| ऋदिच्छिस्तम्भू-वा ।३।४।६५॥     | एत्यकः ।२।३।२६॥             |
| ऋल्वादेरे-प्र ।४।२।६८॥         | एत्यस्तेर्वृद्धिः ।४।४।३०॥  |
| ऋस्तयोः ।१।२।५॥                | एदापः ।१।४।४२॥              |
| लृत-वा ।१।२।३॥                 | एदैतोऽयाय् ।१।१।२३॥         |
| लृत्याल् वा ।१।२।११॥           | एदोतः-लुक् ।१।२।२७॥         |
| लृदिदद्युतादि ।३।४।६४॥         | एदोद्देश एवेयादौ ।६।१।९॥    |
| लृदन्ता-नाः ।१।१।७॥            | एदोद्भ्यां-रः ।१।४।३५॥      |
| ए ऐ ओ औ-रम् ।१।१।८॥            | एद् बहुस्मोसि ।१।४।४॥       |
| एः ।१।४।७७॥                    | एयस्य ।७।४।२२॥              |
| एकद्वित्रि-ताः ।१।१।५॥         | एयेऽग्नायी ।३।२।५२॥         |

एये जिह्वाशिनः । ७।४।४७॥  
 एषामीर्व्यञ्जनेऽदः । ४।२।९७॥  
 एष्यत्यवधौ-गे । ५।४।६॥  
 एष्यदणेनः । २।२।९४॥  
 ऐकार्थ्ये । ३।२।८॥  
 ऐदौत्-रैः । १।२।१२॥  
 ऐषमःपरु-र्ष । ७।२।१००॥  
 ऐषमोहःश्वसो वा । ६।३।१९॥  
 ओजःसहो-ते । ६।४।२७॥  
 ओजोञ्जःस-ष्टः । ३।२।१२॥  
 ओजोऽप्सरसः । ३।४।२८॥  
 ओत औः । १।४।७४॥  
 ओतः इये । ४।२।१०३॥  
 ओदन्तः । १।२।३७॥  
 ओदौतोऽवाव् । १।२।२४॥  
 ओमः प्रारम्भे । ७।४।९६॥  
 ओमाङि । १।२।१८॥  
 ओर्जाऽन्तस्था-र्णे । ४।१।६०॥  
 ओष्ठचादुर् । ४।४।११७॥  
 औता । १।४।२०॥  
 औदन्ताः स्वराः । १।१।४॥  
 औरी । १।४।५६॥  
 कंशंभ्यां-भम् । ७।२।१८॥  
 कंसार्धात् । ६।४।१३५॥  
 कंसीयात् ज्यः । ६।२।४१॥

ककुदस्या-म् । ७।३।१६७॥  
 कखोपान्त्य-दोः । ६।३।५९॥  
 कगेवनूजनै-रञ्जः । ४।२।२५॥  
 कडश्चञ् । ४।१।४६॥  
 कच्छाग्निवक्त्र-दात् । ६।३।६०॥  
 कच्छादेर्नृनृस्थे । ६।३।५५॥  
 कच्छ्वा डुरः । ७।३।३९॥  
 कटः । ७।१।१२४॥  
 कटपूर्वात्प्राचः । ६।३।५८॥  
 कठादिभ्यो वेदे लुप् । ६।३।१८३॥  
 कडारादयः कर्म० । ३।१।१५८॥  
 कणेमनस्तृप्तौ । ३।१।६॥  
 कण्डूवादेस्तृतीयः । ४।१।१९॥  
 कतरकतमौ-श्रे । ३।१।१०९॥  
 कत्त्रिः । ३।२।१३३॥  
 कन्यादेश्चैयकञ् । ६।३।१०॥  
 कथमित्थम् । ७।२।१०३॥  
 कथमि सप्तमी च वा । ५।४।१३॥  
 कथादेरिकण् । ७।१।२१॥  
 कदाकर्होर्निवा । ५।३।८॥  
 कन्याया इकण् । ६।३।२०॥  
 कन्यात्रिवेष्याः-च । ६।१।६२॥  
 कपिज्ञातेरेयण् । ७।१।६५॥  
 कपिबोधा-से । ६।१।४४॥  
 कपेगेत्रि । २।३।२९॥

कबरमणि-देः । २।४।४२॥  
 कमेर्णिङ् । ३।४।२॥  
 कम्बलान्नाम्नि । ७।१।३४॥  
 करणं च । २।२।१९॥  
 करणक्रियया क्वचित् । ३।४।९४॥  
 करणाद्यजो भूते । ५।१।१५८॥  
 करणाधारे । ५।३।१२९॥  
 करणेभ्यः । ५।४।६४॥  
 कर्कलोहि-च । ७।१।१२२॥  
 कर्णललाटात्कल् । ६।३।१४१॥  
 कर्णादिर्मूले जाहः । ७।१।८८॥  
 कर्तरि । २।२।८६॥  
 कर्तरि । ५।१।३॥  
 कर्त्तर्यनदभ्यः शब् । ३।४।७१॥  
 कर्तुः क्विप्-डित् । ३।४।२५॥  
 कर्तुः खश् । ५।१।११७॥  
 कर्तुर्जीविपुरुषा-हः । ५।४।६९॥  
 कर्तुर्णिन् । ५।१।१५३॥  
 कर्तुर्व्याप्यं कर्म । २।२।३॥  
 कर्तृस्थामूर्ताप्यात् । ३।३।४०॥  
 कर्मजा तृचा च । ३।१।८३॥  
 कर्मणः संदिष्टे । ७।२।१६७॥  
 कर्मणि । २।२।४०॥  
 कर्मणि कृतः । २।२।८३॥  
 कर्मणोऽण् । ५।३।१४॥  
 कर्मण्यग्न्यर्थे । ५।१।१६५॥

कर्मविषाद् यः । ६।४।१०३॥  
 कर्माभिप्रेयः संप्रदा० । २।२।२५॥  
 कलापिकुधु-णः । ७।६।२४॥  
 कलाप्यश्चत्थ-कः । ६।३।११४॥  
 कल्यग्नैरेयण् । ६।१।१७॥  
 कल्याण्यादेरिन् चा० । ६।१।७७॥  
 क्वचिह-कण् । ६।२।१४॥  
 क्वर्गैकस्वरवति । २।३।७६॥  
 कषः कृच्छ्रगहने । ४।४।६७॥  
 कषोऽनितः । ५।३।३॥  
 कष्टकक्षकृच्छ्र-णे । ३।४।४१॥  
 कसमासे-द्धः । १।१।४१॥  
 क-सोमात् टचण् । ६।२।१०७॥  
 काकतालीयादयः । ७।१।११७॥  
 काकवौ वोष्णे । ३।२।१३७॥  
 काकाद्यैः क्षेपे । ३।१।९०॥  
 काक्षपथोः । ३।२।१३४॥  
 काण्डाऽऽण्डभाण्डा० । ७।२।३८॥  
 काण्डात् प्रमा-त्रे । २।४।२४॥  
 कादिर्व्यञ्जनम् । १।१।१०॥  
 कामोक्तावकच्चिति । ५।४।२६॥  
 कारकं कृता । ३।१।६८॥  
 कारणम् । ५।३।१२७॥  
 कारिका स्थित्यादौ । ३।१।३॥  
 कार्षापणा-वा । ६।४।१३३॥  
 कालः । ३।१।६०॥



कालवेलासमये-रे । ५।४।३३॥  
 कालस्यानहोरात्राणाम् । ५।४।७॥  
 कालहेतु-गे । ७।१।१९३॥  
 कालाजटाघा-पे । ७।२।२३॥  
 कालात् । ७।३।१९॥  
 कालात् तनतरतम० । ३।२।२४॥  
 कालात् परि-रे । ६।४।१०४॥  
 कालाद् भववत् । ६।२।१११॥  
 कालाद् यः । ६।४।१२६॥  
 कालाध्वनोर्व्याप्तौ । २।२।४२॥  
 कालाध्वमा-णाम् । २।२।२३॥  
 काले कार्ये-वत् । ६।४।९८॥  
 कालेन तृष्य-रे । ५।४।८२॥  
 काले भान्वाऽऽधारे । २।२।४८॥  
 कालो द्विगौ च मेयैः । ३।१।५७॥  
 काशादेरिलः । ६।२।८२॥  
 काश्याप-कौ-च । ६।३।१८८॥  
 काश्यादेः । ६।३।३५॥  
 कासूगोणीभ्यां तरट् । ७।३।५०॥  
 कियत्तत्सर्व-दा । ७।२।९५॥  
 किंवृत्ते लिप्सायाम् । ५।३।९॥  
 किंवृत्ते सप्तमी-न्त्यौ । ५।४।१४॥  
 कियत्तद्वहोरः । ५।१।१०१॥  
 किंकिलास्त्यर्थ-न्ती । ५।४।१६॥  
 किं क्षेपे । ३।१।११०॥  
 किंत्याद्ये-स्याम् । ७।३।८॥

कितः संशयप्रतीकारे । ३।४।६॥  
 किमः क-च । २।१।४०॥  
 किमद्वयादि-तस् । ७।२।८९॥  
 किरो धान्ये । ५।३।७३॥  
 किरो लवने । ४।४।९३॥  
 किशरादेरिकट् । ६।४।५५॥  
 कुक्ष्यात्मोदरा-खिः । ५।१।९०॥  
 कुआदेर्जायन्यः । ६।१।४७॥  
 कुटादेर्द्विद्वज्जित् । ४।३।१७॥  
 कुटिलिकाया अण् । ६।४।२६॥  
 कुटीशुण्डाद् रः । ७।३।४७॥  
 कुण्ड्यादिभ्यो यलु० । ६।३।११॥  
 कुत्वा डुपः । ७।३।४९॥  
 कुत्सिताल्पाज्ञाते । ७।३।३३॥  
 कुन्त्यवन्तेः स्त्रियाम् । ६।१।१२१॥  
 कुप्यभिद्यो-म्नि । ५।१।३९॥  
 कुमहद्भ्यां वा । ७।३।१०८॥  
 कुमारः श्रमणादिना । ३।१।११५॥  
 कुमारशीर्षाणिन् । ५।१।२८॥  
 कुमारीक्रीड-सोः । ७।३।१६॥  
 कुमुदादेरिकः । ६।२।९६॥  
 कुरुल्लुरः । २।१।६६॥  
 कुर्युगंधराद् वा । ६।३।५३॥  
 कुरोर्वा । ६।१।१२२॥  
 कुर्वदिर्ज्यः । ६।१।१००॥  
 कुलकुक्षि-रे । ६।३।१२॥

कुलटाया वा ।६।१।७८॥  
 कुलत्थकोपान्त्यादण् ।६।४।४॥  
 कुलाख्यानाम् ।२।४।७९॥  
 कुलाज्जल्पे ।७।१।८६॥  
 कुलादीनः ।६।१।९६॥  
 कुलालादेरकञ् ।६।१।९४॥  
 कुलिजाद्वा लुप् च ।६।४।१६५॥  
 कुल्मासादण् ।४।१।१९५॥  
 कुशलायु-याम् ।२।३।९७॥  
 कुशले ।६।३।९५॥  
 कुशाग्रादीयः ।७।१।११६॥  
 कुषिरञ्जेर्व्याप्ये-च ।३।४।७४॥  
 कुसीदादिकट् ।६।४।३५॥  
 कूलादुद्रुजोद्धहः ।५।१।१२२॥  
 कूलाभ्रकरी-षः ।५।१।११०॥  
 कृगः प्रतियत्ने ।२।२।१२॥  
 कृगः श च वा ।५।३।१००॥  
 कृगः सुपुण्य-त् ।५।१।१६२॥  
 कृगोऽव्ययेना-मौ ।५।४।८४॥  
 कृगो नवा ।३।१।१०॥  
 कृगो यि च ।४।२।८८॥  
 कृग्रहो-वात् ।५।४।६१॥  
 कृगूतनादेरुः ।३।४।८३॥  
 कृतचृतनृत-र्वा ।४।४।५०॥  
 कृताद्यैः ।२।२।४७॥  
 कृतास्मरणा-क्षा ।५।२।११॥

कृति ।३।१।७७॥  
 कृते ।६।३।१२२॥  
 कृत्यतुल्या-त्या ।३।१।११४॥  
 कृत्येऽवश्यमो लुक् ।३।२।१३८॥  
 कृत्यस्य वा ।२।२।८८॥  
 कृत्सगति-पि ।७।४।११७॥  
 कृद्येनावश्यके ।३।१।९५॥  
 कृपः श्वस्तन्याम् ।३।३।४६॥  
 कृपाहृदयादालुः ।७।२।४२॥  
 कृभ्वस्तिभ्यां च्विः ।७।२।१२६॥  
 कृवृषिमृजि-वा ।५।१।४२॥  
 कृशाश्वक-दिन् ।६।३।१९०॥  
 कृशाश्वदेरीयण् ।६।२।९३॥  
 कृष्यादिभ्यो वलच् ।७।२।२७॥  
 कृतः कीर्तिः ।४।४।१२३॥  
 केकयमित्रयु-च ।७।४।२॥  
 केदाराण्यश्च ।६।२।१३॥  
 केवलमामक-जात् ।२।४।२९॥  
 केवलस-रौ ।१।४।२६॥  
 केशाद्वा ।७।२।४३॥  
 केशाद्वा ।६।२।१८॥  
 केशो वा ।३।२।१०२॥  
 कोः कत् तत्पुरुषे ।३।२।१३०॥  
 कोटरमिश्रक-णे ।३।२।७६॥  
 कोऽण्वादेः ।७।२।७६॥  
 कोपान्त्याच्चाण् ।६।३।५६॥

कोऽश्मादेः । ६।४।९७॥  
 कौण्डिन्याग-च । ६।४।९७॥  
 कौपिञ्जलहास्तिप० । ६।३।१७१॥  
 कौरव्यमाण्डूकासुरेः । २।४।७०॥  
 कौशेयम् । ६।२।३९॥  
 किङ्कति पि शय् । ४।३।१०५॥  
 क्तं नञादिभिन्नैः । ३।१।१०५॥  
 क्तक्तवत् । ५।१।१७४॥  
 क्तयोः । ४।४।४०॥  
 क्तयोरनुपसर्गस्य । ४।१।९२॥  
 क्तयोरसदाधारे । २।२।९१॥  
 क्ताः । ३।१।१५१॥  
 क्ताच्च नाम्नि वा । २।४।२८॥  
 क्तात्तमबादे-न्ते । ७।३।५६॥  
 क्तादल्पे । २।४।४५॥  
 क्तादेशोऽपि । २।१।६१॥  
 क्तेटो गुरोर्व्यञ्जनात् । ५।३।१०६॥  
 क्तेन । ३।१।९२॥  
 क्तेनासत्त्वे । ३।१।७४॥  
 क्तेऽनिटश्चजोः-ति । ४।१।१११॥  
 क्त्वा । ४।३।२९॥  
 क्त्वातुमम् । १।१।३५॥  
 क्त्वातुमम् भावे । ५।१।१३॥  
 क्नः पलितासितात् । २।४।३७॥  
 क्यः शिति । ३।४।७०॥  
 क्यङ् । ३।४।२६॥

क्यङ्मानिपित्-ते । ३।२।५०॥  
 क्यङ्षो नवा । ३।३।४३॥  
 क्यनि । ४।३।११२॥  
 क्य-यडाशीर्ये । ४।३।१०॥  
 क्यो वा । ४।३।८१॥  
 क्रमः । ४।४।५४॥  
 क्रमः क्त्वि वा । ४।१।१०६॥  
 क्रमो दीर्घः परस्मै । ४।२।१०९॥  
 क्रमोऽनुपसर्गात् । ३।३।४७॥  
 क्रय्यः क्रयार्थे । ४।३।९१॥  
 क्रव्यात् क्रव्या-दौ । ५।१।१५१॥  
 क्रियातिपत्तिः-महि । ३।३।१६॥  
 क्रियामध्येऽध्व-च । २।२।११०॥  
 क्रियायां क्रियार्था० । ५।३।१३॥  
 क्रियार्थो धातुः । ३।३।३॥  
 क्रियाविशेषणात् । २।२।४१॥  
 क्रियाव्यतिहा-र्थे । ३।३।२३॥  
 क्रियाश्रयस्या-णम् । २।२।३०॥  
 क्रियाहेतुः कारकम् । २।२।१॥  
 क्रीडोऽकूजने । ३।३।३३॥  
 क्रीतात् करणादेः । २।४।४४॥  
 कुत्संपदादिभ्यः क्विप् । ५।३।११४॥  
 कुदद्रुहे-पः । २।२।२७॥  
 कुशस्तुनः-सि । १।४।९१॥  
 क्रोशयोजन-मार्हे । ६।४।८६॥  
 क्रोष्टृशलङ्कोर्लुक् च । ६।१।५६॥

क्रौड्यादीनाम् । २।४।७९॥  
 क्रयादेः । ३।४।७९॥  
 क्लिन्नल्ल-स्य । ७।१।१३०॥  
 क्लीबमन्ये-वा । ३।१।१२८॥  
 क्लीबे । २।४।९७॥  
 क्लीबे क्तः । ५।३।१२३॥  
 क्लीबे वा । २।१।९३॥  
 क्लेशादिभ्योऽपात् । ५।१।८१॥  
 क्वकुत्रात्रेह । ७।२।९३॥  
 कचित् । ५।१।१७१॥  
 कचित् । ६।२।१४५॥  
 कचित्तुर्यात् । ७।३।४४॥  
 कचित् स्वार्थे । ७।३।७॥  
 कसुष्मतौ च । २।१।१०५॥  
 किप् । ५।१।१४८॥  
 किब्वृत्तेरसुधियस्तौ । २।१।५८॥  
 केहामात्रसस्त्यच् । ६।३।१६॥  
 कौ । ४।४।१२०॥  
 क्षत्रादियः । ६।१।९३॥  
 क्षय्यजय्यौ शक्तौ । ४।३।९०॥  
 क्षिपरटः । ५।२।६६॥  
 क्षिप्राशंसार्थ-म्यौ । ५।४।३॥  
 क्षियाशीःप्रैषे । ७।४।९२॥  
 क्षीरादेयण् । ६।२।१४२॥  
 क्षुततृङ्गर्द्धेऽशाना-यम् । ४।३।११३॥  
 क्षुद्रकमालवा-म्नि । ६।२।११॥

क्षुद्राभ्य एरण् वा । ६।१।८०॥  
 क्षुधक्लिशकुष-सः । ४।३।३१॥  
 क्षुधवसस्तेषाम् । ४।४।४३॥  
 क्षुब्धविरिब्ध-भौ । ४।४।७०॥  
 क्षुभ्रादीनाम् । २।३।९६॥  
 क्षुभ्रोः । ५।३।७१॥  
 क्षेः क्षीः । ४।३।८९॥  
 क्षेः क्षी चाघ्यर्थे । ४।२।७४॥  
 क्षेत्रेऽन्य-यः । ७।१।१७२॥  
 क्षेपातिग्र-याः । ७।२।८५॥  
 क्षेपे च यच्चयत्रे । ५।४।१८॥  
 क्षेपेऽपिजात्वा-ना । ५।४।१२॥  
 क्षेमप्रिय-खाण् । ५।१।१०५॥  
 क्षैशुषिपचो-वम् । ४।२।७८॥  
 खनो डडरेकेकव० । ५।३।१३७॥  
 खलादिभ्यो लिन् । ६।२।२७॥  
 खारीकाक-कच् । ६।४।१४९॥  
 खार्या वा । ७।३।१०२॥  
 खितिखीती-र् । १।४।३६॥  
 खित्यनव्यया-श्च । ३।२।१११॥  
 खेयमृषोद्ये । ५।१।३८॥  
 खण्णम् चाभीक्ष्ण्ये । ५।४।४८॥  
 ख्यागि । १।३।५४॥  
 ख्याते दृश्ये । ५।२।८॥  
 गच्छति पथिदूते । ६।३।२०३॥  
 गडदबादे-ये । २।१।७७॥

गड्वादिभ्यः । ३।१।१५६॥  
 गणिकाया ण्यः । ६।२।१७॥  
 गतिः । १।१।३६॥  
 गतिकारका-कौ । ३।२।८५॥  
 गतिक्कन्य-षः । ३।१।४२॥  
 गतिबोधा-दाम् । २।२।५॥  
 गते गम्येऽध्व-वा । २।२।१०७॥  
 गतेर्नवाऽनाप्ते । २।२।६३॥  
 गतौ सेधः । २।३।६१॥  
 गत्यर्थवदोऽच्छः । ३।१।८॥  
 गत्यर्थार्किक-जेः । ५।१।११॥  
 गत्यर्थात् कुटिले । ३।४।११॥  
 गत्वरः । ५।२।७८॥  
 गन्धनावक्षे—गे । ३।३।७६॥  
 गमहनजन-लुक् । ४।२।४४॥  
 गमहनविद्ल-वा । ४।४।८३॥  
 गमां कौ । ४।२।५८॥  
 गमिषद्यमश्छः । ४।२।१०६॥  
 गमेः क्षान्तौ । ३।३।५५॥  
 गमोऽनात्मने । ४।४।५१॥  
 गमो वा । ४।३।३७॥  
 गम्भीर-वात् । ६।३।१३५॥  
 गम्ययपः कर्माधारे । २।२।७४॥  
 गम्यस्याप्ये । २।२।६२॥  
 गर्गभार्गविका । ६।१।१३६॥  
 गगर्दिर्यञ् । ६।१।४२॥

गर्तोत्तरपदादीयः । ६।३।५७॥  
 गर्भादप्राणिनि । ७।१।१३९॥  
 गवाश्चादिः । ३।१।१४४॥  
 गवि युक्ते । ३।२।७४॥  
 गवियुधेः स्थिरस्य । २।३।२५॥  
 गस्थकः । ५।१।६६॥  
 गहादिभ्यः । ६।३।६३॥  
 गहोर्जः । ४।२।४०॥  
 गाः परोक्षायाम् । ४।४।२६॥  
 गात्रपुरुषात् स्तः । ५।४।५९॥  
 गाथिविद-नः । ७।४।५४॥  
 गान्धारिसाल्वेया । ६।१।११५॥  
 गापापचो भावे । ५।३।९५॥  
 गापास्थासादा-कः । ४।३।९६॥  
 गायोऽनुपसर्गादृक् । ५।१।७४॥  
 गिरिनी-द्वा । ७।३।९०॥  
 गिरिनद्यादीनाम् । ७।३।६८॥  
 गिरेरीयोऽस्त्राजीवे । ६।३।२१९॥  
 गुणाङ्गाद् वेष्टेयसू । ७।३।९॥  
 गुणाद-नवा । २।२।७७॥  
 गुणादिभ्यो यः । ७।२।५३॥  
 गुणोऽरेदोत् । ३।३।२॥  
 गुणौधूपवि-यः । ३।४।१॥  
 गुप्तिजो-सन् । ३।४।५॥  
 गुरावेकश्च । २।२।१२४॥  
 गुरुनाम्यादे-र्णोः । ३।४।४८॥

गृष्ट्यादेः । ६।१।८४॥  
 गृहेऽग्नीधो रणू धश्च । ६।३।१७४॥  
 गृहोऽपरोक्षायां दीर्घः । ४।४।३४॥  
 गृलुपसद-गर्ह्ये । ३।४।१२॥  
 गेहे ग्रहः । ५।१।५५॥  
 गोः । ७।२।५०॥  
 गोः पुरीषे । ६।२।५०॥  
 गोः स्वरे यः । ३।१।२७॥  
 गोचरसंचर-षम् । ५।३।१३१॥  
 गोण्यादेश्चेकण् । ७।१।११२॥  
 गोण्या मेये । २।४।१०३॥  
 गोत्रक्षत्रिये-यः । ६।३।२०८॥  
 गोत्रचरणा-मे । ७।१।७५॥  
 गोत्रादङ्कवत् । ६।२।१३४॥  
 गोत्रादङ्कवत् । ६।३।१५५॥  
 गोत्राददण्ड-ष्ये । ६।३।१६९॥  
 गोत्रोक्षवत्सो-कञ् । ६।२।१२॥  
 गोत्रोत्तरपदात्-त्यात् । ६।१।१२॥  
 गोदानादीनां-र्ये । ६।४।८१॥  
 गोधाया दुष्टे णारश्च । ६।१।८१॥  
 गोपूर्वादित इकण् । ७।२।५६॥  
 गोमये वा । ६।३।५२॥  
 गोऽम्बाम्ब-स्य । २।३।३०॥  
 गोरथवातात्र-लम् । ६।२।२४॥  
 गोर्नाम्प्रिवोऽक्षे । १।२।२८॥  
 गोश्चान्ते-हौ । २।४।९६॥

गोष्ठातेः शुनः । ७।३।११०॥  
 गोष्ठादीनञ् । ७।२।७९॥  
 गोस्तत्पुरुषात् । ७।३।१०५॥  
 गोहः स्वरे । ४।२।४२॥  
 गौणात् सम-या । २।२।३३॥  
 गौणो ड्यादिः । ७।४।११६॥  
 गौरादिभ्यो मुख्यान् । २।४।१९॥  
 गौष्ठीतैकी-चरात् । ६।३।२६॥  
 ग्मिन् । ७।२।२५॥  
 ग्रन्थान्ते । ३।२।१४७॥  
 ग्रहः । ५।३।५५॥  
 ग्रहगुहश्च सनः । ४।४।५९॥  
 ग्रहणाद्वा । ७।१।१७७॥  
 ग्रहव्रश्चभ्रस्जप्रच्छः । ४।१।८४॥  
 ग्रहादिभ्यो णिन् । ५।१।५३॥  
 ग्रामकौटात् तक्षणः । ७।३।१०९॥  
 ग्रामजनबन्धु-तल् । ६।२।२८॥  
 ग्रामराष्ट्रांशाद्-णौ । ६।३।७२॥  
 ग्रामाग्रान्नियः । २।३।७१॥  
 ग्रामादीनञ् च । ६।३।९॥  
 ग्राम्याशिशुद्वि-यः । ३।१।१२७॥  
 ग्रीवातोऽण् च । ६।३।१३२॥  
 ग्रीष्मवसन्ताद् वा । ६।३।१२०॥  
 ग्रीष्मावर-कञ् । ६।३।११५॥  
 ग्रो यङि । २।३।१०१॥  
 ग्लाहाज्यः । ५।३।११८॥

घञि भावकरणे ।४।२।५२॥

घञ्युपसर्ग-लम् ।३।२।८६॥

घटादेर्ह्रस्वो-रे ।४।२।२४॥

घसेकस्वरा-सोः ।४।४।८२॥

घसृल सन-लि ।४।४।१७॥

घसूवसः ।२।३।३६॥

घुटि ।१।४।६८॥

घुषेर्विशब्दे ।४।४।६८॥

घोषदादेरकः ।७।२।७४॥

घोषवति ।१।३।२१॥

घ्राध्मापाट्ठे-शः ।५।१।५८॥

घ्राध्मोर्यङि ।४।३।९८॥

घ्यण्यावश्यके ।४।१।११५॥

ङसेश्वाद् ।२।१।१९॥

ङसोऽपत्ये ।६।१।२८॥

ङस्युक्तं कृता ।३।१।४९॥

ङिङौः ।१।४।२५॥

ङित्यदिति ।१।४।२३॥

ङेः स्मिन् ।१।४।८॥

ङेडसा ते मे ।२।१।२३॥

ङेडस्योर्यातौ ।१।४।६॥

ङे पिबः पीप्य ।४।१।३३॥

ङौ सासहिवाव-ति ।५।२।३८॥

ङ्णोः कटा-वा ।१।३।१७॥

ङ्यः ।३।२।६४॥

ङ्यादीदूतः के ।२।४।१०४॥

ङ्यादेर्गौण-च्योः ।२।४।९५॥

ङ्यापो बहुलं नाम्नि ।२।४।९९॥

ङ्यास्यूडः ।६।१।७०॥

चक्षो वाचि-ख्याङ् ।४।४।४॥

चजः कगम् ।२।१।८६॥

चटकाण्णैरः-प् ।६।१।७९॥

चटते सद्वितीये ।१।३।७॥

चतस्राद्धम् ।३।१।६६॥

चतुरः ।७।१।१६३॥

चतुर्थी ।२।२।५३॥

चतुर्थी प्रकृत्या ।३।१।७०॥

चतुर्मासान्नाम्नि ।६।३।१३३॥

चतुष्पाद् गर्भिण्या ।३।१।११२॥

चतुष्पाद्भ्य एयञ् ।६।१।८३॥

चतुस्त्रेर्हा-सि ।२।३।७४॥

चत्वारिंशदादौ वा ।३।२।९३॥

चन्द्रयुक्तात्-क्ते ।६।२।६॥

चन्द्रायणं च चरति ।६।४।८२॥

चरकमा-नञ् ।७।१।३९॥

चरणस्य स्थेणो-दे ।३।१।१३८॥

चरणादकञ् ।६।३।१६८॥

चरणाद्धर्मवत् ।६।२।२३॥

चरति ।६।४।११॥

चरफलाम् ।४।१।५३॥

चराचरचला-वा ।४।१।१३॥

चरेराडस्त्वगुरौ ।५।१।३१॥

चरेष्टः ।५।१।१३८॥  
 चर्मण्यञ् ।७।१।४५॥  
 चर्मण्वत्य-त् ।२।१।९६॥  
 चर्मशुनः-चे ।७।४।६४॥  
 चर्मिर्वर्मि-रात् ।६।१।११२॥  
 चर्मोदरात्पूरेः ।५।४।५६॥  
 चलशब्दार्था-त् ।५।२।४३॥  
 चल्याहारार्थेङ्-नः ।३।३।१०८॥  
 चवर्गद-रे ।७।३।९८॥  
 चहणः शाठ्ये ।४।२।३१॥  
 चातुर्मास्यं-च ।६।४।८५॥  
 चादयोऽसत्त्वे ।१।१।३१॥  
 चादिः-नाङ् ।१।२।३६॥  
 चायः कीः ।४।१।८६॥  
 चार्थे द्वन्द्वः सहोक्तौ ।३।१।११७॥  
 चाहहवैवयोगे ।२।१।२९॥  
 चिह्निकदचक्रसम् ।४।१।१४॥  
 चितिदेहा-देः ।५।३।७९॥  
 चितीवार्थे ।७।४।९३॥  
 चितेः कचि ।३।२।८३॥  
 चित्ते वा ।४।२।४१॥  
 चित्ररेवती-याम् ।६।३।१०८॥  
 चित्रे ।५।४।१९॥  
 चिरपरुत्य-स्त्रः ।६।३।८५॥  
 चिस्फुरोर्नवा ।४।२।१२॥  
 चीवरात्परिधार्जने ।३।४।४१॥

चुरादिभ्योऽण् ।६।४।११०॥  
 चूर्णमुदगा-णौ ।६।४।७॥  
 चेः किर्वा ।४।१।३६॥  
 चेलार्थात् क्नोपेः ।५।४।५८॥  
 चैत्रीकार्तिकी-द्वा ।६।२।१००॥  
 चोरादेः ।७।१।७६॥  
 च्चौ क्वचित् ।३।२।६०॥  
 च्यर्थे कर्त्राप्या-गः ।५।३।१४०॥  
 च्यर्थे भृशादेः स्तोः ।३।४।२९॥  
 छगलिनो णेयिन् ।६।३।१८५॥  
 छदिर्बल्लेरेयण् ।७।१।४७॥  
 छदेरिस्मन्त्रद् कौ ।४।२।३३॥  
 छन्दसो यः ।६।३।१४७॥  
 छन्दस्यः ।६।३।१९७॥  
 छन्दोगौ-घे ।६।३।१६६॥  
 छन्दोऽधीते वा ।७।१।१७३॥  
 छन्दोनाम्नि ।५।३।७०॥  
 छाशोर्वा ।४।४।१२॥  
 छेदादेर्नित्यम् ।६।४।१८२॥  
 जङ्गल-वा ।७।४।२४॥  
 जण्टपण्टात् ।६।१।८२॥  
 जनशो न्युपान्त्ये० ।४।३।२३॥  
 जपजभदहदश-शः ।४।१।५२॥  
 जपादीनां षो वः ।२।३।१०५॥  
 जभः स्वरे ।४।४।१००॥  
 जम्ब्वा वा ।६।३।६०॥



जयिनि च । ६।३।१२२॥  
 जरत्यादिभिः । ३।१।५५॥  
 जरसो वा । १।४।६०॥  
 जराया ज-च । ७।३।९३॥  
 जराया ज-वा । २।१।३॥  
 जस इः । १।४।९॥  
 जस्येदोत् । १।४।२२॥  
 जस्विशे-त्रये । २।१।२६॥  
 जागुः । ५।२।४८॥  
 जागुः किति । ४।३।६॥  
 जागुरश्च । ५।३।१०४॥  
 जागुर्जिण्वि । ४।३।५२॥  
 जागुषसमिन्धेर्नवा । ३।४।४९॥  
 जाज्ञाजनोऽत्यादौ । ४।२।१०४॥  
 जातमहद्-यात् । ७।३।९५॥  
 जातिकालसुखा-वा । ३।१।१५२॥  
 जातिश्च णि-तद्धि-रे । ३।२।५१॥  
 जातीयैकार्थेऽच्चे । ३।२।७०॥  
 जातुयद्यदायदौ स० । ५।४।१७॥  
 जाते । ६।३।९८॥  
 जातेः सम्पदा च । ७।२।१३१॥  
 जातेरयान्त-त् । २।४।५४॥  
 जातेरीयः सामान्य० । ७।६।१३९॥  
 जातौ । ७।४।५८॥  
 जातौ राज्ञः । ६।१।९२॥  
 जात्याख्यायां-वत् । २।२।१२१॥

जायापतेश्चि-ति । ५।१।८४॥  
 जायाया जानिः । ७।३।१६४॥  
 जासनाट-याम् । २।२।१४॥  
 जिघ्रतेरिः । ४।२।३८॥  
 जिविपून्यो-ल्के । ५।१।४३॥  
 जिह्वामूला-यः । ६।३।१२७॥  
 जीणूदक्षि-थः । ५।२।७२॥  
 जीर्णगोमूत्रा-ले । ७।२।७७॥  
 जीवन्तपर्वताद्वा । ६।१।५८॥  
 जीविकोपनि-म्ये । ३।१।१७॥  
 जीवितस्य सन् । ६।४।१७०॥  
 जृभ्रमवम-वा । ४।१।२६॥  
 जृत्रश्चः क्त्वः । ४।४।४१॥  
 जृषोऽतुः । ५।१।१७३॥  
 जेर्गिः सन्परोक्षयोः । ४।१।३५॥  
 ज्ञः । ३।३।८२॥  
 ज्ञप्यायो ज्ञीपीप्० । ४।१।१६॥  
 ज्ञानेच्छाचार्था-न । ३।१।८६॥  
 ज्ञानेच्छाचार्थत्री-क्तः । ५।२।९२॥  
 ज्ञीप्सास्थेये । ३।३।६४॥  
 ज्ञोऽनुपसर्गात् । ३।३।९६॥  
 ज्यश्च यपि । ४।१।७६॥  
 ज्यायान् । ७।४।३६॥  
 ज्याव्यधः किङ्किति । ४।१।८१॥  
 ज्याव्येव्यधिव्यचि० । ४।१।७१॥  
 ज्योतिरायु-स्य । २।३।१७॥

ज्योतिषम् ।६।३।१९९॥  
ज्योत्स्नादिभ्योऽण् ।७।२।३४॥  
ज्वलह्वलह्वल-वा ।४।२।३२॥  
जिख्यमोर्वा ।४।४।१०६॥  
जिच् ते पद-च ।३।४।६६॥  
जिणवि घन् ।४।३।१०१॥  
जिदार्षादणिञोः ।६।१।१४०॥  
जिणिति ।४।३।५०॥  
जिणिति घात् ।४।३।१००॥  
टः पुंसि ना ।१।४।२४॥  
टनण् ।५।१।६७॥  
टस्तुल्यदिशि ।६।३।२१०॥  
टाडसोरिनस्यौ ।१।४।५॥  
टाड्योसि यः ।२।१।७॥  
टादौ स्वरे वा ।१।४।९२॥  
टौस्यनः ।२।१।३७॥  
टौस्येत् ।१।४।१९॥  
ट्थेघ्राशाछासो वा ।४।३।६७॥  
ट्थेथेर्वा ।३।४।५९॥  
ट्वितोऽधुः ।५।३।८३॥  
डकश्चाष्टाच-णाम् ।६।४।८४॥  
डतरडतमौ-श्रे ।७।४।७६॥  
डतिष्णः-प् ।१।४।५४॥  
डत्यतु संख्यावत् ।१।१।३९॥  
डाच्यादौ ।७।२।१४९॥  
डाच्लोहिता-षित् ।३।४।३०॥

डित्यन्त्यस्वरादेः ।२।१।११४॥  
डिद्वाण् ।६।२।१३६॥  
डिन् ।७।१।१४७॥  
डीयश्चैदितः कयोः ।४।४।६१॥  
इनः सः-श्चः ।१।३।१८॥  
इवितस्त्रिमक्-तम् ।५।३।८४॥  
इस्तड्ढे ।१।३।४२॥  
णकतृचौ ।५।१।४८॥  
णश्च विशवसो-वा ।६।१।६५॥  
णषमसत्परे स्यादि० ।२।१।६०॥  
णस्वराघोषा-श्च ।२।४।४॥  
णावज्ञाने गमुः ।४।४।२४॥  
णिज् बहुलं-षु ।३।४।४२॥  
णिद्वान्त्यो ण्व् ।४।३।५८॥  
णिन् चावश्य-र्ण्ये ।५।४।३६॥  
णिवेत्त्यास-नः ।५।३।१११॥  
णिश्रिद्रुसुकमः-ङः ।३।४।५८॥  
णिस्तोरेवाऽणि ।२।३।३७॥  
णिसुश्रूयात्मने-त् ।३।४।९२॥  
णेरनिटि ।४।३।८३॥  
णेर्वा ।२।३।८८॥  
णोऽन्नात् ।७।१।१०॥  
णौ क्रीजीङः ।४।२।१०॥  
णौ डसनि ।४।१।८८॥  
णौ दान्त-शान्त-सम् ।४।४।७४॥  
णौ मृगरमणे ।४।२।५१॥

गौ सन्डे वा ।४।४।२७॥  
 ण्योऽतिथेः ।७।१।२४॥  
 तं पचति द्रोणाद्वाञ् ।६।४।१६१॥  
 तं प्रत्यनो-लात् ।६।४।२८॥  
 तं भाविभूते ।६।४।१०६॥  
 तः सौ सः ।२।१।४२॥  
 तक्षः स्वार्थे वा ।३।४।७७॥  
 ततः शिटः ।१।३।३६॥  
 तत आगते ।६।३।१४९॥  
 ततोऽस्याः ।१।३।३४॥  
 ततो ह-र्थः ।१।३।३॥  
 तत्पुरुषे कृति ।३।२।२०॥  
 तत्र ।७।१।५३॥  
 तत्र कृत-लब्ध-ते ।६।३।९४॥  
 तत्र कसुकानौ-त् ।५।२।२॥  
 तत्र घटते-ष्ठः ।७।१।१३७॥  
 तत्र नियुक्ते ।६।४।७४॥  
 तत्र साधौ ।७।१।१५॥  
 तत्रादाय मि-वः ।३।१।२६॥  
 तत्राधीने ।७।२।१३२॥  
 तत्राहोरात्रांशम् ।३।१।९३॥  
 तत्रोद्धृते पात्रेभ्यः ।६।२।१३८॥  
 तत्साप्यानाप्या-श्च ।३।३।२१॥  
 तद् ।७।१।५०॥  
 तदः सेः-र्था ।१।३।४५॥  
 तदन्तं पदम् ।१।१।२०॥

तदत्रास्ति ।६।२।७०॥  
 तदत्रास्मै वा-यम् ।६।४।१५८॥  
 तदर्थार्थेन ।३।१।७२॥  
 तदस्य पण्यम् ।६।४।५४॥  
 तदस्य सं-तः ।७।१।१३८॥  
 तदस्यास्त्य-तुः ।७।२।१॥  
 तद्धितः स्वर-रे ।३।२।५५॥  
 तद्धितयस्वरेऽनाति ।२।४।९२॥  
 तद्धिताकको-ख्याः ।३।२।५४॥  
 तद्धितोऽणादिः ।६।१।१॥  
 तद्द्राद्युष्य-षि ।२।२।६६॥  
 तद्यात्येभ्यः ।६।४।८७॥  
 तद्वति धण् ।७।२।१०८॥  
 तद्वेत्त्यधीते ।६।२।११७॥  
 तद्युक्ते हेतौ ।२।२।१००॥  
 तनः क्ये ।४।२।६३॥  
 तनुपुत्राणु-क्ते ।७।३।२३॥  
 तनो वा ।४।१।१०५॥  
 तन्नादचि-ते ।७।१।१८३॥  
 तन्भ्यो वा-श्च ।४।३।६८॥  
 तन्व्यधीण्-तः ।५।१।६४॥  
 तपः कर्त्रनुतापे च ।३।४।९१॥  
 तपसः क्यन् ।३।४।३६॥  
 तपेस्तपःकर्मकात् ।३।४।८५॥  
 तप्तान्ववाद्रहसः ।७।३।८१॥  
 तमर्हति ।६।४।१७७॥

तमिस्रार्णवज्योत्स्नाः । ७।२।५२॥  
 तयोर्ध्वौ-याम् । ७।४।१०३॥  
 तयोः समू-षु । ७।३।३॥  
 तरति । ६।४।९॥  
 तरुतृणधान्य-त्वे । ३।१।१३३॥  
 तव मम डसा । २।१।१५॥  
 तवर्गस्य इच-गौ । १।३।६०॥  
 तव्यानीयौ । ५।१।२७॥  
 तसिः । ६।३।२११॥  
 तस्मै भृता-च । ६।४।१०७॥  
 तस्मै योगादेः शक्ते । ६।४।९४॥  
 तस्मै हिते । ७।१।३५॥  
 तस्य । ७।१।५४॥  
 तस्य तुल्ये कः । ७।१।१०८॥  
 तस्य वापे । ६।४।१५१॥  
 तस्य व्याख्या-त् । ६।३।१४२॥  
 तस्येदम् । ६।३।१६०॥  
 तस्यार्हे-वत् । ७।१।५१॥  
 तादर्थ्ये । २।२।५४॥  
 ताभ्यां वा-त् । २।४।१५॥  
 तारका वर्णका-त्वे । २।४।११३॥  
 तालाद्धनुषि । ६।२।३२॥  
 तिककितवादौ द्वन्द्वे । ६।१।१३१॥  
 तिकादेरायनिञ् । ६।१।१०७॥  
 तिकृत्तौ नाम्नि । ५।१।७१॥  
 ति चोपान्त्या-दुः । ४।१।५४॥

तित्तिरिवर-यण् । ६।३।१८४॥  
 तिरसस्तिर्यति । ३।२।१२४॥  
 तिरसो वा । २।३।२॥  
 तिरोऽन्तर्धौ । ३।१।९॥  
 तिर्यचापवर्गे । ५।४।८५॥  
 तिर्वा षिवः । ४।१।४३॥  
 तिलयवादनाम्नि । ६।२।५२॥  
 तिवां णवः परस्मै । ४।२।११७॥  
 तिलादिभ्यः-लः । ७।१।१३६॥  
 तिष्ठतेः । ४।२।३९॥  
 तिष्ठद्वि-यः । ३।१।३६॥  
 तिष्यपुष्ययोर्भाणि । २।४।९०॥  
 तीयं डित्-वा । १।४।१४॥  
 तीयशम्ब-डाच् । ७।२।१३५॥  
 तीयाष्टीकण्-चेत् । ७।२।१५३॥  
 तुः । ४।४।५४॥  
 तुदादेः शः । ३।४।८१॥  
 तुभ्यं मह्यं ड्या । २।१।१४॥  
 तुमर्हादिच्छायां-नः । ३।४।२१॥  
 तुमश्च मनः कामे । ३।२।१४०॥  
 तुमोर्ये भा-त् । २।२।६१॥  
 तुरायणपा-ने । ६।४।९२॥  
 तुल्यस्थाना-स्वः । १।१।१७॥  
 तुल्यार्थैस्तृतीयाष० । २।२।११६॥  
 तूदीवर्मत्या एयण् । ६।३।२१८॥  
 तूष्णीकः । ६।४।६१॥

तूष्णीकाम् । ७।३।३२॥  
 तूष्णीमा । ५।४।८७॥  
 तृणादेः सल् । ६।२।८१॥  
 तृणे जातौ । ३।२।१३२॥  
 तृतीयस्य पञ्चमे । १।३।१॥  
 तृतीया तत्कृतैः । ३।१।६५॥  
 तृतीयान्तात्-गे । १।४।१३॥  
 तृतीयायाम् । ३।१।८४॥  
 तृतीयाल्पीयसः । २।२।११२॥  
 तृतीयोक्तं वा । ३।१।५०॥  
 तृन्नुदन्ता-स्य । २।२।९०॥  
 तृन् शीलधर्मसाधुषु । ५।२।२७॥  
 तृप्तार्थपूरणा-शा । ३।१।८५॥  
 तृषिधृषिस्वपो नजिङ् । ५।२।८०॥  
 तृस्वसृ-र् । १।४।३८॥  
 तृहः श्नादीत् । ४।३।६२॥  
 तृत्रपफलभजाम् । ४।१।२५॥  
 ते कृत्याः । ५।१।४७॥  
 तेन च्छन्ने रथे । ६।२।१३१॥  
 तेन जित-त्सु । ६।४।२॥  
 तेन निर्वृत्ते च । ६।२।७१॥  
 तेन प्रोक्ते । ६।३।१८१॥  
 तेन वित्ते-णो । ७।१।१७५॥  
 तेन हस्ताद्यः । ६।४।१०१॥  
 तेर्ग्रहादिभ्यः । ४।४।३३॥  
 ते लुग्वा । ३।२।१०८॥

तेषु देये । ६।४।९७॥  
 तो वा । ७।२।१४८॥  
 तौ माङ्याक्रोशेषु । ५।२।२१॥  
 तौ मुमो-स्वौ । १।३।१४॥  
 तौ सनस्तिकि । ४।२।६४॥  
 त्यजयजप्रवचः । ४।१।११८॥  
 त्यदादिः । ३।१।१२०॥  
 त्यदादिः । ६।१।७॥  
 त्यदादेर्मयट् । ६।३।१५९॥  
 त्यदाद्यन्यसमा-च । ५।१।१५२॥  
 त्यदामेन-ते । २।१।३३॥  
 त्यादिसवदिः-ऽक् । ७।३।२९॥  
 त्यादेः सा-न । ७।४।९१॥  
 त्यादेश्च प्र-पप् । ७।३।१०॥  
 त्यादौ क्षेपे । ३।२।१२६॥  
 त्रने या । ४।४।३॥  
 त्रन्त्यस्वरादेः । ७।४।४३॥  
 त्रपुजतोः षोऽन्तश्च । ६।२।३३॥  
 त्रप् च । ७।२।९२॥  
 त्रसिगृधि-क्नुः । ५।२।३२॥  
 त्रिंशद्विंशते-र्थे । ६।४।१२९॥  
 त्रिककुद् गिरौ । ७।३।१६८॥  
 त्रिचतुरस्-दौ । २।१।१॥  
 त्रीणि त्रीण्यन्य-दि । ३।३।१७॥  
 त्रेस्तु च । ७।१।१६६॥  
 त्रेस्त्रयः । १।४।३४॥

त्रैश-चात्वारिंशम् । ६।४।१७४॥

त्वते गुणः । ३।२।५९॥

त्वमहं-कः । २।१।१२॥

त्वमौ प्र-न् । २।१।११॥

त्वे । २।४।१००॥

त्वे वा । ६।१।२६॥

थे वा । ४।१।२९॥

थो न्यु । १।४।७८॥

दंशसञ्जः शवि । ४।२।४९॥

दंशेस्तृतीयया । ५।४।७३॥

दंशेः । ५।२।९०॥

दक्षिणाकडङ्गर-यौ । ६।४।१८१॥

दक्षिणापश्चा-त्यण् । ६।३।१३॥

दक्षिणेर्मा व्याधयोगे । ७।३।१४३॥

दक्षिणोत्तराच्चातस् । ७।२।११७॥

दगुकोशल-दिः । ६।१।१०८॥

दण्डादेर्यः । ६।४।१७८॥

दण्डिहस्ति-ने । ७।४।४५॥

दत् । ४।४।१०॥

दध्न इकण् । ६।२।१४३॥

दध्यस्थि-न् । १।४।६३॥

दध्युरःस-लेः । ७।३।१७२॥

दन्तपादना-वा । २।१।१०१॥

दन्तादुन्नतात् । ७।२।४०॥

दम्भः । ४।१।२८॥

दम्भो धिष्णीप् । ४।१।१८॥

दयायास्कासः । ३।४।४७॥

दरिद्रोऽद्यतन्यां वा । ४।३।७६॥

दर्भकृष्णाग्निशर्म-त्स्ये । ६।१।१५७॥

दशनावोदै-थम् । ४।२।५४॥

दशैकादशादिकश्च । ६।४।३६॥

दश्चाङः । ५।१।७८॥

दस्ति । ३।२।८८॥

दागोऽस्वास्यप्रसार० । ३।३।५३॥

दा-द्वेसिशद-रुः । ५।२।३६॥

दाण्डाजिनि-कम् । ७।१।१७१॥

दामः संप्रदा-च । २।२।५२॥

दामन्यादेरीयः । ७।३।६७॥

दाम्नः । २।४।१०॥

दाश्वत्साह्वन्मीढ्वत् । ४।१।१५॥

दिक्पूर्वपदादनाम्नः । ६।३।२३॥

दिक्पूर्वात्तौ । ६।३।७१॥

दिक्शब्दात्तीर-र । ३।२।१४२॥

दिक्शब्दा-म्याः । ७।२।११३॥

दिगधिकं संज्ञा-दे । ३।१।९८॥

दिगादिदेहांशाद्यः । ६।३।१२४॥

दितेऽचैयण् वा । ६।१।६९॥

दिद्युद्दृज्ज-पः । ५।२।८३॥

दिव औः सौ । २।१।११७॥

दिवस् दिवः-वा । ३।२।४५॥

दिवादेः श्यः । ३।४।७२॥

दिवो घावा । ३।२।४४॥

दिशो रूढ्या-ले । ३।१।२५॥  
 दिस्योरीट् । ४।४।८९॥  
 दीङः सनि वा । ४।२।६॥  
 दीपजनबुध-वा । ३।४।६७॥  
 दीप्तिज्ञानयत्न-दः । ३।३।७८॥  
 दीय् दीङः-रे । ४।३।९३॥  
 दीर्घः । ६।४।१२७॥  
 दीर्घङ्याब्-सेः । १।४।४५॥  
 दीर्घमवोऽन्त्यम् । ४।१।१०३॥  
 दीर्घश्चिवङ्-च । ४।३।१०८॥  
 दीर्घो नाम्य-प्रः । १।४।४७॥  
 दुःखात्प्रातिकूल्ये । ७।२।१४१॥  
 दुःस्वीषतः-खल् । ५।३।१३९॥  
 दुगोरू च । ४।२।७७॥  
 दुनादिकुर्वि-ज्यः । ६।१।११८॥  
 दुर्निन्दाकृच्छ्रे । ३।१।४३॥  
 दुष्कुलादेयष्वा । ६।१।९८॥  
 दुहदिहलिह-कः । ४।३।७४॥  
 दुहेर्दुघः । ५।१।१४५॥  
 दूरादामन्त्रय-नृत् । ७।४।९९॥  
 दूरादेत्यः । ६।३।४॥  
 दृग्दृशदृक्षे । ३।२।१५१॥  
 दृतिकुक्षि-यण् । ६।३।१३०॥  
 दृतिनाथात्पशाविः । ५।१।९७॥  
 दृन्पुनर्वर्षाकारैर्भुवः । २।१।५९॥

दृ-वृग्-स्तु-जुषे-सः । ५।१।४०॥  
 दृशः क्वनिप् । ५।१।१६६॥  
 दृश्यभिवदोरात्मने । २।२।९॥  
 दृश्यर्थैश्चिन्तायाम् । २।१।३०॥  
 दृष्टे साम्नि नाम्नि । ६।२।१३३॥  
 देये त्रा च । ७।२।१३३॥  
 देर्दिगिः परोक्षायाम् । ४।१।३२॥  
 देवता । ६।२।१०१॥  
 देवतानामात्वादौ । ७।४।२८॥  
 देवतान्तात्तदर्थे । ७।१।२०॥  
 देवपथादिभ्यः । ७।१।१११॥  
 देवतातादापः । ५।१।९९॥  
 देवव्रतादीन् डिन् । ६।४।८३॥  
 देवात् तल् । ७।२।१६२॥  
 देवाद्यञ् च । ६।१।२१॥  
 देवानांप्रियः । ३।२।३४॥  
 देवाचर्मैत्री-स्थः । ३।३।६०॥  
 देविका-शिं-वाः । ७।४।३॥  
 देशे । २।३।७०॥  
 देशेऽन्तरो-नः । २।३।९१॥  
 दैर्घ्येऽनुः । ३।१।३४॥  
 दैवयज्ञिशौचिवृ-र्वा । २।४।८२॥  
 दो मः स्यादौ । २।१।३९॥  
 दोरप्राणिनः । ६।२।४९॥  
 दोरीयः । ६।३।३२॥

दोरेव प्राचः ।६।३।४०॥  
 दोसोमास्थ इः ।४।४।११॥  
 द्यावापृथिवी-यौ ।६।२।१०८॥  
 द्युतेरिः ।४।१।४१॥  
 द्युद्भयोऽद्यतन्याम् ।३।३।४४॥  
 द्युद्रोर्मः ।७।२।३७॥  
 द्युप्रागपागु-यः ।६।३।८॥  
 द्युप्रावृट्वर्षा-त् ।३।२।२७॥  
 द्रमक्रमो यङः ।५।२।४६॥  
 द्रव्यवस्मात्केकम् ।६।४।१६७॥  
 द्रीजो वा ।६।१।१३९॥  
 द्रेरजणोऽप्राच्यः ।६।१।१२३॥  
 द्रोणाद्वा ।६।१।५९॥  
 द्रोर्भव्ये ।७।१।११५॥  
 द्रोर्वयः ।६।२।४३॥  
 द्रद्यादेस्तथा ।६।१।१३२॥  
 द्वन्द्वं वा ।७।४।८२॥  
 द्वन्द्वात् प्रायः ।६।३।२०१॥  
 द्वन्द्वादीयः ।६।२।७॥  
 द्वन्द्वाल्लित् ।७।१।७४॥  
 द्वन्द्वे वा ।१।४।११॥  
 द्वयोर्विभज्ये च तरप् ।७।३।६॥  
 द्वारादेः ।७।४।६॥  
 द्विः कान-सः ।१।३।११॥  
 द्विगोः संशये च ।७।१।१४४॥  
 द्विगोः समाहारात् ।२।४।२२॥

द्विगोरनपत्ये-द्विः ।६।१।२४॥  
 द्विगोरनहोऽट् ।७।३।९९॥  
 द्विगोरीनः ।६।४।१४०॥  
 द्विगोरीनेकटौ वा ।६।४।१६४॥  
 द्वितीयतुर्य-वौ ।४।१।४२॥  
 द्वितीयया ।५।४।७८॥  
 द्वितीया खट्वा क्षेपे ।३।१।५९॥  
 द्वितीयात् स्वरादूर्ध्वम् ।७।३।४१॥  
 द्वितीयायाः काम्यः ।३।४।२३॥  
 द्वितीयाषष्ठ्यावे० ।२।२।११७॥  
 द्वित्रिचतुरः सुच् ।७।२।११०॥  
 द्वित्रिबहो-स्तात् ।६।४।१४४॥  
 द्वित्रिभ्यामयङ् वा ।७।१।१५२॥  
 द्वित्रिस्वरौ-भ्यः ।२।३।६७॥  
 द्वित्रेरायुषः ।७।३।१००॥  
 द्वित्रेर्धमत्रेधौ वा ।७।२।१०७॥  
 द्वित्रेर्मूर्ध्नौ वा ।७।३।१२७॥  
 द्वित्र्यष्टानां-हौ ।३।२।९२॥  
 द्वित्र्यादेर्याण् वा ।६।४।१४७॥  
 द्वित्वे गोयुगः ।७।१।१३४॥  
 द्वित्वेऽप्यन्ते-वा ।२।३।८१॥  
 द्वित्वे वां-नौ ।२।१।२२॥  
 द्वित्वे ह्रः ।४।१।८७॥  
 द्विदण्ड्यादिः ।७।३।७५॥  
 द्विपदाद् धर्मादन् ।७।३।१४१॥  
 द्विधातुः परोक्षाडे-धेः ।४।१।११॥



द्विषन्तपपरन्तपौ ।५।१।१०८॥  
 द्विषो वातृशः ।२।२।८४॥  
 द्विस्वरब्रह्म-देः ।६।४।१५५॥  
 द्विस्वरादणः ।६।१।१५५॥  
 द्विस्वरादनद्याः ।६।१।७१॥  
 द्विहेतो-वा ।२।२।८७॥  
 द्वीपादनुसमुद्रं ण्यः ।६।३।६८॥  
 द्वेस्तीयः ।७।१।१६५॥  
 द्वचन्तरनव-ईप् ।३।२।१०९॥  
 द्वचादेर्गुणान्-यट् ।७।१।१५३॥  
 द्व्युक्तजक्षपञ्चतः ।४।२।९३॥  
 द्व्युक्तोपान्त्यस्य-रे ।४।३।१४॥  
 द्व्येकेषु-र्वा ।६।१।१३४॥  
 द्व्येषसूत-स्य ।२।४।१०९॥  
 धनगणाल्लब्धरि ।७।१।९॥  
 धनहिरण्ये कामे ।७।१।१७९॥  
 धनादेः पत्युः ।६।१।१४॥  
 धनुर्दण्डत्सरु-हः ।५।१।९२॥  
 धनुषो धन्वम् ।७।३।१५८॥  
 धर्मशील-त् ।७।२।६५॥  
 धर्माधर्माच्चरति ।६।४।४९॥  
 धर्मार्थादिषु द्वन्द्वे ।३।१।१५९॥  
 धवाद्योगा-त् ।२।४।५९॥  
 धागः ।४।४।१५॥  
 धागस्तथोश्च ।२।१।७८॥

धातोः कण्ड्वादेर्यक् ।३।४।८॥  
 धातोः पू-च ।३।१।१॥  
 धातोः सम्बन्धे० ।५।४।४१॥  
 धातोरनेकस्वरादाम्० ।३।४।४६॥  
 धातोः रिवर्णो-ये ।२।१।५०॥  
 धात्री ।५।२।८१॥  
 धान्येभ्य ईनञ् ।७।१।७९॥  
 धाय्यापाय्यसा-से ।५।१।२५॥  
 धारीडोऽकृच्छ्रे ऽतृश् ।५।२।२५॥  
 धारेर्धर् च ।५।१।१३३॥  
 धुतस्तृतीयः ।२।१।७६॥  
 धुतां प्राक् ।१।४।६६॥  
 धुतो धुटि स्वे वा ।१।३।४८॥  
 धुड्हस्वा-थोः ।४।३।७०॥  
 धुरोऽनक्षस्य ।७।३।७७॥  
 धुरो यैयण् ।७।१।३॥  
 धूगौदितः ।४।४।३८॥  
 धूग्रीगोर्नः ।४।२।१८॥  
 धूगुसुस्तोः परस्मै ।४।४।८॥  
 धूमादेः ।६।३।४६॥  
 धृषशसः प्रगल्भे ।४।४।६६॥  
 धेनोरनञः ।६।२।१५॥  
 धेनोर्भव्यायाम् ।३।२।११८॥  
 न ।२।२।१८॥  
 नं क्ये ।१।१।२२॥

नः शिञ्च् । १।३।१९॥  
 न कचि । २।४।१०५॥  
 न कर्तरि । ३।१।८२॥  
 न कर्मणा ञिच् । ३।४।८८॥  
 न कवतेर्यङः । ४।१।४७॥  
 न किमः क्षेपे । ७।३।७०॥  
 नखमुखादनाम्नि । २।४।४०॥  
 नखादयः । ३।२।१२८॥  
 न ख्यापूग्-श्च । २।३।९०॥  
 नगरात्कुत्सादाक्ष्ये । ६।३।४९॥  
 नगरादगजे । ५।१।८७॥  
 न गृणाशुभरुचः । ३।४।१३॥  
 नगोऽप्राणिनि वा । ३।२।१२७॥  
 नग्नपलित-कञ् । ५।१।१२८॥  
 न जनवधः । ४।३।५४॥  
 नञ् । ३।१।५१॥  
 नञः क्षेत्रज्ञे-चेः । ७।४।२३॥  
 नञत् । ३।२।१२५॥  
 नञव्यया-ङः । ७।३।१२३॥  
 न ञस्वङ्गादेः । ७।४।९॥  
 नञोऽनिः शापे । ५।३।११७॥  
 नञोऽर्थात् । ७।३।१७४॥  
 नञ्तत्पुरुषात् । ७।३।७१॥  
 नञ्तत्पुरु-देः । ७।१।५७॥  
 नञ्बहो-णे । ७।३।१३५॥  
 नञ्सुदुर्भ्यः-र्वा । ७।३।१३६॥

नञ्सुव्युप-रः । ७।३।१३१॥  
 नटान्नृत्ते ज्यः । ६।३।१६५॥  
 नडकुमुदवेतस-डित् । ६।२।७४॥  
 नडशादाद् वलः । ६।२।७५॥  
 नडादिभ्य आयनण् । ६।१।५३॥  
 नडादेः कीयः । ६।२।९२॥  
 न डीड्शीङ्-दः । ४।३।२७॥  
 न णिङ्यसूद-क्षः । ५।२।४५॥  
 न तमबादि-भ्यः । ७।३।१३३॥  
 न तिकि दीर्घश्च । ४।२।५९॥  
 न दधिपयजादिः । ३।१।१४५॥  
 न दिस्योः । ४।३।६१॥  
 नदीदेशपुरां-नाम् । ३।१।१४२॥  
 नदीभिर्नाम्नि । ३।१।२७॥  
 नद्यादैरेयण् । ६।३।२॥  
 नद्यां मतुः । ६।२।७२॥  
 न द्वित्वे । ७।२।१४७॥  
 न द्विरद्भुवय-त् । ६।२।६१॥  
 न द्विस्वरा-तात् । ६।३।२९॥  
 न नाडिदेत् । १।४।२७॥  
 न नाम्नि । ७।३।१७६॥  
 न नाम्येक-ऽमः । ३।२।९॥  
 न नृपूजार्थध्वज० । ७।१।१०९॥  
 ननौ पृष्टोक्तौ-त् । ५।२।१७॥  
 नन्दादिभ्योऽनः । ५।१।५२॥  
 नन्वोर्वा । ५।२।१८॥

नपुंसकस्य शिः । १।४।५५॥  
 नपुंसकाद् वा । ७।३।८९॥  
 न पुंवन्निषेधे । ३।२।७१॥  
 न प्राग्जितीये स्वरे । ६।१।१३५॥  
 न प्रादिरप्रत्ययः । ३।३।४॥  
 न बदनं संयोगादिः । १।१।५॥  
 नमस्पुरसो-सः । २।३।१॥  
 नमोवरिवश्चित्रडो-र्ये । ३।४।३७॥  
 न यि तद्धिते । २।१।६५॥  
 न राजन्य-के । २।४।९४॥  
 न राजाचार्य-ष्णः । ७।१।३६॥  
 न रात् स्वरे । १।३।३७॥  
 नरिका मामिका । २।४।११२॥  
 नरे । ३।२।८०॥  
 न वश्चेर्गतौ । ४।१।११३॥  
 नवभ्यः-वा । १।४।१६॥  
 न वमन्तसंयोगात् । २।१।१११॥  
 नवयज्ञादयोऽ-न्ते । ६।४।७३॥  
 न वयो य् । ४।१।७३॥  
 नवा क्वणयमहसस्वनः । ५।३।४८॥  
 नवाऽखित्कृद-त्रेः । ३।२।११७॥  
 नवा गुणः-रित् । ७।४।८६॥  
 नवाणः । ६।१।१४२॥  
 नवादीन-स्य । ७।२।१६०॥  
 नवाद्यानि शतृ-पदम् । ३।३।१९॥  
 नवापः । २।४।१०६॥

नवा परोक्षायाम् । ४।४।५॥  
 नवा भावारम्भे । ४।४।७२॥  
 नवा रोगातपे । ६।३।८२॥  
 नवा शोणादेः । २।४।३१॥  
 नवा सुजर्थैः काले । २।२।९६॥  
 नवा स्वरे । २।३।१०२॥  
 न विंशत्यादि-न्तः । ३।१।६९॥  
 न वृद्धिश्चा-पे । ४।३।११॥  
 न वृद्ध्यः । ४।४।५५॥  
 नवैकस्वराणाम् । ३।२।६६॥  
 नशः शः । २।३।७८॥  
 न शसद-नः । ४।१।३०॥  
 न शात् । १।३।६२॥  
 न शिति । ४।२।२॥  
 नशेर्नेश् वाडि । ४।३।१०२॥  
 नशो धुटि । ४।४।१०९॥  
 नशो वा । २।१।७०॥  
 न श्विजागृशस्-तः । ४।३।४९॥  
 न संधिः । १।३।५२॥  
 न संधिडीय-स्कूलकि । ७।४।१११॥  
 न सप्तमीन्द्वादि० । ३।१।१६५॥  
 न सर्वादिः । १।४।१२॥  
 नसस्य । २।३।६५॥  
 न सामिवचने । ७।३।५७॥  
 न स्तं-र्थे । १।१।२३॥  
 नसूनासिका-द्रो । ३।२।९९॥

|                                     |                                |
|-------------------------------------|--------------------------------|
| न स्सः ।२।३।५९॥                     | नाम्नि ।२।४।१२॥                |
| न हाको लुपि ।४।१।४९॥                | नाम्नि ।३।१।९४॥                |
| नहाहोर्धत्तौ ।२।१।८५॥               | नाम्नि ।३।२।१६॥                |
| नाडीघटीखरी-श्च ।५।१।१२०॥            | नाम्नि ।३।२।७५॥                |
| नाडीतन्त्रीभ्यां स्वाङ्गे ।७।३।१८०॥ | नाम्नि ।३।२।१४४॥               |
| नाथः ।२।२।१०॥                       | नाम्नि ।६।४।१७२॥               |
| नानद्यतन-त्त्योः ।५।४।५॥            | नाम्नि कः ।६।२।५४॥             |
| नानावधारणे ।७।४।७४॥                 | नाम्नि पुंसि च ।५।३।१२१॥       |
| नान्यत् ।२।१।२७॥                    | नाम्नि मक्षिकादिभ्यः ।६।३।१९३॥ |
| नाप्प्रियादौ ।३।२।५३॥               | नाम्नि वा ।१।२।१०॥             |
| नाभेर्नभू-शात् ।७।१।३१॥             | नाम्नि शरदोऽकञ् ।६।३।१००॥      |
| नाभेर्नाम्नि ।७।३।१३४॥              | नाम्नो गमः-हः ।५।१।१३१॥        |
| नामन्त्रये ।२।१।९२॥                 | नाम्नो द्विती-ष्टम् ।४।१।७॥    |
| नाम नाम्नैकार्थ्ये० ।३।१।१८॥        | नाम्नो नोऽनहः ।२।१।९१॥         |
| नामरूप-यः ।७।२।१५८॥                 | नाम्नो वदः क्यप् च ।५।१।३५॥    |
| नाम सिद-ने ।१।१।२१॥                 | नाम्युत्तरपदस्य च ।३।२।१०७॥    |
| नामिनः काशे ।३।२।८७॥                | नाम्युदकात् ।६।३।१२५॥          |
| नामिनस्तयोः षः ।२।३।८॥              | नाम्यन्तस्था-पि ।२।३।१५॥       |
| नामिनोऽकलिहलः ।४।३।५१॥              | नाम्यादैरेव ने ।२।३।८६॥        |
| नामिनो गुणोऽक्छिति ।४।३।१॥          | नाम्युपान्त्य-कः ।५।१।५४॥      |
| नामिनोऽनिट् ।४।३।३३॥                | नारी-सखी-श्रू ।२।४।७६॥         |
| नामिनो लुग्वा ।१।४।६१॥              | नावः ।७।३।१०४॥                 |
| नाम्नः प्रथमै-हौ ।२।२।३१॥           | नावादेरिकः ।७।२।३॥             |
| नाम्नः प्राग्-र्वा ।७।३।१२॥         | नाशिष्यगोवत्सहले ।३।२।१४८॥     |
| नाम्ना ग्रहादिशः ।५।४।८३॥           | नासत्त्वाश्लेषे ।३।४।५७॥       |
| नाम्नि ।२।१।९५॥                     | नासानति-टम् ।७।१।१२७॥          |

नासिकोदरौ-ण्ठात् । २।४।३९॥  
 नास्तिका-कम् । ६।४।६६॥  
 निंसनिक्ष-वा । २।३।८४॥  
 निकटपाठस्य । ३।१।१४०॥  
 निकटादिषु वसति । ६।४।७७॥  
 निगवादेर्नाम्नि । ५।१।६१॥  
 निघोद्धसंघो-न्नम् । ५।३।३६॥  
 निजां शित्येत् । ४।१।५७॥  
 नित्यं जञिनोऽण् । ७।३।५८॥  
 नित्यं णः पन्थश्च । ६।४।८९॥  
 नित्यं प्रतिनाल्ये । ३।१।३७॥  
 नित्यं हस्ते-हे । ३।१।१५॥  
 नित्यदिद्-स्वः । १।४।४३॥  
 नित्यमन्वादेशे । २।१।३१॥  
 नित्यवैरस्य । ३।१।१४१॥  
 नि दीर्घः । १।४।८५॥  
 निनद्याः-ले । २।३।२०॥  
 निन्दहिंस-रात् । ५।२।६८॥  
 निन्द्यं कुत्सनै-द्यैः । ३।१।१००॥  
 निन्द्ये पाशप् । ७।३।४॥  
 निन्द्ये व्याप्या-यः । ५।१।१५९॥  
 निपुणेन चार्चयाम् । २।२।१०३॥  
 निप्राद्युजः शक्ये । ४।१।११६॥  
 निप्रेभ्यो घ्नः । २।२।१५॥  
 निमिल्यादिमेङ-के । ५।४।४६॥  
 निमूलात्कषः । ५।४।६२॥

निय आम् । १।४।५१॥  
 नियश्चानुपसर्गाद्वा । ५।३।६०॥  
 नियुक्तं दीयते । ६।४।७०॥  
 निरभेः पूल्वः । ५।३।२१॥  
 निरभ्यनोश्च-नि । २।३।५०॥  
 निर्गो देशे । ५।१।१३३॥  
 निर्दुःसुवेः-तेः । २।३।५६॥  
 निर्दुर्बहि-राम् । २।३।९॥  
 निर्दुस्सोः-म्नाम् । २।३।३१॥  
 निर्नेः स्फुरस्फुलोः । २।३।५३॥  
 निर्वाणमवाते । ४।२।७९॥  
 निर्विण्णः । २।३।८९॥  
 निर्वृत्ते । ६।४।१०५॥  
 निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादेः । ६।४।२०॥  
 नि वा । १।४।८९॥  
 निवासाच्चरणेऽण् । ६।३।६५॥  
 निवासादूरभवे-म्नि । ६।३।६९॥  
 निविशः । ३।३।२४॥  
 निविस्वन्ववात् । ४।४।८॥  
 निशाप्रदोषात् । ६।३।८३॥  
 निषेधेऽलंखल्लोः क्त्वा । ५।४।४४॥  
 निष्कादेः-स्रात् । ७।२।५७॥  
 निष्कुलान्नि-णे । ७।२।१३९॥  
 निष्कुषः । ४।४।३९॥  
 निष्प्रवाणिः । ७।३।१८१॥  
 निष्प्रा-नस्य । २।३।६६॥

निष्फले तिला-जौ । ७।२।१५४॥  
 निसस्तपेऽनासेवा० । २।३।३५॥  
 निसश्च श्रेयसः । ७।३।१२२॥  
 निसो गते । ६।३।१८॥  
 निह्वे ज्ञः । ३।३।६८॥  
 नी-दाव्-शसू-खट् । ५।२।८८॥  
 नीलपीतादकम् । ६।२।४॥  
 नीलात्प्राण्यौषध्योः । २।४।२७॥  
 नुप्रच्छः । ३।३।५४॥  
 नुजतिः । २।४।७२॥  
 नुर्वा । १।४।४८॥  
 नृतेर्यङि । २।३।१५॥  
 नृत्खनृञः-ट् । ५।१।६५॥  
 नृहेतुभ्यो-वा । ६।३।१५६॥  
 नृनः-वा । १।३।१०॥  
 नेन् सिद्धस्थे । ३।२।२९॥  
 नेमार्ध-वा । १।४।१०॥  
 नेरिनिपिट-स्य । ७।१।१२८॥  
 नेर्इमादापत-ग्यौ । २।३।७९॥  
 नेध्रुवे । ६।३।१७॥  
 नेर्नदगदपठ-णः । ५।३।२६॥  
 नेर्वुः । ५।३।७४॥  
 नैकस्वरस्य । ७।४।४४॥  
 नैकार्थ्येऽक्रिये । २।३।१२॥  
 नोऽङ्गादेः । ७।२।२९॥  
 नोतः । ३।४।१६॥

नोऽपदस्य तद्धिते । ७।४।६१॥  
 नोपसर्गात्-हा । २।२।२८॥  
 नोपान्त्यवतः । २।४।१३॥  
 नोऽप्रशानो-रे । १।३।८॥  
 नोभयोर्हेतोः । २।२।८९॥  
 नो मट् । ७।१।१५९॥  
 नोर्म्यादिभ्यः । २।१।९९॥  
 नो व्यञ्जनस्या-तः । ४।२।४५॥  
 नौद्विस्वरादिकः । ६।४।१०॥  
 नौविषेण—ध्ये । ७।१।१२॥  
 न् चोधसः । ७।१।३२॥  
 न्यग्रोधस्य-स्य । ७।४।७॥  
 न्यङ्कूद्र-यः । ४।१।११२॥  
 न्यङ्कोर्वा । ७।४।८॥  
 न्यभ्युपवेर्वाश्चोत् । ५।३।४२॥  
 न्यवाच्छापे । ५।३।५६॥  
 न्यादो नवा । ५।३।२४॥  
 न्यायादेरिकण् । ६।२।११८॥  
 न्यायार्थादनपेते । ७।१।१३॥  
 न्यायावाया-रम् । ५।३।१३४॥  
 न्युदो ग्रः । ५।३।७२॥  
 न्महतोः । १।४।८६॥  
 पक्षाच्चोपमादेः । २।४।४३॥  
 पक्षान्तिः । ७।१।८९॥  
 पक्षिमत्स्य-ति । ६।४।३१॥  
 पचिदुहेः । ३।४।८७॥

पञ्चको वर्गः । १।१।१२॥  
 पञ्चतोऽन्यादे-दः । १।४।५८॥  
 पञ्चदशद्वर्गे-वा । ६।४।१७५॥  
 पञ्चमी-आमहैव् । ३।३।८॥  
 पञ्चमी भयाद्यैः । ३।१।७३॥  
 पञ्चम्यपादाने । २।२।६९॥  
 पञ्चम्यर्थहेतौ । ५।३।११॥  
 पञ्चम्याः कृग् । ३।४।५२॥  
 पञ्चम्या त्वरायाम् । ५।४।७७॥  
 पञ्चम्या नि-स्य । ७।४।१०४॥  
 पञ्चसर्व-ये । ७।१।४१॥  
 पणपादमाषाद्यः । ६।४।१४८॥  
 पणेमर्नि । ५।३।३२॥  
 पतिराजान्त-च । ७।१।६०॥  
 पतिवत्यन्त-ण्योः । २।४।५३॥  
 पत्तिरथौ गणकेन । ३।१।७९॥  
 पत्युर्नः । २।४।४८॥  
 पत्रपूर्वादञ् । ६।३।१७७॥  
 पथ इकट् । ६।४।८८॥  
 पथः पन्थ च । ६।३।१०३॥  
 पथिन्मथिन्-सौ । १।४।७३॥  
 पथोऽकः । ६।३।९६॥  
 पथ्यतिथि-यण् । ७।१।१६॥  
 पदः पादस्याज्या-ते । ३।२।९५॥  
 पदकल्पल-कात् । ६।२।११९॥  
 पदक्रमशिक्षा-कः । ६।२।१२६॥

पदरुजविश-घञ् । ५।३।१६॥  
 पदस्य । २।१।८९॥  
 पदस्यानिति वा । ७।४।१२॥  
 पदाद्युग्-त्वे । २।१।२१॥  
 पदान्तरगम्ये वा । ३।३।९९॥  
 पदान्ताट्ट-तेः । १।३।६३॥  
 पदान्ते । २।१।६४॥  
 पदास्वैरिबा-हः । ५।१।४४॥  
 पदिकः । ६।४।१३॥  
 पदेऽन्तरेऽना-ते । २।३।९३॥  
 पदोत्तरपदेभ्य इकः । ६।२।१२५॥  
 पद्धतेः । २।४।३३॥  
 पन्थ्यादेरायनण् । ६।२।८९॥  
 पयोद्रोर्यः । ६।२।३५॥  
 परः । ७।४।११८॥  
 परःशतादिः । ३।१।७५॥  
 परजनराज्ञोऽकीयः । ६।३।३१॥  
 परतः स्त्री पुंवत्-ङ् । ३।२।४९॥  
 परदारादिभ्यो गच्छ० । ६।४।३८॥  
 परशव्याद्यलुक् च । ६।२।४०॥  
 परश्वधाद्वाण् । ६।४।६३॥  
 परस्त्रियाः प-ण्य । ६।१।४०॥  
 परस्परान्योन्येत-सि । ३।३।११॥  
 पराणि कानान-दम् । ३।३।२०॥  
 परात्मभ्यां डेः । ३।२।१७॥  
 परानोः कृगः । ३।३।१०१॥

परावरात्स्तात् । ७।२।११६॥  
 परावराधमो-र्यः । ६।३।७३॥  
 परावरे । ५।४।४५॥  
 परावेर्जेः । ३।३।२८॥  
 परिक्रयणे । २।२।६७॥  
 परिक्लेश्येन । ५।४।८०॥  
 परिखाऽस्य स्यात् । ७।१।४८॥  
 परिचाय्योप-ग्रौ । ५।१।२५॥  
 परिणामि-र्थे । ७।१।४४॥  
 परिदेवने । ५।३।६॥  
 परिनिवेः सेवः । २।३।४६॥  
 परिपथात् । ६।४।३३॥  
 परिपन्थात्तिष्ठति च । ६।४।३२॥  
 परिमाणा-ल्यात् । २।४।२३॥  
 परिमाणार्थ-चः । ५।१।१०९॥  
 परिमुखादे-वात् । ६।३।१३६॥  
 परिमुहायमा-ति । ३।३।९४॥  
 परिव्यवात् क्रियः । ३।३।२७॥  
 परेः । २।३।५२॥  
 परेः क्रमे । ५।३।७६॥  
 परेः सूचरेर्यः । ५।३।१०२॥  
 परेर्घः । ५।३।४०॥  
 परेर्घाङ्कयोगे । २।३।१०३॥  
 परेर्देविमुहश्च । ५।२।६५॥  
 परेर्द्युति । ५।३।६३॥  
 परेर्मुखपार्श्वात् । ६।४।२९॥

परेर्मृषश्च । ३।३।१०४॥  
 परे वा । ५।४।८॥  
 परोक्षा-महे । ३।३।१२॥  
 परोक्षायां नवा । ४।४।१८॥  
 परोक्षे । ५।२।१२॥  
 परोपात् । ३।३।४९॥  
 परोवरीण-णम् । ७।१।९९॥  
 पर्णकृकणात्-जात् । ६।३।६२॥  
 पपदिरिकट् । ६।४।१२॥  
 पर्यधेर्वा । ५।३।११३॥  
 पर्यनोग्रामात् । ६।३।१३८॥  
 पर्यपाङ्-म्या । ३।१।३२॥  
 पर्यपात् स्वदः । ४।२।२७॥  
 पर्यपाभ्यां वज्ये । २।२।७१॥  
 पर्यभेः सर्वोभये । ७।२।८३॥  
 पर्यायार्हणोत्पत्तौ० । ५।३।१२०॥  
 पर्वतात् । ६।३।६०॥  
 पश्चाद् वण् । ६।२।२०॥  
 पश्चादिरण् । ७।३।६६॥  
 पर्षदो ण्यः । ६।४।४७॥  
 पर्षदो ण्यणौ । ७।१।१८॥  
 पशुभ्यः-ष्ठः । ७।१।१३३॥  
 पशुव्यञ्जनानाम् । ३।१।१३२॥  
 पश्चात्पनुपदात् । ६।४।४१॥  
 पश्चादाद्यन्तौ-मः । ६।३।७५॥  
 पश्चोऽपरस्य-ति । ७।२।१२४॥



पश्यद्वागुदि-ण्डे । ३।२।३२॥  
 पाककर्णपर्ण-त् । २।४।५५॥  
 पाठे धात्वादेर्णो नः । २।३।९७॥  
 पाणिकरात् । ५।१।१२१॥  
 पाणिगृहितीति । २।४।५२॥  
 पाणिघताडघौ-नि । ५।१।८९॥  
 पाणिसमवाभ्यां सृजः । ५।१।१८॥  
 पाण्टाहृति-णश्च । ६।१।१०४॥  
 पाण्डुकम्बलादिन् । ६।२।१३२॥  
 पाण्डोड्यर्चण् । ६।१।१२९॥  
 पातेः । ४।२।१७॥  
 पात्पादस्याह-देः । ७।३।१४८॥  
 पात्राचिता-वा । ६।४।१६३॥  
 पात्रात्तौ । ६।४।१८०॥  
 पात्रेसमि-यः । ३।१।९१॥  
 पात्र्यशूद्रस्य । ३।१।१४३॥  
 पादाद्योः । १।२।८॥  
 पाद्यार्घ्ये । ७।१।२३॥  
 पानस्य भावकरणे । २।३।६९॥  
 पापहीयमानेन । ७।२।८६॥  
 पारावारं-च । ७।१।१०१॥  
 पारावारादीनः । ६।३।६॥  
 पारेमध्ये-वा । ३।१।३०॥  
 पार्श्वादिभ्यः-ङः । ५।१।१३५॥  
 पाशाच्छासा-यः । ४।२।२०॥  
 पाशादेश्च ल्यः । ६।२।२५॥

पिता मात्रा वा । ३।१।१२२॥  
 पितुर्यो वा । ६।३।१५१॥  
 पितृमातुर्व्य-रि । ६।२।६२॥  
 पित्तिथद्-घात् । ७।१।१६०॥  
 पित्रोर्दामहट् । ६।२।६३॥  
 पिबैतिदाभूस्थः-ट् । ४।३।६६॥  
 पिष्टात् । ६।२।५३॥  
 पीलासाल्वा-द्वा । ६।१।६८॥  
 पील्वादेः-के । ७।१।८७॥  
 पुंजनुषोऽनुजान्धे । ३।२।१३॥  
 पुंनामि घः । ५।३।१३०॥  
 पुंवत् कर्मधारये । ३।२।५७॥  
 पुंसः । २।३।३॥  
 पुंसो पुमन्स् । १।४।७३॥  
 पुंस्त्रियोः-स् । १।१।२९॥  
 पुच्छात् । २।४।४१॥  
 पुच्छादुत्परिव्यसने । ३।४।३९॥  
 पुत्रस्यादि-शे । १।३।३८॥  
 पुत्राद्येयौ । ६।४।१५४॥  
 पुत्रान्तात् । ६।१।१११॥  
 पुत्रे । ३।२।४०॥  
 पुत्रे वा । ३।२।३१॥  
 पुनरेकेषाम् । ४।१।१०॥  
 पुनर्भूपुत्र-ञ् । ६।१।३९॥  
 पुमनङ्-त्वे । ७।३।१७३॥  
 पुमोऽशि-रः । १।३।९॥

पुरंदरभगंदरौ ।५।१।११४॥  
 पुराणे कल्पे ।६।३।१८७॥  
 पुरायावतोर्वर्त्तमाना ।५।३।७॥  
 पुरुमगधकलिङ्ग-दण् ।६।१।११६॥  
 पुरुषः स्त्रिया ।३।१।१२६॥  
 पुरुषहृदयादसमासे ।७।१।७०॥  
 पुरुषात् कृत-यञ् ।६।२।२९॥  
 पुरुषाद्वा ।२।४।२५॥  
 पुरुषायु-वम् ।७।३।१२०॥  
 पुरुषे वा ।३।२।१३५॥  
 पुरोऽग्रतोऽग्रे सत्तेः ।५।१।१४०॥  
 पुरोडाश-टौ ।६।३।१४६॥  
 पुरो नः ।६।३।८६॥  
 पुरोऽस्तमव्ययम् ।३।१।७॥  
 पुव इत्रो दैवते ।५।२।८५॥  
 पुष्करादेर्देशे ।७।२।७०॥  
 पुष्यार्थाद्धे पुनर्वसुः ।३।१।१२९॥  
 पुस्पौ ।४।३।३॥  
 पूगादमुख्य-द्विः ।७।३।६०॥  
 पूङ्ग्लिशिभ्यो नवा ।४।४।४५॥  
 पूङ्ग्यजः शानः ।५।२।२३॥  
 पूजाचार्यक-यः ।३।३।३९॥  
 पूजास्वतेः प्राक् टात् ।७।३।७२॥  
 पूतक्रतुवृषा-च ।२।४।६०॥  
 पूदिव्यञ्चेर्ना-ने ।४।२।७२॥  
 पूरणाद् ग्रन्थ-स्य ।७।१।१७६॥

पूरणाद्वयसि ।७।२।६२॥  
 पूरणाद्धादिकः ।६।४।१५९॥  
 पूरणीभ्यस्तत्-प् ।७।३।१३०॥  
 पूर्णमासोऽण् ।७।२।५५॥  
 पूर्णाद्वा ।७।३।१६६॥  
 पूर्वकालैक-लम् ।३।१।९०॥  
 पूर्वपदस्था-गः ।२।३।६४॥  
 पूर्वपदस्य वा ।७।३।४५॥  
 पूर्वप्रथमा-ये ।७।४।७७॥  
 पूर्वमनेन-न् ।७।१।१६७॥  
 पूर्वस्याऽस्वे स्वरे० ।४।१।३७॥  
 पूर्वग्रेप्रथमे ।५।४।४९॥  
 पूर्वात् कर्तुः ।५।१।१४१॥  
 पूर्वापरप्र-रम् ।३।१।१०३॥  
 पूर्वापराध-ना ।३।१।५२॥  
 पूर्वापरा-द्युस् ।७।२।९८॥  
 पूर्वावराध-षाम् ।७।२।११५॥  
 पूर्वाह्ना-नट् ।६।३।८७॥  
 पूर्वाह्ना-कः ।६।३।१०२॥  
 पूर्वोत्तर-क्थनः ।७।३।११३॥  
 पृथिवीमध्यान्-स्य ।६।४।१५६॥  
 पृथिव्या जाऽञ् ।६।१।१८॥  
 पृथिवीसर्व-श्चाञ् ।६।१।१८॥  
 पृथुमृदु-रः ।७।४।३९॥  
 पृथादेरिमन्वा ।७।१।५८॥  
 पृषोदरादयः ।३।२।१५५॥

पृष्ठाद्यः । ६।२।२॥  
 पृभृमाहाडामिः । ४।१।५८॥  
 पैङ्गाक्षीपुत्रादेरीयः । ६।२।१०२॥  
 पैलादेः । ६।१।१४२॥  
 पोटायुवति-ति । ३।१।१११॥  
 पौत्रादि वृद्धम् । ६।१।२॥  
 प्यायः पी । ४।१।९१॥  
 प्रकारे जातीयर् । ७।२।७५॥  
 प्रकारे था । ७।२।१०२॥  
 प्रकृते मयट् । ७।३।१॥  
 प्रकृष्टे तमप् । ७।३।५॥  
 प्रघणप्रघाणौ गृहांशे । ५।३।३५॥  
 प्रचये नवा-स्य । ५।४।४३॥  
 प्रजाया अस् । ७।३।१३७॥  
 प्रज्ञादिभ्योऽण् । ७।२।१६५॥  
 प्रज्ञापणोदि-लौ । ७।२।२२॥  
 प्रज्ञाश्रद्धा-र्णः । ७।२।३३॥  
 प्रणाय्यो नि-ते । ५।१।२३॥  
 प्रतिजनादेरीनञ् । ७।१।२०॥  
 प्रतिज्ञायाम् । ३।३।६५॥  
 प्रतिना पञ्चम्याः । ७।२।८७॥  
 प्रतिपथादिकश्च । ६।४।३९॥  
 प्रतिपरोऽनो-वात् । ७।३।८७॥  
 प्रतिश्रवण-गे । ७।४।९४॥  
 प्रतेः । ४।१।९८॥  
 प्रतेः स्नातस्य सूत्रे । २।३।२१॥

प्रतेरुरसः सप्तम्याः । ७।३।८४॥  
 प्रतेश्च वधे । ४।४।९४॥  
 प्रत्यनोगृणा-रि । २।२।५७॥  
 प्रत्यन्ववात्सामलोम्नः । ७।३।८२॥  
 प्रत्यभ्यतेः क्षिपः । ३।३।१०२॥  
 प्रत्ययः-देः । ७।४।११५॥  
 प्रत्ययस्य । ७।४।१०८॥  
 प्रत्यये । २।३।६॥  
 प्रत्यये च । १।३।२॥  
 प्रत्याङः श्रु-नि । २।२।५६॥  
 प्रथमाद-छः । १।३।४॥  
 प्रथमोक्तं प्राक् । ३।१।१४८॥  
 प्रभवति । ६।३।१५७॥  
 प्रभूतादि-ति । ६।४।४३॥  
 प्रभृत्यन्यार्थ-रैः । २।२।७५॥  
 प्रमाणसमासत्त्योः । ५।४।७६॥  
 प्रमाणान्मात्रदू । ७।१।१४०॥  
 प्रमाणीसंख्याङ्कः । ७।३।१२८॥  
 प्रयोक्तृव्यापारे णिग् । ३।४।२०॥  
 प्रयोजनम् । ६।४।११७॥  
 प्रलम्भे गृधिवञ्चैः । ३।३।८९॥  
 प्रवचनीयादयः । ५।१।८॥  
 प्रशस्यस्य श्रः । ७।४।३४॥  
 प्रश्नाख्याने वेञ् । ५।३।११९॥  
 प्रश्नार्चाविचा-रः । ७।४।१०२॥  
 प्रश्ने च प्रतिपदम् । ७।४।९८॥

प्रष्ठोऽग्रगे ।२।३।३२॥  
 प्रसमः स्त्यः स्तीः ।४।१।९५॥  
 प्रसितोत्सु-द्धैः ।२।२।४९॥  
 प्रस्तारसंस्थान-ति ।६।४।७९॥  
 प्रस्थपुरवहान्त-त् ।६।३।४३॥  
 प्रस्यैषै-ण ।१।२।१४॥  
 प्रहरणम् ।६।४।६२॥  
 प्रहरणात् ।३।१।१५४॥  
 प्रहरणात् क्रीडायां० ।६।२।११६॥  
 प्राकारस्य व्यञ्जने ।३।२।१९॥  
 प्राक्काले ।५।४।४७॥  
 प्राक् त्वादगडुलादेः ।७।१।५६॥  
 प्राग्नित्यात्कप् ।७।३।२८॥  
 प्राग्निनात् ।२।१।४८॥  
 प्राग्ग्रामाणाम् ।७।४।१७॥  
 प्राग्जितादण् ।६।१।१३॥  
 प्राग्देशे ।६।१।१०॥  
 प्राग्भरते-जः ।६।१।१२९॥  
 प्राग्वत् ।३।३।७४॥  
 प्राग्वतः स्नञ् ।६।१।२५॥  
 प्राचां नगरस्य ।७।४।२६॥  
 प्राच्च यमयसः ।५।२।५२॥  
 प्राच्येजोऽतौत्व० ।६।१।१४३॥  
 प्राज्ज्ञश्च ।५।१।७९॥  
 प्राणिजाति-दञ् ।७।१।६६॥  
 प्राणितूर्याङ्गाणाम् ।३।१।१३७॥

प्राणिन उपमानात् ।७।३।१११॥  
 प्राणिनि भूते ।६।४।११२॥  
 प्राणिस्थादस्वा-त् ।७।२।६०॥  
 प्राण्यङ्गरथखल-द्यः ।७।१।३७॥  
 प्राण्यङ्गादातो लः ।७।२।२०॥  
 प्राण्यौषधिवृ-च ।६।२।३१॥  
 प्रात्तश्च मो वा ।४।१।९६॥  
 प्रात्तुम्पतेर्गवि ।४।४।९७॥  
 प्रात् पुराणे नश्च ।७।२।१६१॥  
 प्रात्यवपरि-न्तैः ।३।१।४७॥  
 प्रात्सूजोरिन् ।५।२।७१॥  
 प्रात् सुद्रुस्तोः ।५।३।६७॥  
 प्रादुरुपसर्गा-स्तेः ।२।३।५८॥  
 प्रादागस्त आ-क्ते ।४।४।७॥  
 प्राद्रश्मितुलासूत्रे ।५।३।५१॥  
 प्राद्वहः ।३।३।१०३॥  
 प्राद्वाहणस्यैये ।७।४।२१॥  
 प्राध्वं बन्धे ।३।१।१६॥  
 प्राप्तापन्नौ-च्च ।३।१।६३॥  
 प्रायोऽतोर्द्वय-वट् ।७।२।१५५॥  
 प्रायोऽन्नम-म्नि ।७।१।१९४॥  
 प्रायो बहुस्वरादि० ।६।३।१४३॥  
 प्रायोऽव्ययस्य ।७।४।६५॥  
 प्राल्लिप्सायाम् ।५।३।५७॥  
 प्रावृष इकः ।६।३।९९॥  
 प्रावृष एण्यः ।६।३।९२॥

प्रियः । ३।१।१५७॥  
 प्रियवशाद्वदः । ५।१।१०७॥  
 प्रियसुखं-छे । ७।४।८७॥  
 प्रियसुखादा-ल्ये । ७।२।१४०॥  
 प्रियस्थिर-न्दम् । ७।४।३८॥  
 प्रसृत्वोऽकः साधौ । ५।१।६९॥  
 प्रेक्षादेरिन् । ६।२।८०॥  
 प्रैषानुज्ञावसरे-म्यौ । ५।४।२९॥  
 प्रोक्तात् । ६।२।१२९॥  
 प्रोपादारम्भे । ३।३।५१॥  
 प्रोपोत्सं-णे । ७।४।७८॥  
 प्रोष्ठभद्राज्जाते । ७।४।१३॥  
 प्रुक्षादेरिन् । ६।२।५९॥  
 पुताद्वा । १।३।२९॥  
 पुतोऽनितौ । १।२।३२॥  
 पुप् चादा-देः । ७।४।८१॥  
 प्वादेर्ह्रस्वः । ४।२।१०५॥  
 फलबर्हचिनः । ७।२।१३॥  
 फलस्य जातौ । ३।१।१३५॥  
 फले । ६।२।५८॥  
 फल्गुनीप्रो-भे । २।२।१२३॥  
 फल्गुन्याष्टः । ६।३।१०६॥  
 फेनोष्मबाष्प-ने । ३।४।३३॥  
 बन्धे घञि नवा । ३।२।२३॥  
 बन्धेर्नाम्नि । ५।४।६७॥  
 बन्धौ बहुव्रीहौ । २।४।८४॥

बलवातदन्त-लः । ७।२।१९॥  
 बलवातादूलः । ७।१।९१॥  
 बलादेर्यः । ६।२।८६॥  
 बलिस्थूले दृढः । ४।४।६९॥  
 बष्कयादसमासे । ६।१।२०॥  
 बहिषष्टीकण् च । ६।१।१६॥  
 बहुगणं भेदे । १।१।४०॥  
 बहुलं लुप् । ३।४।१४॥  
 बहुलम् । ५।१।२१॥  
 बहुलमन्येभ्यः । ६।३।१०९॥  
 बहुलानुराधा-लुप् । ६।३।१०७॥  
 बहुविध्वरु-दः । ५।१।१२४॥  
 बहुविषयेभ्यः । ६।३।४५॥  
 बहुव्रीहेः-टः । ७।३।१२५॥  
 बहुष्वस्त्रियाम् । ६।१।१२४॥  
 बहुष्वेरीः । २।१।४९॥  
 बहुस्वरपूर्वादिकः । ६।४।६८॥  
 बहूनां प्रश्ने वा । ७।३।५४॥  
 बहोर्दे । ७।३।७३॥  
 बहोर्णीष्टि भूय् । ७।४।४०॥  
 बहोर्धासन्ने । ७।२।१२२॥  
 बह्वल्पार्था-प्तास् । ७।२।१५०॥  
 बाढान्तिक-दौ । ७।४।३७॥  
 बाह्वदिर्बलात् । ७।२।६६॥  
 बाह्वन्तक-म्नि । २।४।७४॥  
 बाह्वादिभ्यो गोत्रे । ६।१।३२॥

बिडबिरी-च । ७।१।१२९॥  
 बिदादेर्वृद्धे । ६।१।४१॥  
 बिभेतेभीष् च । ३।३।९२॥  
 बिल्वकीयादेरीयस्य । २।४।९३॥  
 ब्रह्मणः । ७।४।५७॥  
 ब्रह्मणस्त्वः । ७।१।७७॥  
 ब्रह्मणो वदः । ५।१।१५६॥  
 ब्रह्मभूणवृ-प् । ५।१।१६१॥  
 ब्रह्महस्ति-सः । ७।३।८३॥  
 ब्रह्मादिभ्यः । ५।१।८५॥  
 ब्राह्मणमाण-द्यः । ६।२।१६॥  
 ब्राह्मणाच्छंसी । ३।२।११॥  
 ब्राह्मणाद्वा । ६।१।३५॥  
 ब्राह्मणान्नामि । ७।१।१८४॥  
 ब्रुवः । ५।१।५१॥  
 ब्रूगः पञ्चानां-श्च । ४।२।११८॥  
 ब्रूतः परादिः । ४।३।६३॥  
 भक्ताणः । ७।१।१७॥  
 भक्तौदनाद्वाणिकट् । ६।४।७२॥  
 भक्षेर्हिंसायाम् । २।२।६॥  
 भक्ष्यं हितमस्मै । ६।४।६९॥  
 भजति । ६।३।२०४॥  
 भजो विण् । ५।१।१४६॥  
 भञ्जिभासिमिदो घुरः । ५।२।७४॥  
 भञ्जेर्जौ वा । ४।२।४८॥  
 भद्रोष्णात्करणे । ३।२।११६॥

भर्गात् त्रैगर्ते । ६।१।५१॥  
 भर्तुः तुल्यस्वरम् । ३।१।१६२॥  
 भर्तुसन्ध्यादेरण् । ६।३।८९॥  
 भर्त्सने पर्यायेण । ७।४।९०॥  
 भवतेः सिज्जुलिपि । ४।३।१२॥  
 भवतोरिकणीयसौ । ६।३।३०॥  
 भवत्वायु-र्यात् । ७।२।९१॥  
 भविष्यन्ती । ५।३।४॥  
 भविष्यन्ती-हे । ३।३।१५॥  
 भवे । ६।३।१२३॥  
 भव्यगेयजन्य-नवा । ५।१।७॥  
 भस्त्रादेरिकट् । ६।४।२४॥  
 भागवित्तिता-वा । ६।१।१०५॥  
 भागाद्येकौ । ६।४।१६०॥  
 भागिनि च-भिः । २।२।३७॥  
 भागेऽष्टमाञ्जः । ७।३।२४॥  
 भाजगोण-शे । २।४।३०॥  
 भाण्डात्समाचितौ । ३।४।४०॥  
 भादितो वा । २।३।२७॥  
 भात्रेतुः । ७।३।१३३॥  
 भावकर्मणोः । ३।४।६८॥  
 भावघञो-णः । ६।१।११४॥  
 भाववचनाः । ५।३।१५॥  
 भावाकर्त्रोः । ५।३।१८॥  
 भावादिमः । ६।४।२१॥  
 भावे । ५।३।१२२॥

भावे चाशि-खः । ५।१।१३०॥

भावे त्वतल् । ७।१।५५॥

भावेऽनुपसर्गात् । ५।३।४५॥

भिक्षादेः । ६।२।१०॥

भिक्षा-सेनाऽऽदायात् । ५।१।१३९॥

भित्तं शकलम् । ४।२।८१॥

भिदादयः । ५।३।१०८॥

भियो नवा । ४।२।९९॥

भियो रुरुकलुकम् । ५।२।७६॥

भिस एस् । १।४।२॥

भीमादयोऽपादाने । ५।१।१४॥

भीरुष्ठानादयः । २।३।३३॥

भीषिभूषि-भ्यः । ५।३।१०९॥

भीहीभृहोस्तिवत् । ३।४।५०॥

भुजन्युब्जं-गे । ४।१।१२०॥

भुजिपत्या-ने । ५।३।१२८॥

भुजो-भक्ष्ये । ४।१।११७॥

भुनजोऽत्राणे । ३।३।३७॥

भुवो वः-न्योः । ४।२।४३॥

भुवोऽवज्ञाने वा । ५।३।६४॥

भूङ्ः प्राप्नो णिङ् । ३।४।१९॥

भूजेः ण्युक् । ५।२।३०॥

भूतपूर्वे प्चरट् । ७।२।७८॥

भूतवच्चाशंस्ये वा । ५।४।२॥

भूते । ५।४।१०॥

भूयःसंभूयो-च । ६।१।३६॥

भूर्लुक् चवर्णस्य । ७।४।४१॥

भूश्रयदोऽल् । ५।३।२३॥

भूषाक्रोधार्थ-नः । ५।२।४२॥

भूषादरक्षे-त् । ३।१।४॥

भूषार्थसन्-क्यौ । ३।४।९३॥

भूस्वपोरदुतौ । ४।१।७०॥

भृगो नाम्नि । ५।३।९८॥

भृगोऽसंज्ञायाम् । ५।१।४५॥

भृग्वङ्गिरस्कु-त्रेः । ६।१।१२८॥

भृजो भर्ज् । ४।४।६॥

भृतिप्रत्य-कः । ७।३।१४०॥

भृतौ कर्मणः । ५।१।१०४॥

भृवृजित्-म्नि । ५।१।११२॥

भृशाभीक्ष्ण्या-देः । ७।४।७३॥

भृशाभीक्ष्ण्ये हि-दि । ५।४।४२॥

भेषजादिभ्यष्टचण् । ७।२।१६४॥

भोगवद्भौरिमतोर्ना० । ३।२।६५॥

भोगोत्तर-नः । ७।१।४०॥

भोजसूतयोः-त्योः । २।४।८१॥

भौरिक्येषु-क्तम् । ६।२।६८॥

भ्राजभासभाष-नवा । ४।२।३६॥

भ्राज्यलंकृत्-ष्णुः । ५।२।२८॥

भ्रातुर्व्यः । ६।१।८८॥

भ्रातुः स्तुतौ । ७।३।१७९॥

भ्रातुष्पुत्र-यः । २।३।१४॥

भ्रातृपुत्राःस्वसृ-भिः । ३।१।१२१॥

भ्राष्ट्रग्रेरिन्धे । ३।२।११४॥  
 भ्रासभ्लासभ्रम-र्वा । ३।४।७३॥  
 भ्रुवोऽच्च-ट्योः । २।४।१०१॥  
 भ्रुवो भ्रुव् च । ६।१।७६॥  
 भ्रूभ्रोः । २।१।५३॥  
 भ्वादिभ्यो वा । ५।३।११५॥  
 भ्वादेर्दिर्घः । २।१।८३॥  
 भ्वादेर्नामिनो-ने । २।१।६३॥  
 मड्डुकझर्झराद्वाण् । ६।४।५८॥  
 मण्यादिभ्यः । ७।२।४४॥  
 मतमदस्य करणे । ७।१।१४॥  
 मत्स्यस्य यः । २।४।८७॥  
 मथलपः । ५।२।५३॥  
 मद्रभद्राद्वपने । ७।२।१४४॥  
 मद्रादञ् । ६।३।२४॥  
 मधुबभ्रोर्बाह्व-के । ६।१।४३॥  
 मध्य उत्क-रः । ६।३।७७॥  
 मध्याद्दिनण्येया० । ६।३।१२६॥  
 मध्यान्ताद्गुरौ । ३।२।२१॥  
 मध्यान्मः । ६।३।७६॥  
 मध्ये पदे नि-ने । ३।१।१११॥  
 मध्वादिभ्यो रः । ७।२।२६॥  
 मध्वादेः । ६।२।७३॥  
 मनः । २।४।१४॥  
 मनयवलपरे हे । १।३।१५॥  
 मनसश्चाज्ञायिनि । ३।२।१५॥

मनुर्नभो-ति । १।१।२४॥  
 मनोरौ च वा । २।४।६१॥  
 मनोर्याणौ षश्चान्तः । ६।१।९४॥  
 मन्तस्य युवा-योः । २।१।१०॥  
 मन्थौदनसक्तु-वा । ३।२।१०६॥  
 मन्दाल्पाच्च मेघा० । ७।३।१३८॥  
 मन्माब्जादेर्नाम्नि । ७।२।६७॥  
 मन्यस्यानावा-ने । २।२।६४॥  
 मन्याणिन् । ५।१।११६॥  
 मन्वन्क्वनि-चित् । ५।१।१४७॥  
 मयूरव्यंसकेत्यादयः । ३।१।११६॥  
 मरुत्पर्वणस्तः । ७।२।१५॥  
 मर्तादिभ्यो यः । ७।२।१५९॥  
 मलादीमसश्च । ७।२।१४॥  
 मव्यविश्रिवि-न । ४।१।१०९॥  
 मव्यस्याः । ४।२।११३॥  
 मस्जेः सः । ४।४।११०॥  
 महतः-डाः । ३।२।६८॥  
 महत्सर्वादिकण् । ७।१।४२॥  
 महाकुलाद्वाजीनञौ । ६।१।९९॥  
 महाराजप्रो-कण् । ६।२।११०॥  
 महाराजादिकण् । ६।३।२०५॥  
 महेन्द्राद्वा । ६।२।१०६॥  
 मांसस्यानङ्-वा । ३।२।१४१॥  
 माड्यद्यतनी । ५।४।३९॥  
 माणवः कुत्सायाम् । ६।१।९५॥



मातमातृमातृके वा ।२।४।८५॥  
 मातरपितरं वा ।३।२।४७॥  
 मातुर्मातः-न्त्ये ।१।४।४०॥  
 मातुलाचार्यो-द्वा ।२।४।६३॥  
 मातृपितुः स्वसुः ।२।३।१८॥  
 मातृपित्रादेर्देयणीयणौ ।६।१।१०॥  
 मात्रट् ।७।१।१४५॥  
 माथोत्तरपद-ति ।६।४।४०॥  
 मादुवर्णोऽनु ।२।१।४७॥  
 मानम् ।६।४।१६९॥  
 मानसंव-म्नि ।७।४।१९॥  
 मानात् क्रीतवत् ।६।२।४४॥  
 मानादसंशये लुप् ।७।१।१४३॥  
 माने ।५।३।८१॥  
 माने कश्च ।७।३।२६॥  
 मारणतोषण-ज्ञश्च ।४।१।३०॥  
 मालायाः क्षेपे ।७।२।६४॥  
 मालेषीके-ते ।२।४।१०२॥  
 मावर्णान्तो-वः ।२।१।९४॥  
 माशब्द इत्यादिभ्यः ।६।४।४४॥  
 मासनिशा-वा ।२।१।१००॥  
 मासवर्णभ्रात्रनुपूर्वम् ।३।१।१६१॥  
 मासाद्वयसि यः ।६।४।११३॥  
 मिग्मीगोऽखलचलि ।४।२।८॥  
 मिथ्याकृगोऽभ्यासे ।३।३।९३॥

मिदः श्ये ।४।३।५॥  
 मिमीमादामित्स्वरस्य ।४।१।२०॥  
 मुचादितृफट्फ-शे ।४।४।९९॥  
 मुरतोऽनुनासिकस्य ।४।१।५१॥  
 मुहद्रुहण्णुहण्हो वा ।२।१।८४॥  
 मूर्तिनिचिताग्रे घनः ।५।३।३७॥  
 मूलविभुजादयः ।५।१।१४४॥  
 मूल्यैः क्रीते ।६।४।१५०॥  
 मृगक्षीरादिषु वा ।३।२।६२॥  
 मृगयेच्छा-याच्चा० ।५।३।१०१॥  
 मृजोऽस्य वृद्धिः ।४।३।४२॥  
 मृदस्तिकः ।७।२।१७१॥  
 मृषः क्षान्तौ ।४।३।२८॥  
 मेघर्तिभया-खः ।५।१।१०६॥  
 मेडो वा मित् ।४।३।८८॥  
 मेघारथान्नवेरः ।७।२।४१॥  
 मोऽकमियमिरमि० ।४।३।५५॥  
 मो नो म्वोश्च ।२।१।६७॥  
 मोर्वा ।२।१।९॥  
 मोऽवर्णस्य ।२।१।४५॥  
 मौदादिभ्यः ।६।३।१८२॥  
 म्नां धुङ्-न्ते ।१।३।३९॥  
 प्रियतेरद्यत-च ।३।३।४२॥  
 य एच्चातः ।५।१।२८॥  
 यः ।६।३।१७६॥

|                                |                                |
|--------------------------------|--------------------------------|
| यः । ७।१।१॥                    | यद्भावो भावलक्षणम् । २।२।१०६॥  |
| यः सप्तम्याः । ४।२।१२२॥        | यद्भेदैस्तद्वदस्या । २।२।४६॥   |
| यङ्गुरुस्तोर्बहुलम् । ४।३।६४॥  | यद्वीक्ष्ये राधीक्षी । २।२।५८॥ |
| यजसृज-षः । २।१।८७॥             | यपि । ४।२।५६॥                  |
| यजादिवचेः किति । ४।१।७९॥       | यपि चादो जग्ध् । ४।४।१६॥       |
| यजादिवश्-यृत् । ४।१।७२॥        | यबक्डिति । ४।२।७॥              |
| यजिजपिदंशि-कः । ५।२।४७॥        | यमः सूचने । ४।३।३९॥            |
| यजिस्वपिरक्षि-नः । ५।३।८५॥     | यमः स्वीकारे । ३।३।५९॥         |
| यजेर्यज्ञाङ्गे । ४।१।११४॥      | यममदगदोऽनुपस० । ५।१।३०॥        |
| यज्ञादियः । ६।४।१७९॥           | यमिरमिनमिगमि० । ४।२।५५॥        |
| यज्ञानां दक्षिणायाम् । ६।४।२६॥ | यमिरमिनम्या-श्च । ४।४।८६॥      |
| यज्ञे ग्रहः । ५।३।६५॥          | यमोऽपरिवे-च । ४।२।२९॥          |
| यज्ञे व्यः । ६।३।१३४॥          | यरलवा अन्तस्थाः । १।१।१५॥      |
| यज्जोऽश्या-देः । ६।१।१२६॥      | यवयवक-द्यः । ७।१।८१॥           |
| यजिजः । ६।१।५४॥                | यवयवनार-त्त्वे । २।४।६५॥       |
| यजो डायन् च वा । २।४।६७॥       | यश्चोरसः । ६।३।२१२॥            |
| यतः प्रतिनि-ना । २।२।७२॥       | यस्कादेगोत्रि । ६।१।१२५॥       |
| यत्कर्मस्पर्शात्-तः । ५।३।१२५॥ | यस्वरे पा-टि । २।१।१०२॥        |
| यत्तत्किमः-र्वा । ७।१।१५०॥     | याचितापमित्यात्कण् । ६।४।२२॥   |
| यत्तत्किमन्यात् । ७।३।५३॥      | याजकादिभिः । ३।१।७८॥           |
| यत्तदेतदो डावादिः । ७।१।१४९॥   | याज्ञिकौक्थिक-कम् । ६।२।१२२॥   |
| यथाकथाचाणः । ६।४।१००॥          | याज्या दानर्चि । ५।१।२६॥       |
| यथाकामा-नि । ७।१।१००॥          | याम्युसोरियमियुसौ । ४।२।१२३॥   |
| यथातथादीर्घ्योत्तरे । ५।४।५१॥  | यायावरः । ५।२।८२॥              |
| यथाऽथा । ३।१।४१॥               | यावतो विन्दजीवः । ५।४।५५॥      |
| यथामुख-स्मिन् । ७।१।९३॥        | यावदियत्त्वे । ३।१।३१॥         |

यावादिभ्यः कः । ७।३।१५॥  
 यिः सन्वेर्ष्यः । २।१।११॥  
 यि लुक् । ४।२।१०२॥  
 युजश्चक्रुश्चो नो ङः । २।१।७१॥  
 युजभुजभज-नः । ५।२।५०॥  
 युजादेर्नवा । ३।४।१८॥  
 युज्रोऽसमासे । १।४।७१॥  
 युदुद्रोः । ५।३।५९॥  
 युपूदूर्ध्वञ् । ५।३।५४॥  
 युवणवृष्टवश-हः । ५।३।२८॥  
 युववृद्धं कुत्सार्चं वा । ६।१।५॥  
 युवा खलति-नैः । ३।१।११३॥  
 युवादेरण् । ७।१।६७॥  
 युष्मदस्मदोः । २।१।६॥  
 युष्मदस्मदो-देः । ७।३।३०॥  
 यून्स्तिः । २।४।७७॥  
 यूनि लुप् । ६।१।१३७॥  
 यूनोऽके । ७।४।५०॥  
 यूयं वयं जसा । २।१।१३॥  
 ये नवा । ४।२।६२॥  
 येयौ च लुक् च । ७।१।१६४॥  
 येऽवर्णे । ३।२।१००॥  
 यैयकजावसमासे वा । ६।१।९७॥  
 योगकर्मभ्यां योक्जौ । ६।४।९५॥  
 योग्यतावीप्सा-श्ये । ३।१।४०॥

योद्धप्रयोजनाद्युद्धे । ६।२।११३॥  
 योऽनेकस्वरस्य । २।१।५६॥  
 योपान्त्या-नञ् । ७।१।७०॥  
 योऽशिति । ४।३।८०॥  
 यौधेयादेरञ् । ७।३।६५॥  
 व्यक्ये । १।२।२५॥  
 य्वः पदान्तात्-दौत् । ७।४।५॥  
 य्वत् सकृत् । ४।१।१०२॥  
 य्ववर्णाल्लघ्वादेः । ७।१।६९॥  
 य्वोः प्वय्व्यञ्जने० । ४।४।१२१॥  
 रः कखप-पौ । १।३।५॥  
 रः पदान्ते । १।३।५३॥  
 रक्तानित्यवर्णयोः । ७।३।१८॥  
 रक्षदुञ्छतोः । ६।४।३०॥  
 रङ्गोः प्राणिनि वा । ६।३।१५॥  
 रजःफलेमलाद् ग्रहः । ५।१।९८॥  
 रथवदे । ३।२।१३१॥  
 रथात्सादेश्च वोद्धृजे । ६।३।१७५॥  
 रदादमूर्च्छम-च । ४।२।६९॥  
 रघ इटि तु-व । ४।४।१०१॥  
 रभलभशक-मिः । ४।१।२१॥  
 रभोऽपरोक्षाशवि । ४।४।१०२॥  
 रम्यादिभ्यः-रि । ५।३।१२६॥  
 रष्ववर्णान्नो-रे । २।३।६३॥  
 रहस्यमर्या-गे । ७।४।८३॥

रागाट्टो रक्ते ।६।२।१॥  
 राजघः ।५।१।८८॥  
 राजदन्तादिषु ।३।१।१४९॥  
 राजन्यादिभ्योऽकञ् ।६।२।६६॥  
 राजन्वान् सुराङ्गि ।२।१।९८॥  
 राजन्सखेः ।७।३।१०६॥  
 रात्रौ वसो-घ ।५।२।६॥  
 रात्र्यहःसं-र्वा ।६।४।११०॥  
 रात्सः ।२।१।९०॥  
 रादेफः ।७।२।१५७॥  
 राधेर्वधे ।४।१।२२॥  
 राल्लुक ।४।१।११०॥  
 राष्ट्रक्षत्रियात्-रञ् ।३।१।११४॥  
 राष्ट्रारख्याद् ब्रह्मणः ।७।३।१-७॥  
 राष्ट्रादियः ।६।३।३॥  
 राष्ट्रेऽनङ्गादिभ्यः ।६।२।६५॥  
 राष्ट्रेभ्यः ।६।३।४४॥  
 रिः शक्याशीर्ये ।४।३।११०॥  
 रिति ।३।२।५८॥  
 रिरिष्टात्-ता ।२।२।८२॥  
 रिरौ च लुपि ।४।१।५६॥  
 रुचिकृष्य-षु ।२।२।५५॥  
 रुच्याव्यथ्यवास्तव्यम् ।५।१।६॥  
 रुजार्थस्या-रि ।२।२।१३॥  
 रुत्पञ्चकाच्छिदयः ।४।४।८८॥  
 रुदविदमुष-च ।४।३।३२॥

रुधः ।३।४।८९॥  
 रुधां स्वराच्छनो-च ।३।४।८२॥  
 रुहः पः ।४।२।१४॥  
 रूढावन्तःपुरादिकः ।६।३।१४०॥  
 रूपात्प्रशस्ताहतात् ।७।२।५४॥  
 रूष्योत्तरपदारण्याणः ।६।३।२२॥  
 रेवतरोहिणाद् भे ।२।४।२६॥  
 रेवत्यादेरिकण् ।६।१।८६॥  
 रेवतिकादेरीयः ।६।३।१७०॥  
 रोः काम्ये ।२।३।७॥  
 रोगात्प्रतीकारे ।७।२।८२॥  
 रोपान्त्यात् ।६।३।४२॥  
 रोमन्थाद् व्याप्या-णे ।३।४।३२॥  
 रोरूपसर्गात् ।५।३।२२॥  
 रो रे लुग्-तः ।१।३।४१॥  
 रोर्षः ।१।३।२६॥  
 रो लुप्यरि ।२।१।७५॥  
 रोऽश्मादेः ।६।२।७९॥  
 र्नाम्यन्तात्-ढः ।२।१।८०॥  
 र्लो वा ।१।४।६७॥  
 र्हादर्ह-स्व-वा ।१।३।३१॥  
 लक्षणवीप्स्ये-ना ।२।२।३६॥  
 लक्षणेनाभि-ख्ये ।३।१।३३॥  
 लक्ष्म्या अनः ।७।२।३२॥  
 लघोर्दीर्घोऽस्वरादेः ।४।१।६४॥  
 लघोरूपान्त्यस्य ।४।३।४॥

लघोर्यपि ।४।३।८६॥  
 लघ्वक्षरास-कम् ।३।१।१६०॥  
 लङ्गिकम्प्यो-त्योः ।४।२।४७॥  
 लभः ।४।४।१०३॥  
 ललाटवात-कः ।५।१।१२५॥  
 लवणादः ।६।४।६॥  
 लषपतपदः ।५।२।४१॥  
 लाक्षारोचनादिकण् ।६।२।२॥  
 लिप्स्यसिद्धौ ।५।३।१०॥  
 लिम्पविन्दः ।५।१।६०॥  
 लियो नोऽन्तः-वे ।४।२।१५॥  
 लि लौ ।१।३।६५॥  
 लिहादिभ्यः ।५।१।५०॥  
 लीड्लिनो-पि ।३।३।९०॥  
 लीड्लिनोर्वा ।४।२।९॥  
 लुक् ।१।३।१३॥  
 लुक्वाजिनान्तात् ।७।३।३९॥  
 लुक्पुत्तरपदस्य कप् ।७।३।३८॥  
 लुगस्यादेत्यपदे ।२।१।११३॥  
 लुगातोऽनापः ।२।१।१०७॥  
 लुप्य्यृल्लेनत् ।७।४।११२॥  
 लुबञ्चेः ।७।२।१२३॥  
 लुब् बहुलं पुष्पमूले ।६।२।५७॥  
 लुब्बाध्यायानुवाके ।७।२।७२॥  
 लुभ्यञ्चेर्विमोहार्चे ।४।४।४४॥  
 लूधूसू-तः ।५।२।८७॥

लूनविधातात् पशौ ।७।३।२१॥  
 लोकपृणम-त्नम् ।३।२।११३॥  
 लोकज्ञाते-र्ये ।७।४।८४॥  
 लोकसर्व-ते ।६।४।१५७॥  
 लोकात् ।१।१।३॥  
 लोमपिच्छादेः शैलम् ।७।२।२८॥  
 लोम्नोऽपत्येषु ।६।१।२३॥  
 लो लः ।४।२।१६॥  
 लोहितादिश-त् ।२।४।६८॥  
 लोहितान्मणौ ।७।३।१७॥  
 वंशादेर्भा-त्सु ।६।४।१६६॥  
 वंश्यज्यायो-वा ।६।१।३॥  
 वंश्येन पूर्वार्थे ।३।१।२९॥  
 वचोऽशब्दनाम्नि ।४।१।११९॥  
 वञ्चस्रंसध्वंस-नी ।४।१।५०॥  
 वटकादिन् ।७।१।१९६॥  
 वतण्डात् ।६।१।४५॥  
 वत्तस्याम् ।१।१।३४॥  
 वत्सशालाद्वा ।६।३।१११॥  
 वत्सोक्षाश्च-पित् ।७।३।५१॥  
 वदव्रजलः ।४।३।४८॥  
 वदोऽपात् ।३।३।९७॥  
 वन्याङ्गपञ्चमस्य ।४।२।६५॥  
 वमि वा ।२।३।८३॥  
 वम्यविति वा ।४।२।८७॥  
 वयःशक्तिशीले ।५।२।२४॥

वयसि दन्त-तृ । ७।३।१५१॥  
 वयस्यनन्त्ये । २।४।२१॥  
 वराहादेः कण् । ६।२।९५॥  
 वरुणेन्द्र-न्तः । २।४।६२॥  
 वर्गान्तात् । ६।३।१२८॥  
 वर्चस्कादिष्व-यः । ३।२।४८॥  
 वर्णदृढा-वा । ७।१।५९॥  
 वर्णाद्-णि । ७।२।६९॥  
 वर्णावकञ् । ६।३।२१॥  
 वर्णाव्ययात्-रः । ७।२।१५६॥  
 वर्तमाना-महे । ३।३।६॥  
 वर्तेवृत्तं ग्रन्थे । ४।४।५५॥  
 वर्त्स्यति गम्यादिः । ५।३।११॥  
 वर्त्स्यति-ले । ५।४।२५॥  
 वर्मणाऽचक्रात् । ६।१।३३॥  
 वर्योपसर्या-ये । ५।१।३२॥  
 वर्षक्षर-जे । ३।२।२६॥  
 वर्षविघ्नेऽवाद् ग्रहः । ५।३।५०॥  
 वर्षाकालेभ्यः । ६।३।८०॥  
 वर्षादयः क्लीबे । ५।३।२९॥  
 वर्षादश्च वा । ६।४।१११॥  
 वलच्यपित्रादेः । ३।२।८२॥  
 वलिवटि-र्भः । ६।२।१६॥  
 वशेरयडि । ४।१।८३॥  
 वसनात् । ६।४।१३८॥  
 वसातेर्वा । ६।२।६७॥

वसुराटोः । ३।२।८१॥  
 वस्तैरेयञ् । ७।१।११२॥  
 वस्त्रात् । ६।४।१७॥  
 वहति रथयु-त् । ७।१।२॥  
 वहाभ्राल्लिहः । ५।१।१२३॥  
 वहीनरस्यैत् । ७।४।४॥  
 वहेः प्रवेयः । २।२।७॥  
 वहेस्तुरिश्चादिः । ६।३।१८०॥  
 वह्यं करणे । ५।१।३४॥  
 वहल्यूर्दिपदि-नण् । ६।३।१४॥  
 वाः शेषे । १।४।८२॥  
 वाऽकर्मणा-णौ । २।२।४॥  
 वाकाङ्क्षायाम् । ५।२।१०॥  
 वाक्यस्य परिवर्जने । ७।४।८८॥  
 वाक्रोशदैत्ये । ४।२।७८॥  
 वा क्लीबे । २।२।९२॥  
 वाक्षः । ३।४।७६॥  
 वागन्तौ । ७।३।१४५॥  
 वाग्रान्त-रात् । ७।३।१५४॥  
 वाच आलाटौ । ७।२।२४॥  
 वाच इकण् । ७।२।१६८॥  
 वाचंयमो व्रते । ५।१।११५॥  
 वाचस्पति-सम् । ३।२।३६॥  
 वा जाते द्विः । ६।२।१३७॥  
 वा ज्वलादि-र्णः । ५।१।६२॥  
 वाञ्जलेरलुकः । ७।३।१०१॥

वाटाट्यात् ।५।३।१०३॥  
 वाडवेयो वृषे ।६।१।८५॥  
 वाणुमाषात् ।७।१।८२॥  
 वातपित्त-ने ।६।४।१५२॥  
 वातातीसार-न्तः ।७।२।६१॥  
 वा तृतीयायाः ।३।२।३॥  
 वातोरिकः ।६।४।१३२॥  
 वात्मने ।३।४।६३॥  
 वात्यसंधिः ।१।२।३१॥  
 वा दक्षिणात्-आः ।७।२।११९॥  
 वादेश्च णकः ।५।२।६७॥  
 वाद्यतनीक्रिया-र्गीङ् ।४।४।२८॥  
 वाद्यतनी पुरादौ ।५।२।१५॥  
 वाद्यात् ।६।१।११॥  
 वाद्वौ ।२।१।४६॥  
 वा द्विषातोऽनः पुस् ।४।२।९१॥  
 वाधारेऽमावास्या ।५।१।२१॥  
 वा नाम्नि ।१।२।२०॥  
 वा नाम्नि ।७।३।१५९॥  
 वान्तिके ।३।१।१४७॥  
 वान्तिमान्ति-षद् ।७।४।३१॥  
 वान्यतःपुमान्-रे ।१।४।६२॥  
 वान्येन ।६।१।१३३॥  
 वापगुरो णमि ।४।२।५॥  
 वा परोक्षायङि ।४।१।९०॥  
 वा पादः ।२।४।६॥

वाप्रोः ।४।३।८७॥  
 वा बहुव्रीहेः ।२।४।५॥  
 वाभिनिविशः ।२।२।२२॥  
 वाऽभ्यवाभ्याम् ।४।१।९९॥  
 वामः ।४।२।५७॥  
 वामदेवाद्यः ।६।२।१३५॥  
 वामाद्यादेरीनः ।७।१।४॥  
 वामृशसि ।२।१।५५॥  
 वायनणायनिजोः ।६।१।१३८॥  
 वा युष्मद-कम् ।६।३।६७॥  
 वाय्वृतुपित्रुषसो यः ।६।२।१०९॥  
 वारे कृत्वस् ।७।२।१०९॥  
 वा लिप्सायाम् ।३।३।६१॥  
 वाल्ये ।७।३।१४६॥  
 वावाप्यो-पी ।३।२।१५६॥  
 वा वेत्तेः कसुः ।५।२।२२॥  
 वा वेष्ट्वेष्टः ।४।१।६६॥  
 वाशिन आयनौ ।७।४।४६॥  
 वाश्मनो विकारे ।७।४।६३॥  
 वाश्वादीयः ।६।२।१९॥  
 वाष्टन आः स्यादौ ।१।४।५२॥  
 वासुदेवार्जुनादकः ।६।३।२०७॥  
 वा स्वीकृतौ ।४।३।४०॥  
 वाहनात् ।६।३।१७८॥  
 वाहर्पत्यादयः ।१।३।५८॥  
 वाहीकेषु ग्रामात् ।६।३।३६॥

वाहीकेष्वब्राह्म-भ्यः । ७।३।६३॥  
 वा हेतुसिद्धौ क्तः । ५।३।२॥  
 बाह्यपथ्युपकरणे । ६।३।१७९॥  
 बाह्याद्वाहनस्य । २।३।७२॥  
 विंशतिकात् । ६।४।१३९॥  
 विंशते-ति । ७।४।६७॥  
 विंशत्यादयः । ६।४।१७३॥  
 विंशत्यादेर्वा तमट् । ७।१।१५६॥  
 विकर्णकुषीत-पे । ६।१।७५॥  
 विकर्णच्छगला-ये । ६।१।६४॥  
 विकारे । ६।२।३०॥  
 विकुशमिपरेः-स्य । २।३।२८॥  
 विचारे पूर्वस्य । ७।४।९५॥  
 विचाले च । ७।२।१०५॥  
 विच्छो नङ् । ५।३।८६॥  
 विजेरिट् । ४।३।१८॥  
 वित्तं धनप्रतीतम् । ४।२।८२॥  
 विद्गृह्यः-णम् । ५।४।५४॥  
 विद्यायोनिस्म्ब० । ६।३।१५०॥  
 विधिनिमन्त्रणा-ने । ५।४।२८॥  
 विध्यत्यनन्येन । ७।१।८॥  
 विनयादिभ्यः । ७।२।१६९॥  
 विना ते तृतीया च । १।२।११५॥  
 विनिमेयद्यूतपणं-होः । २।२।१६॥  
 विन्दिच्छू । ५।२।३४॥  
 विन्मतोर्णीष्टि-लुप् । ७।४।३२॥

विपरिप्रात्सर्तेः । ५।२।५५॥  
 विभक्तिथ-भाः । १।१।३३॥  
 विभक्तिस-यम् । ३।१।३९॥  
 विभाजयितृ-च । ६।४।५२॥  
 विमुक्तादेरण् । ७।२।७३॥  
 वियः प्रजने । ४।२।१३॥  
 विरागाद्विरङ्गश्च । ६।४।१८३॥  
 विरामे वा । १।३।५१॥  
 विरोधिनाम-स्वैः । ३।१।१३०॥  
 विवधवीवधाद्वा । ६।४।२५॥  
 विवादे वा । ३।३।८०॥  
 विवादे द्वन्द्वादकल् । ६।३।१६३॥  
 विशपतपद-क्ष्ये । ५।४।८१॥  
 विशाखाषा-ण्डे । ६।४।१२०॥  
 विशिरुहि-दात् । ६।४।१२२॥  
 विशेषणं वि-श्च । ३।१।९६॥  
 विशेषणमन्तः । ७।४।११३॥  
 विशेषणस-हौ । ३।१।१५०॥  
 विशेषाविव-श्रे । ५।२।५॥  
 विश्रमेर्वा । ४।३।५६॥  
 विष्वचो विषुश्च । ७।२।३१॥  
 विसारिणो मत्स्ये । ७।३।५९॥  
 वीप्सायाम् । ७।४।८०॥  
 वीरुन्यग्रोधौ । ४।१।१२१॥  
 वृकाद्वेण्यण् । ७।३।६४॥  
 वृगो वस्त्रे । ५।६।५२॥



वृजिमद्रादेशात्कः ।६।३।३८॥  
 वृत्तिसर्गतायने ।३।३।४८॥  
 वृत्तोऽपपाठोऽनुयोगे ।६।४।६७॥  
 वृत्त्यन्तोऽसषे ।१।१।२५५॥  
 वृद्धस्त्रियाः-णश्च ।६।१।८७॥  
 वृद्धस्य च ज्यः ।७।४।३५॥  
 वृद्धाद्युनि ।६।१।३०॥  
 वृद्धिः स्वरेष्वा-ते ।७।४।१॥  
 वृद्धिरारैदौत् ।३।३।१॥  
 वृद्धिर्यस्य स्व-दिः ।६।१।८॥  
 वृद्धेजः ।६।३।२८॥  
 वृद्धो यूना तन्मात्रभेदे ।३।१।१२४॥  
 वृद्धिक्षिलुण्टि-कः ।५।२।७०॥  
 वृद्धयः स्यसनोः ।३।३।४५॥  
 वृन्दादारकः ।७।२।११॥  
 वृन्दारकनागकुञ्जैः ।३।१।१०८॥  
 वृषाश्वान्मैथुने स्सो० ।४।३।११४॥  
 वृष्टिमान-वा ।५।४।५७॥  
 वृत्तो नवाऽना-च ।४।४।३५॥  
 वेः ।२।३।५४॥  
 वेः कृगः-शे ।३।३।८५॥  
 वेः खुखग्रम् ।७।३।१६३॥  
 वेः स्कन्दोऽक्तयोः ।२।३।५१॥  
 वेः स्त्रः ।२।३।२३॥  
 वेः स्वार्ये ।३।३।५०॥  
 वेगे सत्तेर्धाव् ।४।२।१०७॥

वेतोऽपतः ।४।४।६२॥  
 वेणुकादिभ्य ईयण् ।६।३।६६॥  
 वेतनादेर्जीवति ।६।४।१५॥  
 वेत्तिच्छिदभिदः कित् ।५।२।७५॥  
 वेत्तेः कित् ।३।४।५१॥  
 वेत्तेर्नवा ।४।२।११६॥  
 वेदसहश्रु-नाम् ।३।२।४१॥  
 वेदूतोऽनव्य-दे ।२।४।९८॥  
 वेदेन्ब्राह्मणमत्रैव ।६।२।१३०॥  
 वेयिवदनाश्च-नम् ।५।२।३॥  
 वेयुवोऽस्त्रियाः ।१।४।३०॥  
 वेयः ।४।१।७४॥  
 वेरशब्दे प्रथने ।५।३।६९॥  
 वेर्दहः ।५।२।६४॥  
 वेर्वय् ।४।४।१९॥  
 वेर्विचकत्थ-नः ।५।२।५९॥  
 वेर्विस्तृते-तौ ।७।१।१२३॥  
 वेश्च द्रोः ।५।२।५४॥  
 वेष्ट्यादिभ्यः ।६।४।६५॥  
 वेसुसोऽपेक्षायाम् ।२।३।११॥  
 वैकत्र द्वयोः ।२।२।८५॥  
 वैकव्यञ्जने पूर्ये ।३।२।१०५॥  
 वैकात् ।७।३।५५॥  
 वैकात् ध्यमञ् ।७।२।१०६॥  
 वैदूर्यः ।६।३।१५८॥  
 वैणे कणः ।५।३।२७॥

वोतात् प्राक् ।५।४।११॥  
 वोत्तरपद-हः ।२।३।७५॥  
 वोत्तरपदेऽर्धे ।७।२।१२५॥  
 वोत्तरात् ।७।२।१२१॥  
 वोदः ।५।३।६१॥  
 वोदश्चितः ।६।२।१४४॥  
 वोपकादेः ।६।१।१३०॥  
 वोपमानात् ।७।३।१४७॥  
 वोपात् ।३।३।१०६॥  
 वोपादेरडाकौ च ।७।३।३६॥  
 वोमाभङ्गातिलात् ।७।१।८३॥  
 वोर्णुगः सेटि ।४।३।४६॥  
 वोर्णोः ।४।३।१९॥  
 वोर्णोः ।४।३।६०॥  
 वोर्ध्व द-सट् ।७।१।१४२॥  
 वोर्ध्वात् ।७।३।१५६॥  
 वो विधूनने जः ।४।२।१९॥  
 वोशनसो-सौ ।१।४।८०॥  
 वोशीनरेषु ।६।३।३७॥  
 वौ वर्तिका ।२।४।११०॥  
 वौ विष्करो वा ।४।४।९६॥  
 वौ व्यञ्जनादे-य्वः ।४।६।२५॥  
 वौष्ठौतौ-से ।१।२।१७॥  
 व्यः ।४।१।७७॥  
 व्यक्तवाचां सहोक्तौ ।३।३।७९॥  
 व्यचोऽनसि ।४।१।८२॥

व्यञ्जना-लुक् ।४।१।४४॥  
 व्यञ्जनात् ई ।७।२।१२९॥  
 व्यञ्जनाच्छ्रुनाहेरानः ।३।४।८०॥  
 व्यञ्जनात्तद्धितस्य ।२।४।८८॥  
 व्यञ्जनात्प-वा ।१।३।४७॥  
 व्यञ्जनादेर्नाम्युपा० ।२।३।८७॥  
 व्यञ्जनादेर्वो-तः ।४।३।४७॥  
 व्यञ्जनाद् घञ् ।५।३।१३२॥  
 व्यञ्जनादेः सथ दः ।४।३।७८॥  
 व्यञ्जनानामनिटि ।४।३।४५॥  
 व्यञ्जनान्तस्था-ध्यः ।४।२।७१॥  
 व्यञ्जनेभ्य उपसित्ते ।६।४।८॥  
 व्यतिहारेऽनीहा-जः ।५।३।११६॥  
 व्यत्यये लुग्वा ।१।३।५६॥  
 व्यधजपमद्भ्यः ।५।३।४७॥  
 व्यपाभेर्लषः ।५।२।६०॥  
 व्ययोदोः करणे ।५।३।३८॥  
 व्यवात्स्वनोऽशने ।२।३।४३॥  
 व्यस्तव्यत्यस्तात् ।६।३।७॥  
 व्यस्ताच्च क्र-कः ।६।४।१६॥  
 व्यस्थवृणवि ।४।२।३॥  
 व्याघ्राग्रे प्रा-सोः ।५।१।५७॥  
 व्याङ्परि रमः ।३।३।१०५॥  
 व्यादिभ्यो णिकेकणौ ।६।३।३४॥  
 व्याप्तौ ।३।१।६१॥  
 व्याप्तौ स्सात् ।७।२।१३०॥

व्याप्याच्चेवात् ।५।४।७१॥  
 व्याप्यादाधारे ।५।३।८८॥  
 व्याप्ये क्तेनः ।२।२।९९॥  
 व्याप्ये घुरके-च्यम् ।५।१।४॥  
 व्याप्ये द्विद्रो-याम् ।२।२।५०॥  
 व्याश्रये सुतः ।७।२।८१॥  
 व्यासवरुट-चाक् ।६।१।३८॥  
 व्याहरति मृगे ।६।३।१२१॥  
 व्युदःकाकु-लुक् ।७।३।१६५॥  
 व्युदस्तपः ।३।३।८७॥  
 व्युपाच्छीङ् ।५।३।७७॥  
 व्युष्टादिष्वण् ।६।४।९९॥  
 व्येस्यमोर्यङि ।४।१।८५॥  
 व्योः ।१।३।२३॥  
 व्रताद्भुजितनिवृत्त्योः ।३।४।४३॥  
 व्रताभीक्ष्ये ।५।१।१५७॥  
 व्रातादस्त्रियाम् ।७।३।६१॥  
 व्रातादीनञ् ।६।४।१९॥  
 व्रीहिशालेरेयण् ।७।१।८०॥  
 व्रीहेः पुरोडाशे ।६।२।५१॥  
 व्रीह्यर्थतुन्दा-श्च ।७।२।९॥  
 व्रीह्यादिभ्यस्तौ ।७।२।५॥  
 शंसंस्वयं-ङुः ।५।२।८४॥  
 शंसिप्रत्ययात् ।५।३।१०५॥  
 शकः कर्मणि ।४।४।७३॥  
 शकधृषज्ञारभ-तुम् ।५।४।९०॥

शकटादण् ।७।१।७॥  
 शकलकर्दमाद्वा ।६।२।३॥  
 शकलादेर्यञः ।६।३।२७॥  
 शकादिभ्यो द्रेलुप् ।६।१।१२०॥  
 शकितकिचति-त् ।५।१।२९॥  
 शकृत्स्तम्बाद् गः ।५।१।१००॥  
 शकोऽजिज्ञासायाम् ।३।३।७३॥  
 शक्तार्थवषट्नमः-भिः ।२।२।६८॥  
 शक्ताहर्हे कृत्याश्च ।५।४।२५॥  
 शक्तियष्टेष्टीकण् ।६।४।६४॥  
 शक्तेः शस्त्रे ।२।४।३४॥  
 शङ्कूत्तर-च ।६।४।९०॥  
 शण्डिकादेर्यञः ।६।३।२१५॥  
 शतरुद्रात्तौ ।६।२।१०४॥  
 शतषष्टेः पथ इकण् ।६।२।१२४॥  
 शतात्केव-कौ ।६।४।१३१॥  
 शतादिमासा-रात् ।७।१।१५७॥  
 शताद्यः ।६।४।१४५॥  
 शत्रानशावे-स्यौ ।५।२।२०॥  
 शदिरगतौ शात् ।४।२।२३॥  
 शदेः शिति ।३।३।४१॥  
 शनृशद्विशतेः ।७।१।१४६॥  
 शप उपलम्भने ।३।३।३५॥  
 शपभरद्वाजादात्रेये ।६।१।५०॥  
 शब्दनिष्कघोषमि० ।३।२।९८॥  
 शब्दादेः कृतौ वा ।३।४।३५॥

शमष्टकात्-ण् ।५।२।४९॥  
 शमो दर्शनि ।४।२।२८॥  
 शमो नाम्न्यः ।५।१।१३४॥  
 शम्या रुरौ ।७।३।४८॥  
 शम्या लः ।६।२।३४॥  
 शमूसप्तकस्य श्ये ।४।२।१११॥  
 शयवासिवासे-त् ।३।२।२५॥  
 शरदः श्राद्धे कर्मणि ।६।३।८१॥  
 शरदर्भकूदी-जात् ।६।२।४७॥  
 शरदादेः ।७।३।९२॥  
 शर्करादेरण् ।७।१।११८॥  
 शर्कराया इक-ण्व ।६।२।७८॥  
 शलालुनो वा ।६।४।५६॥  
 शषसे श-वा ।१।३।६॥  
 शसोऽता-सि ।१।४।४९॥  
 शसो नः ।२।१।१७॥  
 शस्त्रजीवि-वा ।७।३।६२॥  
 शाकटशा-त्रे ।७।१।७८॥  
 शाकलादकञ् च ।६।३।१७३॥  
 शाकीप-श्च ।७।२।३०॥  
 शाखादेर्यः ।७।१।११४॥  
 शाणात् ।६।४।१४६॥  
 शान्दान्मान्बधा-तः ।३।४।७॥  
 शापे व्याप्यात् ।५।४।५२॥  
 शाब्दिकदार्द-कम् ।६।४।४५॥  
 शालङ्क्यौदिषा-लि ।६।१।३७॥

शालीनकौ-नम् ।६।४।१८५॥  
 शाससहनः-हि ।४।२।८४॥  
 शासूयुधिदृशि-नः ।५।३।१४१॥  
 शास्त्यसूवक्ति-रङ् ।३।४।६०॥  
 शिक्षादेश्चाण् ।६।३।१४८॥  
 शिखादिभ्य इन् ।७।२।४॥  
 शिखायाः ।६।२।७६॥  
 शिटः प्रथ-स्य ।१।३।३५॥  
 शिटचघोषात् ।१।३।५५॥  
 शिटचाद्यस्य द्विती० ।१।३।५९॥  
 शिङ्हेऽनुस्वारः ।१।३।४०॥  
 शिदवित् ।४।३।२०॥  
 शिरसः शीर्षन् ।३।२।१०१॥  
 शिरीषादिकणौ ।६।२।७७॥  
 शिरोऽधसः-क्ये ।२।३।४॥  
 शिर्घुट् ।१।१।२८॥  
 शिलाया एयच्च ।७।१।११३॥  
 शिलालिपा-त्रे ।६।३।१८९॥  
 शिल्पे ।६।४।५७॥  
 शिवादेरण् ।६।१।६०॥  
 शिशुक्रन्दा-यः ।६।३।२००॥  
 शीङः एः शिति ।४।६।१०४॥  
 शीङो रत् ।४।२।११५॥  
 शीङ्श्रद्धानिद्रा-लुः ।५।२।३७॥  
 शीताच्च कारिणि ।७।१।१८६॥  
 शीतोष्णादृतौ ।७।३।२०॥

शीर्षः स्वरे तद्धिते ।३।२।१०३॥  
 शीर्षच्छेदाद्यो वा ।६।४।१८४॥  
 शीलम् ।६।४।५९॥  
 शीलिकामि-णः ।५।१।७३॥  
 शुक्रादियः ।६।२।१०३॥  
 शुक्लाभ्यां भारद्वाजे ।६।१।६३॥  
 शुण्डिकादेरण् ।६।३।१५४॥  
 शुनः ।३।२।९०॥  
 शुनीस्तन-ट्ठेः ।५।३।११९॥  
 शुनो वश्चोदूत् ।७।१।३३॥  
 शुभ्रादिभ्यः ।६।१।७३॥  
 शुष्कचूर्ण-व ।५।४।६०॥  
 शूर्पाद्राञ् ।६।४।१३७॥  
 शूलात्पाके ।७।२।१४२॥  
 शूलोखाद्यः ।६।२।१४१॥  
 शृङ्खल-भेः ।७।१।१९१॥  
 शृङ्गात् ।७।२।१२॥  
 शृकमगम-कण् ।५।२।४०॥  
 शृवन्देरारुः ।५।२।३५॥  
 शेषपुच्छला-नः ।३।२।३५॥  
 शेवलाद्यादे-यात् ।७।३।४३॥  
 शेषात्परस्मै ।३।३।१००॥  
 शेषाद्वा ।७।३।१७५॥  
 शेषे ।२।२।८१॥  
 शेषे ।६।३।१॥  
 शेषे भविष्यन्त्ययदौ ।५।४।२०॥

शेषे लुक् ।२।१।८॥  
 शोकापनुद-के ।५।१।१४३॥  
 शोभमाने ।६।४।१०२॥  
 शो व्रते ।४।४।१३॥  
 शौनकादिभ्यो णिन् ।५।३।१८६॥  
 शौ वा ।४।२।९५॥  
 श्रश्चातः ।४।२।९६॥  
 श्रास्त्योर्लुक् ।४।२।९०॥  
 श्यः शी द्रवमूर्ति-र्ज्ञे ।४।१।९७॥  
 श्यशवः ।२।१।११६॥  
 श्यामलक्षणा-ष्टे ।६।१।७४॥  
 श्यावारोकाद्वा ।७।३।१५३॥  
 श्येतैतहरित-नश्च ।२।४।३६॥  
 श्यैनंपाता-ता ।६।२।११५॥  
 श्रः शृतं हविः क्षीरे ।४।१।१००॥  
 श्रन्थग्रन्थो नलुक्-च ।४।१।२७॥  
 श्रपेः प्रयोत्रैक्ये ।४।१।१०१॥  
 श्रवणाश्वत्थान्नाम्यः ।६।२।८॥  
 श्रविष्ठाषाढादीयण् ।६।३।१०५॥  
 श्राणामांसौ-वा ।६।४।७१॥  
 श्राद्धमद्य-नौ ।७।१।१३९॥  
 श्रितादिभिः ।३।१।६२॥  
 श्रुमच्छमी-यञ् ।७।३।६८॥  
 श्रुवोऽनाङ्प्रतेः ।३।३।७१॥  
 श्रुसदवस्म्यः-वा ।५।२।१॥  
 श्रुसुद्रुप्-र्वा ।४।१।६१॥

श्रेण्यादिकृता-र्थे । ३।१।१०४॥  
 श्रोत्रियाद्यलुक् च । ७।१।७१॥  
 श्रोत्रौषधि-गे । ७।२।१६६॥  
 श्रो वायुवर्णनिवृते । ५।३।२०॥  
 श्रौतिकृबुधिवु-दम् । ४।२।१०८॥  
 श्वादिभ्यः । ५।३।९२॥  
 श्लाघह्युस्था-ज्ये । २।२।६०॥  
 श्लिषः । ३।४।५६॥  
 श्लिषशीङ्-क्त । ५।१।९॥  
 श्वगणाद्वा । ६।४।१४॥  
 श्वन्युवन्म-उ । २।१।१०६॥  
 श्वयत्यसूवच-प्तम् । ४।३।१०३॥  
 श्वशूरः श्वश्रूभ्यां वा । ३।१।१२३॥  
 श्वशुराद्यः । ६।१।९१॥  
 श्वसजपवम-मः । ४।४।७५॥  
 श्वसस्तादिः । ६।३।८४॥  
 श्वसो वसीयसः । ७।३।१२१॥  
 श्वस्तनी ता-तास्महे । ३।२।१४॥  
 श्वादिभ्योऽञ् । ६।२।२६॥  
 श्वादेरिति । ७।४।१०॥  
 श्वेताश्वश्वतर-लुक् । ३।४।४५॥  
 श्वेर्वा । ४।१।८९॥  
 षः सोऽष्ट्यै-ष्कः । २।३।९८॥  
 षट्कति-थट् । ७।१।१६२॥  
 षट्त्वे षड्गवः । ७।१।१३५॥  
 षड्वर्जैक-रे । ७।३।४०॥

षढोः कः सि । २।१।६२॥  
 षण्मासादवयसि-कौ । ६।४।१०८॥  
 षण्मासाद्य-कण् । ६।४।११५॥  
 षष्ट्यादेर-देः । ७।१।१५८॥  
 षष्ठात् । ७।३।२५॥  
 षष्ठी वानादरे । २।२।१०८॥  
 षष्ठ्ययत्नाच्छेषे । ३।१।७६॥  
 षष्ठ्याः क्षेपे । ३।२।३०॥  
 षष्ठ्याः समूहे । ६।२।९॥  
 षष्ठ्या धर्म्ये । ६।४।५०॥  
 षष्ठ्यान्त्यस्य । ७।४।१०६॥  
 षष्ठ्या रूप्य-ट् । ७।२।८०॥  
 षात्पदे । २।३।९०॥  
 षादिहन्-णि । २।१।११०॥  
 षावटाद्वा । २।४।६९॥  
 षि तवर्गस्य । १।३।६४॥  
 षितोऽङ् । ५।३।१७७॥  
 षिवूक्लम्वाचमः । ४।२।११०॥  
 षिक्सिवोऽवा । ४।२।११२॥  
 ष्या पुत्रपत्योः-षे । २।४।८३॥  
 सं-कटाभ्याम् । ७।३।८६॥  
 संख्याक्ष-त्तौ । ३।१।३८॥  
 संख्याङ्कात् सूत्रे । ६।२।१२८॥  
 संख्याडते-कः । ६।४।१३०॥  
 संख्याता-वा । ७।३।११७॥  
 संख्यातैक-रत् । ७।३।११९॥

संख्यादेः पादा-च । ७।२।१५२॥  
 संख्यादेर्गुणात् । ७।२।१३६॥  
 संख्यादेर्हाय-सि । २।४।९॥  
 संख्यादेश्चा-चः । ६।४।८०॥  
 संख्याधि-नि । ७।४।१८॥  
 संख्यानां ष्णाम् । १।४।३३॥  
 संख्याने । ३।१।१४६॥  
 संख्यापाण्डू-मेः । ७।३।७८॥  
 संख्यापूरणे डट् । ७।१।१५५॥  
 संख्यायाः संघ-ठे । ६।४।१७१॥  
 संख्याया धा । ७।२।१०४॥  
 संख्याया नदी-म् । ७।३।९१॥  
 संख्याव्ययादङ्गुलेः । ७।३।१२४॥  
 संख्या समासे । ३।१।१६३॥  
 संख्या समाहारे । ३।१।२८॥  
 संख्या समाहारे-यम् । ३।१।९९॥  
 संख्यासाय-वा । १।४।५०॥  
 संख्यासंभ-र्च । ६।१।६६॥  
 संख्याहर्दिवा-टः । ५।१।१०२॥  
 संख्यैकार्था-शस् । ७।२।१५१॥  
 संगतेऽज्यम् । ५।१।५॥  
 संघघोषा-जः । ६।३।१७२॥  
 संघेऽनूर्ध्वे । ५।३।८०॥  
 संचाय्यकुण्ड-तौ । ५।१।२२॥  
 संज्ञा दुर्वा । ६।१।६॥  
 संध्यक्षरात्तेन । ७।३।४२॥

संनिवेः । ३।३।५७॥  
 संनिवेरर्दः । ४।४।६३॥  
 संनिव्युपाद्यमः । ५।३।२५॥  
 संपरिव्यनुप्राद्धदः । ५।२।५८॥  
 संपरेः कृगः स्सट् । ४।४।९१॥  
 संपरेर्वा । ४।१।७८॥  
 संप्रतेरस्मृतौ । ३।३।६९॥  
 संप्रदानाच्चान्य-यः । ५।१।१५॥  
 संप्राज्जा-ज्ञौ । ७।३।१५५॥  
 संप्राद्धसात् । ५।२।६१॥  
 संप्रोत्रेः सं-पे । ७।१।१२५॥  
 संबन्धनां संबन्धे । ७।४।१२१॥  
 संभवदवहरतोश्च । ६।४।१६२॥  
 संभावनेऽलमर्थे-क्तौ । ५।४।२२॥  
 संभावने सिद्धवत् । ५।४।४॥  
 संमत्यसू-तः । ७।४।८९॥  
 संमदप्रमदौ हर्षे । ५।३।३३॥  
 संयोगस्या-क् । २।१।८८॥  
 संयोगात् । २।१।५२॥  
 संयोगादिनः । ७।४।५३॥  
 संयोगादृतः । ४।४।३७॥  
 संयोगादृदतेः । ४।३।९॥  
 संयोगादेर्वा-ष्येः । ४।३।९५॥  
 संवत्सराग्र-च । ६।३।११६॥  
 संवत्सरात्-णोः । ६।३।९०॥  
 संविप्रावात् । ३।३।६३॥

संवेः सृजः । ५।२।५७॥  
 संशयं प्राप्ते ज्ञेये । ६।४।९३॥  
 संसृष्टे । ६।४।५॥  
 संस्कृते । ६।४।३॥  
 संस्कृते भक्ष्ये । ६।२।१४०॥  
 संस्तोः । ५।३।६६॥  
 सः सिजस्तेर्दिस्योः । ४।३।६५॥  
 सक्त्थ्यक्ष्णः स्वाङ्गे । ७।३।१२६॥  
 सखिवणिगदूताद्यः । ७।१।६३॥  
 सख्यादेरेयण् । ६।२।८८॥  
 सख्युरितोऽशावैत् । १।४।८३॥  
 सजुषः । २।१।७३॥  
 सज्जेर्वा । २।३।३८॥  
 सति । ५।२।१९॥  
 सतीच्छार्थात् । ५।४।२४॥  
 सतीर्थ्यः । ६।४।७८॥  
 सत्यागदास्तोः कारे । ३।२।११२॥  
 सत्यादशपथे । ७।२।१४३॥  
 सत्यार्थवेदस्याः । ३।४।४४॥  
 सत्सामीप्ये सद्ब्रह्मा । ५।४।१॥  
 सदाधुने-र्हि । ७।२।९६॥  
 सदोऽप्रतेः-देः । २।३।४४॥  
 सद्योऽद्य-ह्नि । ७।२।९७॥  
 सनस्तत्रा वा । ४।३।६९॥  
 सनि । ४।२।६१॥  
 सनीडश्च । ४।४।२५॥

सन्निष्ठाशंसेरुः । ५।२।३३॥  
 सन्महत्परमो-याम् । ३।१।१०७॥  
 सन्यडश्च । ४।१।३॥  
 सन्यस्य । ४।१।५९॥  
 सपत्न्यादौ । २।४।५०॥  
 सपत्रनिष्पत्रा-ने । ७।२।१३८॥  
 सपिण्डे वयःस्थाना-द्वा । ६।१।४॥  
 सपूर्वात्-द्वा । २।१।३२॥  
 सपूर्वादिकण् । ६।३।७०॥  
 सप्तमी-ईर्महि । ३।३।७॥  
 सप्तमी चा-णे । २।२।१०९॥  
 सप्तमी चोर्ध्व-के । ५।३।१२॥  
 सप्तमीद्विती-भ्यः । ७।२।१३४॥  
 सप्तमी यदि । ५।४।३४॥  
 सप्तमी शौण्डाद्यैः । ३।१।८८॥  
 सप्तम्यधिकरणे । २।२।९५॥  
 सप्तम्यर्थे क्रि-त्तिः । ५।४।९॥  
 सप्तम्याः । ५।१।१६९॥  
 सप्तम्याः । ७।२।९४॥  
 सप्तम्या आदिः । ७।४।११४॥  
 सप्तम्या पूर्वस्य । ७।४।१०५॥  
 सप्तम्या वा । ३।२।४॥  
 सप्तम्युताप्योर्बाढि । ५।४।२१॥  
 सब्रह्मचारी । ३।२।१५०॥  
 समः क्षणोः । ३।३।२९॥  
 समः ख्यः । ५।१।७७॥



समः पृचैपूज्वरेः । ५।२।५६॥  
 समजनिपन्निषद-णः । ५।३।९९॥  
 समत्यपाभि-रः । ५।२।६२॥  
 समनुव्यवादुधः । ५।२।६३॥  
 समयात् प्राप्तः । ६।४।१२४॥  
 समयाद्-याम् । ७।२।१३७॥  
 समर्थः पदविधिः । ७।४।१२२॥  
 समवान्धात्तमसः । ७।३।८०॥  
 समस्ततहिते वा । ३।२।१३९॥  
 समस्तृतीयया । ३।३।३२॥  
 समांसमीना । ७।१।१०५॥  
 समानपूर्व-त् । ६।३।७९॥  
 समानस्य धर्मादिषु । ३।२।१४९॥  
 समानादमोऽतः । १।४।४६॥  
 समानानां-र्घः । १।२।११॥  
 समानामर्थेनैकः शेषः । ३।१।११८॥  
 समाया ईनः । ६।४।१०९॥  
 समासान्तः । ७।३।६९॥  
 समासेऽग्रेः स्तुतः । २।३।१६॥  
 समासेऽसमस्तस्य । २।३।१३॥  
 समिणा सुगः । ५।३।९३॥  
 समिध-न्यण् । ६।३।१६२॥  
 समीपे । ३।१।३५॥  
 समुदाहो यमेग्रन्थे । ३।३।९८॥  
 समुदोऽजः पशौ । ५।३।३०॥  
 समुद्रान्नुनावोः । ६।३।४८॥

समूहार्थात्समेवते । ६।४।४६॥  
 समेऽशोऽर्द्धं नवा । ३।१।५४॥  
 समो गम्-शः । २।३।८४॥  
 समो गिरः । ३।३।६६॥  
 समो ज्ञोऽ-वा । २।२।५१॥  
 समो मुष्टौ । ५।३।५८॥  
 समो वा । ५।१।४६॥  
 सम्राजः क्षत्रिये । ६।१।१०१॥  
 सम्राट् । १।३।१६॥  
 सयसितस्य । २।३।४७॥  
 सरजसोप-वम् । ७।३।९४॥  
 सरूपाद् द्वेः—वत् । ६।३।२०९॥  
 सरोऽनो-म्नोः । ७।३।११५॥  
 सत्तेः स्थिर-मत्स्ये । ५।३।१७॥  
 सत्त्यर्त्तेर्वा । ३।४।६१॥  
 सर्वचर्मण ईनेनजौ । ६।३।१९५॥  
 सर्वजनाण्येनजौ । ७।१।१९॥  
 सर्वपश्चा-यः । ३।१।८०॥  
 सर्वाण्यो वा । ७।१।४३॥  
 सर्वात् सहश्च । ५।१।१११॥  
 सर्वादयोऽस्यादौ । ३।२।६१॥  
 सर्वादिविषग्-ञ्चौ । ३।२।१२२॥  
 सवदिः प-ति । ७।१।९४॥  
 सवदिः सर्वाः । २।२।११९॥  
 सवदिः स्मै-स्मातौ । १।४।७॥  
 सवदिर्दसपूर्वाः । १।४।१८॥

सवदिरिन् । ७।२।५९॥  
 सर्वान्नमत्ति । ७।१।९८॥  
 सर्वाश-यात् । ७।३।११८॥  
 सर्वोभया-सा । २।२।३५॥  
 सलातुरादीयण् । ६।३।२१७॥  
 सविशेषण-क्यम् । १।१।२६॥  
 ससर्वपूर्वाङ्गिप् । ६।२।१२७॥  
 सस्तः सि । ४।३।९२॥  
 सस्तौ प्रशस्ते । ७।२।१७२॥  
 सस्मे ह्यस्तनी च । ५।४।४०॥  
 सस्य शषौ । १।३।६१॥  
 सस्याद् गुणात्-ते । ७।१।१७८॥  
 सस्रि-चक्रि-दधि-मिः । ५।१।३९॥  
 सहस्राजम्यां-धेः । ५।१।१६७॥  
 सहलुभेच्छ-देः । ४।४।४६॥  
 सहसमः सधिसमि । ३।२।१२३॥  
 सहस्तेन । ३।१।२४॥  
 सहस्रशत-दण् । ६।४।१३६॥  
 सहस्य सोऽन्यार्थे । ३।२।१४३॥  
 सहात्तुल्ययोगे । ७।३।१७८॥  
 सहायाद्वा । ७।१।६२॥  
 सहार्थे । २।२।४५॥  
 सहिवहे-स्य । १।३।४३॥  
 साक्षादादिश्च्यर्थे । ३।१।१४॥  
 साक्षाद्द्रष्टा । ७।१।१९७॥  
 सातिहेतियूति-तिः । ५।३।९४॥

सादेः । २।४।४९॥  
 सादेश्वातदः । ७।१।२५॥  
 साधकतमं करणम् । २।२।२४॥  
 साधुना । २।२।१०२॥  
 साधुपुष्प्यत्पच्यमाने । ६।३।११७॥  
 साधौ । ५।१।१५५॥  
 सामीप्येऽधो-रि । ७।४।७९॥  
 सायंचिरंप्रा-यात् । ६।३।८८॥  
 सायाह्लादयः । ३।१।५३॥  
 सारवैक्षा-यम् । ७।४।३०॥  
 साल्वात् तौ । ६।३।५४॥  
 साल्वांशप्रत्य-दिञ् । ६।१।११७॥  
 सास्य पौर्णमासी । ६।२।९८॥  
 साहिसातिवे-त् । ५।१।५९॥  
 सिकताशर्करात् । ७।२।३५॥  
 सिचि-परस्मै-ति । ४।३।४४॥  
 सिचोऽञ्जेः । ४।४।८४॥  
 सिचो यङि । २।३।६०॥  
 सिजद्यतन्याम् । ३।४।५३॥  
 सिजाशिषावात्मने । ४।३।३५॥  
 सिज्जिदोऽभुवः । ४।३।९२॥  
 सिद्धिः-त् । १।१।२॥  
 सिद्धौ तृतीया । २।२।४३॥  
 सिध्मादि-ग्न्यः । ७।२।२१॥  
 सिध्यतेरज्ञाने । ४।२।११॥  
 सिन्ध्वादेरञ् । ६।३।२१६॥

सिंहाद्यैः पूजायाम् ।३।१।८९॥  
 सीतया संगते ।७।१।२७॥  
 सुः पूजायाम् ।३।१।४४॥  
 सुखादेः ।७।२।६३॥  
 सुखादेरनुभवे ।३।४।३४॥  
 सुगदुर्गमाधारे ।२।१।१३२॥  
 सुगः स्यसनि ।२।३।६२॥  
 सुग्-द्विषार्हः-त्ये ।५।२।२६॥  
 सुचो वा ।२।३।१०॥  
 सुज्वार्थे सं-हिः ।३।१।१९॥  
 सुतंगमादेरिञ् ।६।२।८५॥  
 सुदुर्भ्यः ।४।४।१०८॥  
 सुपन्थ्यादेर्ज्यः ।६।२।८४॥  
 सुपूत्युत्सु-णे ।७।३।१४४॥  
 सुप्रातसुथ-दम् ।७।३।१२९॥  
 सुभ्रवादिभ्यः ।७।३।१८२॥  
 सुयजोर्द्वनिप् ।५।१।१७२॥  
 सुयाम्नः सौवी-निञ् ।६।१।१०३॥  
 सुरा-सीधोः पिबः ।५।१।७५॥  
 सुवर्णकार्षापणात् ।६।४।१४३॥  
 सुसंख्यात् ।७।३।१५०॥  
 सुसर्वाद्ध्राष्ट्रस्य ।७।४।१५॥  
 सुस्नातादि-ति ।६।४।४२॥  
 सुहरित-तृण-त् ।७।३।१४२॥  
 सुहृद्-दुर्हन्-त्रे ।७।३।१५७॥  
 सूक्त-साम्नोरीयः ।७।२।७१॥

सूतेः पञ्चम्याम् ।४।३।१३॥  
 सूत्राद्धारणे ।५।१।९३॥  
 सूयत्याद्योदितः ।४।२।७०॥  
 सूर्यागस्त्य-च ।२।४।८९॥  
 सूर्यादिवतायां वा ।२।४।६४॥  
 सृगलहः प्रजनाक्षे ।५।३।३१॥  
 सृघस्यदो मरक् ।५।२।७३॥  
 सृजः श्राद्धे-तथा ।३।४।८४॥  
 सृजिदृशिस्कृ-वः ।४।४।७८॥  
 सृजीण्णनशष्ट्वरप् ।५।२।७७॥  
 सेः सू-द्-धां च रुर्वा ।४।३।७९॥  
 सेट् क्तयोः ।४।३।८४॥  
 सेड् नानिटा ।३।१।१०६॥  
 सेनाङ्गक्षुद्र-नाम् ।३।१।१३४॥  
 सेनान्तका-च ।६।१।१०२॥  
 सेनाया वा ।६।४।४८॥  
 सेर्ग्रासे कर्मकर्त्तरि ।४।२।७३॥  
 सेर्निवासादस्य ।६।३।२१३॥  
 सोदर्य-समानोदर्यौ ।६।३।११२॥  
 सो धि वा ।४।३।७२॥  
 सोमात् सुगः ।५।१।१६३॥  
 सो रुः ।२।१।७२॥  
 सो वा लुक् च ।३।४।२७॥  
 सोऽस्य भृति-शम् ।६।४।१६८॥  
 सोऽस्य मुख्यः ।७।१।१९०॥  
 सौ नवेतौ ।१।२।३८॥

सौयामायनि-वा ।६।१।१०६॥  
 सौवीरिषु कूलात् ।६।३।४७॥  
 स्कन्द-स्यन्दः ।४।३।३०॥  
 स्कम्नः ।२।३।५५॥  
 स्कृच्छृतो-याम् ।४।३।८॥  
 स्क्रसृवृभृ-याः ।४।४।८१॥  
 स्तम्बात् घनश्च ।५।३।३९॥  
 स्तम्भू-स्तुम्भू-च ।३।४।७८॥  
 स्ताद्यशितो-रिट् ।४।४।३२॥  
 स्तुस्वञ्जश्च-वा ।२।३।४९॥  
 स्तेनानलुक् च ।७।१।६४॥  
 स्तोकाल्प-णे ।२।२।७९॥  
 स्तोमे डट् ।६।१२६॥  
 स्त्यादिर्विभक्तिः ।१।१।१९॥  
 स्त्रियाः ।२।१।५४॥  
 स्त्रियाः पुंसो-च्च ।७।३।९६॥  
 स्त्रिया डितां-दाम् ।१।४।२८॥  
 स्त्रियां क्तिः ।५।३।९१॥  
 स्त्रियां नाम्नि ।७।३।१५२॥  
 स्त्रियां नृतो-र्डी ।२।४।१॥  
 स्त्रियां लुप् ।६।१।४६॥  
 स्त्रियाम् ।१।४।९३॥  
 स्त्रियाम् ।३।२।६९॥  
 स्त्रियामूधसो न् ।७।३।१६९॥  
 स्त्रीदूतः ।१।४।२९॥  
 स्त्री पुंवच्च ।३।१।१२५॥

स्त्री-बहुष्वायनञ् ।६।१।४८॥  
 स्थण्डिलात्-ती ।६।२।१३९॥  
 स्थलादेर्मधुक-ण् ।६।४।९१॥  
 स्थाग्लाम्लापचि-स्तुः ।५।२।३१॥  
 स्थादिभ्यः कः ।५।३।८२॥  
 स्थानान्तगो-लात् ।६।३।११०॥  
 स्थानीवाऽवर्णविधौ ।७।४।१०९॥  
 स्थापास्त्रात्रः कः ।५।१।१४२॥  
 स्थामाजिना-प् ।६।३।९३॥  
 स्थासेनिसेध-पि ।२।३।४०॥  
 स्थूल-दूर-नः ।७।४।४२॥  
 स्थेशभास-रः ।५।२।८१॥  
 स्थो वा ।५।३।९६॥  
 स्नाताद्वेदसमाप्तौ ।७।३।२२॥  
 स्नानस्य नाम्नि ।२।३।२२॥  
 स्नोः ।४।४।५२॥  
 स्पर्द्धे ।७।४।११९॥  
 स्पृश-मृश-कृष-वा ।३।४।५४॥  
 स्पृशादि-सृपो वा ।४।४।११२॥  
 स्पृशोऽनुदकात् ।५।१।१४९॥  
 स्पृहेर्व्याप्यं वा ।२।२।२६॥  
 स्फाय् स्फाव् ।४।२।२२॥  
 स्फायः स्फी वा ।४।१।९४॥  
 स्फुर-स्फुलोर्घजि ।४।२।४॥  
 स्मिडः प्रयोक्तुः० ।३।३।९१॥  
 स्मृत्यर्थ-दयेशः ।२।२।११॥

स्मृदृत्वरप्रथ-रः । ४।१।६५॥  
 स्मृदृशः । ३।३।७२॥  
 स्मे च वर्त्तमाना । ५।२।१६॥  
 स्मे पञ्चमी । ५।४।३१॥  
 सम्यजसहिंस-रः । ५।२।७९॥  
 स्यदो जवे । ४।२।५३॥  
 स्यादावसंख्येयः । ३।१।११९॥  
 स्यादेरिवे । ७।१।५२॥  
 स्यादौ वः । २।१।५७॥  
 स्यौजस-दिः । १।१।१८॥  
 संस्-ध्वंस्-दः । २।१।६८॥  
 स्वञ्जश्च । २।३।४५॥  
 स्वञ्जेर्नवा । ४।३।२२॥  
 स्वज्ञाऽजभ-कात् । २।४।१०८॥  
 स्वतन्त्रः कर्त्ता । २।२।२॥  
 स्वपेर्यङ्ङे च । ४।१।८०॥  
 स्वपो णावुः । ४।१।६२॥  
 स्वयं सामी केन । ३।१।५८॥  
 स्वर-ग्रह-दृश-वा । ३।४।६९॥  
 स्वर-दुहो वा । ३।४।९०॥  
 स्वरस्य परे-धौ । ७।४।११०॥  
 स्वर-हनगमोः-टि । ४।१।१०४॥  
 स्वराच्छौ । १।४।६५॥  
 स्वरात् । २।३।८५॥  
 स्वरादयोऽव्ययम् । १।१।३०॥  
 स्वरादुतो-रोः । २।४।३५॥

स्वरादुपसर्गात्-धः । ४।४।९॥  
 स्वरादेर्द्वितीयः । ५।१।४॥  
 स्वरादेस्तासु । ४।४।३१॥  
 स्वरेऽतः । ४।३।७५॥  
 स्वरेभ्यः । १।३।३०॥  
 स्वरे वा । १।३।२४॥  
 स्वरे वाऽनक्षे । १।२।२९॥  
 स्वर्ग-स्वस्ति-पौ । ६।४।१२३॥  
 स्वसृपत्योर्वा । ३।२।३८॥  
 स्वस्नेहनार्था-षः । ५।४।६५॥  
 स्वाङ्गात्श्च्यर्थे-श्च । ५।४।८६॥  
 स्वाङ्गात्-नि । ३।२।५६॥  
 स्वाङ्गादेरकृत-हेः । २।४।४६॥  
 स्वाङ्गाद्विवृद्धात्ते । ७।२।१०॥  
 स्वाङ्गेनाध्रुवेण । ५।४।७९॥  
 स्वाङ्गेषु सक्ते । ७।१।१८०॥  
 स्वादेः णुः । ३।४।७५॥  
 स्वाद्वर्थाददीर्घात् । ५।४।५३॥  
 स्वान्मिन्नीशे । ७।२।४९॥  
 स्वामिचिह्न-र्णे । ३।२।८४॥  
 स्वामि-वैश्येऽर्थः । ५।१।३३॥  
 स्वामीश्वरा-तैः । २।२।९८॥  
 स्वाम्येऽधिः । ३।१।१३॥  
 स्वार्थे । ४।४।६०॥  
 स्वशेऽधिना । २।२।१०४॥  
 स्वैर-ण्याम् । १।२।१५॥

स्सटि समः ।१।३।१२॥  
हः काल-ब्रीहोः ।५।१।६८॥  
हत्या भूयं भावे ।५।१।३६॥  
हनः ।२।३।८२॥  
हनः सिच् ।४।३।३८॥  
हनश्च समूलात् ।५।४।६३॥  
हनृतः स्यस्य ।४।४।४९॥  
हनो धि ।२।३।९४॥  
हनो घ्नीर्वधे ।४।३।९९॥  
हनो णिन् ।५।१।१६०॥  
हनोऽन्तर्घना-देशे ।५।३।३४॥  
हनो वध आ-जौ ।४।४।२१॥  
हनो वा वध् च ।५।३।४६॥  
हनो ह्यो घ्न् ।२।१।११२॥  
हरत्युत्सङ्गादेः ।६।१।५५॥  
हलक्रोडाऽऽस्ये पुवः ।५।२।८९॥  
हलसीरादिकण् ।६।३।१६१॥  
हलसीरादिकण् ।७।१।६॥  
हलस्य कर्षे ।७।१।२६॥  
हवः शिति ।४।१।१२॥  
हविरन्न-वा ।७।१।२९॥  
हविष्यष्टनः कपाले ।३।२।७३॥  
हशश्चद्युगान्तः-च ।५।२।१३॥  
हशितो ना-सक् ।३।४।५५॥  
हस्तदन्त-तौ ।७।२।६८॥  
हस्तप्राप्ये चेरस्तेये ।५।३।७८॥

हस्तार्थाद् ग्रह-तः ।५।४।६६॥  
हस्तिपुरुषाद्वाण् ।७।१।१४१॥  
हस्तिबाहुकपा-क्तौ ।५।१।८६॥  
हाकः ।४।२।१००॥  
हाको हिः क्त्वि ।४।४।१४॥  
हान्तस्थात् जीड्भ्यां वा ।२।१।८१॥  
हायनान्तात् ।७।१।६८॥  
हितनाम्नो वा ।७।४।६०॥  
हितसुखाभ्याम् ।२।२।६५॥  
हितादिभिः ।३।१।७१॥  
हिमहतिकाषिये पद् ।३।२।९६॥  
हिमादेः लुः सहे ।७।१।९०॥  
हिंसाथदिकाप्यात् ।५।४।७४॥  
हीनात् स्वाङ्गादः ।७।२।४५॥  
हुधुटो हेर्धिः ।४।२।८३॥  
ह्क्रोर्नवा ।२।२।८॥  
हृगो गतताच्छील्ये ।३।३।३८॥  
हृगो वयोऽनुद्यमे ।५।१।९५॥  
हृदयस्य-ण्ये ।३।२।९४॥  
हृद्भगसिन्धोः ।७।४।२५॥  
हृद्य-पद्य-तुल्य-र्म्यम् ।७।१।११॥  
हृषेः केशलोम-ते ।४।४।७६॥  
हेः प्रश्नाख्याने ।७।४।९७॥  
हेतुकर्तृकरणे-णे ।२।२।४४॥  
हेतुतच्छीला-त् ।५।१।१०३॥  
हेतुसहार्थेऽनुना ।२।२।३८॥

हेतौ सं-ते । ६।४।१५३॥  
 हेत्वर्थैस्तृ-द्याः । २।२।११८॥  
 हेमन्ताद्वा तलुक् च । ६।३।९१॥  
 हेमादिभ्योऽञ् । ६।२।४५॥  
 हेमार्थात् माने । ६।२।४२॥  
 हेहैष्वेषामेव । ७।४।१००॥  
 होत्राभ्य ईयः । ७।१।७६॥  
 होत्राया ईयः । ७।२।१६३॥  
 हो धुट्पदान्ते । २।१।८२॥  
 हौ दः । ४।१।३१॥  
 ह्रस्वः । ४।१।३९॥  
 ह्रस्वस्य गुणः । १।४।४१॥  
 ह्रस्वस्य तः पितृति । ४।४।११३॥

ह्रस्वात् इण्णो द्वे । १।३।२७॥  
 ह्रस्वान्नाम्नस्ति । २।३।२४॥  
 ह्रस्वापश्च । १।४।३२॥  
 ह्रस्वे । ७।३।४६॥  
 ह्रस्वोऽपदे वा । १।२।२२॥  
 ह्यस्तनी-महि । ३।३।९॥  
 ह्यो गोदोहादी-स्य । ६।२।५५॥  
 ह्लादो ह्रत्-श्च । ४।२।६७॥  
 ह्रः समाह्वयाह्वयौ-म्नोः । ५।३।४१॥  
 ह्रः स्पर्धे । ३।३।५६॥  
 ह्रालिप्सिचः । ३।४।६२॥  
 ह्रिणोरपि विति व्यौ । ४।३।१५॥

### अकारादिक्रमस्य शुद्धिपत्रकम्

| पृष्ठम् | पंक्तिः | अशुद्धम्           | शुद्धम्            |
|---------|---------|--------------------|--------------------|
| १२१     | १८      | ग्रामराष्ट्रांशाद् | ग्रामराष्ट्रांशाद् |
| १४६     | २२      | भ्राज्यलंकृत्      | भ्राज्यलङ्कृत्     |
| १५७     | ३       | व्यञ्जनाच्छ्रुना   | व्यञ्जनाच्छ्रुना   |

**મુનિરાજશ્રી જંબૂવિજયજી મહારાજે સંશોધિત-સંપાદિત કરેલા ગ્રંથો**

- ૧ આચાર્યશ્રી મહાવાદિક્ષમાશ્રમાણવિરચિત  
આચાર્યશ્રી સિંહસૂરિગણિક્ષમાશ્રમાણવિરચિતવૃત્તિસહિત  
દ્વાદશારનચક્ર ભા. ૧, ૨, ૩.
- ૨ ચાપનીયસંઘાગ્રણી શાકટાયનવિરચિત સ્વોપજ્ઞવૃત્તિસહિત  
સ્ત્રીનિર્વાણ-કેવલિભુક્તિ પ્રકરણ  
પ્રકાશક - જૈન આત્માનંદ સભા, ભાવનગર.
- ૧ કલિકાલસર્વજ્ઞ આચાર્ય શ્રીહેમચંદ્રસૂરિવિરચિત સ્વોપજ્ઞવૃત્તિસહિત  
યોગશાસ્ત્ર ભા. ૧, ૨, ૩.
- ૨ સૂરિમંત્રકલ્પસમુચ્ચય ભા. ૧, ૨.
- ૩ સર્વસિદ્ધાન્તપ્રવેશક.  
પ્રકાશક - જૈન સાહિત્ય વિકાસ મંડળ, મુંબઈ.
- ૧ આચારાંગસૂત્ર,
- ૨ સૂયગડંગ સૂત્ર
- ૩ ઠાગંગ-સમવાયંગ સૂત્ર
- ૪ જ્ઞાતાધર્મકથાંગ સૂત્ર  
પ્રકાશક - શ્રીમહાવીર જૈન વિદ્યાલય, મુંબઈ.
- ૧ શીલાંકાચાર્યવિરચિતવૃત્તિસહિત આચારાંગસૂત્ર તથા સૂત્રકૃતાંગસૂત્ર
- ૨ આચાર્યશ્રી અભયદેવસૂરિવિરચિતવૃત્તિસહિત સ્થાનાંગસૂત્ર તથા  
સમવાયંગસૂત્ર  
મૂળ સંપાદક - આગમોદ્ધારક આચાર્યશ્રી સાગરાનંદસૂરિજી મહારાજ  
પરિશિષ્ટકર્તા - મુનિરાજશ્રી જંબૂવિજયજી મહારાજ.  
પ્રકાશક - મોતીલાલ બનારસીદાસ, દિલ્હી - ૧૧૦૦૦૭
- ૧ પંચસૂત્ર, આચાર્યશ્રી હરિભદ્રસૂરિવિરચિતવૃત્તિસહિત  
પ્રકાશક - ભોગીલાલ લહેરચંદ ભારતીયસંસ્કૃતિસંસ્થાન, દિલ્હી.



- ૧ આ. શ્રી મુનિચંદ્રસૂરિવિરચિતવૃત્તિસહિત આચાર્યશ્રી હરિભદ્રસૂરિવિરચિત ધર્મબિંદુપ્રકરણ  
પ્રકાશક - જિનશાસન આરાધના ટ્રસ્ટ, મુંબઈ.
- ૧ ચંદ્રાનન્દવિરચિતવૃત્તિસહિત વૈશેષિકસૂત્ર  
પ્રકાશક - ગાયકવાડ ઓરિએન્ટલ સિરીઝ,  
મહારાજ સયાજીરાવ યુનિવર્સિટી, વડોદરા.
- ૧ શ્રીસિદ્ધહેમચંદ્રશબ્દાનુશાસન સ્વોપજલધ્રુવૃત્તિસહિત.  
૨ શ્રીસિદ્ધહેમચંદ્રશબ્દાનુશાસન સ્વોપજરહસ્યવૃત્તિસહિત.  
પ્રકાશક - શ્રી હેમચંદ્રાચાર્ય જૈનજ્ઞાનમંદિર, પાટણ - ૩૮૪૨૬૫.
- ૩ અણહિલપાટક(પાટણ)નગરસ્થજૈનગ્રન્થમાળાગારાન્તર્ગતાનાં  
હસ્તલિખિતગ્રન્થાનાં સૂચિ: (અકારાદ્યનુક્રમસહિતા) ભાગ ૧, ૨, ૩.  
પ્રકાશક - શારદાબેન ચિમનલાલ એજ્યુકેશનલ રિસર્ચ સેન્ટર,  
દર્શન, રાણકપુર સોસાયટી સામે, શાહીબાગ,  
અમદાવાદ ૩૮૦૦૦૪

### મુદ્રાગાધીન ગ્રંથો

૧. આવશ્યકસૂત્ર, નિર્યુક્તિ તથા ચૂર્ણિસહિત. ૨. અનુયોગદ્વારસૂત્ર, ચૂર્ણિ,  
હારિભદ્રીવૃત્તિ તથા આ.મ. શ્રી મલધારિ હેમચંદ્રસૂરિવિરચિતવૃત્તિસહિત. ૩.  
ઉત્તરાધ્યયનસૂત્ર, ચૂર્ણિસહિત ૪. ઔપપાતિકસૂત્ર, આ.મ. શ્રી અભયદેવસૂરિ-  
વિરચિતવૃત્તિસહિત. ૫. પ્રશસ્તિસંગ્રહ, પાટણમાં શ્રીહેમચંદ્રાચાર્યજૈનજ્ઞાનમંદિરમાં  
તથા ભાભાના પાડાના ભંડારમાં રહેલા કાગળ ઉપર લખેલા ગ્રંથોમાં આવતી  
પ્રશસ્તિઓનો સંગ્રહ. ૬. પાટણમાં શ્રીહેમચંદ્રાચાર્યજૈનજ્ઞાનમંદિરમાં રહેલા  
સંઘભંડાર, સંઘવી પાડાનો ભંડાર તથા ખેતરવસીના પાડામાં રહેલા તાડપત્રીયગ્રંથોની  
પ્રશસ્તિઆદિ સહિત વિસ્તૃત સૂચિ. ૭. દ્રવ્યાલંકાર, સ્વોપજલવૃત્તિસહિત, કર્તા -  
કલિકાલસર્વજ્ઞ આ.મ. શ્રી હેમચંદ્રસૂરિજી મહારાજના પટ્ટધર આ.મ.શ્રી રામચંદ્રસૂરિજી  
તથા ગુણચંદ્રસૂરિજી મહારાજ. ૮. સ્થાનાંગસૂત્ર, આ.મ.શ્રી અભયદેવસૂરિવિર-  
ચિતવૃત્તિસહિત. ૯. સમવાયાંગસૂત્ર, આ.મ.શ્રી અભયદેવસૂરિવિરચિતવૃત્તિસહિત.

